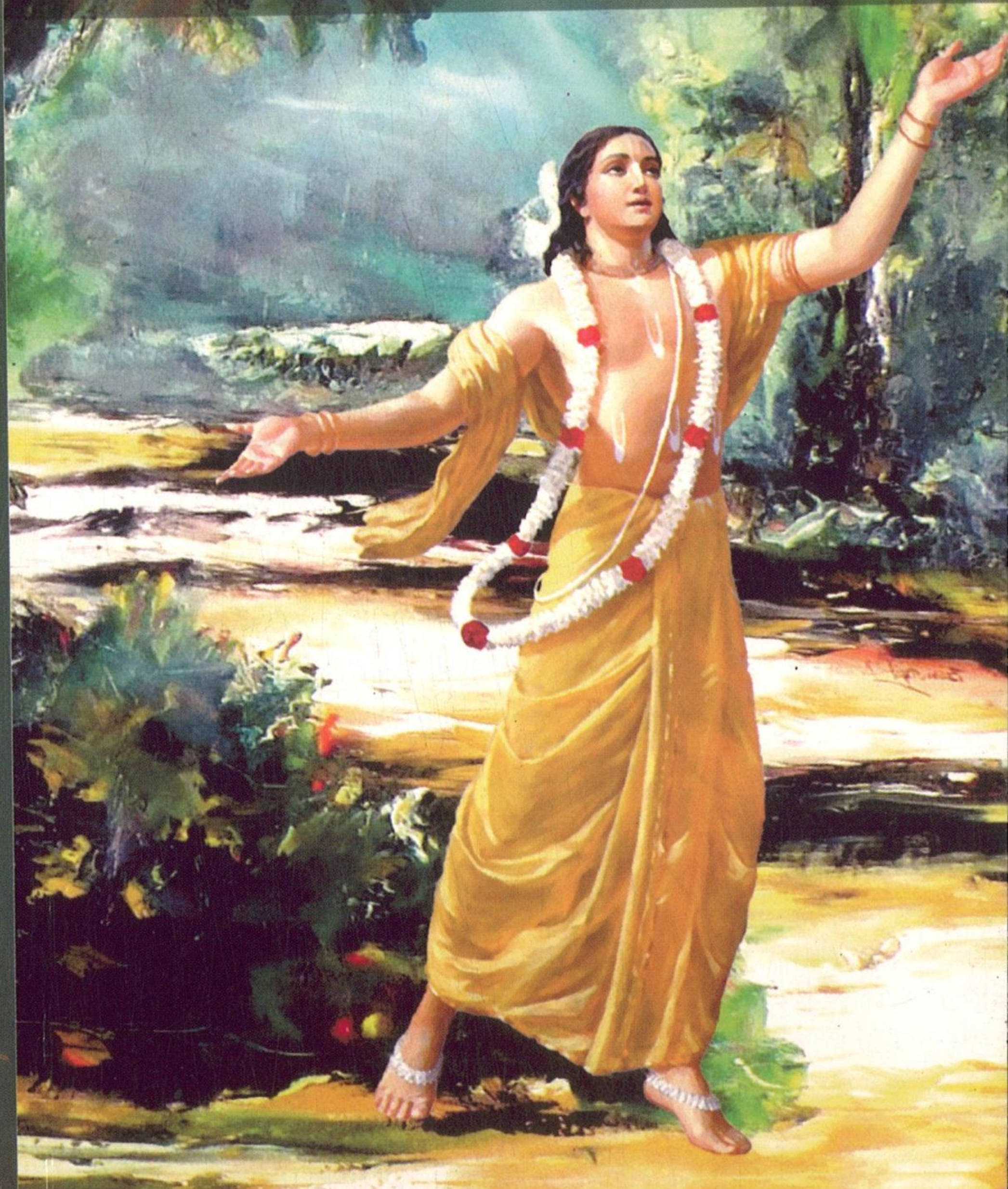
चैतन्य पदावली

गौरचन्द्र विरुदावली



चैतन्य पदावली

गौरचन्द्र विरुदावली

हरि बोल, हरि बोल, हरि बोल

संकलनकर्त्ता
श्री माध्वगौड़ेश्वर मण्डल
जयपुर

हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नाम केवलम् ।
कलौ नास्त्येव, नास्त्येव, नास्त्येव गतिरन्यथा ।।

जयपुर पब्लिशिंग हाउस
चौड़ा रास्ता, जयपुर-3

卐 श्री गौरांगमहाप्रभु द्वारा निर्देशित महामंत्र 卐

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।

यह श्री महामंत्र रूप श्रीकृष्ण संकीर्तन, श्री महाप्रभुजी को अतिप्रिय था
जो सर्वसिद्धियों का देने वाला है।

प्रकाशक : स्व. श्री रामचन्द्र अग्रवाल
जयपुर पब्लिशिंग हाउस
चौड़ा रास्ता, जयपुर–302 003
फोन : 9314523113

मूल्य ₹ 200/-

प्रथम संस्करण : संवत् 2024 सन् 1967
द्वितीय संस्करण : 19.12.1990
तृतीय संस्करण : रामनवमी, संवत् 2075 दिनांक 25.3.2018

संकलनकर्त्ता : श्री माध्वगौड़ेश्वर मण्डल, जयपुर

लेजर टाइपसैटिंग : कुलदीप ग्राफिक्स, जयपुर

मुद्रक : शीतल ऑफसैट, जयपुर

卐 श्री गौरांग महाप्रभु 卐

महाप्रभु चैतन्य का पावन चरित्र प्रेम रस का अथाह सागर है। चाहे कोई कितना ही पी ले, कितना ही उलीच ले, उस अगाध रस-सिन्धु में से अणुमात्र भी कम नहीं हो सकता है। जिस किसी ने इस परम सुस्वादु आत्मानन्दमय रस का यत्किंचित् भी पान किया, वही धन्य हो गया। ज्ञान-वैराग्य, भक्ति-प्रेम, त्याग और विरह के मूर्तिमान विग्रह, श्रीकृष्णप्रेमावतार श्रीगौरांगदेव का करुणा विगलित जीवन, दुःखी प्राणियों का एक ऐसा ही मनोरम आश्रय-स्थल है। अतएव इस कलि-संतप्त, पाप-ताप-जनित, नाना दुःख-दैन्य-दाहग्रस्त मनुष्यों को यदि शीतलता, शान्ति और दिव्य प्रेमानन्द की अनुभूति करनी हो तो वे आनन्द और प्रेम के पर्याय चैतन्यदेव के इस पावन चरितामृत का पान अवश्य करें। चैतन्य देव के महान् जीवन में चैतन्यता का बीजारोपण तो गयाधाम में हुआ, नवद्वीप में आकर वह अंकुरित और कुछ-कुछ परिवर्धित हुआ श्रीनीलांचल (जगन्नाथपुरी) में वह पल्लवित, पुष्पित और अमृतमय फलों वाला बन गया। उसके अमृतमय सुस्वादु फलों से असंख्य प्राणी सदा के लिए तृप्त हो गये और उनकी बुभुक्षा का अत्यन्ताभाव ही हो गया। उसकी नित्यानन्द और अद्वैतरूपी दो बड़ी-बड़ी शाखाओं ने सम्पूर्ण देश को सुखमय और शान्तिमय बना दिया। पुण्यवती नवद्वीप नगरी में मिश्रवंशावतंस पुरन्दर-उपाधिविशिष्ट पण्डितप्रवर श्री जगन्नाथ मिश्र के यहाँ भाग्यवती शची देवी के गर्भ में तेरह मास रहकर महाप्रभु गौरांगदेव सं. 1407 शकाब्द (वि. 1542) की फाल्गुन की पूर्णिमा के दिन इस धराधाम पर अवतीर्ण हुए। बाल्यवस्था से ही इन्होंने अपने अद्भुत ऐश्वर्य प्रदर्शित किये। अपनी अलौकिक बाल-लीलाओं से अपने माता-पिता, भाई-बन्धु तथा पुरजन-परिजनों को आनन्दित करते हुए जब इनकी अवस्था सात-आठ वर्ष की हुई तब इनके अग्रज विश्वरूपजी अपने पिता-माता को बिलखते छोड़कर संसारत्यागी विरागी बन गये। तब इन्होंने पुत्र शोक से दुःखी हुए माता-पिता को अल्पावस्था में ही अपने अनुपम-सान्त्वनामय वाक्यों से शान्ति प्रदान की औरं माता-पिता की विचित्र भाँति से अनुमति प्राप्त करके विद्याध्ययन में ही अपना सम्पूर्ण समय बिताने लगे। कालान्तर में इनके पूज्य पिता परलोकवासी हुए, तब सम्पूर्ण घर-गृहस्थी का भार इन्हीं के ऊपर आ पड़ा। इसलिए सोलह वर्ष की अल्पायु में ही ये अध्यापकी के अत्युच्च आसन पर आसीन हुए और कुछ काल के अन्तर

द्रव्योपार्जन तथा मनोरंजन और लोक–शिक्षण के निमित्त इन्होंने राढ़देश में भ्रमण किया। विवाह पहले ही हो चुका था। राढ़देश से लौटने पर अपनी प्राणप्रिया प्रथम पत्नी लक्ष्मीदेवी को इन्होंने घर पर नहीं पाया, उन्हें पतिरूपी वियोग–भुजंग ने डस लिया था। माता की प्रसन्नता के निमित्त उनके आग्रह पर श्री विष्णुप्रियाजी के साथ इनका दूसरा विवाह हुआ। कुछ काल अध्यापकी करते हुए और गार्हस्थ्य जीवन का सुख भोगने के अनन्तर इन्होंने पितृ–ऋण से उऋण होने के निमित्त अपने पूर्व पितरों की प्रसन्नता और श्राद्ध करने के लिए श्रीगयाधाम की यात्रा की। वहीं पर स्वनामधन्य श्रीस्वामी ईश्वरपुरी ने न जाने इनके कान में कौनसा मन्त्र फूँक दिया कि उसके सुनते ही ये पागल हो गये और प्रेम–वारुणि का पान किये हुए उनके मद में भूले–से, भटके–से, उन्मत्त–से, सिड़ी–से, पागल–से बने हुए ये सदा लोकबाह्य प्रलाप सा करने लगे। ऐसी दशा में पढ़ना–पढ़ाना सभी कुछ छूट गया। बस, प्रेम से उन्मत्त होकर प्रेमी भक्तों के सहित अहर्निश श्रीकृष्ण–कीर्तन करते रहना ही इनके जीवन का एकमात्र व्यापार बन गया। पुराना जीवन एकदम परिवर्तित हो गया। गया से आने पर अध्यापकी का अन्त होने पर इनके पुराने जीवन के कार्यक्रम का भी अन्त हो गया। यह गौरांग महाप्रभु के जीवन का प्रथम भाग है, प्रेम–जीवन ही असली जीवन है। जिस जीवन में प्रेम नहीं उसे 'जीवन' कहना ही पाप है। वह तो 'जड़ जीवन' है। जिस प्रकार ईंट–पत्थर पृथ्वी पर पड़े रहते हुए अपनी आयु बिताते हुए भूमि का भार बने हुए हैं, वही दशा प्रेम से रहित जीवन बिताने वाले व्यक्ति की है। हिन्दी के किसी कवि ने निम्न पद में प्रेम का कैसा सुन्दर आदर्श बताया है–

प्रेम ही सब प्राणियों के पुण्य–पथ का द्वार है।
प्रेम से ही जगत्‌का होता सदा उपकार है।।
जिस हृदय में प्रेम उठता नहीं उद्‌गार है।
व्यक्ति वह निस्सार है : वह मनुज भू का भार है।।

सचमुच प्रेम के बिना जीवन इस भूमि का भार ही है। महाप्रभु के जीवन में प्रेम ही एक प्रधान वस्तु है। उनका जीवन प्रेममय था या वे स्वयं ही प्रेममय बने हुए थे। कैसे भी कह लीजिए, उनका जीवन से और प्रेम से अभेद सम्बन्ध हो गया था। 'गौरजीवन' और प्रेम, ये दोनों पर्यायवाची शब्द ही बन गये हैं।

अध्यापकी का अन्त होने के बाद प्रभु का सम्पूर्ण जीवन प्रेममय ही था। अहा! उस मूर्ति के स्मरणमात्र से ही हृदय में कितना भारी आनन्द प्राप्त होता

है! पाठक प्रेम में नृत्य करते हुए गौरांग का एक मनोहर सा चित्र अपने हृदय–पटल पर अंकित तो करें! सुवर्ण समान देदीप्यमान शरीर पर पीताम्बर पड़ा हुआ है। जमीन तक लटकती हुई चौड़ी किनारीदार एक बहुत ही सुन्दर धोती बंधी हुई है। दोनों आंखों की पुतलियाँ ऊपर चढ़ी हुई हैं। खुली हुई आँखों की कोरों में से अश्रु निकलकर उन सुन्दर गोल–कपोलों को भिगोते हुए वक्षःस्थल को तर कर रहे हैं। दोनों हाथों को ऊपर उठाये गौरांग 'हरि बोल, हरि बोल' की सुमधुर ध्वनि से दिशा–विदिशाओं को गुंजायमान कर रहे हैं। उनकी घुंघराली काली–काली लटें वायु के लगने से फहरा रही हैं।

रितीवाहं दण्डग्रहणमविशेषादकरवम् ॥

आचार्य ने पूछा था– 'आपने यह अद्वैत – वेदान्तियों की भाँति संन्यास लेकर दण्ड धारण क्यों किया है? इस पर महाप्रभु कहते हैं– आचार्य! संन्यास धारण करने में द्वैत–अद्वैत की कौनसी बात है? मुख्य बात तो है अपने प्यारे के पादपदों तक पहुँचना, सो यह बिना सर्वस्व त्याग किये होने का नहीं। यही सोचकर मैं संन्यास–धर्म में दीक्षित हुआ हूँ। यह जो तुम दण्ड देख रहे हो, सो तो मेरी साधनावस्था का द्योतक है। यह मन बड़ा ही चंचल है, जब तक साधन और नियम रूपी डण्डे से हाँकते न रहोगे, तब तक यह अपनी बदमाशियों को नहीं छोड़ने का। इसीलिये इसे वश में करने के निमित्त मैंने यह दण्ड धारण किया है। दण्ड के भय से यह इधर–उधर न भाग सकेगा।'

सचमुच उन महाभाग का त्याग बड़ा ही अलौकिक कार्य था। मुंह से ऐसी बातें बक देना कि आसक्ति छोड़कर कर्म करते जाओ, स्त्री–पुत्रों का पालन भागवत–सेवा समझकर करते रहो, ईश्वरार्पण, बुद्धि से सदा कर्म करते रहने की अपेक्षा, कर्मों का त्याग करना अत्यन्त हेय है। त्याग करने में कौन–सी बहादुरी है, नारी मुई घर संपत्ति नासी। मूँड़ मुँडाई भये संन्यासी। ये बड़ी ही आसान बातें हैं। पत्नी को सोती छोड़कर माता को दुःखी और बेसुध बनाकर, भक्तों के ममत्व को भुलाकर महाप्रभु गंगाजी पार करके कटवा में श्रीकेशवभारती के आश्रम पर पहुँचे। उनसे संन्यास ग्रहण कर चैतन्य महाप्रभु रूप में चर्चित हुए। माता की आज्ञा से जगन्नाथपुरी (नीलांचाल धाम) में अन्तिम 24 वर्ष व्यतीत कर जगन्नाथ जी में सदेह विलीन हो गए। इसी कारण उड़ियावासी इन्हें जगन्नाथ जी महाप्रभु भी कहते हैं।

卐 श्री अद्वैताचार्य का परिचय 卐

श्री महाप्रभु ने इन्हें श्रीमद्भागवत् के समस्त शास्त्रों के सार सिद्धान्तों की शिक्षा दी। फिर ब्रज में लुप्त तीर्थों के उद्धार करने के लिए और ब्रजभक्ति के साहित्य की रचना करने की आज्ञा देकर, उन्हें वृन्दावन भेज दिया। उन्होंने बृज में आकर जितने कृष्ण लीला के स्थान लुप्त हो चुके थे, उन्हें प्रकट किया। बृज भूमि के अनेक अनुपम ग्रन्थों की रचना की। विशेषकर श्रीसनातन श्रीमदनमोहन ठाकुर के विग्रह को प्रगटित कर उनकी स्थापना की। श्रीरूप ने श्रीगोविन्ददेवजी के श्रीविग्रह को प्रगटित कर प्रतिष्ठित किया।

यवनों के विप्लव समय से वही श्रीगोविन्दजी जयपुर में आकर सेवित हो रहे हैं और श्रीमदनमोहनजी करौली में सेवित हो रहे हैं। दोनों श्रीविग्रहों की प्रतिमूर्तियाँ वृन्दावन में नवीन मंदिरों में स्थापित की गईं जो आज वहाँ सेवित हैं।

श्रीजीवगोस्वामी श्रीरूपसनातन के भतीजे श्रीजीव। इनको नित्यानन्दप्रभु ने साक्षात् दर्शन देकर श्रीवृन्दावन चले जाने की आज्ञा दी और कहा वहाँ श्री श्रीरूप सनातन के पास रहकर भक्ति ग्रन्थों की रचना करो। श्रीजीव ने भी अपने भक्तिग्रन्थों की रचना की। ये परम् विद्वान् थे। श्रीरूप ने अपने हाथों से श्रीराधादामोदरजी का विग्रह निर्माण करके इन्हें सेवा के लिए दे दिया था। वे राधादामोदरजी भी जयपुर में सेवित हैं। उनकी प्रतिमूर्ति श्रीवृन्दावन में प्रतिष्ठित और सेवित है।

卐 अपराधों से रहित होने का अभिप्राय 卐

दस नाम अपराध हैं, छः वैष्णव अपराध हैं, बत्तीस सेवा अपराध हैं इनसे बचकर जो श्रीनाम–संकीर्तन करता है, उसे ही प्रेम की प्राप्ति होती है।

श्री

कलियुग कीर्तन प्रधान युग है, कलि काल में ज्ञान योग कर्मादि साधन प्राय: असाध्य और निरर्थक हैं ऐसा शास्त्रों का घोष है– देवर्षि नारदजी ने स्पष्ट कहा है :

हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नाम केवलम्।
कलौ नास्त्येव, नास्त्येव, नास्त्येव गतिरन्यथा ।। (ब्रह्मनारद पुराण)

श्री मन्महाप्रभो श्री गौराङ्गदेव ने भूतल पर अवतीर्ण होकर इसी कीर्तन धर्म का जीव कल्याणार्थ प्रचार किया और उनके अनुगत आचार्यों ने उसका प्रसार किया।

श्री सनातन गोस्वामी जी ने वृहद् भागवतामृत ग्रंथ में भी नारद जी के वचन का सार इस प्रकार लिखा है :

''तत्तु ब्रजलीला ध्यान ज्ञान प्रधानया''

अर्थात् यह ब्रजोपासना, प्रेम, भक्ति, साधना, ब्रज लीला के ध्यान और ज्ञान अर्थात् कीर्तन की प्रधानता लिए हुए है– इसी भावना से सब भक्तों के मनो–विनोदार्थ एवं उत्सवादि में इसकी उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए चैतन्य पदावली का संग्रह सम्पादन 1967 ई. सम्वत् 2024 में टाटीवाला परिवार, जयपुर द्वारा हुआ था। श्री माध्वगौड़ेश्वर मण्डल जयपुर द्वारा चैतन्य पदावली पूर्व में 19.12.1990 में मैसर्स जयपुर पब्लिशिंग हाउस, जयपुर के सहयोग से प्रकाशित हुई थी। वह संस्करण प्राय: समाप्त हो गया है। उसके पुन: मुद्रण एवं प्रकाशन की आवश्यकता प्रतीत हुई, अब उसका संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। यह प्रकाशन सब भक्तों को विशेषत: गौर–गोविन्द प्रेमियों को परम उपयोगी और प्रिय होगा।

गोस्वामी अंजन कुमार
अध्यक्ष
श्री माध्वगौड़ेश्वर मण्डल, जयपुर (राज.)

रामनवमी 25.3.2018

ठाकुर श्री राधारमण जी

श्री गोपाल भट्ट गोस्वामी संसेवित श्रीविग्रह



श्री राधारमणं पदाम्बुजयुगं यस्याः महानाश्रयः ।
या कार्या व्रजलोकवत् गुरुतरप्रेम्णैव तस्ये नमः ।।

ठाकुर श्री मदनमोहन जी

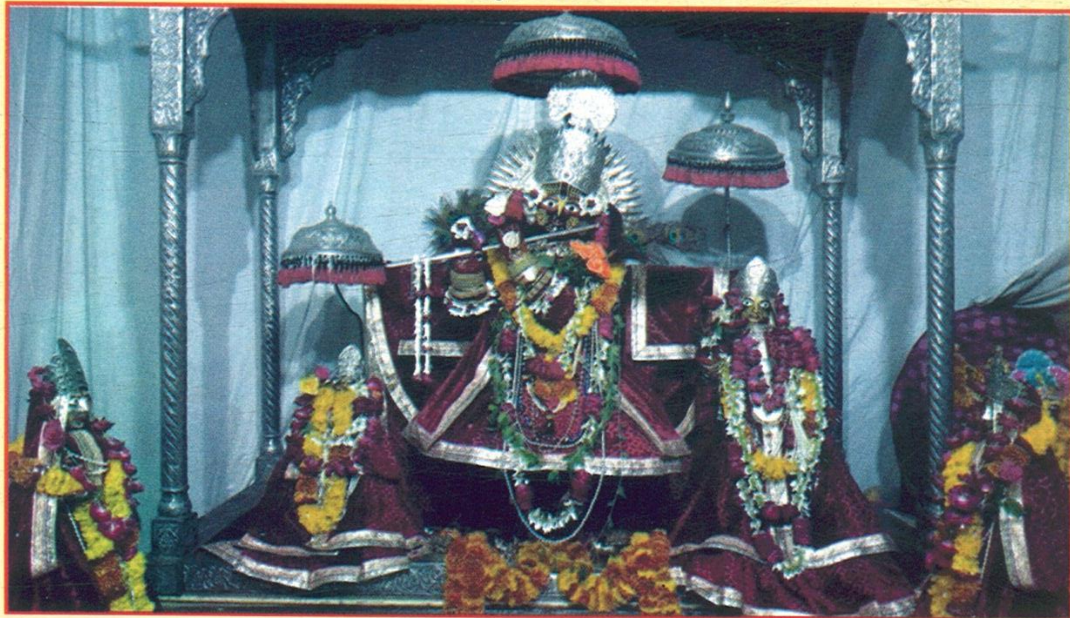
श्री सनातन गोस्वामी संसेवित श्रीविग्रह



जयतां सुरतो पङ्गोर्मन मन्दमतेर्गती।
मत्सर्वस्ब पदाम्भोजौ राधामदन मोहनौ।।

ठाकुर श्री राधा गोपीनाथ जी

श्री मधु पंडित संसेवित श्रीविग्रह

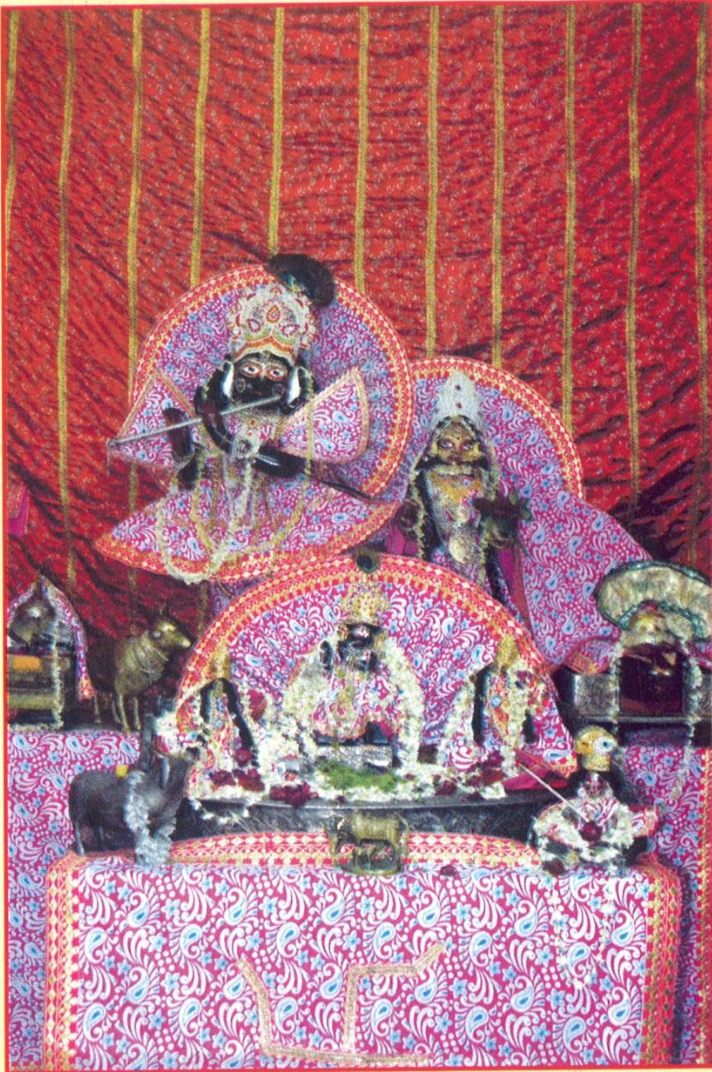


श्रीमान् रासरसारम्भी वंशीवटतटस्वित।
कर्षन् वेणुस्वनैर्गोपीनाथः श्रियेऽस्तु नः।।

ठाकुर श्री राधा दामोदर जी

श्री जीव गोस्वामी संसेवित श्रीविग्रह

श्री रूप गोस्वामी विनिर्मित



रुदन्तं मुहुर्नेत्रायुग्मं मृजन्तं, कराम्भोजयुग्मेन सातङ्कनेत्रम।
मुहुः श्वासकम्प-त्रिरेखाङ्ककण्ठ-स्थितग्रैव दामोदर भक्तिबद्धम।।

ठाकुर श्री राधा विनोदीलाल जी

श्री लोकनाथ गोस्वामी संसेवित श्रीविग्रह



नमो अरुप रुपाय सर्व रुप प्रकाशिने।
श्री लोकनाथ नाथाय नमो राधा विनोदीने।।

हरि बोल, हरि बोल, हरि बोल



हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम्।
कलौ नास्त्येव, नास्त्येव, नास्त्येव गतिरर्न्यथा।

विषय-सूची

श्री गुरुदेवाष्टकम्	1
श्री शचीतनयाष्टकम्	2
गुरुवन्दनाष्टक	3
श्री नित्यानन्दाष्टकम्	4
श्री षड् गोस्वाम्यष्टकम्	6
श्री राधाकृपाकटाक्षस्तोत्र	8
श्री कृष्णकृपाकटाक्ष	11
श्री श्री दामोदराष्टकम्	12
श्री तुलसी वन्दना	14
श्री मंगलगीतम्	14
श्री युगलाष्टक	16
सात देवालय	17
सात भगवत स्वरूप	17
मंगलाचरण	18
जय प्राणधन राधारमण	18
जय-जय छबीली नागरी	19
श्री राधारमण हमारे मीत	19
श्री राधारमण हमारे इष्ट	19
श्री राधारमण सलौने श्याम	20
श्री राधारमण छबीले छैल	20
श्री राधारमण नटनागर हो	20
प्राणधन राधारमण रंगीले	20
श्री राधारमण रसिया बाँको	20
जागो श्रीराधारमण रंगीले	21
उठे श्री राधारमण परभात	21
मंगला आरती मंगल राधारमणलाल	21

मंगला आरती शृंगार वर्णन	23
करत श्रीराधारमण दांतन	23
श्रीराधारमण करत स्नान	23
अगर धूप को धूम सुहायो	24
भोग मधुर आयौ शृंगार	24
भोग सिंगार श्री राधारमण आरोगत	24
रूपमंजरी बीड़ी लाई	24
करत आरती सखि शृंगार	25
ललित शृंगार रमण को निरखत	25
श्रीराधारमण सिर मुकुट सोहे	25
निरख सखि राधारमण सिर पाग	25
श्रीराधारमणजू चीरा पहिरो	26
बंधो श्रीराधारमण सिर फेंटा	26
श्रीराधारमण सीस पर कुलही	26
श्रीराधारमण धरी सिर टोपी	26
श्रीराधारमण केसर तिलक	26
श्रीराधारमण कुंडल कान	27
श्रीराधारमण कटाक्षन वान	27
श्रीराधारमण नुकीले नैन	27
श्रीराधारमण नासिका कीर	27
बसी उर राधारमण मुसिक्यान	27
राधारमण अधर रचि वीरी	28
श्रीराधारमण चिबुक चित चोरें	28
श्रीराधारमण कंठकी दुलरी	28
श्रीराधारमण हिये के हार	28
श्रीराधारमणलाल को बागो	28
श्रीराधारमण नौरतन वाजू	29
श्रीराधारमणलाल के गजरे	29

श्रीराधारमणलाल कर कड़े 29
श्रीराधारमणलाल हथफूल 29
श्रीराधारमण कमलकर रेख 29
श्रीराधारमण दुपट्टा छोर 30
श्रीराधारमण जू धोती धारी 30
श्रीराधारमण काछनी काछें 30
उरसी मुरली कुरसी राधारमण काछनी काछें 30
श्रीराधारमण किंकिणी वाजें 30
श्रीराधारमणलाल की सूथन 31
श्रीराधारमण जांघिया धारो 31
श्रीराधामरण चरण में नूपुर 31
श्रीराधारमण चरण में झांझन 31
श्रीराधारमण चरण में चूरा 31
श्रीराधारमण लाल की गुलफ 32
अरूणचरण श्रीराधारमण के 32
श्रीराधारमण चरण तल मेहंदी 32
श्रीराधारमण चरण की चौकी 32
श्रीराधारमण लाल की गादी 32
श्रीराधारमण मुरलिया बजावै 33
श्रीराधारमणलाल कर छरी 33
श्रीराधारमणलाल को वट्टा 33
पीकदानी हमारे पानी 33
श्रीराधारमण की पादुका 33
नवल शृंगार निरखि राधा को 34
श्रीराधारमण संग रंग में विराजें 34
श्रीराधारमण करत हैं भोजन 36
परसत रमण को सुखदानी 36
श्रीराधारमण जमुनतट कुंज 36

करत धनाश्री सुर आलापन्न 36
उत्थापन भोग धरो है उज्ज्वल 37
औलाई के शृंगार को वर्णन 37
मेरे परत हिय में लीकें 37
श्रीराधारमण बियालू कीजे 38
प्यारी प्रिय अधरामृत प्यावै 38
श्री राधारमणजी के जन्मोत्सव के पद 39
जै जै जै श्रीराधारमण (बधाई) 41
पूर्ण बैसाखी सखी अभिलाषी राधारमण मिलाई 42
प्रगटे श्री राधारमण आज 44
सखीरी आज भये मन भाये 44
लाल को कमलमुख निरखें 45
बधाई में दीजे श्रीबनवास 45
श्री गौरचन्द्र उपदेश पाय 45
आज बधायो श्रीगोपाल के 48
श्री राधारमणजी प्रगट भये 49
बाजै आली बधाई 50
आज बधाई कहीं बाजै हो 50
रंग बधाइयाँ हो श्रीगोपालभट्ट के आज 50
अति मुदित भये श्रीभट्ट गुसाँई 51
श्री वृन्दावन धाम हमारो हो 51
आज श्रीराधारमण प्रगट भये 52
बाजैं रंग बधाई श्रीगोपाल भट्ट धाम 52
चल देखिये वृन्दावन 52
मोहि दीजै श्रीभट्ट गुसाँई 53
अति आनंद भयौ है 53
श्रीगोपालभट्ट गोस्वामी रसिकन में 53
भट्टजी के आनन्द उर न समाय 53

श्री भट्ट गुसाँई दीजै मोहिं बधाई 54
श्रीराधारमणलाल कछु दीजै 54
लखत श्रीराधारमण फुहारे (जल यात्रा) 54
श्री राधारमण (रथ यात्रा) 54
श्रीराधारमण लखत है बादर 55
श्रीराधारमण लखत हरियारी 55
श्रीराधारमण घटान निहारें 55
श्रीराधारमण कुंज नव छातन 55
श्रीराधारमण सुखद घन झड़ी 56
श्रीराधारमण रूचि जान 56
श्रीगोपाल भट्ट गोस्वामीजी की धियोधियो 57
श्रीराधारमण नृत्य करें (श्रावण कृष्णा पंचमी) 57
मधुर हिंडोरना हो झूलें श्रीराधारमणलाल 57
श्रीराधारमण हिंडोले झूलें 57
श्रीराधारमण झूलें रंग हिंडोरे 58
निरख राधारमण झूलें 58
लखि छवि होउ निहाल झूलें श्रीराधारमणलाल 58
आज श्रीराधारमण झूले 59
श्रीराधारमण पवित्रा पहरें 59
श्रीराधारमणलालजू के राखी 59
जन्माष्टमी श्रीराधारमण जन्म कीं आठें 59
श्री राधाष्टमी श्रीराधारमणजी तन-मन फूले 60
साँझी श्रीराधारमणलाल प्यारी की निजकर साँझी 60
आज दशहरा दिवस सुहायो 60
शरद पूर्णिमा श्रीराधारमणो नृत्यति रासे 61
दीवाली श्रीराधारमण खेलत चौपर 61
आली आज आई दिवाली 61
श्रीराधारमण आरोगत अन्नकूट आली 61

गोपाष्टमी श्रीराधारमण किये नटवर भेख 62
देवोत्थान अथवा प्रबोधन 62
श्रीदामोदर गोस्वामी को उत्सव 62
श्रीराधारमण मनरंजन खिचरी पद 63
खिचरी जेंमत श्रीराधारमन 63
श्रीराधारमणजी खिचरी जेंमत 64
श्रीराधारमण दुशाला पीत (शीत) 64
श्रीराधारमणजू पहरे मोजा 64
श्री राधारमण अँगीठी तापें 64
श्रीगोपीनाथ गोस्वाभीजी को उत्सव 65
श्री राधिकारमणजी नव बसंत 65
श्रीराधारमण छैल गैल पिचकारी छोरे 65
श्रीराधारमण संग खेलहि होरी 66
फूलडोल श्रीराधारमण झूलत हैं डोल 67
राधारमण फूल के डोर 67
श्रीराधारमण फूल के बंगला 67
श्रीराधारमणलाल अखतीज 68
श्री गोस्वामी श्री गल्लूजी महाराज कृत रहस्य पद 68
ग्रीष्म ऋतु 68
दोऊ मिल बैठे कुंज उसोरें 69
देखो आली गौर-मेघ उल्लास 69
हमारे धन श्यामा जू कौ नाम 69
झूलें श्री गौर किशोर हिंडोले 69
सखी देखो सुहावन झूलन की 70
तेरी झूलन में रंग बरसै सुख सरसै श्री राधाप्यारी 70
श्याम संग झूलोंगी नहियाँ 71
साँझी फूलत बीनवे 71
मेरे संग लगि आई आय सावरी 72

साँझी बनावन चाव	73
फूलन बीनन आली आज कैसे होयरी	73
भलीरी बनाई साँझी	73
रहेरी दोऊ दृगन मिलाय	73
खेलत बसंत श्री गौरचंद्र	74
प्यारी चरनन में नव बसंत	74
देख–देख हो नवेली प्यारी	75
होरी खेलत श्री शचीनंदन	75
गौर चंद्र नटराज संग होरी	76
प्रिय प्यारी खेलत होरी	76
रंगीली कुंज खिरकी पिचकारी	77
करुणा कीजै कुंज बिहारी	77
बहुत दिन बीते करत कड़ाके	77
दोऊ मिल एकहि वीण बजामें	78
प्यारी दामन सोहै बटुआ	78
संध्या आरती गौर श्याम छवि सोहै	78
सखि ये कैसी करत है बातन	79
प्रिय सखि बिहरें श्री यमुना चल	79
कमल मुखि बैठी यमुना तीरे	79
भोजन कर जु करत हैं अचमन	79
प्रेम सरोवर कार्तिक न्याहन	80
श्री वीरभद्र प्रभु को उत्सव	80
खिचरी जेंवत श्री गौर हरी	80
नेत्रानुराग गड़ गई नैन निहन्नी	81
दुहून के नैना बड़े लड़ाके	81
कसकत मुसिक्यन कनी हमारे	81
जन्म बधाई कृष्ण चैतन्य महाप्रभु जी	81
जै जै श्री चैतन्य महाप्रभु गाइये	82

हिल मिल गावो हर्ष बधाई 82
बधाई नीकी बाजत आज 83
हमारे हेली आज महा आनन्द 83
बाजत बधाई जगन्नाथजू के अँगना 84
सलोनी सखी फाल्गुण पूरणमासी 84
रंगबधाइयाँ हो श्री जगन्नाथ के दरबार 84
शादियाँ सुरङ्गी सुनो भाँड देव आये 86
जगन्नाथ सुत पलना झूलै 87
नवद्वीप की नारी सारी नित्य निमाई 87
जै जै जै प्रभु गौरहरी 88
महाप्रभु श्रीगौराङ्ग उदार 88
बड भागन यह फागुन आयो 89
गौरचन्द्र को आज जन्म दिन 89
श्री गौरहरि गुण गाइये 89
आज भलो दिन माई 90
शची मात सुनिये चितलाई 91
ढाढनि नाचे रङ्ग भरी 92
जगन्नाथ जू सुनो तुम्हारे 93
गावें होरी नर नारी 93
प्रगट भये हैं सखी आज प्रभु गौरहरी 94
झूलत पलना गौरहरी 94
महाप्रभू चैतन्य की, छठी छबीली आज 94
गौरहरी की छठी सुहाई 95
महोत्सव सखी हमारे आज 95
आज को दिन है अति सुखदाई 96
चिरंजीवो शची तेरो लाल 96
जय जयति गौरहरि गुन निधान 97
पाटोत्सव गौरांग हरी को 97

आज महाप्रभु गौरहरि ने खेल बसंत	98
बोल हरि हरि बोल बसंत	98
षडभुज रूप अनुपम धारो	99
नैनों में गौर सुन्दर	100
हिलमिल रसिक सब मिल	100
गौरकिशोर नाम भज भाई	101
श्री चैतन्य शरण जिन पाई	101
हमारे प्यारे श्रीमत प्रभु चैतन्य	101
दृगनभर गौररूप लख लीजे	101
परम धन हमरे नाम निमाई	102
श्रीगौराङ्ग महाप्रभु साँचे	102
श्री चैतन्य तनक हँसि हेरो	102
बलि जैये चैतन्य चन्दकी	102
जै जै श्रीगौरकिशोर की	103
महाप्रभु प्यारो लागै है	103
गौरहरी हम ओर निहारो	103
शरण चैतन्यचन्द्र की जैये	104
बधाई गौर सुन्दर जन्म की	104
गौर छबि उपमा कही न जात	105
गौर तन छब के सदन	105
कलि निस्तारण अधम उधारण	106
आज परम मङ्गल भयो माई	106
बधाई बाजत रंग भरी	107
जगन्नाथ द्विजवर के मंदिर	107
आज बाज अति नदिया	107
आज अति नदिया नगर बधाई	108
बाजत रंग बधाई माई	108
बाजत बधाई नदियापुर आज	109

बाजे बाजे मृदङ्ग झाँझ	109
बधाई बाजत नदिया आज	109
नदिया नगर बधाई छाई	109
नदिया में बधायो छायो है	110
गावो गावो बधाई मंगल मोद भरी	110
गौर हरि का जन्म रंगीला	110
गौर चरन की आस हमारे	111
कारे पै चढ गयो गौरो रंग	111
फागन में सखी सावन आयो	112
गाउँ बधाई गौरसुँदर की	112
प्रगटे विश्वंभर अवतारी	112
नदिया में होत कुलाहल भारी	113
बाजत रंग बधाई घर घर	114
रंगीलो फागुन मास सुहायो	115
अरी सुन रँगीली नौबत बाजै	115
श्री नदिया नँदगाँव मनो वहाँ, श्याम	115
नदिया में प्रगटे गौर हरी	115
प्रगटे आज निमाई	116
नदिया में हुआ आनंद	117
जय जय जयति प्रभु चैतन्य	117
गावो गावो गावो बधाई गावो रे	118
तुझ से लागी लगन, निशदिन	119
फागुण शुक्ल पूरणमासी शुभ	119
होली आई आई रे होली आई आई रे	120
हो रंग होरी में नव रंग बरसै	121
होलि में कांई आंकेरे	121
शची माता ने सुत जायौरी	123
या मूर्धन्य शची माता ने	123

हो आंगने मेरी बाजै बधैया 124
चिरजीवौ यह प्रेम पियारो पियारो 124
हिल मिल गावो बधाई, प्रकटे श्री गौर निमाई 125
जय श्री चैतन्य महाप्रभू 125
प्रकटे श्री गौर हरि 126
सब मिल गावो आज बधाई 126
गावो गावो रे बधाई फागण आया 127
गावो गावो रे बधाई, सब मिल आज 127
प्रगटे दिवस घरी भई कीर्ति छाई 128
बधाई गावो बधाई गावो बधाई गावो 130
चालो ए आज बधाई लेवां री 131
बधाई लेने चलो, वो नदिया के मांई 131
मैं तो गौर दर्शन कूं आई 131
नदिया बिहारी की, मो पै ये छबि 132
झूलत श्री गौरचन्द्र, पलना में माई 132
आज छठी को दिवस सुहायो 132
आज सखी री शचिनन्दन की 133
नाचत बालन संग निमाई 134
आज शची गृह विप्र पधारे 134
देखो शची तिहारो लालन, अति उत्पात 134
ठुमक ठुमक पग नचत निमाई 135
गौर हरि बनड़ा छब–गुन–धाम 135
प्रेम दिवाने मग्न सब, सुख दुःख गनत समान 136
निमाई–निताई–मिलन 136
षटभुज मूरति परम सुहावनि 137
गौर किशोर सराहि हैं भक्ति 138
निज परिकर सँग गौर महाप्रभु 138
कौ है गौर समान उदार 138

गौर हरि प्रभु नित्यानन्द	138
गौर हरी करुणा के सागर	138
पतित–उधारन गौर उदार	139
कलि–मल–त्रसित–जीन उद्धारन	139
श्री चैतन्य मातु पहिं आए (पादुका दान)	139
विहँग भोर करत रोर, जागिये निमाई	140
आरती मंगल गौर किशौर	140
दन्त–धावन	140
करहु हे गौरचन्द्र अस्नान	140
सहचर संग रंग शचीनन्दन	141
करत श्री गौरचन्द्र अस्नान	141
श्री चैतन्य महाप्रभु सुत को, करत सिंगार	141
सुन्दर आसन बैठ शचीनन्दन	142
करत सिंगार मात हरसाई	142
भोजन करत शची सुत षटरस	143
कलेऊ करावत गौर सुन्दर	143
आरती कीजै श्री गौड़ेश्वर की	143
मातु करत श्रृंगार आरती	144
मैं बलि जाऊँ	144
हरषि शची अति आदर करी	144
घृतमय मोदक बहु विध व्यंजन	144
भोजन करन बैठे पीठ पर	145
कृपानिधि धन्य गौर गुणधाम	145
नदिया नगर सुन्दर सब नागरी	145
भालि गौरा चाँदरे आरति बनि	146
साँझ समय शची साजि आरती	146
सहचर संग गौर सुन्दर को	146
ब्यारू करत प्रेम भरे	147

ब्यारू आरोगत शचीनन्दन	147
शयन भोग माता शचि लाई	147
आरती श्री गौरचन्द्र की राजै	148
श्री राधिका भाव मत्त गौराङ्ग	148
मैं बलि जाऊँ (शयन)	148
अंखियाँ उनीदी री शोभा देत	149
लेत गौराङ्ग की अङ्ग सुवास	149
करत बिहार विष्णुप्रिया सह	149
शयन करन गौराङ्ग सिधाए	149
सोई डौल झूलत हैं श्री गौर निताई (फूलडोल)	150
श्री गौरा तन चन्दन वन्दन सोहै	150
चन्दन वाटी सुरङ्ग	151
चन्दन को किये गौर सुन्दर	151
नवल वनद्वीप भुमनी पर (गर्मी)	151
विहरत गौर निताई दोऊ श्री नदिया	152
सकल गुण प्रवीण गौर सुन्दर सहचर	152
आजु अति अद्भुत फूल जु फूले	152
सोहे वर श्री शचीनन्दन चन्द	153
फूल सिंगार विहार करत हैं गौर	153
आज रथ अद्भुत एक बन्यो (रथयात्रा)	153
रथ पर राजत गोर किशोर	154
ललित नवल नवद्वीप मनोहर (वर्षा ऋतु)	154
सोहे वर गौरसुन्दर नवद्वीप	154
देखो गौर मेघ नित छायो	154
दैखो री एक गौर मेह	155
लखत शचीनन्दन मेघ बहार	155
श्री कृष्ण चैतन्य नित्यानन्द झूलैं	155
झूलत गौर सुजान नवल नव रंग	156

झूलत नवल हिंडोले दोऊ	156
झूलत नवल नवद्वीप नीप कुंज तर	156
झूलत गौर सुन्दर	157
फूल झुलन में गौर गदाधर झूले	157
झूलत गौर निताई हिंडौरे	157
रास मंडल बने, नृत्य नीकी बनी	157
गौर सुन्दर सुघर रास मण्डल लसत	158
नदिया इन्दु करूणासिन्धु	158
श्रीवास आँगन अद्‌भुत रास	159
गौर सुन्दर नाचत है	159
खिचरी जेंवत श्री गौरहरी	160
सुन्दर समय शिशिर सोहावन (सर्दी)	160
जय जय श्रीकृष्ण चैतन्य चन्द्र (बसन्त)	160
बसन्त देखोरी नयन	161
गौरचन्द्र वर देत हरष नव बसन्त	161
मधु रितु नवद्वीप बिहरत	161
विलसे बसन्त लसत गुन गण	161
जूट लटक चन्द्रक चटकारे सिर घुँघरारे बार	162
खेलत फाग नागर गौर गोपाल	162
जग में शोर परोरी, गौर हरी	163
ऐसे रंग होली खेले गौर	163
एहो गौर सुन्दर वर खेलत होरी	163
खेलन होरी बनि आई तरूणि	164
देखो सुन्दर गौर नगर नदिया में खेलत है बन होरी	164
खेलत गौर प्रेम भरे होरी	164
सुनो ध्यान धर गौरहरी प्रभु	165
धन धन कृपा की खान हैं श्री गौर	165
दीनबन्धु शरणागत वत्सल	166

हिलमिल के प्यारी गौरहरी के गुण गाइये	167
धन धन महाप्रभु दातार जनको	167
गौर–चरण ही इष्ट हमारे	167
छिन छिन गौर–चरण–रज–वन्दे	168
गौर चरण तज अनत न जाऊँ	168
मोहन साँचे गौर ढरे	169
श्री चैतन्य बनै निरवाहे	169
गौरकिशोर चोर चित मेरे	169
जयति जयति श्री शचि किशोर	170
लाज लगावत भाल तिलक कों	170
कुल कलंक चैतन्य उपासिन	170
श्रीचैतन्य नाम गुन गौरी	170
छाँड भटक मन त्याग चपलता	171
रे भज शचीनंद चैतन्य	171
श्री चैतन्य उपासन मोरे	171
श्री चैतन्य नाम धन मेरे	171
जैजै गौरकिशोर मनोहर	172
गौरचन्द्र नख चन्द्रिका मो उर	172
गौर कृष्ण, करुणामय	172
गौर किशोर नव, आनन्द वन्दे	173
प्रभुवर प्रभाकर नख मणी अनुदित	173
बदन अम्बुज मन्द मुसकान	173
गौर किशोर चोर मो मन को	174
जय जय श्री गौर निताई चरण रज	174
गौर निताई हमारे स्वामी	175
श्रीगौराङ्ग किशोरी को नित्य बिहार	175
मेरी गति तुम ही श्रीगौराङ्ग किशोरी	175
रोम रोम रसना जो होती	176

जै गौरा जै गौरा गौरा जय गौरा जय श्री गौरा 176
हरे हरे प्रचुरन जग के ऊपर 176
सुमरन करो श्रीशचीनन्दन कौ 176
जियो जियो मेरे मन गौरा चोरा 177
जय जय नित्यानन्द चैतन्य परम उदार 178
महाप्रभु तुम हो परम उदार 178
रस भूषित गौराङ्ग प्रेम बपु उज्ज्वल 178
गौर रूप को लखा नहीं तो 178
प्रेम पान छक छकन मत्त 178
श्री चैतन्य दयानिधि धीर 178
जय नित्यानन्द चैतन्य परम दयाल 179
राधा भाव काँति रति धरि कै 179
थातै थातै गंभीर गर्जन 180
कृष्ण चैतन्य ब्रह्मण्य आनन्दघन 180
जय शची नन्दन त्रिभुवन वन्दन 181
वन्दे श्रीचैतन्य नित्यानन्द 181
श्री महाप्रभु चैतन्य कलि अवतार 181
नाचत नव गौर चन्द्र गावत कतो भक्त सङ्ग 182
हम तो श्री गौराङ्ग उपासी 182
हरि हरि बोलत फिरि फिरि डोलत रहत त्रिभङ्ग 183
तुम मत देखो गौर हरि 183
श्रीनित्यानन्द कृष्ण चैतन्य की भक्ति 183
गोपिन के अनुराग आगे आप हारे श्याम 183
आवे कबहूँ प्रेम हेम पिंडवत तन होत 184
कृष्ण चैतन्य नाम जगत प्रगट भयो 184
प्रभो गौरांग गुणाकर ईश 185
जब से शची सुबन निहारो 185
अरि मति गौर निहारो री 185

तुम बिन कौन हमारो, महाप्रभु 185
हे प्रभु गौर कृपा अब करिये 186
वन्दौं श्री गौरचन्द्र प्रेम भक्ति दानी 186
गौर चन्द्र उदार जै जै चन्द्र उदार 186
रे मन गौर गौर नित गइये 187
सुनिये मेरी पुकार गौर चन्द्र सुखकारी 187
जो पै नहिं गौर चन्द्र जग आते 188
दीनन के हित अवतार हरी, गौराङ्ग तुम्हारी जय होवे 188
नदिया वासी गौर किशोर, हरि हरि नाम लुटाने वाले 189
कृष्ण विरह प्रभु वन वन डोले खग मृग कृष्ण सब बोले 190
हमारे मन भाय शचीजू को छैया 190
जय गौर कृष्ण चैतन्य जय षड् भुजधारी 190
परम शुभ नायक प्रभु परकाश भये 192
नव गौर किशोर हरे। नवद्वीप नित विहरे 192
चरन कंज मंजु पर नवनागरी मन भोरी 192
श्रीचैतन्याद्वैत नित्यानन्द प्रभु पतित पावन अवतार 193
जाति पाति धरम करम कुल के आचार 193
श्री गौरचन्द्र आनन्द कन्द, अतुल गुण प्रचारी 194
कंचन कंज मंजु नैन युगल खंजन सोहे 194
आज सुन्दर सुघड़ गौर नागर लसत 194
रत्न सिंहासन बैठे गौर द्विजराज राजे 194
गौर किशोर चोर चितवन को 195
प्रगटे श्री गौरचन्द्र करुणैक सिंधु 195
द्विज कुल मण्डल श्रीशची नन्दन 195
गौर सुन्दर कमल नैन मधुर 196
गौर किशोर मुसकी मोर जगतीत चोर 196
गौर सुन्दर शोभा के सदन मदन कदन 196
कहारी करूँ मेरो मन हर लीनो, सुन्दर नदिया बिहारी 197

सुन्दर गौर किशोर दयाल 197
जै जै विश्वंभर श्री मद् द्विज कुल मण्डन शचीनन्दन वर 197
देखो सखी अद्भुत गौर किशोर 197
कृपामय गौर सुंदर अभिराम शरनागत सुखधाम 198
हे प्रभु गौर सुन्दर नागर गुण आगर करुणाकर यह बार 198
हरि शचीनन्दन वैष्णव जीवन 198
देखो बर गौर सुंदर मनमथन मन मोहे 198
सुंदर गौर हरि मौ मन लीनो चोर करी 199
श्री नवद्वीप कलप तरु तल रमनीय 199
उदित सहगण गौर द्विजराज राजे 200
जय गौर गोविन्द चन्द वृन्द इव प्रकाश 200
चरन अरविन्द आनन्द वन्दे 201
जै जै जै श्री शचीकिशोर 201
जै जै प्रभु चैतन्य चंद जै, जै जै नित्यानन्द 201
जिन कृष्ण भये गौरांग प्रभु, भाव राधिका लोनौरी 201
कैसे कलि के जीव ये तरते 202
जय जय श्री चैतन्य परम कृपाल 202
जै जै श्री चैतन्य मनोहर नाम 202
जय श्री चैतन्य वेद वचन प्रति पाल्यौ 202
जै जै श्री कृष्ण चैतन्य है अवतरे 203
जै श्री चैतन्य परम सुख रास 203
जय शचिनंदन, जय जगवंदन 203
जै जै श्री चैतन्य कृपाल 204
श्री चैतन्य पद पंकज भजो रे 204
श्री चैतन्य महाप्रभु गाइये 204
भजि भजि रे श्रीराधागोविंद, मदनमोहन गोपीनाथ प्यारे 205
हम तो श्री चैतन्य उपासी 205
मंगल जय श्री गौर किशोर 205

गौर–हरि गौर–हरि भजत भज भागवत	205
विधिना गौरचन्द्र सौं नातो	206
भई ढीठ सब ईठ पीठ दई, लई जगत उपहास	206
निशिदिन इहै सोच मेरे उर	206
आजु मैं गौरचन्द्र मुख देख्यों	206
अद्‌भुत एक देखे मैं आज	207
हरि हरि कौन कृपा रस एह	207
जय जय शची कुँवर विश्वंभर नागर वर	207
जब तें देख्यों मैं गौर किशोर	208
जै जै नदिया नगर बिहारी	208
जयति जय गौरदेव, नमो नमो बार बार	208
श्री चैतन्य चन्द्र कृपालु भज मन, कठिन कलि कल्मष हरं	209
श्रवण सकल सुखदायक, श्री द्विजनायक हे	209
अधमन के हित आये गौरा, पापिन के हित आये	210
वन्दौं गौर प्रभु पद पावन	210
आयो कलि पावन हरि गौर, सुनायो नाम हरि हरि बोल	210
सौर नव गौर चन्द्र, नागर बनवारी	211
भजो रे मन गौरचन्द, पतित वृन्द तारन	212
अब तो हरी नाम लौ लागी	212
माई म्हारे महाप्रभुजी को संग	212
जय जय श्री चैतन्य महाप्रभु, नित्यानंद चंद रस रूप	213
जय जय जय श्री गौरचन्द, नदिया बिहारी	213
श्री हरिनाम प्रचार करो	213
गृह–त्याग करने वाले, नदिया न तुम भुलाना	214
रे मन गौर–चरण चित दीजै	214
कृपा कब करिहौं गौर किशोर	214
जे जन गौर–शरण में आवै	214
श्री चैतन्य अनुग्रह कीजै	215

शरणै आयो गौर निताई	215
श्री चैतन्य-चरण चित दीजै	215
थे गौरहरी-गुण गावो जी	215
साँचौ गौरहरी सौं नातो	216
जय जय नित्यानन्द दयाल	216
जय अद्वैताचारज प्यारे	217
जय जय जय श्री रूप गुंसाई	217
जय गोस्वामी सनातन प्यारे	217
जयति सनातन जयति गुंसाई	218
देखो जी ए नन्द दुलारा, कैसो रूप बनाया है	218
जय जय जय श्री गोपाल गुसाई	218
जय जय जयति भट्ट्ट गोपाल	219
जय जय चैतन्य-भक्त, लोकनाथ प्यारे	219
जय जय लोकनाथ गोस्वामी	219
सखी जगन्नाथ के द्वार, आज बधाई है	219
वैष्णव - सेवक दीन निमाई	220
कृष्ण-प्रेम-उन्मत्त निमाई	220
संकीर्त्तन श्रीगौर करावें	221
रामानन्द राय रस-खान	221
गौर सुन्दर तुम्हारा रूप, हम किससे मिला लेवें	221
देखो गौर रूप अवतार	222
श्रवण सुनो गौर रूप उदार	222
निरख मन नचत गौरांग, हरी हरी बोले	222
श्री गौरांग प्राण पियारा, मत होय दृगन से न्यारा	222
नमो नमो जय श्री चैतन्य	223
रे मन गौर चरन चित दीजै	223
शरण गहि लीजै गौर निताई	223
कृपा कब करिहौ गौर किशोर	223

ऐसौ कौन अनुग्रह कीनो	224
तुम तजि कौन शरण मैं जाऊँ	224
जय जय जय श्री गौर निताई	224
शरणै आयो गौर निताई	224
जे जन गौर शरन मैं आवे	224
श्री चैतन्य अनुग्रह कीजे	225
धनि धनि नदिया नगर निवासी	225
महिमा नदिया नगर अपार	225
जय जय जय श्री नदिया–चंद	225
मन रे गौर शरनै आउ	225
श्री चैतन्य–चरण चित दीजै	226
गौर प्रभु निज भक्तन कौं (अष्ट शिक्षा)	226
जय जग जननी भव भय हरनी (श्री विष्णुप्रिया)	226
जय श्री नित्यानंद आनंद कन्द, भक्त भूषण चरणारविन्द	227
आप बलदेव सदा वारुणी (नित्यानन्द)	227
नित्यानंद भक्ति–रस दानी, करिये वेगि निवेरो	228
जय नित्यानंद चन्द, सकल सुखन संपद पद	228
श्री नित्यानंद चन्द, आनन्द कन्द	228
जै नित्यानंद सुरनर वन्दित	229
मोहि श्री नित्यानन्द मिले	229
बजत आज आनन्द बधाई	229
राजत अद्वैत प्रभुवर, आचार्य भक्तिधर	230
बजत बधाई शान्तिपुर में प्रगट भये अद्वैत प्रभु वर	230
जै श्री गदाधर पण्डित गुसाँई, जग मण्डल तब यश छाई	231
पण्डित वर श्री गुसाँई गदाधर, आदर करि करि वन्दे	231
वंदे श्रीवास निवास नदियापुर, कीर्त्तनालय सुख धाम	231
'सनातन' 'रूप' सा त्यागी (षट गोस्वमी)	231
जय गुणमंजरी गुनन सुखानी (गोपालभट्ट गोस्वामी)	232

जो कलि लोक शरीर न धारत	232
श्री रूप सनातन सुन्दर मूरत, कब देखों यह नैनन	232
जै जै मेरे प्राण सनातन रूप	232
साधु-सिरोमनि रूप सनातन	233
जय जय रूप महारस सागर	233
जो कलि रूप शरीर न धारत	233
भक्ति रस रूप, राधाकृष्ण-रस रूप पद रचना के रूप	234
जय जय जय श्री जीव गुसाँई	234
राधा दामोदर-पद-मधुकर, जीव गुसाँई करुणा आगर	234
फागुण शुक्ल पूर्णमासी शुभ, संध्या बहु सुखदाई	235
मंगल गावो ए, मंगल गावो ए, आली.....	235
माई मैं तो लाल निरखबे आई	235
बदरिया गौड देश तै आई	236
क्या सोच रचा यह चरित चपल चित चोर (सम्पूर्ण चरित्र)	236
हरि बोलि हरि बोलि प्यारी रसना	241
रंग ले प्यारे रंग ले चोला गौर हरि रंग लाये हैं	242
हरी कीर्त्तन गंगा यमुना सो, बढ़ कर सावन धारा	243
जग को प्रेम लुटाने वाले एक नजर इस ओर करो	243
हे गौर गुणाकर प्रेम निधे, एक प्रेम की बूंद दया कर दो	244
करुणा के आगार गौर हरी	244
मेरे गोर गोपाल जय जय गौर हरी	245
तेरे अरुण मृदुल युग चरणों पर बलिहार गोरा प्यारे	246
चतुर अति शचिनन्दन चित् चोर	246
भजो रे मन शचि नन्दन सुकुमार	247
ग्रहण करो नवदीप-बिहारी	247
मैं तो दासी हूँ शचि सुत की	248
नृत्य करत नवद्वीप में गोरा	248
जब ते गौर-दास कहलायो	249

दर्शन देते जाना गौरा 249
हमारे गौर कृष्ण गुणधाम 249
महाप्रभु! यह कैसो रूप तिहारो 250
मैया! दे मोहे आज विदाई (संन्यास) 250
शचिनन्दन नदिया बिहारी महाप्रभु 251
प्रेम की ज्योति जलाने वाले, गौर हरि जय गौर हरि 251
हे शचीनन्दन! हे गौर हरी! 251
गौर चरन की आश हमारे 252
गौर हरि अवतार है नीको 252
बन्दों गौर हरि पद पंकज 253
कलि मल नासक प्रेम प्रकाशन गौर हरि के चरण 253
दर्शन गौर हरि मन मोहन, त्रिभुवन जन सुखदाई है 254
भारत में भक्ति प्रेमानन्द रस बरषा दिया शचि सुत प्यारे ने 255
श्री गौर हरि शचि नन्दन, तुमको लाखों प्रणाम-2 255
श्री गौर हरि है विनय यही भव सागर पार लगावै 256
शची के दुलारे की, विष्णुप्रिया प्यारे की 257
गौर जिनका नाम है, नदिया जिनका धाम है 257
महाप्रभु संकीर्त्तन राजे श्रीवास के अंगना 258
महाप्रभु! कौन शरण अब जाऊँ 258
नमामिगौर सुन्दरम्, मुखारविन्द मोहनम् 258
आरती नदिया बिहारी की 259
जय जय गौर हरी 259
गौरचन्द की आरती बनी 260
आरती गौर किशोर की कीजै 260
जय जय गौरहरी, प्रभु जय जय गौरहरी (आरती) 261
पिय प्यारी के प्यारे हमारे गुरु 261
हमारे गुरु सब विधि पूरण काम 262
चाहो जो करो सोई, मैं तो हो गई सतगुरु तेरी 262

अति कठिन कर्म के बन्धन से छुड़वा दिया सतगुरु प्यारे ने	263
हरि मिलने का मारग प्यारे, गुरु बिन हाथ न आवेगा	263
जो जन सतगुरु चरण कमल में, निज अनुराग बढ़ावेंगे	263
कैसे आगे बतादो अब तो कुँज बिहारी लाल	264
कोई क्या करेगा रे मैं तो सद्गुरु का दीवाना	264
जन्मदिन उन्हीं का मनाने चले हैं (गुरु)	265
बधाई है बधाई है (गुरु)	265
श्री सतगुरु हुए प्रगट, बधाई है बधाई है	266
सब मिल आवोजी आवो, हिल मिल जन्म बधाई गावो	266
वन्दौ रूप चरण सुखदायी	267
खेलत नाम की होरी गौर हरी	267
जय जय रूप गौर गुण गायक, गौर सुधा वर्षणकारी	267
गावो मंगल मोद बधाई, भूतल प्रकटे आज निताई	268
निताई नाम जपा करो, गौर प्रेम रस पिया करो	269
आओ आओ नाम हरि के मेरी रसना पर आओ	269
निज देश में, जिस भेष में, परदेस में रहो	270
महोत्सव श्री हरिदास गमन को , कर कीर्तन पाये गौर चरन को	270
सियाजु के अरुनारे दोऊ तरुवा। मानहु अनुरागिन के घरवा	271
हरि-हरि बोल हरि-हरि बोल, रसना निशिदिन हरि-हरि बोल	271
सब परिकर संग गौर चन्द्र प्रभु (चौसठ महन्त भोग)	272
श्री राधारमण कृपाल, भज मन श्री राधे	272
नदिया में अमृत बरसेरी-नदिया में	273
रुनझुन नूपुर बाजे रे	274
अनोखो ही लाला जायो री, तेरी कूंख को धन्य री माई	275
आज गौर हरि की होरी रे रसिया	275



श्री राधागोविन्दाय नमः

जयगौर

श्री गुरुदेवाष्टकम्–श्रीमद्विश्वनाथ चक्रवर्ति ठक्कुर विरचित

संसार–दावानल–लीढ़ लोक, त्राणाय कारूण्य–घनाघनत्वम्।
प्राप्तस्य कल्याण–गुणार्णवस्य, वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्॥ 1॥

महा प्रभोः कीर्तन–नृत्य–गीत, वादित्र–माद्यन्मनसो रसेन।
रोमाञ्च–कम्पाश्रु–तरङ्गभाजो, वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्॥ 2॥

श्री विग्रहाराधन–नित्य–नाना–श्रृङ्गार–तन्मन्दिर–मातर्ज्जनादौ।
युक्तस्य भक्तांश्च नियुञ्जतोऽपि, वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्॥ 3॥

चतुर्विध–श्री भगवत्–प्रसाद, स्वाद्वन्न–तृप्तान् हरिभक्त–सङ्गान्।
कृत्वैव तृप्तिं भजतः सदैव वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्॥ 4॥

श्री राधिका–माधवयोरपार, माधुर्य–लीला–गुण–रूप–नाम्नाम्।
प्रतिक्षणा–स्वादन–लोलुपस्य वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्॥ 5॥

निकुञ्ज–यूनो रति–केलि सिद्ध्यै या यालिभिर्युक्तिरपेक्षणीया।
तत्राति–दाक्ष्यादति–वल्लभस्य वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्॥ 6॥

साक्षाद्धरित्वेन समस्त शास्त्रै, रूक्तस्तथा भाव्यत एव सद्भिः।
किन्तु प्रभोर्यः प्रिय एव तस्य वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्॥ 7॥

यस्य प्रसादाद् भगवत्प्रसादोः यस्याप्रसादान्न गतिः कुतोऽपि।
ध्यायंस्तुवंस्तस्य यशस्त्रिसन्ध्यं, वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्॥ 8॥

श्रीमद् गुरोरष्टकमेतदुच्चै–ब्राह्मे मुहूर्ते पठति प्रयत्नात्।
यस्तेन–वृन्दावन–नाथ–साक्षात्–सेवैव लभ्भा जनुषोऽन्त एव॥ 9॥

श्रद्धा प्रणति

श्री शचीतनयाष्टकम्

उज्ज्वल–वरण–गौर–वर–देहं विलसित निरवधि भावविदेहम्।
त्रिभुवन–पावन–कृपायालेशं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम्।। 1 ।।

गद् गद्–अन्तर–भावविकारं दुर्जन–तर्जन नाद विशालम्।
भवभय–भञ्जन–कारण–करूणं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम्।। 2 ।।

अरूणाम्बरधर–चारू–कपोलं इन्दु–विनिन्दित नखचय रूचिरम्।
जल्पित निजगुण–नाम–विनोदं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम्।। 3 ।।

विगलित–नयन–कमल जलधारं भूषण नवरस भावविकारम्।
गति अति मन्थर नृत्य विलासं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम्।। 4 ।।

चञ्चल–चारू–चरण–गति रूचिरं मञ्जीर–रञ्जित–पदयुग–मधुरम्।
चन्द्रविनिन्दित–शीतल–वदनं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम्।। 5 ।।

धृत–कटि–डोर–कमण्डलु–दण्डं दिव्य–कलेवर–मुण्डित–मुण्डम्।
दुर्ज्जन–कल्मष–खण्डन–दण्डं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम्।। 6 ।।

भूषण–भूरज–अलका–वलितं कम्पित बिम्बाधरवर–रूचिरम्।
मलयज–विरचित–उज्ज्वल तिलक तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम्।। 7 ।।

निन्दित–अरूण–कमल–दल नयनं आजानुलम्बित–श्रीभुजयुगलम्।
कलेवर–कैशोर–नर्तक–वेशं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम्।। 8 ।।

– सार्वभोम भट्टाचार्य कृत

गुरुवन्दनाष्टक

जय गुरुशरणम्, जयगुरु शरणम्।
प्रणमामि सदा गुरु पाद पदम्॥ (1)

श्री तिलकभाल, उर तुलसीमाल।
यह रूप प्रभा सुन्दर अनुपम॥ (2) जयगुरु

भव तारण कारण दिव्य वपुम।
धृत मङ्गल रूप सरस मधुरम॥ (3) जयगुरु

गुरु पद नख ज्योति शुभ्रभुम।
निजजन उर अन्तर तमहरणम्॥ (4) जयगुरु

जन शोक मोहन भय दु:ख शमनम्।
त्रयताप विनाशन अघ हरणम्॥ (5) जयगुरु

हरि नाम प्रदायक भक्ति प्रदम।
हरि लीला गायक मधुर परम॥ (6) जयगुरु

वर्षतनयनन युग रस मधुरम।
उरदर्शत रूप युगल अनुपम॥ (7) जयगुरु

वन्दत केलि युगपद मधुरम।
प्रणमामि सदा गुरु (पादपदम्)॥ (8) जयगुरु

श्री नित्यानन्दाष्टकम्

श्रीमद् वृन्दावनदास ठक्कुर विरचित

शरच्चन्द्र–भ्रान्तिं स्फुरदमल–कान्तिं गज गतिं
हरि प्रेमोन्मत्तं धृत–परम–सत्त्वं स्मित मुखम्।
सदा घूर्णन्नेत्रं कर–कलित–वेत्रं कलिभिदं
भजे नित्यानन्दं भजन–तरू–कन्दं निरवधि॥ 1 ॥

रसानामागारं स्वजनगण–सर्वस्वमतुलं
तदीयैक–प्राणप्रतिम–वसुधा–जाह्नवा–पतिम्।
सदा प्रेमोन्मादं परम विदितं मन्द मनसां
भजे नित्यानन्दं भजन–तरू–कन्दं निरवधि॥ 2 ॥

शचीसूनु–प्रेष्ठं निखिल–जगदिष्टं सुख मयं
कलौ कज्जज्जीवोद्धरण–करणोद्दाम–करूणम्।
हरेराख्यानाद्वा भव–जलधि गर्वोन्नति–हरं
भजे नित्यानन्दं भजन–तरू–कन्दं निरवधि॥ 3 ॥

अये भ्रातर्नृणां कलि–कलुषिणां किन्नु भविता
तथा प्रायश्चित्तं रचय यदनायासत इमे।
व्रजन्ति त्वामित्थं सद भगवता मंत्रयति यो
भजे नित्यानन्दं भजन–तरू–कन्दं निरवधि॥ 4 ॥

यथेष्टं रे भ्रात:! कुरू हरिहरि–ध्वानमनिशं
ततो व: संसाराम्बुधि–तरण–दायो मयि लगेत्।
इदं बाहु–स्फोटैरटति रटयन् य: प्रतिगृहं
भजे नित्यानन्दं भजन–तरू–कन्दं निरवधि॥ 5 ॥

बलात् संसाराम्भोनिधि–हरण–कुम्भोद्भव महो
सतांश्रेय: सिन्धून्नति–कुमुद–बन्धुं समुदितम्।

खल श्रेणी–स्फूर्जत्तिमिर–हर–सूर्य–प्रभमहं
भजे नित्यानन्दं भजन–तरू–कन्दं निरवधि ।। 6 ।।

नटन्तं गायन्तं हरि मनुवदन्तं पथि पथि
व्रजन्त पश्यन्तं स्वमपि नदयन्तं जनगणम् ।
प्रकुर्वन्तं सन्तं सकरूण–दृगन्त: प्रकलनाद्–
भजे नित्यानन्दं भजन–तरू–कन्दं निरवधि ।। 7 ।।

सुबिभ्राणं भ्रातु: कर–सरसिजं कोमल तरं
मिथो वक्त्रालोकोच्छलित–परमानन्दहृदयम् ।
भ्रमन्तं माधुर्यैरहह ! मदयन्तं पुरजनान्
भजे नित्यानन्दं भजन–तरू–कन्दं निरवधि ।। 8 ।।

रसानामाधारं रसिक–वर–सद्वैष्णव–धनं
रसागारं सारं पतित–ततितारं–स्मरणत: ।
परं नित्यानन्दाष्टकमिदमपूर्व पठति य–
स्तदंघ्रिद्वन्द्वाब्जं स्फुरतु नितरां तस्य हृदये ।। 9 ।।

****

श्री अद्वैत नमस्तुभ्यं कलिजन–कृपानिधे ।
गौर प्रेम–प्रदानाय श्रीसीतापतये नम: ।।

गदाधर महं वन्दे माधवाचार्यनन्दनम् ।
महाभाव स्वरूपं श्री चैतन्याभिन्न रूपिणम् ।।

प्रणमामि श्री श्री वासं तमाद्यं पण्डितं मुदा
श्री गौराङ्ग–कृपा पात्रं कीर्तनानन्द–मानसम् ।।

श्री षड् गोस्वाम्यष्टकम्

श्री श्रीनिवासाचार्य प्रभु विरचित

कृष्णोन्कीर्तन–गान–नर्तन–परौ प्रेमामृताम्भोनिधी
धीराधीरजन–प्रियौ प्रिय करौ निर्मत्सरौ पूजितौ।
श्री चैतन्य–कृपाभरौ भुवि भुवौ भारावहन्तारकौ
वन्दे रूप–सनातनौ रघुयुगौ श्री जीव–गोपालकौ ।। 1 ।।

नाना शास्त्र–विचारणैक–निपुणौ सद्धर्म–संस्थापकौ
लोकानां हितकारिणौ त्रिभुवने मान्यौ शरण्याकरौ।
राधाकृष्ण–पदारविन्द–भजनानन्देन मत्तालिकौ
वन्दे रूप–सनातनौ रघुयुगौ श्री जीव–गोपालकौ ।। 2 ।।

श्री गौराङ्ग–गुणानुवर्णन–विधौ श्रद्धा–समृद्ध्यन्वितौ
पापोताप–निकृन्तनौ तनुभृतां गोविन्द–गानामृतैः।
आनन्दाबुधि–वर्धनैक–निपुणौ कैवल्य–निस्तारकौ
वन्दे रूप–सनातनौ रघुयुगौ श्री जीव–गोपालकौ ।। 3 ।।

त्यक्त्वा तूर्णमशेष–मण्डलपति–श्रेणीं सदा तुच्छवत्
भूत्वा दीन–गणेशकौ करूणया कौपीन–कन्थाश्रितौ
गोपी भाव–रसामृताब्धि–लहरी–कल्लोल–मग्नौ मुहु–
वन्दे रूप–सनातनौ रघुयुगौ श्री जीव–गोपालकौ ।। 4 ।।

कूजत्–कोकिल–हंस–सारस–गणाकीर्णे मयूराकुले
नाना रत्न–निबद्ध–मूल विटप–श्रीयुक्त वृन्दावने
राधाकृष्णमहर्निशं प्रभजतौ जीवार्थदौ यौ मुदा
वन्दे रूप–सनातनौ रघुयुगौ श्री जीव–गोपालकौ ।। 5 ।।

संख्या पूर्वक–नामगाननतिभिः कालावसानी कृतौ
निद्राहार–विहारकादिविजितौ चात्यन्त दीनौ च यौ।

राधाकृष्ण–गुणस्मृतेर्मधुरिमानन्देन सम्मोहितौ
वन्दे रूप–सनातनौ रघुयुगौ श्री जीव–गोपालकौ ।। 6 ।।

राधाकुण्ड तटे कलिन्द–तनया–तीरे च वंशीवटे
प्रेमोन्माद–वशादशेष–दशया ग्रस्तौ प्रमत्तौ सदा।
गायन्तौ च कदा हरेर्गुणवरं भावाभिभूतौ मुदा
वन्दे रूप–सनातनौ रघुयुगौ श्री जीव–गोपालकौ ।। 7 ।।

हे राधे: व्रज देविके: च ललिते: हे नन्द सूनो: कुत:
श्री गोवर्धन–कल्पपादप–तले कालिन्दि वन्ये कुत:।
घोषन्ताविति सर्वतो व्रजपुरे खेदैर्महा विह्वलौ
वन्दे रूप–सनातनौ रघुयुगौ श्री जीव–गोपालकौ ।। 8 ।।

****

सहस्त्र दण्डवत् करेन लय लक्ष नाम।
दुइ सहस्त्र वैष्णवेर नित्य परणाम ।।

रात्रि दिने राधाकृष्णेर मानस सेवन।
प्रहरेक महाप्रभु चरित्र कथन ।।

तिन सन्ध्या राधाकुण्डे, अपतित स्नान।
व्रजवासी वैष्णव करे आलिंगन मान ।।

सार्द्ध सप्त प्रहर करे, भक्ति साधने।
चारि दण्ड निद्रा सहे कोन दिने ।।

******

प्रेम सुधा की वृष्टि करी प्रगटे श्री गौरहरी।
नित्यानंद पतित पावन संग निज अनुराग भरी।।

देह देह अरु गेह गेह में सुपलक अश्रु झरी।
यह निज आस पति पावत गुणमंजरी दास धरी।।

******

श्री राधाकृपाकटाक्षस्तोत्र

मुनीन्द्रवृन्दवन्दिते त्रिलोकशोकहारिणि
प्रसन्नवक्त्रपङ्कजे निकुञ्जभूविलासिनि।
ब्रजेन्द्रभानुनन्दिनि ब्रजेन्द्रसूनुसंगते
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।। 1 ।।

अशोकवृक्षवल्लरीवितानमण्डपस्थिते
प्रवालजालपल्लवप्रभारुणाण्घ्रिकोमले।
वराभयस्फुरत्करे प्रभूतसम्पदालये
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।। 2 ।।

अनङ्गरङ्गमङ्गलप्रसङ्गभंगुरभ्रु वां
सुविभ्रम ससम्भ्रमदृगन्तबाणपातनै।
निरंतरं वशीकृतप्रतीतनन्दनन्दने
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।। 3 ।।

तडितसुवर्णचम्पकप्रदीप्तगौरविग्रहे
मुखप्रभापरास्तकोटिशारदेन्दुमण्डले।
विचित्रचित्रसंचरच्चकोरशावलोचने
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।। 4 ।।

मदोन्मदातियौवने प्रमोदमानमण्डिते
प्रियानुरागरञ्जिते कलाविलासपण्डिते।
अनन्यधन्यकुञ्जराज्यकामकेलिकोविदे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।। 5 ।।

अशेषहावभावधीरहीरहारभूषिते
प्रभूतशातकुम्भ कुम्भ कुम्भि कुम्भ सुस्तनि।

प्रशस्तमन्दहास्यचूर्णपूर्णसौख्यसागरे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ।। 6 ।।

मृणालवालवल्लरीतरङ्गरङ्गदोर्लते
लताग्रलास्यलोलनीललोचनावलोकने
ललल्लुलन्मिलन्मनोज्ञमुग्धमोहनाश्रये
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ।। 7 ।।

सुवर्णमालिकाश्चित त्रिरेखकम्बुकण्ठगे
त्रिसूत्रमंगलीगुणत्रिरत्नदीप्तिदीधिते ।
सलोलनीलकुन्तले प्रसूनगुच्छगुम्फिते
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ।। 8 ।।

नितम्बबिम्बलम्बमानपुष्पमेखलागुणे–
प्रशस्तरत्नकिङ्किणीकलापमध्यमंजुले ।
करीन्द्रशुण्डदण्डिकावरोहसौभगोरूके
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ।। 9 ।।

अनेकमंत्रनादमञ्जुनूपूरारवस्खलत्–
समाजराजहंसवंशनिक्वणातिगौरवे ।
विलोलहेमवल्लरीविडम्बिचारुचक्रमे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ।। 10 ।।

अनन्तकोटिविष्णुलोकनम्रपद्मजार्चिते
हिमाद्रिजापुलोमजाविरिंचजावरप्रदे ।
अपारसिद्धिऋद्धिदिग्धसत्पदागुलीनखे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ।। 11 ।।

मखेश्वरि क्रियेश्वरि स्वधेश्वरि सुरेश्वरि
त्रिवेदभारतीश्वरि प्रमाणशासनेश्वरि ।

रमेश्वरि क्षमेश्वरि प्रमोदकाननेश्वरि
ब्रजेश्वरि व्रजाधिपे श्रीराधिके नमोऽस्तु ते ।। 12 ।।

इतीममद्भूतंस्तवं निशम्य भानुनन्दिनी
करोतु संततं जनं कृपाकटाक्षभाजनम् ।
भवेत्तदैव सञ्चितत्रिरूपकर्मनाशनं
भवेत्तदा ब्रजेन्दसूनुमण्डलप्रवेशनम् ।। 13 ।।

******

कोटि अश्वमेध एक कृष्णा नाम सम ।
जेई कहे से पाखण्डी दण्डे तार यम ।।

गंगाजल तुलसी मंजरी अनुक्षण ।
कृष्ण पाद पद्म भावि करेन समर्पण ।।

महा भाव स्वरूपा राधा ठकुराणी ।
सर्वगुण खानि कृष्ण कान्ता शिरोमवी ।।

गोविन्दा नन्दिनी राधागोविन्द मोहिनी ।
गोविन्द सर्वस्व सर्वकान्ता शिरोमणी ।

एक कृष्ण नाम करे सर्व पाप नाश ।
प्रेमेर कारण भक्ति करेन प्रकाश ।।

हेन कृष्ण नाम यदि लय बहु बार ।
तबे यदि प्रेम नेह अश्रुधार ।।

श्री कृष्णकृपाकटाक्ष

भजे ब्रजैकमंडनं समस्तपापखंडनं
स्वभक्तचित्तरञ्जन सदैव नन्दनन्दनम् ।
सुपिच्छगुच्छमस्तकं सुनादवेणुहस्तकं
अनङ्गरङ्गसागरं नमामि कृष्णनागरम् ।। 1 ।।

मनोजगर्वमोचनं विशाललोललोचनं
विधूतगोपशोचनं नमामि पद्मलोचनम् ।
करारविन्दभूधरं स्मितावलोकसुन्दरं
महेन्द्रमानदारणं नमामि कृष्णावारणम् ।। 2 ।।

कदम्बसूनुकुण्डलं सुचारुगंडमंडलं
व्रजांगनैकवल्लभं नमामि कृष्णदुर्लभम् ।
यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया
युतं सुखैकदायकं नमामि गोपनायकम् ।। 3 ।।

सदैव पादपङ्कजं मदीयमानसे निजं
दधानमुत्तमालकं नमामि नन्दबालकम् ।।
समस्तदोषशोषणं समस्तलोकपोषणं
समस्तगोपमानसं नमामि नन्दलालसम् ।। 4 ।।

भुवो भरावतारकं भवाब्धिकर्णधारकं
यशोमतीकिशोरकरं नमामि चित्तचोरकम् ।
दृगन्तकान्तभङ्गिनं सदासदालिमसङ्गिनं
दिने दिने नवं नवं नमामि नन्दसम्भवम् ।। 5 ।।

गुणाकरं सुखाकरं कृपाकरं कृपापरं
सुरद्विषन्निकन्दनं नमामि गोपनन्दनम् ।

नवीनगोपनागरं नवीनकेलिलम्पटं

नमामि मेघसुन्दरं तडित्प्रभालसत्पटम् ।। 6 ।।

समस्तगोपमोहनं हृदम्बुजैकमोदनं

नमामि कुञ्जमध्यगं प्रसन्नभानुशोभनम् ।

निकामकामदायकं दृगन्तचारुशायकं

रसालवेणुगायकं नमामि कुञ्जनायकम् ।। 7 ।।

विदग्धगोपिकामनोमनोज्ञतल्पशायिनं

नमामि कुञ्जकानने प्रवृद्धवह्निपायिनम् ।

किशोरिकान्तिरञ्जितं दृगञ्जनं सुशोभितं

गजेन्द्रमोक्षकारिणं नमामि श्रीविहारिणम् ।। 8 ।।

यदा तदा यथा तथा तथैव कृष्णसत्कथा

मया सदैव गीयतां तथा कृपा विधीयताम् ।

प्रमाणितं स्तवद्वयं पठन्ति प्रातरुत्थिता:

त एव नन्दनन्दनं मिलन्ति भावसंस्थिता: ।। 9 ।।

श्री श्री दामोदराष्टकम्

नमामीश्वरं सच्चिदानन्द – रूपं,

लसत्कुण्डलं गोकुले भ्राजमानम् ।

यशोदा – भियोलूखलाद्धावमानं,

परामृष्टमत्यततोद्रुत्य गोप्या ।। 1 ।।

रुदन्तं मुहुर्नेत्रं – युग्मं मृजन्तं,

कराम्भोज–युग्मेन सातङ्क–नेत्रम् ।

मुहु: श्वास–कम्पत्रिरेखाङ्क–कण्ठस्थित–ग्रैव

दामोदरं भक्ति बद्धम् ।। 2 ।।

इतीदृक स्व–लीलाभिरानन्द–कुण्डे,
स्वघोषं निमज्जन्तमाख्यापयन्तम्।
तदीयेशितज्ञेषु भक्तैर्जितत्वं,
पुन: प्रेमतस्तं श्वतावृत्ति वन्दे ॥ 3 ॥

वरं देव! मोक्षं न मोक्षावधिं वा,
न चान्यं वृणेऽहं वरेशादपीह।
इदन्ते वपुर्नाथ! गोपाल बालं,
सदा मे मनस्याविरास्तां किमन्यै: ॥ 4 ॥

इदन्ते मुखाम्भोजमव्यक्त – नीलैर्वृतं
कुन्तलै: स्निग्ध – रक्तैश्च गोप्या।
मुहुश्चुम्बितं बिम्ब – रक्ताधरं मे,
मनस्याविरास्तामलं लक्ष – लाभै: ॥ 5 ॥

नमो देव! दामोदरानन्त! विष्णो,
प्रसीद प्रभो! दु:ख–जालाब्धि–मग्नम्।
कृपादृष्टि – वृष्टयातिदीनं
बतानुगृहाणेश! मामज्ञमेध्यक्षि–दृश्य: ॥ 6 ॥

कुबेरात्मजौ बद्ध–मूर्त्यैव यद्वत्,
त्वया मोचितौ भक्ति भाजौ कतौ च।
तथा प्रेम–भक्ति स्वकां मे प्रयच्छ,
न मोक्षे ग्रहो मेऽस्ति दामोदरेह ॥ 7 ॥

नमस्तेऽस्तु दाम्ने स्फुरद्दीप्ति–धाम्ने,
त्वदीयोदरायाथ विश्वस्य धाम्ने।
नमो राधिकायै त्वदीयप्रियायै,
नमोऽनन्त लीलाय देवाय तुभ्यम् ॥ 8 ॥

इतीदृक स्व–लीलाभिरानन्द–कुण्डे,

स्वघोषं निमज्जन्तमाख्यापयन्तम्।

तदीयेशितज्ञेषु भक्तैर्जितत्वं,

पुनः प्रेमतस्तं श्वतावृत्ति वन्दे ॥ 3 ॥

वरं देव! मोक्षं न मोक्षावधिं वा,

न चान्यं वृणेऽहं वरेशादपीह।

इदन्ते वपुर्नाथ! गोपाल बालं,

सदा मे मनस्याविरास्तां किमन्यैः ॥ 4 ॥

इदन्ते मुखाम्भोजमव्यक्त – नीलैर्वृतं

कुन्तलैः स्निग्ध – रक्तैश्च गोप्या।

मुहुश्चुम्बितं बिम्ब – रक्ताधरं मे,

मनस्याविरास्तामलं लक्ष – लाभैः ॥ 5 ॥

नमो देव! दामोदरानन्त! विष्णो,

प्रसीद प्रभो! दुःख–जालाब्धि–मग्नम्।

कृपादृष्टि – वृष्टयातिदीनं

बतानुगृहाणेश! मामज्ञमेध्यक्षि–दृश्यः ॥ 6 ॥

कुबेरात्मजौ बद्ध–मूर्त्यैव यद्वत्,

त्वया मोचितौ भक्ति भाजौ कतौ च।

तथा प्रेम–भक्ति स्वकां मे प्रयच्छ,

न मोक्षे ग्रहो मेऽस्ति दामोदरेह ॥ 7 ॥

नमस्तेऽस्तु दाम्ने स्फुरद्दीप्ति–धाम्ने,

त्वदीयोदरायाथ विश्वस्य धाम्ने।

नमो राधिकायै त्वदीयप्रियायै,

नमोऽनन्त लीलाय देवाय तुभ्यम् ॥ 8 ॥

श्री तुलसी वन्दना

नमो नमः तुलसी कृष्ण प्रेयसी।

जे तोमर शरण तय, तार वाञ्छा पूर्ण हय,
कृपा करि कर तारे वृन्दावन वासी।

ये मोर अभिलाष, विलास कुञ्जे दियो वास,
नयने हरिब सदा युगल रूप राशी।

ये ही निवेदन धर, सखीर अनुगत कर,
सेवा अधिकार दिए कर निज दासी।

दीन 'कृष्णदास' कय, ये ही मम पूर्ण हय,
श्री राधागोविन्द प्रेम सदा ये न भाषी।

श्री मंगलगीतम्

श्री जयदेव कवि विरचित।

श्रित कमलाकुचमण्डल धृतकुण्डल ए।
कलित ललित वनमाल जय जय देव हरे ॥ 1 ॥

दिनमणि मण्डल मण्डन भवखण्डन ए।
मुनिजन मानसहंस जय जय देव हरे ॥ 2 ॥

कालिय विषधर गंजन जनरंजन ए।
यदुकुलनलिन दिनेश जय जय देव हरे ॥ 3 ॥

मधुमुरनरकविनाशन गरुड़ासन ए।
सुरकुल केलि निदान जय जय देव हरे ॥ 4 ॥

अमलकमलदल लोचन भव मोचन ए।
त्रिभुवन भुवन निधान जय जय देव हरे ।। 5 ।।

जनकसुता कृतभूषण जित दूषण ए।
समर शमित दशकण्ठ जय जय देव हरे ।। 6 ।।

अभिनव जलधर सुन्दर धृतमन्दर ए।
श्रीमुखचन्द्रचकोर जय जय देव हरे ।। 7 ।।

तव चरणे प्रणता वयमिति भावय ए।
कुरु कुशलं प्रणतेषु जय जय देव हरे ।। 8 ।।

श्री जयदेवकवेरिदं कुरुते मुदम्।
मङ्गलमुज्ज्वलगीतं, जय जय देव हरे ।। 9 ।।

******

आवो आवो गौर श्याम, मेरे मन मंदिर में आ जावो।
गहन तिमिर में फंसा हुआ हूँ, प्रेम का दीप जगा जावो ।।

जनम जनम से भटक रहा हूँ, और न मुझ को भटकावो।
जीवन सारा बीत गया प्रभु, अन्त समय तो आ जावो ।।

क्रूर, कुटिल, खल, नमक हरामी, नाथ न मुझको ठुकरावो।
पापी पामर नीच नारकी, अधम जान कर अपनावो ।।

भक्ति दाता, प्रेम दाता, प्रीति की रीति बता जावो।
रोता हूँ, रोता ही रहूँ, बस, नामामृत पिलवा जावो ।।

सूख गया तन–तरुवर तुझ बिन, प्रेम सलिल बरसा जावो।
जीवन मधुवन लहरा जाये, मधुरी बंसी बजा जावो ।।

नदिया नागर कीर्तन बिहारी, हरि हरि नाम सुना जावो।
तेरा हूँ–तेरा ही रहूँगा, कुछ तो धीर बंधा जावो ।।

हे जीवनधन प्राण पियारे, आवो गले लगा जावो।
दास ''प्रभाकर'' करुणालय प्रभू, अपनो विरद निभा जावो ।।

******

श्री श्री जीवगोस्वामीपाद विरचित्

श्री युगलाष्टक

कृष्ण प्रेयमयी राधा, राधाप्रेममयो हरिः।
जीवने निधने नित्यं, राधाकृष्णौ गतिर्मम॥ 1 ॥

कृष्णस्य द्रविणं राधा, राधाया द्रविणं हरिः।
जीवने निधने नित्यं, राधाकृष्णौ गतिर्मम॥ 2 ॥

कृष्णप्राणमयी राधा, राधाप्राणमयो हरिः।
जीवने निधने नित्यं, राधाकृष्णौ गतिर्मम॥ 3 ॥

कृष्णद्रवमयी राधा, राधाद्रवमयो हरिः।
जीवने निधने नित्यं, राधाकृष्णौ गतिर्मम॥ 4 ॥

कृष्णगृहस्थिता राधा, राधागृहस्थितो हरिः।
जीवने निधने नित्यं, राधाकृष्णौ गतिर्मम॥ 5 ॥

कृष्णचित्तस्थिता राधा, राधाचित्तस्थितो हरिः।
जीवने निधने नित्यं, राधाकृष्णौ गतिर्मम॥ 6 ॥

नीलाम्बरधरा राधा, पीताम्बरधरो हरिः।
जीवने निधने नित्यं, राधाकृष्णौ गतिर्मम॥ 7 ॥

वृन्दावनेश्वरी राधा, कृष्णौ वृन्दावनेश्वरः।
जीवने निधने नित्यं, राधाकृष्णौ गतिर्मम॥ 8 ॥

****

राधे मेरी स्वामिनी, मैं राधे की दास।
जनम जनम मोह दीजियो, युगल चरण में वास॥ 1 ॥

राधे मेरी स्वामिनी, मैं राधे की दास।
जनम जनम मोहे दीजियो, वृन्दावन में वास॥ 2 ॥

सब द्वारन कौ छांड़िके, आई तिहारे द्वार।
अहो भानु की लाडिली, टुक मेरी ओर निहार॥ 3 ॥

न धनं न जनं न सुन्दरीं, कवितां वा जगदीश कामये।
ममजन्मनि जन्मनीश्वरे, भवताद्भक्तिरऽहेतुकित्वयि॥ 4 ॥

श्रीगौड़ेश्वर सम्प्रदाय में प्रमुख सात भगवत स्वरूपों का वर्णन

कवित्त

श्रीमत गोविन्द देव दामोदर गोपीनाथ।
ठाकुर विनोदीलाल जयपुर में राजे हैं॥
राधारमण श्यामसुन्दर वास करे वृन्दावन।
मदनमोहनलालजी करौली छबि छाजें हैं॥
सात ये स्वरूप हैं अनूप सर्व विश्व बीच।
दर्शन के किये सकल पाप ताप भाजें हैं॥
कहै सरसमाधुरी सुनाय सब रसिकन को।
इनकी छवि निहारे रति काम कोटि लाजे हैं॥

******

श्रीगौड़ेश्वर सम्प्रदाय में प्रमुख गोस्वामी-पाद द्वारा सेव्य सात भगवत स्वरूपों का वर्णन

कवित्त

रूप गोस्वामीजु के ठाकुर गोविन्दलाल,
सनातन गोस्वामी के मदनमोहनलाल हैं॥
गोस्वामी लोकनाथ के ठाकुर विनोदीलाल,
जीव गोस्वामी जू के दामोदर कृपाल हैं॥

राधारमणलाल गोपालभट्ट प्रकट किये,
श्यामनन्दजू के श्यामसुन्दर दयाल हैं॥
श्री मधु गोस्वामीजी जू के सेव्य हैं श्री गोपीनाथ,
कहै सरसमाधुरी निज भक्तन प्रतिपाल हैं॥

।। श्रीराधारमणोजयति ।।

प्रथम मंगला चरण में सुमिरौं शची कुमार।
अशुभ हरण सब शुभ करण प्रणहुँ बारंबार।।

मंगलाचरण

जय जय महाप्रभु जगत वन्दन श्रीशचीनन्दन हरे।
जयाद्वैत आनंद–कन्द नित्यानन्द मनवाञ्छित करे।। 1 ।।

जय गौर राधाभावभूषित श्याम धामल उर धरे।
जय पतित पावन दु:ख नसावन दीनजन अंकन भरे।। 2 ।।

जय सकलत्राता प्रेमदाता पुलक तन अश्रुझरे।
जय कीर्तिनानन्द सिंधु निमगन सगन व्रज ते अवतरे।। 3 ।।

जय रूप सनातन जीव श्री गोपाल भट्ट रघु युगवरे।
जय वास चरणन पास माँगे मंजरी गुण अनुचरे।। 4 ।।

******

जय प्राणधन राधारमण श्रीगोपाल भटजू के लाड़िले।
जय श्यामसुन्दर अधर मुरली बजत तानन आड़िले।। 1 ।।

जय मोरमुकुट झुकोंयें बाँये पीत अंबर राजहीं।
जय मकर कुण्डल श्रवण झूमें गंड मंडल भ्राजहीं।। 2 ।।

जय बंक नयनन मधुर बयनन मंदमुसकनि मुख सजे।
जय बैजयन्तीमाल उर कटि किंकिणी कल धुनि बजे।। 3 ।।

जय कर कमल लकुटी सुरंगी नवत्रिभंगी छवि लसें।
जय चरण कमलन नूपुरन सुर मंजरी गुण मन बसे।। 4 ।।

******

जय-जय छबीली नागरी गुणआगरी श्रीराधिके।
प्रिया भामिनी अभिरामिनी मम स्वामिनी सुख साधिके ।। 1 ।।

मधुर वृन्दावन विलासिन कुंजलासिन छविभरी।
जय तड़ित गोरी नवकिशोरी श्यामरस बोरी हरी ।। 2 ।।

गुही ललितबैनी हरिन नैन पिक सुबैनी शशिमुखी।
लसि अरूणसारी छवि अपारी पियभुजाधारी सुखी ।। 3 ।।

सुखसदन लालन बदन बीरी देत लेत सुहामनी
लखि निज सखी नैनन सिरावत मंजरी गुण गामिनी ।। 4 ।।

******

श्री राधारमण हमारे मीत ।। 1 ।।
ललित त्रिभंगी श्याम सलोने कटि पहिरें पट पीत ।। 2 ।।
मुरलीधर मन हरन छबीले छके प्रिया की प्रीत ।। 3 ।।
गुणमंजरी विदित नागर वर जानत रस की रीति ।। 4 ।।

******

श्री राधारमण हमारे इष्ट ।।
प्रभु कृष्णचैतन्य युगलवर मूरत मधुर महिष्ट ।। 1 ।।

सर्वोपरि है धाम मनोहर वृन्दाविपिन वरिष्ट।
कुंजकेलि कौतुक कालिन्दी केलि करत अति मिष्ट ।। 2 ।।

मन्द पवन पुलकित पक्षी सुख पावत प्रेमाविष्ट।
लाल सयुत ललितादि ललित अलिल तन लखत रतिनिष्ट ।। 3 ।।

गावत जिनको श्रीआचारज रूप सनातन शिष्ट।
गुरुगोपाल भट्ट गोस्वामी गुणमंजरी गरिष्ट ।। 4 ।।

श्री राधारमण सलौने श्याम।
नवलकिशोर माधुरी मूरति अंग अंग अभिराम।।
श्रीवृषभान किशोरी गोरी शोभित सुन्दर वाम।
वृन्दा विपिन विलासी रस निधि गुणमंजरि सुखधाम।।

श्री राधारमण छबीले छैल।
अंग अनंग तरंग भरे हैं प्रगटत जोबन फैल।।
नवल किशोरी रूप बाग में निरखत नई नई सैल।
गुणमंजरी गुमानी दानी रोकत नागरी गैल।।

श्री राधारमण नटनागर हो।
ललित त्रिभंगी सुन्दर श्याम अति उज्ज्वल रससागर हो।।
संग सोहें अलबेली बाम जिनके नाम उजागर हो।
श्री वृन्दावन यमुना कूल वंशीबट गुण आगर हो।।

प्राणधन राधारमण रंगीले।
ललित किशोर मोर पंख धारे चंचल नैन नुकीले।।
मुरलि बजाय रिझावै प्यारी गावै गीत रसीले।
रूप उजारो शोभा सागर गुण मंजरि मन कीले।।

श्री राधारमण रसिया बाँको।
श्री वृन्दावन कुंजगलिन में रोकत डोले नाको।।
लीये लकुटी तिरछी भ्रकुटी निरखत रूप न छाको।
गुणमंजरी जोबन गुरुर भरो प्यारो लागे म्हाँको।।

।। नित्य कीर्तन के पद ।।

जागरण

जागो श्रीराधारमण रंगीले।
सखिन दरश उत्कंठा वाढ़ी वादर आये हैं पीले ।।
करो सिंगार प्राणप्यारी कौ भूषण वसन भये हैं ढीले।
रचौ हास परिहास युगल मिल गुणमंजरि मनहर चटकीले ।।

उत्थान

उठे श्री राधारमण परभात।
जागे रैन सुरत रस पागे लागे गातन गात ।।
अंजन अधर पीक पलकन की पोंछत मृदु मुसिक्यात।
उरझे उरहारन सुरझावत गुणमंजरी जंभात ।।

मंगला आरती

मंगल राधारमणलाल।
मंगलमय श्री भट्ट गुपाल ।।

मंगल आरति अति अनुपाम।
मंगलनिशि बीती अभिराम ।।

मंगल नित्य धाम वृन्दावन।
मंगल द्रुमवेली मन भावन ।।

मंगल नवलकुंज चहुँ ओर।
मंगल सुन्दर पवन झकोर ।।

मंगल वृन्दा को उपदेश।
मंगल प्रेम पुलक आवेश ।।

मंगल बोलन सब पञ्छिन की।
मंगल जुगत केलि छिन छिनकी।।

मंगल जगावन मंगल गावन।
मंगल बीन विभास बजावन।।

मंगल रोम रोम रस पागन।
मंगल अंग अंग सो लागन।।

मंगल नील पीत पट उरझन।
मंगल नखछत लागे उरजन।।

मंगल अंकित दशन कपोल।
मंगल पलकन पीक तमोल।।

मंगल अधरन अंजन अंक।
मंगल शोभित बदन मयंक।।

मंगल विथुर कुटिल अलकन की।
मंगल मृदु मुसकनि झलकन की।।

मंगल चलन नैन बानन की।
मंगल धनु भृकुटी तानन की।।

मंगल टूटन नवहारन की।
मंगल बिखरन बहु तारन की।।

मंगल कंचुकि के बँद टूटन।
मंगल नव नागरि रस लूटन।।

मंगल मिल बैठन दोऊन की।
मंगल बिछुआ नूपुर धुन की।।

मंगल जुर आवन सखियन की।
मंगल रूप लखन अँखियन की।।

मंगल गुण गुण मंजरि गावत।
मंगल युगल निरखि सचु पावत।।

मंगला आरती का श्रृंगार

श्री राधारमणलालजी के रूप में मन बिकायो।
सुन्दर घनश्याम वरन नैनन में छायौ ।। 1 ।।

फेंटा इक पेच छोर सीस पै सुहायौ।
तिरछोंही पीत वरन झालर झलकायौ ।। 2 ।।

आलस भरे नैन चैन निरखत ही पायौ।
चंद्रबदन हँसन हीर कुंडलन लुभायौ ।। 3 ।।

तैसोई पट पीत अंग सखिन ने सजायो।
मुक्तन की माल लाल चित्त ले बसायौ ।। 4 ।।

अंग अंग छवि तरंग रसिकन मन भायौ।
तनियां को तनक हेरि सब ही बिसरायौ ।। 5 ।।

वाम भाग प्रिया रूप अति ही सररायौ।
गुणमंजरी श्रीगोपाल भट्टजू बतायौ ।। 6 ।।

दंतधावन

करत श्रीराधारमण दांतन ।।
यमुना घाट मिले कुंजन में करत रसीली बातन ।।
प्यारी जिभी करत प्रिय झुकि कें निरखत छवि उर जातन ।।
कुल्ला करत किलोल प्रगट गुणमंजरि ध्यावत हातन ।।

स्नान

श्रीराधारमण करत स्नान ।।
विविध सुगंधि लगाय उबटनौ कीनों सखि सुखमान ।।
मधुर श्री जमुना जल की झारी ढालत रूचि को जान।
अंग अँगोछ धीर गुणमंजरी सिंगारत पट आन ।।

धूप आरती

अगर धूप को धूम सुहायो।
चन्दन चूर कपूर उसीरन मिलि कुंजन नव घनसो छायो।।
हेम आरती बाती बिजुरी घंटा रव गरजन मन भायो।
गुणमंजरी मोह कुहकत हैं निरख श्रीराधारमण सचु पायो।।

श्रृंगार भोग

भोग मधुर आयौ श्रृंगार पावें श्रीराधारमणलाल।
मोतीचूर मगद के लड्डू गुझिया मठरी फेनी सहार।। 1 ।।
सेव सकलपारे तिरकोना मधुर सलौने कंचन थार।
बूंदी मोहनभोग जलेबी सरस इमरती अति रूचिकार।। 2 ।।
पेड़ा पूरी खोआ कुल्हिया माखन मिश्री मेवा डार।
दही कचोरी पापर चटनी तरकारी रायतो रसाल।। 3 ।।
बेढ़ई बेसन टिकिया टेंटी कचरी लौंजी विविध अचार।
प्राणपियारी श्रीकर परसत गुणमंजरी नवस्वाद अपार।। 4 ।।

******

भोगसिंगार श्रीराधारमण आरोगत कुंजन संकेत।
अपनी प्राणप्रिया के निरखत परसत तृप्त नहीं दृगचेत।। 1 ।।
दाड़िम नारंगी आदिक फल मेवा माखन सिता समेत।
कछुक सलौने लै श्रीजमुनजल सुवरन झारी भर मुख लेत।। 2 ।।
अचमनकर श्रीमुख हस्तन पद पोंछत हैं सुन्दर पद श्वेत।
नवनागरी रहस अधरामृत चाखत कछु गुणमंजरी देत।। 3 ।।

बीरी भोग

रूपमंजरी बीड़ी लाई।
नागरपान केवड़ो कत्था मुक्ता चूनों लगाई।।
गिरी इलायची पान सुपारी लोंग कील दरसाई।
गुणमंजरी युगल मुख राची कछुक प्रिया अधिकाई।।

श्रृंगार आरती

करत आरती सखि श्रृंगार।
गोचारण दिनकर पूजन मिस भये दोऊ कुंजन अभिसार।।
श्रीवृषभान किशोरी राधारमण श्रीनंदकुमार।
नेहभरी सहचरी भावमय थाल सुरति की बातीबार।।
हँसन कपूर सुगंधित लोचन कमल उतारत निर्मल वार।
बाजत बंशी बीन सरंगी नवमंजरी मृदंग सितार।।
कंकण झंकण क्रण नूपुर की सुर झालरी भ्रमरझंकार।
सब सखी जय बलिहार करत हैं गुणमंजरी करे चमर बयार।।

श्रृंगार वर्णन

ललितश्रृंगार रमनको निरखत श्रीराधा मन मनहि सिहावै।
आरसि में प्रतिबिंब लखत पुनि अंचल ओट मृदुल मुसिक्यावै।।
नर्म विशेष विसाखा कर गहि सैनन में कछु भाव बतावै।
गुणमंजरी दुहुन छवि ऊपर वारिफेरि पीवत सचु पावै।।

******

श्रीराधारमण सिर मुकुट सोहै।
मोर चन्द्रिकनको चितचोरे जो जोहै सो मौहै।।
प्रिया ओर झुकरह्यौ प्रणय वस बरणि सके सो कोहै।
गुण मंजरी छटा निरखत ही रतिपति गर्व खसोहै।

******

निरख सखि राधारमण सिर पाग।
सूही अर्द्धभाग झुकि आई प्रकट प्रिया अनुराग।।
रतनजडित सिरपेच कलंगी तुर्रा लखत सुभाग।
मोरपंख की हलन पेच बिच गुणमंजरी मन लाग।

******

श्रीराधारमणजू चीरा पहिरो।
अरून पीतधारिन नारिन को कैसे कह मन ठहरो।।
कैसे तात रंग में तुर्रा थिर जो रहत सुनहरो।
गुणमंजरी मन मिलो न ढूंढो बूड़े रंगजु गहरो।।

******

बंधो श्रीराधारमण सिर फेंटा।
रंग गुलाबी छैल छबीलो डारत मनें अमेंठा।।
देखत तरूणी अंग सुधि नाहीं कहा माल कहांठेठा।
गुणमंजरी लखत नहीं हारै लगी रूप की पैंठा।।

******

श्रीराधारमण सीस पर कुलही।
सोहें बांकी बनत अनूपम अति शोभा को उलही।
निरखत नैन निमिख नहीं लागत मोही सुन्दर दुलही।।
गुणमंजरी गोट गोटा की नखत नैनगति भुलही।।

******

श्रीराधारमण धरी सिर टोपी।
मोतिन लगी गोखरू किरनन फूल झलक आरोपी।।
वंक भाल झुकि रही अलक छवि निरखौ है सब गोपी।
गुणमंजरी किनारी लचका लियौ नारिन चित चोपी।

******

श्रीराधारमण केसर तिलक।
देखि सखि वर भाल शोभा रह्यौ कैसो झलक।।
ललित पत्रावलि कपोलन लखि न लागे पलक।
हरि विंदी वलिगई गुणमंजरी मन किलक।।

******

श्रीराधारमण कुंडल कान।
मकर आकृत देखते ही ग्रसे मीनन यान।।
भूल मत देखै सखीरी सीख मेरी मान।
मंजरी गुण रूप सागर रसिक नागर जान।।

******

श्रीराधारमण कटाक्षन वान।
बेंधत गोपीजन मन हरणी छूटे भृकुटी कमान।।
निकसत नहीं कसकन निशि वासर ससकत हरत जु प्रान।
गुणमंजरी चुम्बक मन परसत होत दुःख की हान।।

******

श्रीराधारमण नुकीले नैन।
वेधे ब्रज जुवतिन मन माणिक कहत बने नहिं बैन।।
कल न परत पल मेरी सजनी कहा दिवस कहा रैन।
गुणमंजरी बड़े चंचल हैं अंचल सों करे सैन।।

******

श्रीराधारमण नासिका कीर।
परसत नहीं बिव मधुरेफल चुगत गोपिका धीर।।
वेसरवीज अनार कभू गहै पिये लाज कुलनीर।
गुणमंजरी चित चोंच लगी है को जानै यह पीर।।

******

बसी उर राधारमण मुसिक्यान।
नहिं भावै विध औ निषे कछु नहीं लोक कुलकान।।
पूरणमुख शशि चाँदनी निरखत दृग चकोर समजान।
कुन्दकली दशनावलि शोभा गुणमंजरी पहचान।।

******

राधारमण अधर रचि वीरी।
नयन सफल करलेहुरी आली निरखत रहो छबीरी।।
श्रीललिताजू ने मुख दीनी कैसी अधर फबीरी।
गुणमंजरी प्यारी वीरी रंग वरनै कौन कबीरी।।

******

श्रीराधारमण चिबुक चित चोरें।
ऊंची उचित सुहावनी लागे गाड़ मांहि मन वोरे।।
प्रिया हस्त परसत प्रमुदित अति बरषत रंगन थोरे।
गुणमंजरी बेंदी हीरा की लखि जियरा नहिं घोरे।।

******

श्रीराधारमण कंठकी दुलरी।
गोल गोल मोतिन की दुलरी शोभा देत अतुल री।।
जुगनी दुगनी ओप विराजत निरखि भई बाउल री।
गुणमंजरी लटकन मन अटकन चटकन मंजुल री।

******

श्रीराधारमण हिये के हार।
मोतिन पन्नन चुन्निन के सखि आछै नैन निहार।।
एकते एक धुकधुकी मिलकें कैसे देत बहार।
चमकत चहु घाते लख यातें गुणमंजरी मणिहार।।

******

श्रीराधारमणलाल को बागो।
कैसो फविरहो श्यामअंग में पीत बरन अनुरागो।।
देखन देहु मोहू कों आली छोड़ि देहु टुक आग।
निरखत नैनन वही नहिंतनक हुं गुणमंजरी मन लागो।।

******

श्रीराधारमण नौरतन वाजू।
कैसे वाहु बीच में राजे पोये रे सम काजू।।
फुंदना फंद फसे मनसुचतुर निरखत सकल समाजू।
गुणमंजरी निमिष अवलोकै पकरे चौखट वाजू।।

******

श्रीराधारमणलाल के गजरे।
मोतिन को मन हरे लेतहैं लखि छवि को अचरज रे।
शोभासिंधु श्याम के अंग में मनु आये ये वजरे।
गुणमंजरी मन थमो तहां ही धार लियो धीरज रे।।

******

श्रीराधारमणलाल कर कड़े।
छोटे छोटे रूचि रुरकीले सुबरन रतन जड़े।।
निरख अघात न जात सखी कहुँ नैना निडर अड़े।
गुणमंजरी घुंडी में घूमे मनड़े बड़े-बड़े।।

******

श्रीराधारमणलाल हथफूल।
रतनजटित मोतिन लर बहुधा धारें सुभग अमूल।।
मनहुं सखिन मन हाथ आय गये करलीये अनुकूल।
गुणमंजरी दृग कहा चलाई आपहिं रहें जु भूल।।

******

श्रीराधारमण कमलकर रेख।
लाल-लाल महँदी बिच कैसी शोभित ए सखि देख।।
अंगुलि प्रवाल वाल मन मोहै छोड़े नैन निमेख।
मंजरि गुण नख चन्द चकोरी धन्य धन्य करं लेख।।

******

श्रीराधारमण दुपट्टा छोर।
लखत खटका मिटें मनके बसे ताही ओर।।
पवन बिन फहरात सुन्दर दोऊ कंधाजोर।
मंजरीगुण कटिलपट रहौ वारों विजुरी करोर।।

******

श्रीराधारमण जू धोती धारी।
वरणकपूरी अति छवि पूरी कोर लाल सुखकारी।।
दरसे अंग रंग बरसेरी कोमल मिहीं महारी।
गुणमंजरी लाग की चुन्नट शोभा कहुँ कहारी।।

******

श्रीराधारमण काछनी काछें।
वरण विचित्र घेर अति सुन्दर निरतत घूमत आछें।।
वेगहि हरष निरखमन माहीं लखनहिं आमें पाछें।
गुणमंजरी जतनकर बांधी स्वामिन कृपा कटाछें।।

******

उरसी मुरली कुरसी राधारमण काछनी काछें।
कसरी सों खचि नहिं दुति कमरी समरी आगें पाछें।।
लेत इजार इजारें चित कों नृत्य चलत ही आछें।
मंजरी मुकट झुको या छवि लखि रूकोजु प्रिया कटाछें।।

******

श्रीराधारमण किंकिणी वाजें।
सुनत बोल जा को अति रसमय हंसन छौना लाजें।।
तार जाल मन मीन उलझिरहौ कीजे कहा अवकाजें।
गुणमंजरी जड़ाव अड़े दृग मोहत सकल समाजें।।

******

श्रीराधारमणलाल की सूथन।
पीत रंग की अंग लसी है प्रगटत शोभा नूतन।।
ब्रजनवला अवलन के चित को चोरत नारे गूथन।
गुणमंजरी हरीभई लखिकें सूचत सखियन जूथन।।

******

श्रीराधारमण जांघिया धारो।
अरूण रंग अति लसोबसौमन प्रेमछकीन सुधारो।।
चरण चरण पर धरें सखीरी नटवर रूप उजारो।
गुणमंजरी सीस पर जूरो मुरलिमनोहर प्यारो।।

******

श्रीराधामरण चरण में नूपुर।
झुमक झुमक कर बजें चलें जब श्रीवृन्दावन भू पर।।
कबहू बिना चलेहू आपही प्रगटे ललित मधुर सुर।
गुणमंजरी चरण सुखदाई वसें चित्त के ऊपर।।

******

श्रीराधारमण चरण में झांझन।
मोतिन की गहि कनक तार में चलते बजें झनाझन।।
बीच जड़ाव अड़ावजु चितको निरखत प्रातरूसांझन।
गुणमंजरी बजावत झांझन मिलि गावत रस मांझन।

******

श्रीराधारमण चरण में चूरा।
रतनजटित सुवरन को सोहै शोभा भई भरपूरा।।
सबही को मन हरे लेत है चित्तभयौ है चूरा।
गुणमंजरी मुदित लखि गावे लीये हाथ तमूरा।।

******

श्रीराधारमण लाल की गुलफ।
देख सखी अतिही शोभा भरी सुन्दरसुखमय सुलफ।।
छबि तरंग मन उड़े बबूला रूप भवन के कुलफ।
गुणमंजरी चरण चापत लखि परसे अपनी जुलफ।।

******

अरूणचरण श्रीराधारमण के।
कोमल कमल सुगंधित सीतल हरत ताप तियदृग तनमन के।।
ध्वज वज्रांकुश ललित अंक जुत भूषण वृन्दाविपन भवन के।।
गुणमंजरी नख चन्द्र चकोरी जीवन धन प्रियव्रत सखियन के।।

******

श्रीराधारमण चरण तल मेहंदी।
कैसी रची खची मो हिय में निरखो जाय अलहदी।
बसी नैन मेरे री सजनी कैसी बनी जु कहदी।
गुणमंजरी लखे याहीकों और कछू नहीं चहंदी।।

******

श्रीराधारमण चरण की चौकी।
हीरा रतन जटित सुबरन की शोभा हरत त्रिलोकी।।
सुन्दर गद्दी ऊपर राजे लखि नवग्रह गति रोकी।
छवि रंजित बंदित रसिकन की गुणमंजरी अवलोकी।।

******

श्रीराधारमण लाल की गादी।
मोती रतन जटित मखमल की झलकी रस मरजादी।।
ऊपर छत्र छबीलो मुक्ता लटकन चित अहलादी।
गुणमंजरी गुदगुदे गेंहुआ निरख प्रेम उनमादी।।

******

श्रीराधारमण मुरलिया बजावै।
कर कमलन धर अधर परस के अद्‌भुत छवि सरसावे।।
एक एक रंध्रन में न्यारे-न्यारे सुर दरसावै।
गुणमंजरी गोपालरूप हरि राधे-राधे गावै।।

******

श्रीराधारमणलाल कर छरी।
सुन्दर रतन जटित सुवरन की अद्‌भुत शोभा भरी।।
श्री हस्तन अरूणाई झलकत बरषत मांद झरी।
गुणमंजरी गैल में गोपी रोकत ही पकरी।।

******

श्रीराधारमणलाल को वट्टा।
पूरण ससि सम मणिन रह्यौ लसि प्रतिबिंबित छविअट्टा।।
प्यारीहू की छवि उजियारी दामिनी सहित दुपट्टा।
गुणमंजरी मन मुदित भयौ लखि नैनन की तह सट्टा।।

******

पीकदानी हमारे पानी।
लगे रहत श्रीबदन अधर ढिंग पियप्यारी रूचिजानी।।
चिरजियौ ये नैन जु प्यासे प्यावत छवि मुसिक्यानी।
श्रीगुणमंजरी करत सुशिक्षा समय-समय अनुमानी।।

******

श्रीराधारमण की पादुका हेरिदृग।
स्वरण हीरा रतन जटित शोभाधरन खूंटिके कमल की खिलनकू निरखमग।
चलन में शब्द अति होत है चमतकृत सुनत ही थकित श्रुति झुकति़ आवै सुपग।
गहक ले हाथ पर प्रेम सोंगाथधरा आस बहुभांतकर मंजरी गुण सुभग।।

श्री प्रियाजी को शृंगार वर्णन

नवल शृंगार निरखि राधा को लै दर्पन प्रियरमण दिखावे।
बलिहारी श्रीरंगीली छवि की कहत न बनै देखत ही आवै।।

नीली सारी कंचन तारी दामन लामन मन भरमावै।
शुभ नवरंगी कुच पचरंगी चोली चतुरमणि चित्त चुरावै।।

मोरचंद्रिका विथुरी अलकावली लली दृग मृगनैनी धाँवै।
खंजन नैनन अंजन रंजन भालतिलक बेंदी छवि पावै।।

वेसर लटकन नासा शुक चटकन करन फूलकी भावैं।
उन नवहार श्याम मणिनायक शुभदायक नवरत्न भुजा में।।

हेम नीलमणि चूड़ी कंकन मुंदरी आरसी रूप झुकावै।
कटि किंकिण पग नूपुर मृदुसुर महंदी जावक दुति सरसावै।।

जय जय धुनि सब कहत अनुचरी अतिअनुराग भरामिलि गावै।
वीरी दै नागर अधरन मे गुण मंजरी पुनि चमर दुरावै।।

******

श्रीराधारमण संग रंग में विराजें।

श्रीव्रजेन्द्रभानु राजलाड़िलीजू सोहें आज निरखत सहचरी
समाज कोटि रमा लाजें।।

विद्युत वर अंग प्रभा दमकत है सकल सभा सुन्दर घनश्याम
प्रभा सारीतन साजै।

कोटि-2 पूर्णचन्द्र शोभित हैं मुख अमंद हीर दसन हँसन
मंद प्रिय चकोर काजै।।

स्निग्ध असित केश रचित वेणी सौभाग्य देश सुन्दर रेखा
सुवेश मुक्तालर छाजै।।

चन्द्रिका की चटक भाल शोभित है बेंदी लाल वरुणी भृकुटी
रसाल दृग काजर आंजे ।।

कर्णलता टंक लास मुक्ताशुक ललितनास अधरन वीरी
विलास रसिकन सिरताजै ।।

चिवुक विन्दु मदु कुरंग लालन को बढ़ै रंगकंबुकंठ छवि
तरंग मुक्तमाल भ्राजें ।।

मोहनमाला सुचारु सोई भानुजाधार नहीं है जाको उतार
छवि सागर राजै ।

रतनन के बाजूबंद शोभित है भुज द्वन्द कंकणझंकणसुछंद
सपत्नी पराजै ।।

उरज कनक कलश हेर नागर रहे नैनभेर नाभी गंभीर फेर शोभा
अनदाजै ।

क्षीणी कटि किंकिण नव अतरौटाआछो फव बटुआ को
लखि वैभव नटुआ मन लाजै ।।

प्रीतम मन वृत्ति नटत जंघावर जानु लखन चरणकमल
ललित सुरन नूपुर सुर बाजै ।

अनबट बिछुआ विशेष छवि न कह्यो जात लेश सुमरत ही
सुख अशेष सबरे दुख भाजें ।

जावक महँदी की रचता कही नहीं जात वचन पूरण शशि
नखन जोति वृन्दावन माझें ।

गुणमंजरी चरण रेख स्वामिनी की नयन देख जीवन निज
सफल लेख बोलिये सदांजै ।।

राजभोग

श्रीराधारमण करत हैं भोजन।
बैठे नवलकुंज अलबेले भीजे रंग मनोजन।।
घूँघट ओट छबीली निरखत परसत हस्त सरोजन।
गुणमंजरी मोहन के नैना लागे जाय उरोजन।।

******

परसत रमण को सुखदानी।
बचनामृत रसना करछी सों घूँघट पट में छानी।।
बहु व्यंजन श्रवणन दोनन में मिल कपूर मुसक्यानी।
होत न तृप्ति श्याम की रसना पुनि गुणमंजरी आनी।।

******

श्रीराधारमण जमुनतट कुंज।
भोजन करत प्रिया मुख निरखत वरसत है रजपुंज।।
श्रीवृन्दादिक सखी फल लाई पावत हैं अति मंजु।
गुणमंजरी निज करन परोसत भ्रमर करत कल कुंज।।

******

उत्थापन

करत धनाश्री सुर आलापन।
प्रेमभरी सहचरी वीणा लै जानि समय उत्थापन।।
करन लगे शुक सारी चरचा निज-निज मति सुरथापन।
श्रीराधारमण जगे गुणमंजरी सुनि मृदंग मृदुथापन।।

******

उत्थापन भोग

उत्थापन भोग धरो है उज्ज्वल।
भये धूप ध्वाये श्रीकर मुख सखियन श्रीयमुनाजल।।

पावें राधारमण मनोहर मोदक मठरी नवफल।
तप्त जलेबी भुरभुरी टिकयांपनो दाल वहुघृततल।।

गुणमंजरी श्रीबृन्दा राची सरस इमरती निर्मल।
औरहु मधुर सलौनी रूचि सों चाखत सुन्दर श्यामल।।

******

औलाई के शृंगार को वर्णन

बनी है आज अनुपम झांकी।
राधारमणलालजी की सखि औलाई तनयां की।।

अंग-अंग भीजे अतरन में धारी कुलही बांकी।
गुणमंजरी हिये में बैठी चपल नैन अनियां की।

******

मेरे परत हिय में लीकें।
श्रीराधारमणलालजी की सखि रूपमाधुरी पीकें।

अंग अंग छवि कही न जाई श्री वृषभान लली के।
छकी रहों निसवासर हों संग गुणमंजरी अली के।।

******

ब्यालू भोग

श्रीराधारमण बियालू कीजे।
मैदा की पूरी अति निर्मल मोहनभोग ग्रास सँग लीजै।।

रूचिर कचौरी खस्ता टिकिया तरकारी चटपटी चटनी सों।
विविध अचार मुरब्बा भाजी पापर दाल तली बहु घी सों।।

तप्त जलेबी सरस इमरती खुरमा खजला बूँदी फैनी।
सेव सकलपारे मृदु मठरी गुझिया गूँथी नव मृगनैनी।।

छोटे मालपुआ घृत चूवत मिश्री कर ऊपर ते सोहैं।
मोदक मोतीचूर मगद के बेसन के सोंधे मनमोहैं।।

बीच बीच में बड़ा सलौने मधुर रसबड़ा फूले नीके।
खोआ खुरचन रबड़ी लच्छा बरफी पेड़ा भावत जीके।।

रचे मलाई फल बहु भाँतिन रंगरंग सुरभित सुखदाई।
कंदकपूर पाग पेठे को इलायची पागी अति मनभाई।

चीला तुरत उतारे घृत में उचित सुगंधि मिले रूचिकारी।
धेरनिमौना भर भर दौना तिरकोना तिलगिनी सुहारी।।

रचौ रायतो बथुआ बूँदी किसमिस को मीठो मनभावन।
लेओ स्वाद प्रिया मन रंजन गुणमंजरी कर कंजन पावन।।

श्री प्रिया जी को भोग

प्यारी प्रिय अधरामृत प्यावै।
ललितादिक सब सखिन संग में तन पुलकित मुसिक्यावै।।

महाभावरूपिणी श्रीश्यामा जिनको और न भावै।
गुणमंजरी निजकरन परोसत निरखत नैन सिरावै।।

।। श्री राधारमणजी के जन्मोत्सव के पद ।।

जैजै श्रीचैतन्य निधि मंगल गाइये।
सच्चिदानन्द स्वरूप सदा सुख दाइये।।

प्रेम अवधि ललित लीला अधिकाइये।
ऐसे गौरकिशोर सदा उर ध्याइये।।

ध्याइये गौरांग सुन्दर निरखि नैन सिराइये।
भजशचीनन्दन जगतवन्दन विविध ताप नसाइये।।

पतितपावन विरद जाको बड़े भागन पाइये।
'किशोरीदास' मंगलनिधि जैजै श्रीचैतन्य गाइये।।

******

जैजै श्रीगोपाल भट्टजू सर्वदा।
श्रीलकृष्णचैतन्य महाप्रभु प्रिय सदा।।

श्रीयुत रूप सनातन संग विराजहीं।
श्रीवृन्दावन मध्य रसिकनृप राजहीं।।

राजहीं जमुनापुलिन वर कुंजमंजुल अघटहीं।
नन्दसुत वृषभानुजा लीला बिवि थल प्रगटहीं।।

सिद्ध बचनतें विमुखदल प्रभु अखिल जग निस्तारहीं।
सारश्रुति श्रीभागवत मति भक्तिवर विस्तारहीं।।

******

जै जै श्री गोपाल भट्ट कुमुदनि-ससी।
उमग्यो प्रेम समुद्र क्षुद्रतृष्णा नसी।।

मेटत माया घाम नाम भीजत मसी।
श्रीवृन्दावन धाम श्यामश्यामा बसी।।

बसी वन में श्यामश्यामा अंग अंग निरखि लसी।
उदित निशिवासर सदाही हरत हैं कलि कल मसी।।
सुखद हैं भक्तन चकोरन रटतही निर्मल यसी।।

******

जै जै श्रीगोपालभट्ट रसिकनमणी।
अंग छवि लज्जित हेम प्रेमरत्नन खणीं।।

श्रीयुत रूप सनातन भ्रतन जीवनी।
प्रीतिरीति संदर्भगर्भ वाणी भणी।।

भनी वाणी प्रेमसानी जुगल सुखदानी घनी।
गौरकीर्तन मधुरनिर्तन राधिका रमणी धनी।।
करूणसिंधु अनाथबंधु कहि परत नहिं गुण गणी।।

******

जैजै श्रीगोपालभट्ट प्रिय करकली।
प्रभुकृष्ण चैतन्य कंजपद मधु अली।।

श्रीवृन्दावन कुंज मुंज रासस्थली।
दीनी राधारमण चरणसेवा भली।।

भली राधारमण सेवादई गोपीरस पली।
परम आनंद कंद साखा रसिक अभिलाषाफली।।
रूपमाधुरी पिवत अनमिष दिवस निशि दृगनाचली।।

******

जैजै श्रीगोपालभट्ट गुणमंजरी।
क्षणक्षण नव अनुराग भाव की पंजरी।।
लिये सेवा उपहार थार कर कंजरी।
पीवत रूप अनूप नैन की अंजरी।।

अंजरी भरि रूप पीवत जीवत निशिदिन संजरी।
लवंग श्रीरतिमंजरी युत वीण मिदंग मंजरी।।
सुरनमिलि गावत बजावत कोऊ नहीं जहाँ जंजरी।।

******

।। अथ बधाई ।।

जै जै जै श्रीराधारमण।
श्यामसुन्दर नवत्रिभंगी ललित वंशीवदन।।

पाग लटपटि सीस सोहै मोरचंद्रक चलन।
तिलक केशर भालबेंदी हीर कुंडल श्रवन।।

भृकुटि काम कमान खंजन नैन वांके सरन।
विथुरी अलक कपोल राजै पत्र सुन्दर रचन।।

नासिका शुक मोतिवेसर दसन दाड़िम वरन।
बिंव अधरन मधुर मुसकन चिबुक चितकी चुभन।।

कंबुग्रीवा स्कंध पटुका मुक्त-माला धरन।
केयूर कंकण नाल भुज में रक्त कमल सुकरन।।

विशालवक्ष सुवैजयंती माल पच रंगलसन।
उदर त्रिवली परन नाभि गंभीर मनकी वसन।।

पीतपट चटकील ऊपर किंकिनी की कसन।
सुनितंब ऊरू जानु सम शोभा नहीं है कवन।।

रक्त पद्म सुचरण नूपुर हंस की सी चलन।
नख चंद्रमणि की कान्ति झलमल सकल तम की हरन।।

वाम रूप अनूप भूषित वसन भूषण सबन।
प्रिया श्री वृषभानुजा नव संग घूँघट करन।।

आधीन तिन कैशोर बय परिहास सुख के बचन।
कुंजकुसमित श्री यमुनातट मधुर वृन्दाबिपिन।।

कोकिला सुखसारि सिखि अलि जुगल गुणकी कलन।
त्रिविध पवनझकोर द्रुम मकरंद की है रूरन।।

बीनमिरदंग मंजरी स्वर की सदा है भरन।
ललिता विशाखा रूप मंजरि संग रसकी दरन।।

प्रेमसों सेवा करत सो नहीं आवत वरन।
नित्य श्रीगोपालभट्ट गुणमंजरी सुख सरन।।

।। राग सारंग ।।

पूर्ण बैसाखी सखी अभिलाषी राधारमण मिलाई।
श्रीवृन्दावन राजसुहावन करें अभिषेक महाई।।

मणिमय खंभा रोपैं रंभा वंदनवार बँधाई।
शुभचंद्रातपरी के आतप ध्वज पताक फहराई।।

चौकसमुक्ता फल अनुयुक्ता कनक कुम्भ थिरकाई।
रचौ सरोवर रूचिर मनोहर स्नानवेदि ता मांई।।

दोऊ जन भेटे सुखसों बैठे नैनन में बतराई।
अभरन मोती लालन धोती पटका पाग सुहाई।।

तिय सुकुमारी झीनी सारी भूषण रूप सदांई।
कोई लिये छत्र कोई फलपत्र सु कोई चमर डुलाई।।

कोई मोरछल कोई ले उत्पल कोई घंटान बजाई।
कोई लै पंखी करत निसंखी कोई दरपण दरसाई।।

कोई झालरी कोई करतालरी सुर घड़ियालमिलाई।
कोई मिरदंग कोई मुहचंग सारंगी लहराई।।

कोई सखी बीणा परम प्रवीणा गावें सुरन उठाई।
कोई नाचत कोई पुस्तक बांचत वेदध्वनि नभ छाई।।

कोई रसमर्दन कोई उदवर्त्तन धीरे अंग लगाई।
कोई जलदारे कोई निरवारे पंचामृत अवगाई।।

कोई सर्वौषधि कोई महौषधि तिल तिल नेह बढ़ाई।
पुष्पफल रत्न गंधसंपन्न सुघट सहस्त्र झर लाई।।

आये स्नान अंगपोंछे पुनि सिंहासन बैठाई।
पीरो जामा सुभग पजामा दुपटा पाग झुकाई।

मोरमुकट सिर किंकिणी कटिधर कुंडल हार धराई।
बेंदी वेसर तिलक सुकेसर नाम मुक्त छविछाई।।

दामन प्यारी लगी किनारी मनभावन भरमाई।
सुन्दर सारी लगी जरतारी कंचुकि छबि दरसाई।।

वेणी जूड़ो कर में चूड़ो चन्द्रिका सिर चहचाई।
नथ में लटकन प्रिय मन अटकन झूमक करन भ्रमाई।।

कर पद महँदी चिबुक सुवेंदी प्रियनैना उरझाई।
विछिया नूपुर अति सुमधुरसुर जावक अति सुथराई।।

सिरपै दूर्वाधरी है अपूर्वा अंजन दृगन लगाई।
करि बहु रक्षा सखिजन दक्षा राई लवन उड़ाई।

फूलनमाल धूप अनुरूप मणिन दीपक दरसाई।
भोजन विविध सखीजन अरपें दोऊजन रूचिसों पाई।।

श्रीयमुना जल प्यावत निर्मल बीरी देत बनाई।
प्रान वारती करत आरती तन मन नैन सिराई।।

करत हैं दरसन पलकन परसन वर्ष कोटि पल जाई।
क्षणक्षण में रूचि बाढ़त है सुचि अनुपम रूप निकाई।।

श्रीगुणमंजरी बेगि कृपाकरि लीनी निकट बुलाई।
ललितकिशोरी तृषित चकोरी निरखत दृगन अँधाई।।

।। राग सारंग ।।

प्रगटे श्रीराधारमण आज।
श्रीगोपालभट्ट मन भाये सफल भये सब काज।।

वृन्दावन नागर रस सागर गुण आगर जुवराज।
जुगल रूप एक मिलि दरसे हरषे रसिक समाज।।

।। राग सारंग ।।

सखीरी आज भये मन भाये।
राधारमण सिंहासन बैठे पंचामृत में न्हाये।।

लावन्यामृत दूध धार में वारूणी दधि लपटाये।
स्नेहामृत घृत चिक्कण श्रीतन मधु माधुर्य्य चुचाये।।

निज अनुराग सिता के रस में भीजत हैं सचु पाये।
गौर अंग में श्याम रंग पट श्याम गौर दरसाये।।

भूषण भाव तिलक शोभा को अरू सौभाग्य लगाये।
लोचन कमल कटाक्षन माला क्षण क्षण में निरमाये।।

अंग सुगंधि धूपनिर धूमित कान्ति दीप छवि छाये।
रूपामृत व्यंजन अधरामृत जल पीवत न अघाये।।

मृदु मुसिक्यान पान की बीरी अद्‌भुत रंग रचाये।
प्राण वारती करत आरती अलि दृग जल ढरकाये।।

श्री ललितादिक सकल सखीजन निरखि निरखि सचु पाये।
रूपमंजरी सँग गुणमंजरी बारबार बलि जाये।।

******

लाल को कमलमुख निरखें रणिश श्रीभट्टगुसाईं प्रगटी रसरीति।
आये श्री रूप सनातन गावें मंगल गीत।।

माधुरी लता कुंज में भई भ्रमरन की भीर।
लहरें श्रीजमुनाजी की चलत मंद समीर।।

मिलि श्याम घन में दामिनी भामिनी अतिधीर।
गुणमंजरी गुण गावै बहै नैनन नीर।।

।। राग टोडी ।।

बधाई में दीजे श्रीबनवास।
तुमरे श्रीराधारमण प्रगट भये पूनो माघौ मास।।

सुनिये श्रीमत् भट्ट गुसांई मेरी यह अभिलाष।
जुगलदास के पास रहों नित गावों तव गुण रास।।

।। राग आसावरी ।।

श्री गौरचन्द्र उपदेश पाय आनन्द भरे।
तब छोड़े दक्षिण देश प्रभु अनुकूल करे।।

श्रीगोपाल भट्ट गोस्वामी श्री वृन्दा विपिन बसे।
तब भेजो अन्तर्यामी आसन माल लसे।।

पूजे श्री शालिग्राम भावन माँग पगे।
उचरें निसदिन हरिनाम अश्रू पुलकि जगे।।

तब निजकर करन सिंगार उत्कंठा जु बढ़ी।
प्रभु हे बृजराज कुमार दरसौं भानु लली।।

निरखूं रसिकन के भूप नैनन त्रास हरे।
वह ललित त्रिभंगी रूप मुरली अधर धरे।।

करूँ सेवा तुम रूचि जान उचित समय जोई।
तुम बिन नहिं आवै आन पल जुग सम होई।।

अब करो बिलम्ब न श्याम प्यारी रंग रँगे।
प्रगटो मूरति अनुपाम माधुरी अंग जगमगे।।

इत्यादिक किये प्रलाप सबनहिं जात कहैं।
तब शालकुंज ते आय प्रगटे मनहिं गहे।।

हिय प्रिया रूप कों धारि श्रीजी अति विख्यात।
सब लोकन संग निवार वे ये एकहि गात।।

भट्ट आवत जमुन न्हाय मंगल सगुन भये।
तब आये बेगिहि धाय अति आनन्द छये।।

लखो लालन रूप अनूप बन छबि छाय रही।
ये तो हैं निकुंज के भूप दृगनजल भीजि मही।।

निज सेवक गोपीनाथ घट भरि लाय धरें।
तिन बोल दिखाये नाथ लोचन रूप अरे।।

गोपी गोस्वामी बोल करै अभिषेक विधि।
बाँधी बन्दनवार अमोल केला केल निधि।।

रही ध्वज पताक फहराय पूरण कलस धरे।
घृत दीपकसु बलाय दिक बंधन जुकरे।।

भट प्रभु कटि पकरे हाथ इककर चरन छियें।
प्रभु बिलसो मेरे हाथ ऐसे कहें हियें।।

अभिषेक सनातन संख करै लै दूध दही।
घृत मधु सरकरा ससंक है मृदु अंग जही।।

श्रीरूपजू भरि भरि देत जीवजू वेद पढ़े।
श्रीरघुनाथ भट्ट प्रभु हेत लिये छत्र खड़े।।

श्रीलोकनाथ रघुनाथ करत हैं चमर सजे।
श्रीकृष्णदास के हाथ घंटा मधुर बजे॥

श्रीगोपीनाथ श्रीनिवास पंखा करत सुखी।
जहाँ नाँचें श्रीहरिदास भूगर्भादि मुखी॥

बाज़े झालर झाँझ मृदंग दुंदुभि भेरि महा।
जय जय धुनि भई इकसंग कहें बलिहार तहाँ॥

फिर प्रभु भीतर जाय पोंछत हरे हरे।
तब सिंहासन बैठाय करे सिंगार वरे॥

निज सेव्य श्रीराधा नाम तिन सिंगार रच्यौ।
तब जुगल रूप विश्राम रसिकन कों जु सच्यौ॥

रच्यौ केशर तिलक ललाट माँथे दूब धरी।
तब अंजन नैन विशाल दीनो सुभग धरी॥

तब राई नौन उतार कंकन कर बाँधे।
पहराये फूलन हार अतर छिरक साधे॥

कर धूप दीप तिहि वार भोग धरो आगे।
सीतल जमुना को वारि अरपो अनुरागे॥

दई बीरी ललित बनाय आरती करो बड़ौ।
तब सब मिल माँथो नाय स्तुति मंत्र पढ़ो॥

धरे राधारमण नाम सबन आसीस दई।
विलसौ वृन्दावन धाम करन वचन लई॥

परम उदार श्रीभट्ट गुसांई दई हैं धेनु द्विजन।
प्रभु के श्रीकरन छिवाय तिलहू दिये हैं सुजन॥

आये वर ब्रजनारि देखत भये हैं चकित।
गावें पद कंठ सुधारि श्री गोस्वामीजी को सुकृत॥

सब इकटक रहे निहार लगे नाहीं जू पलक।
भूली है देह सँवार प्रेम रह्यौ सु झलक।।

तब दिये सबन कों चीर धारत अंग भले।
दीयौ पंचामृत धीर लै निज भवन चले।।

तब नाँचे सकल स्वरूप गावत छिरकत अंग।
सब मिटी बिरह की धूप आनंद झलकत अंग।।

मिले सब गुपाल भट्ट जाइ वचन जु नहिं फुरै।
तुम यह दिन दियो दिखाय कहि कहि अश्रु ढरै।।

करें भट्ट गुसांई प्रणाम सबन के चरण परे।
यह गौर भक्त अनुपाम करूणा नहिं बिसरे।।
तब राजभोग अरपाय आरती भई सयन।
सब मिलि प्रसाद को पाय रूप छके हैं नयन।।

पूरे हैं सब मन काम सुन्दर रूप लखे।
अब नही कहीं सुखठाम और जु नाहिं चखे।।

गुणमंजरी दासन दास पंखा टहल दई।
पूरी है मन अभिलाष संका सकल गई।।

।। राग गौरी ।।

आज बधायो श्रीगोपाल के अहो हेली।
निरखो आनंदकन्द।।

मास माधौ पूर्णमासी भानुसुत को वार।
विशाखा नक्षत्र प्रगटे श्रीराधारमण सुकुमार।।

रची वेदी चौक पूरौ पूर्ण कलश धराय।
तन वितानन कदलि खंभन बन्दन माल बँधाय।।

ध्वज पताका सुहामनी रंग रंग रोपी आय।
करत कीर्तन श्रीयमुना जल घट भरलाये धाय।।

श्री सनातन रूप श्रीरघुनाथ भट्ट गुसाँई।
सुनत जीव गुसाँई धाये दास गुसाँई मन भाई।।

लोकनाथ भूगर्भ काशीश्वर मुख्य श्रीहरिदास।
और रसिकन मंडली की पूरी है मन की आस।।

करि महा अभिषेक विधि सों फूले अंग न समाय।
पीत पट पहिराय भूषण कियौ है सिंगार सुहाय।।

पाग दहिने दूब वाँये मोरपक्ष छवि देत।
कियौ कुमकुम भाल तिलक बलैया क्षनक्षन लेत।।

बाँधि रक्षा भोग दधि तिल फल करे पकवान।
आचमन दे दई बीरी आरतौ कीनो आन।।

देत सबहिं असीस मिलिकें सदा विलसो श्याम।
प्राणप्रिया समेत जुग जुग श्रीवृन्दावन धाम।।

करै नृत्यन वैष्णवन को समूह अति रसरंग।
धाये ब्रज नरनारि देखन प्रेमानन्द तरंग।।

मुदित श्री गोपालभट्ट पदमाल देत प्रसाद।
दास गुण को वास श्री बन दीजै पूजे आस।।

।। राग कान्हड़ी ।।

श्री राधारमणजी प्रगट भये सब दुःख दूर गये।
श्रीवृन्दावन बजत बधाई रसिकन मोद छये।।

श्री गोपाल भट्ट करूणाकर यह सुख सबन दये।
गुणमंजरी छबि बरनी न जाई नित अनुराग नये।।

।। राग झंझोटी ।।

बाजै आली बधाई।
शालिग्राम ते प्रगट भये ललित त्रिभंगी सुखदाई ।।

गावें मंगल गीत मंडली रसिकन की धाई।
राधारमण लखत गुणमंजरी नैनन फ़ल पाई ।।

।। राग पीलू ।।

आज बधाई कहीं बाजै हो।
देहु कृपाकर मोहि बताय सब वृन्दावन गाजै हो ।।

श्रीगोपालभट्ट गोस्वामी रसिकन के सिरताजै हो।
सेवत शालिग्राम ते आज प्रगटे श्याम बिराजै हो ।।

श्रीराधारमण नाम सुखधाम कोटि मदन लखि लाजे हो।
होय रह्यौ जु महा अभिषेक वेदध्वनि नभ छाजै हो ।।

बाजत बीन मृदंग सितार जुरे हैं सकल समाजै हो।
गुणमंजरी चितै चित मांहि सफल भये सब काजै हो ।।

।। राग काफी ।।

रंग बधाइयाँ हो श्रीगोपालभट्ट के आज।
सनातन रूप आदिक हो आये सकल रसिक समाज ।।

गावें गीत मंगल हो छाई गगन माँझ अवाज।
झाँझ मृदंग वीणा हो मिले हैं सुरन सुन्दर साज ।।

नाचत ताल सों हो मुदित मन छोड़ि के सब लाज।
छोड़ सब लाज नाचे ।। वाहवा ।।
हरद दधि चंदन राचे ।। वाहवा ।।

मोद के परे हैं खाँचे ।। वाहवा ।।
सबन को आनन्द माँचे ।। वाहवा ।।
लाल की कीरत बाँचे ।। वाहवा ।।
भाव हिय में सब साँचे ।। वाहवा ।।
चरण सेवा को जाँचे ।। वाहवा ।।
लखत छवि नैनन लाचे ।। वाहवा ।।

लखत नहीं नैन लाचें हो रखत हैं रूप मन के माँहिं।
लहत जो सुखै हो आवत मुखहिं सो कहि नाहिं ।।
राधारमण प्यारे हो बिलसो सदा कर उत्साह।
देत असीम विधि सो हों ऊँची करत निज निज बाँह ।।

बाँह जोर के बलैंया ।। वाहवा ।।
लेत है फिर फिरकैया ।। वाहवा ।।
मृदंग बाजत ततथैया ।। वाहवा ।।
श्रवण सुख को बरसैया ।। वाहवा ।।
दिये परसाद गवैया ।। वाहवा ।।
मिलो ब्रजवास बधैया ।। वाहवा ।।

।। राग झंझोटी ।।

अति मुदित भये श्रीभट्ट गुसाँई फूले अंग न समाई हो।
राधारमणलालजी प्रगटे बाजत रंग बधाई हो ।।

अद्भुत रूप अनूपम निरखे सकल विपिन छवि छाई हो।
गुणमंजरी की आस पुजाई दोऊ कर लेतं बलाई हो ।।

।। राग सोरठ ।।

श्री वृन्दावन धाम हमारो हो।
गौरश्याम तन एक महाप्रभु जिन शुचि रस विस्तारो हो ।।

ठाकुर इष्ट श्रीराधारमण रसिया नन्ददुलारो हो।
स्वामिन श्रीवृषभान नंदिनी अरूण नील पट धारो हो।।

गुरु आचारज श्रीगोपालभट्ट रूप सनातन प्यारो हो।
जुगलकुंड संकेत नाम बरसानो नन्द अगारो हो।।

गोवर्द्धन गिरिवर श्रीजमुना तीरथ प्राण अधारो हो।
श्रीललितादिक रूपमंजरी गुणमंजरी नाम उचारो हो।।

।। राग बरबै ।।

आज श्रीराधारमण प्रगट भये हैं हो, बाजत रंग बधाई।
भट्ट गुसाँई तन मन फूले हो, रसिकन के मन भाई।।

मोरमुकट पटपीत मुरलि छवि हो, लखि दृग पलकन लाई।
वाम भाग में प्रिया बिराजै हो गुणमंजरी बलिजाई।।

।। राग कान्हड़ो ।।

बाजैं रंग बधाई श्रीगोपाल भट्ट धाम।
राधारमणलालजी प्रगटे ललित त्रिभंगी श्याम।।

अंग अंग छवि बरनि न जाई अति अद्भुत अनुपाम।
प्रिया कान्त निज उर में धारी गुणमंजरी विश्राम।।

।। रेखता ।।

चल देखिये वृन्दावन जहाँ बजै रँगीली बधाई।।
आई है वैष्णव श्रेणी लिये मृदंग झांझें।
गावें हैं मंगल तानें भटजू के मंदिर माझें।।
प्रगटे श्रीराधारमण इन्द्रमणि श्याम तन।
मुसिक्यान सोहै मुख में कोटि काम की दमन।।
ललित त्रिभंगी रूप रसिकन के हैं भूप।
गुणमंजरी जीवन धन छवि कहा कहूँ अनूप।।

।। राग कान्हड़ो ।।

मोहि दीजै श्रीभट्ट गुसाँई, वृन्दावन बास बधाई।
तुम्हारे श्रीराधारमण सुख बिलसों ब्रजभूषण सुखदाई।।
देहूँ बुहारी करि मनुहारी चित नहिं जाय चलाई।
गुणमंजरी दास करि राखो भाखों नाम सदाई।।

।। राग सौरठ ।।

अति आनंद भयौ है वृन्दावन आजें।
श्रीगोपालभट्ट मंदिर में जुरे हैं सकल समाजें।।
वैष्णव कीर्तन करते आवें लै मृदंग अरू झाँजें।
गोस्वामी श्री रूपसनातन जीव प्रेम में गाजें।।
सिंहासन बैठे प्यारी सँग रूप अनूपम छाजें।
राधारमण नाम गुणमंजरि रसिकन के सिरताजें।।

।। कान्हड़ो ।।

श्रीगोपालभट्ट गोस्वामी रसिकन में नाच रहे हैं हो।
श्रीराधारमणलाल को लखि लखि नैनन नीर बहे हो।।
रूप सनातन शोभा बाढ़ी करसों करन गहे हो।
गुणमंजरी दास की आशा पूरी दरस लहे हो।।

।। कान्हड़ो ।।

भट्टजी के आनन्द उर न समाय, आये सकल रसिकजन धाय।
राधारमणलालजी की शोभा निरखत नाहिं अघाय।।
अंग-अंग सुकुमार शोभा छवि विपिन रहीं है छाय।
ललित त्रिभंगी श्याम मनोहर कह्यौ वचन नहिं जाय।।
वृन्दावन की सम्पत्ति सुखनिधि मंद मधुर मुसिक्याय।
गुणमंजरी स्वामिन के प्यारे विलसो लऊँ बलाय।।

******

श्री भट्ट गुसाँई दीजै मोहिं बधाई।
प्रकटे श्रीराधारमण मनोहर रसिकन के सुखदाई ।।
युगल चरण अनुराग निरन्तर सेवा करन अघाई।
श्रीवृन्दावन वास रास रस गुणमंजरी बलिजाई ।।

******

श्रीराधारमणलाल कछु दीजै।
अपनी प्राणप्रिया परिकर की दासी गणना कीजै ।।
और कछु नहीं चाहों चित में यह विनती सुनि लीजै।
श्रीगुणमंजरी के ताते हृदय प्रेम में भीजै ।।

।। जलयात्रा ।।

लखत श्रीराधारमण फुहारे।
कबहुँ हजारा कबहु इकधारा कबहुँ कुंज अकारें ।।
बैठि लता सुन्दर सीतल जलकण अंगन धारें।
नृत्य करत फल निरखें पहरे पट भूषण सुकुमारे ।।
सुन्दर फल पावत मिश्री को पानोंपियें दोऊ प्यारे।
गुणमंजरी गुलाब नीर को छोड़त हैं पिचकारे ।।

।। रथ यात्रा ।।

श्री राधारमण मनोरथ मे बैठे प्रगटत केलि मनोज।
बाढ़ विशाल आषाढ़ मास में शुक्ल पक्ष सुन्दर शुभ दौज ।।
शोभा भरे घरे कंचन घट परसत सुन्दर सुभग उरोज।
गुणमंजरी मुसिक्यान मान लखि दृग खंजन तिय बदन सरोज ।।

।। वर्षा वर्णन ।।

श्रीराधारमण लखत है बादर।
काले पीले हरे अरूण सित, बैठे कुंज लतादर।।
मनो मदन रंगरेज रंगीली गीली सुखवत चादर।
गुणमंजरी बिजुरी चमके तब करत श्याम बहु आदर।।

******

श्रीराधारमण लखत हरियारी।
हरिणी नैन प्रिया के संग में हरे-हरे पगधारी।
हरी सुनहरी चूरी पहरी हार हिये सुकुमारी।
गुणमंजरी निरखत हरि विहरे लहर लेत तन भारी।।

******

श्रीराधारमण घटान निहारें।
नवल कुंज चौबारें बैठे खोलें सुरँग किवारें।।
दै गलबाँही पवन पुरवाई सन्मुख लेत फुहारें।
गुणमंजरी हरि धनुष बतावें गावें सुरंग मलारें।।

******

श्रीराधारमण कुंज नव छातन।
डोलत सखिन संग पट भीने लिये परस्पर गातन।।
सुन्दर से संकेत बतावें कर कर ऊँचे हातन।
गुणमंजरी घन गगन छयो है विलसत सुख बहुभाँतन।।

******

श्रीराधारमण सुखद घन झड़ी।
घन पिछली निसि सुख सों सोये सोने बूँद पड़ी।
बात चलत नहीं बात कहन की काहू चित्त चढ़ी।
गुणमंजरी गुरुजन भय गंजन गरजन घड़ी-घड़ी।।

******

श्रीराधारमण रूचि जान, या पट नील की फहरान।
यमुना तीर अधीर पवन तें सघन घटा झुकिआन।
गर्जन गगन सुनिर्जन बन में लाल की मुसिक्यान।
जैसिय जामिनि दमकत दामिनि भामिन डरपन वान।।
बरसन बूँदन सो कुच मूंदन परसत चतुर सुजान।
झपट लपटि गई पीय डर श्यामा गुणमंजरी सुखदान।।

******

करो नित कीर्तन, लहो कृष्ण नाम।।
सुख और दु:ख का, रहे नहीं काम।।
चाहे शची माँ हो, या हो विष्णु प्रिया।
मैं उनके संग हूँ, जो लेवे कृष्ण नाम।।
तुम तो सदा बल से, हो मेरे संगी।
मेरे साथ आवो, चलो मेरे धाम।।
जग के लिए हो संन्यास मेरो।
करो दु:ख दूर, कहो कृष्ण नाम।।
वियोगी के भीतर, सदा प्रेम रोग।
यही सिद्धि साधन, गहो कृष्ण नाम।।

******

।। श्रीगोपाल भट्ट गोस्वामीजी की धियोधियो ।।

श्रावण कृष्णा पंचमी

श्रीराधारमण नृत्य करें।
प्राणप्रिया सँग अति आनन्द में अंशन भुजन धरें।।

बाजत ताल मृदंग मधुर सुर धियोधियो उच्चरें।
गुणमंजरी सामन बदी पंचमी प्रगटी मोद झरें।।

।। हिंडोला ।।

मधुर हिंडोरना हो झूलें श्रीराधारमणलाल।
श्रीवृन्दावन कालिन्दी तट ललित कदम की डार।।

पचरंग डोरि पटकी पटली हीरा जटित विशाल।
गलवाहीं दिये बाम छबीली नवल किशोरी बाल।।

झोटा देत विशाखा ललिता चित्रा लिये रूमाल।
गावें गीत तुंगविद्याजू चम्पक बसन सम्भाल।।

बीरी देत इन्दुलेखा रंगदेवी चमर रसाल।
विजन डुलावत सुभग सुदेवी श्यामा देत है ताल।।

नृत्यत लवंग मंजरी अरपे रूपमंजरी माल।
रसमंजरी मृदंग बजावै रतिमंजरी पुष्प उछाल।।

वीणा लिये विशाल मंजरी कस्तूरी पलकनवाल।
मंजुल छवि लखि अतर लगावै गुणमंजरी गुपाल।।

******

श्रीराधारमण हिडोले झूलें।
श्रीवृन्दावन सघन कुंज में कालिन्दी के कूलें।।

उरझे हार अलक कुंडल मिल निरखि–निरखि मन फूलें।
प्यारी पहरें पचरँगी सारी लालन सुरंग दुकूलें।।
गावत राग मल्हार मधुर सुर अरस परस मन तूलें।
गुणमंजरी सुमन बरसावत मंद हँसनि लखि भूलें।

******

श्रीराधारमण झूलें रंग हिंडोरे।
रतनजटित को बनो हिंडोरो बोले चातक मोरे।।
प्राणप्रिया संग दें गलवाहीं निरख नैन की कोरें।
गुणमंजरी देत हैं झोटा रमक झमक चित चोरें।।

******

निरख राधारमण झूलें। मुदित श्रीयमुन के कूलें।।
झुलावत सखी अति हरषें। चहुँदिश सुमन को बरषें।।
बजावें बीण मिरदंगी। ताल मुहचंग सारंगी।।
मधुर मल्हार सुर गावें। प्रियाप्रिय सुखन उपजावें।।
घटा आवत घुमड़ घिरकें। फुहीं बरसत जु फिर फिरकें।।
बीच बीच दामिनी कोंधें। भामिनी दृष्टि चकचोंधें।।
लिपट गई लाल सौं प्यारी। कहत सबहीजु बलिहारी।।
जयति गुणमंजरी बोलें। जुगल छबि नयन में तोलें।।

******

लखि छवि होउ निहाल झूलें श्रीराधारमणलाल।
श्रीगोपालभट्टजू के लाड़िले चंचल नैन विशाल।।
गावत राग मल्हार सखीजन बाजत बीन रसाल।
श्रीगुणमंजरी हरषि झुलावें हाथ लिये रूमाल।।

******

आज श्रीराधारमण रंगीले हो झूलत फूलत मन में ।।
प्रिया अंश पर भुजा बिराजें हो पुलकित प्रमुदित तन में ।।
झोटा देत सिहात सखी सब ही निरखत तरंग मुसिकन में।
गुणमंजरी कुसुम बरसावत हो गावत कुंज भवन में ।।

।। पवित्रैकादशी ।।

श्रीराधारमण पवित्रा पहरें।
लाल हरित सित पीत गुलाबी शोभित बरण सुनहरें ।।
कंचन हार गुंथो गोपींजन लखि आनंद उर लहरें।
गुणमंजरी मनोरथ पूरे झूलत उर में फुहरें ।।

।। सलूनो-राखी ।।

श्रीराधारमणलालजू के कर वृन्दादेवी बाँधत राखी।
सुभग सलूनो दिवस मनायो मधुर-मधुर आशिष बर भाखी ।।
केशर तिलक लगाय लाल ललना छवि लखि निज उरमें राखी।
गुणमंजरी झुलावत दुहुँपुनि गावत सुरन पुजी अभिलाखी ।।

।। जन्माष्टमी ।।

श्रीराधारमण जन्म कीं आठें।
परम महा मंगल दिन सजनी लागे आनँदठाठें ।।
श्री शाण्डिल्य भागुरी कर अभिषेक वेद के पाठें।
पीत बसन पहराय तिलक कुमकुम करि दक्षिणा बाटें।
बाजे बजत विविध नाचत गुण बरनत बिरदन भाटें।
गुणमंजरी तन मन धन वारत निरख बरस की गाँठें ।।

******

।। श्री राधाष्टमी ।।

श्रीराधारमणजी तन–मन फूले प्रिया जन्मदिन जानी।
कियौ सिंगार आपने कर तें प्यारी को सुखदानी।।

मृगमद कुमकुम तिलक भालपै रच्यौ परम रूचि जानी।
नृत्यत नटनागर अति गति सों गावत मधुरी बानी।

हार उतार देत निज उरतें अंग अतर में सानी।
गुणमंजरी बीरी सखियन को बाँटत मृदु मुसिक्यानी।।

श्रीराधारमण बधाई दीजै जो माँगू मैं आज।
तुम्हरी प्रिया की जन्मगांठ है नहीं करो अब लाज।।

प्यारी चरन कमल की दासी करो रसिक सिरताज।
गुणमंजरी के नाते मोकों राखो कुंजन माँझ।।

।। साँझी ।।

श्रीराधारमणलाल प्यारी की निजकर साँझी चीतत।
सखी भेष धरि रसिक शिरोमणि बिलसत हैं सुखकी तत।।

रीझत प्यारी रस में भीजत रजनी रस में बीतत।
गुणमंजरी मन हरत सखिन के कोटि काम छवि छीजत।।

।। दशहरा ।।

आज दशहरा दिवस सुहायो।
श्रीराधारमणलाल को सखियन बर सिंगार धरायो।।

नवल प्रीति अंकुर जब टाँके कुमकुम तिलक बनायो।
गुणमंजरी मानगढ़जी तो प्रिया बिहार बढ़ायो।।

।। शरद पूर्णिमा ।।

श्रीराधारमणो नृत्यति रासे।
सघने श्रीमद् वृन्दाविपिने यमुना पुलिनोल्लासे ।।
परम सुखदया श्रीराधिकया धृतकर पद्म बिलासे।
बंशीबादन कृन्नि कटस्थित प्रिय गुणमंजरी दासे ।।

।। दीवाली ।।

श्रीराधारमण खेलत चौसर।
सरस दिवाली रजनी सजनी सुखबिलसत सर्वोपर ।।
पासे फेंकन गोट धरन छवि कही जात नहीं मो पर।
गुणमंजरी बिचारत दोऊ बाजी अटकी पौ पर ।।

******

आली आज आई दिवाली।
श्रीराधारमण संग चौपर खेलें श्री कीरत की लाली ।।
हठरी पूजत नवल भेष धरि फैली दीप उजाली।
गुणमंजरी पकवान प्रसादी देत हैं भर भर थाली ।।

।। अन्नकूट ।।

श्रीराधारमण आरोगत अन्नकूट आली।
आए जगमोहन में सुन्दर सुख सोहन में
धनुषी वर भोंहन में रँग बरसत भाली ।।
पहरे हैं बागो तास मन में भर अति हुलास
रजनी सुन्दर विलास सूचत रस ख्याली ।।
पूजे श्री गौवर्धन संग लिये परिकर जन
शृंगारी सुरभीगण सोहत तिहि काली ।।

बाँटत हैं विविध भोग लेत हैं बृजवासी लोग
भयौ है बांछित सँजोग दिवस सुख विशाली ।।

सुरभी घृत सों चुचात मीठो केसरी भात
मूँग भात कढ़ी साथ खात कनक थाली ।।

मूँग उड़द चना दाल रायते हैं सरस झाल
बरा रस पकौरी लाल चाखत सुखसाली ।।

मिश्री फुलका जु खीर पावत हैं रसिक धीर
परसत हैं सखी भीर शोभा उजियाली ।।

नाना विंजनन स्वाद लीनो निज मन अल्हाद
देत हैं प्रसाद शेष गुणमंजरी पाली ।।

।। गोपाष्टमी ।।

श्रीराधारमण किये नटवर भेख।
आज गोपअष्टमी आली शोभा बड़ी विशेख ।।
जूरो मुरली लकुट काछनी कछि सिंगार कू देख।
गुणमंजरी निर्योग पास शृंगार चित्त में लेख ।।

।। देवोत्थान अथवा प्रबोधन ।।

आज प्रबोधनी निशा रंगीली नाचत राधारमण खरे।
होड़ाहोड़ी करत प्रियासँग अंग अनंग तरंग धरे ।।

सखियन चौक रचे है जहँ जहँ तहाँ तहाँ अति गतिहि भरे।
गुणमंजरी ईख की कुंजनि सुख पंजनि विलसें बिहरे ।।

।। श्रीदामोदर गोस्वामी को उत्सव ।।

कार्तिक शुक्ला 15

आई है कार्तिक पूनो लखि राधारमणलाल।
लीनी दामोदर सेवा निज जन प्रतिपाल ।।

राचो है रास रसीलो संग मोहिनी बाल।
गुणमंजरी बजावै गावै सुखसों ख्याल।।

।। व्यंजन द्वादशी से मास पर्यन्त ।।

श्रृंगार भोग के समय खिचरी के पद

सखी श्रीराधारमण मनरंजन।
ओढ़ लबादो खिचरी पामें संग बहुत धर व्यंजन।।

अतर सुगंधित धरी अँगीठी मीठी शीत विभंजन।
गुणमंजरी श्रृंगार रस में बलिहार करत कर कंजन।।
खिचरी सहचरी प्रात राधिकारमणजी को
सुरभी को घृत डार थार आगे लाई।
कचौरी अचार चार साग धरे तापर
पापर कचरी दधि मोदक मलाई।।
मीठी-2 बात करें दीठीसों दीठि भरें
अँगीठी सुगंध धरें सीत बीत जाई।
चौकी पै बैठै आन रूचि सों लगे खान
प्रान वारती सु आरती करत आई।।

******

खिचरी जेंमत श्रीराधारमन श्री गौपालभट्ट जीवन धन।
गादी बिछी धूप कोमल में बैठे तने बितानन बीनन।।

कनक अँगीठी अतर सुगंधित निकट धरी लागत् मीठी तन।
सुबरन झारी सुचि बारी भर लसत जगमगे जटित सुरतनन।।

ओरपास उपहार मध्य में कंचन थार धरो है सखी जन।
प्राणप्रिया को मुख अवलोकत घूँघट मध्य न तृप्त होत मन।।

नव अनुराग लाज भरी प्यारी मोरत बदन लेत न ग्रासन।
सामिग्रिन की करत परीक्षा चाखत लालन प्यारी कारन।।

******

श्रीराधारमणजी खिचरी, जेंबत मेवा मिली घृत निचरी।
माखन दधि चटनी लोंजी धर, साग कचरिया टेंटी पापर।।
आम आमरो नीबू अदरक, धरे छुहारे किसमिस निधरक।
बरा रसबरा मूंग पकौरी, बेसन की बैंगन मिली तोरी।।
तिलबरी तिलमठरी तिकोना, गुझिया सेव सलौने निमौना।
मूंग उरद बेसन नुकती के, मोदक पावत भावत जीके।।
दाड़िम दाख अंगूरी फल को, बूरे मिले नरंगी दल को।।
रची रूचिर तरकारी रतालु, वेंगन भुरता भूने बालू।
बिच-2 झारी भरि श्रीयमुना जल, गुणमंजरी प्यावत मुख निर्मल।।

।। शीत ।।

श्रीराधारमण दुशाला पीत।
ओढ़े लाल लबादो बाँधे पचरंग चीरा पीत।।
हरी अंगरखो रूमाल जरकसी बाँधो कटि लखि शीत।
सूथन अतलस रंग गुलाबी पहरी रस की रीत।।
खीनखाप दामन प्यारी जू दुलाई नील सुनीत।
गुणमंजरी गुलाबी दुशाला उढायो लालन मीत।।

******

श्रीराधारमणजू पहरे मोजा।
मखमल लाल रचे अति सुन्दर लसे काम जरदोजा।।
शीत समें सुखदाई प्यारे लागत चरणसरोजा।
गुणमंजरी अस्तीन लखे जब उरभत केलि मनोजा।।

******

श्री राधारमण अँगीठी तापें।
अपनी प्राणप्रिया छवि निरखत बैठे हैं पलका पे।।
सुन्दर अगर सुगंध लेत हैं मधुर मधुर अलापें।
गुणमंजरी रजाई ओढ़न निरख लगत पलका पै।।

।। श्रीगोपीनाथ गोस्वामीजी को उत्सव ।।

पौष शुक्ल 15

प्रगटी गंधमंजरी गोपी।
वाली बैस कुंज सेवा हित कुल मरजादा लोपी।
मनहुँ बसंतादिक उत्सव की शुभ बिध अंकुर रोपी।
श्रीगुणमंजरी निज अपनाई प्रिय प्यारी चित चोंपी।

।। बसन्त ।।

श्री राधिकारमणजी नव बसंत खेलत वृन्दावन नित लसंत।
प्यारीजी शोभित सखिन संग लखि नागर मन बाढ़ी उमंग।।

अलबेली प्रथमही लै गुलाल मूठी भरि छोड़ी है मुखहि लाल।
नागर मानत हैं धन्य धन्य सब रसिकन में हैं अग्रगन्य।।

श्यामा मुख अतर लगाय गाय निरखत हैं शोभा समय पाय।
सखियन पर दिये कुम्कुमा दोर छवि को नहीं तहाँ ओर छोर।।

बाजत बीणा मिरदंग ताल ढप मुरली सारंगी रसाल।
गावत तहाँ हैं हिंडोल राग गुणमंजरी हर्षित मन की लाग।।

।। होली ।।

श्रीराधारमण छैल गैल पिचकारी छोरे।।
केशर की तकि मारे सजनी सबरे अंगन बोरे।
मूठ गुलाल लाल कर देते हैं लाज सकुच को तोरे,
आवत मुख माडन धोरे।।

अंग अनंग को वरषै भरो जोबन के जोरे।
प्राणप्रिया की सैन पाइके लेत जु सबहि अकोरे,
करै जो सो कछु थोरे।।

लेकर ढपहि बजाबै रसिया आबै गीत अप जोरे।
भागन फागन आय गयौ है बोलत बचन कठोरे,
पिये छवि नैन कटोरे।।

होली को मिस पायके हेली खेल करे सब ठौरे।
गुणमंजरी प्रिय रँग में भरो है होय सबै इस ठोरे,
रसिक बर नन्दकिशोरे।।

।। राग सोरठ ।।

श्रीराधारमण संग खेलहि होरी अतिहि उमंग भरी।
धन्य दिवस है आज को हेली धनि निस जाम धुरी।।

लै पिचकारी कर कमल सुकुमारी भरत सुरंग।
केसर की अति ताक में छोड़त पिय के अंग।।

बरसत गौर घटा नव हेली पोषत श्याम तमाल।
अति उमंग सो लेत उर यह देखो अद्भुत ख्याल।।

मूठ गुलाल की नागरी भरभर मारत पीय कपोल।
कंकण झंकण बजत ही हरि मल जु भयौ उतरोल।।

नागरि मुखहि भिजोयवे पिय पिचकारी पुनि लेत।
प्रिया बचावत नीलपट मुरि मुरि मुसिकन सुखदेत।।

होहो होरी बोलहीं सब सखी देत हैं ताल।
कोऊ बजावै ढपहि ले कोऊ गावत रूचिर धमाल।।

कबहुँक लाल भिजो वहीं सब पिचकारिन को छोर।
भीजे अंग पिय के लखे तब तिय वरजत दृग कोर।।

नवल वसन अंग पोंछके नव बागे दुहुँ पहराय।
नव भूषण पहराय रूचि पकवान देत पबाय।।

श्रीजमुनाजल प्याइकें पुनि बीड़ी देत सिहाय।
करत प्रेमसों आरती बरत तऊ न अँघाय।।

सिंहासन बैठे दोऊ होली धरी सोंज पुनि खेल।
गुणमंजरी चिचकार अतर तब भरत चतुर मणि छैल।।

।। फूलडोल ।।

चैत्र कृष्ण 1

श्रीराधारमण झूलत हैं डोल।
हेली मोरपंख पखा के रसमय जुगलकिशोर।।
रूप अमल छाके बाँके दोऊ भरि लेत अकोर।
कोऊ गुलाल उड़ावै सहचरि गावै तान रसबोर।।
कोऊ चमर डुलावै सजनी निरखि निरखि तृण तोर।
गुणमंजरी गुलाबी बागो पहरे छवि नहिं थोर।।

।। फूलडोल ।।

चैत्र शुक्ला 11

राधारमण फूल के डोर।
झूलत फूलत अति मन माहीं गंध गुलाब अतोल।।
बसन गुलाबी पहरे दोऊ तैसी सखी रसलोल।
गुणमंजरी गुलाब अतर अँग धारें करत कलोल।।

।। फूलबंगला ।।

श्रीराधारमण फूल के बंगला।
बैठे फूलन पट भूषण अँग गावत हैं सुर जंगला।।
फूल अधिक मन शयन करी पुनि उठे समय लखि मंगला।
गुणमंजरी मुदित शोभा लखि सरति काम भयौ कंगला।।

।। अखतीज ।।

श्रीराधारमणलाल अखतीज।
पहरें चन्दन बागो अंग में प्रिया प्रेमरस भीज ।।
देत असीस सखीजन जोवत बोवत सुख के बीज।
सारंग गावें सुख उपजावें पावें सीतल चीज ।।
पलक पवन की करें परस्पर तोऊ अंग पसीज।
गुणमंजरि जल जंत्र भरत है लेत सेवा सुख रीझ ।।

।। श्री राधारमणोजयति ।।

श्री गोस्वामी श्री गल्लूजी महाराज कृत रहस्य पद

।। मंगलाचरण ।।

मधुर रसबेली हो श्यामा प्यारी छवि अलबेली।
श्याम तमाम लाल सों लपटी फूली हसन चमेली ।।

सखी मंडली मंजु थाम लो सींची अद्भुत केली।
श्रीगुणमंजरी प्रेम पवन तें होत अधिक उरझेली ।।

।। ग्रीष्म ।।

चन्दन वाढी सुरंग निकट बहत गंग।
प्रभु नित्यानन्द संग गौर चंद राजै ।।

गावत सब भक्त वृन्द सुस्वर मधुर छंद।
उपजै आनंदकंद ललित यंत्र बाजै ।।

देखत नदिया के वासी डूबे प्रेमाम्बुराशी।
स्वर्ग मुक्त करत हाँसी परव्योम त्याजै ।।

श्रीगोपाल भट्ट धाय सनातन रूप आय।
मलया अंगे लगाय देत है समाजै ।।

******

दोऊ मिल बैठे कुंज उसोरें।
नंद-नंदन वृषाभानु नंदिनी श्री यमुना के तीरें।।

सुमनन के आभूषण सो हैं पहरें चंदन चीरें।
श्रीगुणमंजरी विजन ढुलावत आवत मधुर समीरें।।

।। वर्षा ।।

देखो आली गौर-मेघ उल्लास।
श्री अद्वैत पवन पुरवाई करूणा विजुरी विलास।।

अंतर श्याम घटा प्रघटत है अरूणाम्बर परकास।
नाम धुनी गरजत प्रेमामृत बरसत हैं रस रास।।

कबहूँ परत वैवर्ण्य इन्द्र धनु बरखा अश्रु निकास।
उपजत हैं रोमांच शश्य बहु निरखत पूरै आस।।

पोखत चातक रसिक भक्तजन हरत हैं विरह हुतास।
नव अनुराग नदी उमगी है कर्म धर्म तट नास।।

देत बहाय त्रास लज्जा तृण कपट पंक नहिं पास।
श्री वृन्दावन प्रेम सिंधु मिल गुणमंजरी सुख वास।।

******

हमारे धन श्यामा जू कौ नाम।
जाको रटत निरन्तर मोहन नंद नंदन घनश्याम।।

प्रतिक्षण नव नव महा माधुरी बरसत आठौ जाम।
गुणमंजरी नव कुंज मिलावै श्री वृन्दावन धाम।।

।। हिंडोला ।।

झूलें श्री गौर किशोर हिंडोले हेली।
नवद्वीप वृन्दावन सुन्दर सुरधुनि यमुना ओरें।।

श्री राधा नव भाव विभूषित सहचरि भक्तन जोरें।
प्रगटत क्षण क्षण महा माधुरी हिय आनन्द न थोरें।।

पुलकित द्रुमबेली शुक पिक अलि नाचत गावत मोरें।
श्रीगोपाल भट्ट गुणमंजरी निरखत है तृण तोरें।।

******

सखी देखो सुहावन झूलन की।
नव किशोर मिल रमक बढावन हँसि बरसावन फूलन की।
सखिन झुलावन सँग सँग आवन लावन फहर दुकूलन की।।

घन मन भावन प्यारी दामन निरखत सुधि बुधि भूलन की।
मुरलि बजावन प्रिय संग गावन बिच बिच में सम तूलन की।।

भुजन उठावन लता झुकावन होड़ परस्पर ऊलन की।
पट उरझामन पुनि सुरझामन प्रिया चपल दृग दूलन की।।

डोर बंधावन पटलि लगावन हीरन जटित अमूलन की।
चाव बढ़ावन दिन अरूजामन सुखमय यमुना कूलन की।।

षटपद गामन मन की धामन श्री पद पंकज धूलनकी।
सामन मनकी आस पुजामन गुणमंजरी अनुकूलन की।।

******

तेरी झूलन में रंग बरसै सुख सरसै श्री राधाप्यारी नागरी।

दियें गलबांही मुदित मनमाँही।
प्रीतम झूलै संग नवल सुहागरी।।

विहंसि झुलावत गावत सखिजन।
निरखत छवि दृग भर अनुराग री।।

गुणमंजरी अंजरि कुसुमन की डारत।
युगल तनु अति सुख लागरी।।

।। सोरठ मल्हार ।।

श्याम संग झूलोंगी नहियाँ।
बिलगैयाँ दै अँग लपटावै कपटी मन महियाँ।।
बरजत में सखियन में आगे निलज परै पैयाँ।
गुणमंजरी मोहि जुदी झुलाऔ ललित कदम छैयाँ।।

।। साँझी के पद ।।

साँझी फूलत बीनवे सखि पहरें रतन दुकूलन अंग।
रमणि शिरोमणि श्यामा प्यारी
चली ललितादिक सखियन संग।।
झुकि धरनी अरनी की शाखा
करनी गमनी पहुँची आय।
सुन नूर धुनि लाल मनोहर
शशि मुख उझक लखे छिप जाय।।
मिल वेली पिय गरब गहेली
इन द्रुमवेलिन में कहा काज।
अंचल चीर गह्यौ चंचल दृग
कह्यौ यहाँ मनमथजू को हैं राज।।
तब ललिता बोली लंपट नट
पट छोरो जोरो उन हाथ।
को है मनमथ मम पथ रोकत
ये तौ हैं या वन की नाथ।।
मनमथ सखा दिये मोरन के
पंखा धरे सिर वन अधिकार।
तन जीवन कर दैन परैगो
फूलन के पलटे फल चार।।

अहो मौन गहो नंदगाम कूँ

एक दिन के कर लेंय छिनाय।

वर्षन तें बन गाय चराई

मुरलि पीतांबर कहा चलाय।।

या बन के हमहीं रखवाले

विलसन हारे वारे श्याम।

नई करत अपनी रजधानी

तुमरो इहाँ को कर विश्राम।।

प्यारी दासी वृन्दा जाके

नाम सदा हैं वन विख्यात।

नित्य विराजै रंग भवन में

गुण गावै अलि अंकित पात।।

गुण गामन को नाम सुनत ही

मन में वाढयौ अति आनंद।

मुरली अधरन धर गावत हैं

श्री राधे राधे सुखकंद।।

तब निज उर दीनों श्री श्यामा

मिल पिय हँस के कंठ लगाय।

पुन श्री कुंजरमणि गुणमंजरि

ढुरि ढुरि लखि लखि हियो सिराय।।

******

मेरे संग लगि आई आय सावरी याके मन में फेर।
बेर बेर मेरो बदन निहारै जादू सौ कछु गेर।।

इतके फूलन उत सरकावत लिखत विनय के ढेर।
गुणमंजरि यह नंद ढीठ सो साँझी में करत अबेर।।

******

साँझी बनावन चाव अति बाढ़्यौ मन में।
रसिकलाल दूध सों बगिया सींचत गहवर बन में।।

निरखि–2 प्रफुलित कलियन में प्रमुदित पुलकित तन में।
गुणमंजरी स्वामिन सखियन सँग निरखत आप लतन में।।

******

फूलन बीनन आली आज कैसे होयरी।
पीत पटवारो आड़ो ठाड़ो मग जोयरी।।

पट उरझावै हेली बेलिन माँहिरी।
झामन मिस छिपै कुच बाँहिरी।।

बातन को पातन में लिख–लिख देयरी।
हाथन बलैया मेरी बेर–बेर लेयरी।।

गुणमंजरी देखि भई हैं अवार री।
ज्यों–ज्यों बरजों त्यों–त्यों होय हीय हार री।।

******

भलीरी बनाई साँझी तेरी नाम भयो है।
घर घर तें सखियाँ देखन को आई चाब नयो है।।

अब तू थिर ह्वैकें रहह्याँही दिन अनुराग छयो है।
गुणमंजरि स्वामिनि मुसकन सुख विधना तोहि दयो है।।

******

रहेरी दोऊ दृगन मिलाय मिलाय।
श्यामा गोद फूल दै साँवल उरजन कर परसाय।।

लता फूलमय ह्वै रहीं इत उत जब दोऊ मुसिक्याय।
श्रीगुणमंजरी गुप्त प्रीत कों कैसे होत छिपाय।।

॥ बसन्त ॥

खेलत बसंत श्री गौरचद्र। प्रिय संग गदाधर प्रेमकंद ॥
नाचत नित्यानँद प्रभु रसाल। प्रभु श्री अद्वैत सुदेत ताल ॥

गावत हैं दामोदर सरूप। रामानंद सुरसों मिलि अनूप ॥
खेलत अनुरागी रसिक वृन्द। तन मन वाढ़ौ है अति अनंद ॥

बाजत करताल मृदंग बीन। मुरली ढप सुर मंजीर लीन ॥
शोभित है बसन बसंती अंग। तिन ऊपर छींटा विविधि रंग ॥

श्री राधे राधे धुनि गुलाल। कुमकुम भर-2 भई है उछाल ॥
गुणमंजरी श्री गोपाल भट्ट्ट। यह सुख लिख दीनों भाल पट्ट॥

गौर किशोर नवल विहरत हैं सरस बसंती पाँचेरी।
प्रिया भाव भूषित सहचरि सखि भाव भरे रँग नाचेरी ॥

बाजत ताल मृदंग झाँझ मुहचंग सुरन मिल साँचेरी।
गावत राग हिंडोल परज मिल सोरठ देस खमाचेरी ॥

लै गुलाल चुटकी रसिकन हिय भाव लेख को साँचेरी।
तन पुलकित मुसिक्याय चतुर कोउ प्रेम कटाक्षन बाँचेरी ॥

रूप सनातन श्री गोपालभट्ट जीव रघू रँग राचेरी।
श्री वृन्दावन नव द्वीप में निसदिन यह सुख माँचेरी ॥

******

प्यारी चरनन में नव बसंत।
दश नख शशि किरनन नित लसंत ॥

अरुणित अँगुली हैं नव प्रवाल।
बिछुआ घुँघरू मुकलित रसाल ॥

महँदी दुति केसू को प्रकाश।
जावक नवबेली कर तलास ॥

छिप बोलत श्यामल मणि सरूप।
कोकित चाखत हैं अति अनूप॥

दामन लामन मलया समीर।
सुरभित चहुँदिस मिल हरत धीर॥

केसर उरकी प्रिय लगी आय।
गुण गुण गुण मंजरी मधुप धाय॥

******

देख देख हो नवेली प्यारी प्रीतम नवल बसंत।
वयस किशोर वौर झलकत हैं कोकिल वचन लसंत॥

देत उड़ाय लाज कुल व्रत तृण अरू धीरज बलवंत।
उज्वल हास पराग झरत है अङ्ग अङ्ग परसंत॥

हिय अभिलाष लता फूली है लोचन मधुप भ्रमंत।
माधवि कुंज मिलो गुणमंजरि स्वामिन अब निज कंत॥

॥ होली ॥

होरी खेलत श्री शचीनंदन।
अपनी रसिक मंडली के सँग गावत गीत सुछंदन॥

ढप वीणा मुरली मिल बाजत नव करताल मृदंगन।
बीच-बीच पिचकारी छोड़त बोरत रंगन अंगन॥

अबीर गुलाल कुम कुमा भर भर चोआ चंदन बंदन।
एक एक पर देख देख कर डारत हैं सुख कंदन॥

राधा श्याम नाम धुनि बोलत और नाहि अनुसंधन।
सो सुख निरखत श्री गोपालभट्ट प्रभु कटाक्ष गुण वंदन॥

******

एरी सखि गौर चंद्र नटराज संग लिये भक्त समाज री।
एरी सखि होली खेलत आज श्री नवद्वीप के माँझ री।।

एरी सखि रसमय नित्यानंद श्री अद्वैत स वृंद री।
एरी सखि गावत गीत सुछंद उपजत आनँदकंद री।।

एरी सखि ढोल खोल करताल बाजत मुरलि रसाल री।
एरी सखि ढप धुँधकार विशाल नाचत दै दै ताल री।।

एरी सखि केसर रंग कमोर भरी धरी चहुँ ओर री।
एरी सखि पिचकारीन कों छोरि देत हैं तन मन बोर री।।

एरी सखि झोलिन उड़त गुलाल भई सकल दिस लाल री।
एरी सखि खग मृग नर द्रुम डाल लाल भुवन गलियाल री।।

एरी सखि पुनि हरि हरि हरि धुनि बोलत हैं सब बहु गुनी।
एरी सखि मोहे सुर नर मुनी और बात नाहिंन सुनी।।

एरी सखि उमग्यौ सागर प्रेम लख प्रभुतन छवि हेमरी।
एरी सखि विगलित है सब नेम याही रस में छेमरी।।

एरी सखि श्रीगोपाल भट्ट आय निज गुण मोहि बुलाय री।
एरी सखि दिया मधुर रस प्याइ और कछु नहिं भाय री।

******

प्रिय प्यारी खेलत होरी।।
श्री वृंदावन कुंज भवन में श्री यमुनाजी की ओरी।
नंदनंदन रसिकेश रसीले श्री वृषभान किशोरी।।
भरें हिय भाव कमोरी।।

तरल कटाक्ष मंजु पिचकारी छटत तन मन बोरी।
दुहुँ अनुराग गुलाल घुमड़ कें चहुँ दिश मध्य छ्योरी।।
लगत है नयो नयो री।।

हँसन अबीर हीर दुति सुंदर उजलत परम उजोरी।
गौर श्याम छवि मिलकर चोवा अंग अंग चरचोरी।।
सुगंधन चित्त न चोरी।।

गोल कपोल कुम कुमा दोऊ धारत हैं सुखसोंरी।
कंकण ताल किंकिणी ढप रव बाजत हैं सुरसोंरी।।
मधुर बंशी धुनि थोरी।।

श्री ललितादिक सखी सहेली यह आनन्द लह्योरी।
गुण मंजरि राधा माधव पर वारत हैं तृण तोरी।।
सिरावत नैन हियो री।।

******

रंगीली कुंज खिरकी पिचकारी।
छोटी सी अंगुलिन में भरकें छोड़त हैं सुकुमारी।।

दमक दमक दामिन बरसत है नैन्ही नैन्ही बूँद हजारी।
गुणमंजरी गलियन में खेलत चातक रसिक बिहारी।।

******

करुणा कीजै कुंज बिहारी।
रस निधि ललित त्रिभंगी प्यारे बाँके नयन निहारी।।

जैसें होंय प्रसन्न प्रवीर्णा प्राण प्रिया जू तिहारी।
वृंदावन स्वामिन नव नागर गुण मंजरि बलिहारी।।

******

बहुत दिन बीते करत कड़ाके।
सन्निपात सत संग व्याधितें बाढ़्यो आय अड़ाके।।

रसना सीसी मिलै नाम जल श्री वन भरे धड़ाके।
मुसक्यन पथ्य देहु गुणमंजरी जीवन मूल झड़ाके।।

।। नित्य कीर्तन ।।

दोऊ मिल एकहि वीण बजामें।
होत प्रभात हाथ ले सजनी रजनी पिछली जामें ।।

लाल विभास प्रकाश भली गति ललित ललित उपजामें।
गुणमंजरि अँगुलिन की डोलनि बोलनि पिक नल जामें ।।

।। शृंगार ।।

प्यारी दामन सोहै बटुआ।
कंचन घुंडी डोरी लागी पोयो सुंदर पटुआ ।।

रूप लालची लाय लायची देत हैं नागर नटुआ।
गुणमंजरी मुंदो आपुन ही प्रिय मन है कर लटुआ ।।

।। संध्या आरती ।।

संध्या गौर श्याम छवि सोहै। संध्या रवि शशि को मन मोहै ।।
संध्या छाई अंबर अरूणाई। संध्या उज्वल हसन जुन्हाई ।।
नासा बेसर तारे झलकें। खंजन नैन झुकी हैं अलकें ।।
रूचि की बात बदत है वाती। नवल नेह घृत अधिक चुचाती ।।
मदन दीप दमकत श्रुति आले। रोम रोम सुख भये उजाले ।।
अंग न्यास कर बहु वारन। नन नन मंत्र करत उच्चारन ।।
गुणमंजरी श्रमबिंदु अरघ वर। रूप सुधा अचमन दृग युगकर ।।

।। ग्रीष्म दोहा ।।

ग्रीषम भीषम जानिके लली सखिन के संग।
चली कालिंदी न्हान को आये तहँ नवरंग ।।

।। पद ।।

सखि ये कैसी करत है बातन।
को है यह निकुंज में आयो कपट स्याम बहु भाँतन।।
कर आवरण न्हवाओं मोकों जानि सुभाव सनातन।
प्रिया वचन सुनि प्रिय गुणमंजरि लखत लता छिपि पातन।।

******

प्रिय सखि बिहरें श्री यमुना चल।
मन भाई ग्रीषम रितु आई शीतल सुरभित हैं जल।।
दोऊ तट पै लता झुकी हैं फूले विमल कमल दल।
पैरो पैराओ गहरे में मैं हूँ दऊँ भुजन बल।।
उथले सुंदर नृत्य कीजिये जल तरंग बाजै कल।
गुणमंजरि प्यारी बयार तहाँ छुटत फहारे उज्वल।।

******

कमल मुखि बैठी यमुना तीरे।
छवि भरी सखिन संग सो पानन पहरे झीने चीरे।।
नाचत उछलत फल जल जंत्रन लेत फुहारे नीरें।
गुणमंजरी लतन छिप नागर मृदु मृदु करत समीरें।

।। दोहा ।।

जल विहार बहु वार कर नवल नागरी दोय।
चले भोग मंदिर सुभग अतिशय हर्षित होय।।

।। पद ।।

भोजन कर जु करत हैं अचमन।
अति निर्मल श्री यमुना जलतें रसिक श्रीराधारमन।।

लै कपूर मलयज रज सुंदर धोवत हैं हरषित मन।
कुल्ला कर पोछत श्री मुखकों गुणमंजरी कर पदमन।।

।। दोहा ।।

नव निकुंज रस पुंज में भ्रमर गुंज के माहि।
करी सेंन रति मेंन जनु सीरी पवन सुहाय।।

।। कार्तिक स्नान ।।

प्रेम सरोवर कार्तिक न्हानें।
चली छबीली सखिन संग लै भेज दई श्री कीरत मा नें।।

श्याम सलोनी आय मिली मग कर गहि बतियाँ गढ़गढ़ ठानें।
निकट बाट इक घाट बताऊँ अधिक महातम नहिं कोई जानें।।

डर लागत है नंद दीठ सों नव वधू सुंदर गहत अचानें।
आज मिलैं निकसै लंगराई गुणमंजरी मोकू पहिचानें।।

।। श्री वीरभद्र प्रभु को उत्सव ।।

।। माघ शुक्ला 4 ।।

जय जय वीर भद्र प्रभु वीर।
गौर स्याम मुसकनि अस उर बसि मंगल सदा शरीर।।

नित्यानंद नंदन रस कंदन प्रगटे वेष आभीर।
गुण मंजरी युगल गुण गावत भावत रसिकन धीर।।

।। श्री महाप्रभुजी की व्यंजन द्वादशी ।।

खिचरी जेंवत श्री गौर हरी।
रतन जटित चौकी पै बैठे झारी कंचन प्यारी धरी।।

वाम गदाधर दक्षिणे नित्याई विविधि हास परिहास करी।
देत प्रसाद शेष दासन कों चितवन अति अनुराग भरी।।

।। नेत्रानुराग ।।

गड़ गई नैन निहन्नी कोर।
परत परत कों बेंधत तिरछी बेंधी निपट कठोर।।
कल न परत दिन रजनी सजनी काटत मनहिं मरोर।
गुणमंजरी छेदी पलकन सों बाँधत अलकन डोर।।

******

दुहून के नैना बड़े लड़ाके।
हारत नहीं रूप मद पीकें तुले भए पलड़ाके ।।
गुप्ती से न चलत धावौ दै सीके कौन छड़ाके ।
गुणमंजरी थिर रहें न कबहू विदित चोर हियराके ।।

।। मुसिक्यान ।।

कसकत मुसिक्यन कनी हमारे।
नंद लाडियो मारत तकि तकि निकसत नाहिं निकारे।
लगी अचानक उर में मेरे तनक न दया बिचारे।
गुण मंजरी बचै कोउ नाहीं लोट पोट करि डारे।।

श्री पंडित शिवदयालजी गौड़ 'सरस माधुरी' महाराज द्वारा रचित

।। श्री कृष्ण चैतन्य महाप्रभु जी के पद ।।

।। जन्म बधाई ।।

।। दोहा ।।

श्री श्रीमत शुकदेव मुनि, पदपंकज सिरनाय।
श्यामचरण के दास प्रभु, तिनको उर में ध्याय।।
श्रीमत प्रभु चैतन्य जू, प्रगटे भूतल आय।
रची बधाई हिये हरख, सरस माधुरी गाय।।

बंग देश के मध्य में, नव द्वीप बर ग्राम।
गंगातट सुन्दर सरस अति अनूप शुभ ठाम॥

ब्रह्म वंश अवतंस जग, जगन्नाथ शुभ नाम।
तिनकी पत्नी शची जू, रूप शीलगुण धाम॥

तिनके प्रगटे महाप्रभु, श्रीमत कृष्णचैतन्य।
फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा, सन्ध्या समय सुधन्य॥

॥ छन्द ॥

जै जै श्री चैतन्य महाप्रभु गाइये;
सच्चिद आनँद रूप सदा उर ध्याइये।

प्रेमसिन्धु परिपूर्ण हिये उमगाइये;
गौर किशोर सरूप कि बलि बलिजाइये॥

जाइये बलिरूप की पुनि प्रेम अँग पुलकाइये।
शचीनंदन नेह युत नित निरखि नैन सिराइये॥

अधम उद्धारन दयानिधि यही निश्चै लाइये।
सरस माधुरी शरण तिनका नित्य परिकर पाइये॥

॥ पद बधाई–राग झंझोटी जिला ॥

हिल मिल गावो हर्ष बधाई।
श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु प्रगटे भूतल आई॥

देवी शची मात मन प्रमुदित सुत निज हृदय लगाई।
पय प्यावन पुलकावत तन में मनो रंक निधि पाई॥

जगन्नाथ पितु मन प्रसन्न ह्वै लीने द्विजन बुलाई।
गऊ अनेक विविध पटभूषण दीने दान अघाई॥

बनिता वृन्द सिमिट तिहिं अवसर गात गीत सुहाई।
मङ्गल मोद छयो पुरमाहीं सो कछु कह्यो न जाई॥

कुल कुटुम्ब के सब नर नारी उत्सव कियो महाई।
ध्वजा पताका तोरन रोपे बन्दनबार बँधाई॥
कदली थम्भ कलश मङ्गलधर धूपरूप दीप कराई।
विप्र वेदध्वनि करत प्रेमसों रचि मण्डली सुहाई॥
गावत गुनिजन साज बाज सों लै अरू ताल मिलाई।
सरसमाधुरी गौरहरी की दरशन की निधि पाई॥

******

बधाई नीकी बाजत आज।
फागुन शुक्ल पूर्णिमा तिथि को प्रगटे प्रभु सुखसाज॥
संध्या समय सुहावनि सुन्दर बजत साज अरू बाज।
जन्मे श्रीचैतन्य महाप्रभु संतन के सिरताज॥
आये रसिक सिमट सब पुर के हिलमिल कियो समाज।
नाचत प्रेम मुदित जै जै कहि मेट लोक कुललाज॥
केशर चन्दन छिरक परस्पर किये मन पूरन काज।
सरसमाधुरी जुग जुग जीवो गौरहरी महाराज॥

******

हमारे हेली आज महा आनन्द।
शची कूखि प्राचीदिशि प्रगटे महाप्रभु पूरन चन्द॥
शीतल करन हृदय संतन के आये आनँदकन्द।
हरि हरि बोल नामध्वनि दशदिशि निरतै अति स्वछंद॥
कलि के कुटिल जीव निस्तारें मेटे भव दुख द्वन्द।
विमुखवृंद हरि सनमुख करि हैं काटै कर्म कुफंद॥
गौर वरन मन हरन मृदुल तन मुसकावत मुखमन्द।
सरसमाधुरी सीस नायके करत चरन रज बन्द॥

।। धुनि–पीलू बरवा ।।

बाजत बधाई जगन्नाथजू के अँगना।
शची देवी मात तात गौरहरि गोद लिये।
निरख हरख मुख होय रही मगना।।

पालने झुलावे कभु झुंझुना बजावे तब।
सुत किलकावे हँसे मन में उमगना।।

आवैं पुरनारी नाचे गावें मिल दै दै तारी।
बार दान देत हार हीरा मोती कँगना।।

सरसमाधुरी अनूप कृष्ण चैतन्य रूप।
छवि लखि छकि छकि लिये हैं उछंगना।।

******

सलोनी सखी फाल्गुण पूरणमासी।
सब जग में उत्तम उत्सव दिन अद्भुत मंगलरासी।।

राग रंग घर घर प्रति सुनियत नृत्यत उमंग हुलासी।
हरिगुन होरी रसिया रस के परमानन्द प्रकाशी।।

उड़त गुलाल अबीर अरगजा छिरकत प्रेम बिलासी।
भीज रहे हरि भक्तिभाव में सुख बिलसत अनयासी।।

जान सुअवसर सुभग महाप्रभु अपने जन अभिलासी।
प्रगट होय निज दर्शन दीनों सरसमाधुरी दासी।।

।। बधाई झूमका की ।।

अंतरा– रंगबधाइयाँ हो श्री जगन्नाथ के दरबार।
हुवा सुत सोहना हो प्रभुचैतन्यचन्द्र कुमार।।

मुदित मन मात शचिदेवी निरख मुख लालके बलिहार।
लिये सुत मोद गोदी में करत चुंबनसु मुखकर प्यार।।

झूमका– प्यार करके हुलरावैं। पालनें हरष झुलावें।।
सहज में झोटादेवैं। बलैया हँसि हँसि लेवैं।।

अंतरा– बलैया लेहिं लालन की उचारें गीत मंगलाचार।
नचै बहु भावसों सुंदरि बसन भूषन सु अंगन धार।।

उतारत नोनराई हो करत तनमन सकल बलिहार।
सराहैं भाग निज अपनो हरष हिरदे में अधिक अपार।।

झूमका– बसन भूषण तन राजैं। निरख रती कामजो लाजैं।।
भवन में नोबत बाजैं। मानों घन नभ में गाजैं।।

अंतरा– हरद दध दूध कर मिश्रित कियो करदम अनूठौ खेल।
लपेटे रसिक अंगन में नचें हँसि हँसि भुजा गल मेल।।

कहैं जयजयति ध्वनि सुंदर करें हिलमिल अनुपम केल।
मगन सब प्रेम तन पुलकत दई है लाज जगकुल पेल।।

झूमका– लाज कुलकी सब पेली। नचैं रम्भा अलबेली।।
अनोखी बात मनमेली। भई उत्सव में भेली।।

अन्तरा– भईभेली नवेली सब लै आई करन कंचन थाल।
झुगलिया और सिर टोपी लगे गोटा जरी छबिजाल।।
करा कठला जटित जेवर फिरोजा और पन्ना लाल।
धरें ले भेंट कर दर्शन मुदित मन में भई सब बाल।।

झूमका– मुदित हो घूमर घूमें। लला की टूँडी चूमें।
अशीषें शचिसुत जीवो। दूध अमृत ज्यों पीवो।।

अन्तरा– पिवो सब सुंदरी सजनी ललाप्यारे पै पानी वार।
डिठोना रचके मस्तक पर तोर त्रण दीजियेरी डार।।
बढ़ै दिनप्रति कला सुंदर खसौ नहि न्हात कोई बार।
सरस की माधुरी दासी सदा जाचत ये गोद पसार।
रंग बधाइयाँ हो श्री जगन्नाथ के दरबार।।

।। भाँड बधाई ।।

अंतरा– शादियाँ सुरङ्गी सुनो भाँड देव आये।
अजी वाह वाह हैं, अजी वाह वाह है० ।।
नक्ल नोंक झोंक के खजाने भरलाये। अजी०
अजी नाचते और गावते बजावते सुहाये। अजी०
निरखके समाज आज मन में मगनाये। अजी०
बाजें बीना मृदङ्ग डफ ढोलक मुचङ्ग। अजी०
रहे मोद मन राचे सुख आनन्द में राचे। अजी०
लखें लाल मुख राजी भये प्रसन्न समाजी। अजी०
कहैं जगन्नाथ लाल तेरा जीये सर्वकाल। अजी०
शचीमाता सुभागी लाल लख के अनुरागी। अजी०
श्रीकृष्ण चैतन्य आये तेरे घर धन्य। अजी०
करें हरि नाम गान देहि भक्ति जीवदान। अजी०
पापी अधम उधारें भवसिन्धु करें पारें। अजी०
लेवे गौरहरि नाम ताहि मिलें श्यामा श्याम। अजी०
नाम जपै जो निमाई ताने प्रेम भक्ति पाई। अजी०
धन्य फागुन यह मास तिथि पूनों सुखराज। अजी०
धन्य नवद्वीप धाम आये तहाँ स्वयं श्याम। अजी०
फूले भक्त रसिकवृन्द हुआ मन में आनन्द। अजी०
दिये हीरे मोतीदान किये सर्वके सनमान। अजी०
दिये रथ गज बाज किये पूरन मन काज। अजी०
मागें गोद हम पसार देखें लालका दीदार। अजी०
जपै लालन को नाम मिलै चरनों में विश्राम। अजी०
सरसमाधुरी अपनावो कुञ्जमहल में बसावो। अजी०

।। पालणे का पद ।।

(राग सिंदूरा तथा धमार)

जगन्नाथ सुत पलना झूलै ।। जगन्नाथ0 ।।
मैया शची झुलावत हितकर निरख नैन मुख तन मन फूले।
गौरहरी मनहरन लाडिलो किलकत हँसत करत कौंतूले।
चरण अँगूठा कर गहि प्यारो बदन मेलि चूखत सुख मूले।
घुँघराले सिर बाल सुहावन अलक झलक लख सुध बुध भूले।
भाल दिठोंना नाशा मोती कठला कण्ड फब्यो अनुकूले।
कटिकिंकिनि पग पैंजनि बाजत कुड़ता टोपी पीत दुकूले।
सरसमाधुरी लखि लालनछवि मिटी त्रिविधि तन मनकी शूले।

******

नवद्वीप की नारी सारी नित्य निमाई निरखन आवें।
बदन निहार वार तन मन धन लालन पलना झमकि झुलावें।
कोई चुचकारत कोई पुचकारत चुटकी चातुर बजाय रिझावें।
खेल खिलोना चकई भोंरा फिरकी फेरि फेर दुलरावें।
गावत गुण चैतन्य कुँवर के छवि में छकि निज नैन सिरावें।
नाचत जगन्नाथ आँगन में नव नव केलि कला प्रगटावें।
माता शची हरख युवतिन को मेवा मिश्री गोद भरावें।
आदर करैं अनेक भाँति से हिल मिल मङ्गल मोद बढ़ावें।
उमगि रह्ये आनन्द भवन में एक रसना बरन्यो नहिं जावें।
छायरह्यो सुख सब पुरमाँही शेष शारदा कहत थकावें।
कलिमल हरन महाप्रभु प्यारे देखि दरश रति मदन लजावें।
सरसमाधुरी न्योछावर में अविचल प्रेम पदारथ पावें।

।। पद ।।

(गारी की धुन में)

जै जै जै प्रभु गौरहरी, आज बधाई रंग भरी ।।
स्वयं कृष्ण करूणाकर आये, माता शची कूखि प्रगटाये,
जगन्नाथ पर कृपाकरी ।।

आचारज सुन्दर वपु धारे, घर-घर उत्सव मङ्गल सारे,
पूरन जन अभिलाषकरी ।।

बाँधी बन्दनवार नवीनी, ध्वजा पताका रचना कीनी,
धन्य दिवस यह धन्यधरी ।।

सुमन समूह देव बरसावत, नचत अप्सरा गुनगन गावत,
तान सुनावत सुघर खरी ।।

सरसमाधुरी मन हरषावत, निरखि निमाई बलि बलि जावत
लालन छवि निज हृदय धरी ।।

।। पद, राग-माड ।।

महाप्रभु श्रीगौराङ्ग उदार प्रगटे नदिया नगर मँझार ।।
माता शची कूखि प्राची दिशि महिमा अतुल अपार ।
उदय भये तहाँ भक्तचन्द्रमा रसिकन प्राण अधार ।।

जगन्नाथ के सुत सुखदाई मन के मोहनहार ।
लखि निज नैन निहाल भये हैं कुल कुटुम्ब नर नार ।।

फागुन मास महा सुखदाई पून्यों तिथि त्योंहार ।
जन्मे महाप्रभु मनभावन घर घर मङ्गलाचार ।।

भक्त समूह सकल मिल बैठे गुनिजन आये द्वार ।
नाचत गावत साज बजावत जै जै कहत उचार ।।

सब सुख करन हरन दुखजन कलियुग पावन अवतार ।
सरसमाधुरी प्रेम पदारथ माँगत गोद पसार ।।

।। होरी सारङ्ग ।।

बड भागन यह फागुन आयो।
श्री गौरांग महाप्रभु प्यारो हरिभक्तन हित प्रगटायो ।।
कलियुग के कलमष मेटन को शचीमात सुन्दर जायो ।।
सूरज सुयश उदय भयो भारी तेजप्रताप जगत छायो ।।
पूरन भये मनोरथ सबके जगन्नाथ सुत जस गायो ।।
सरसमाधुरी मदनमनोहर लालन को दर्शन पायो ।।

।। राग बहार ।।

गौरचन्द्र को आज जन्म दिन हिलमिल होरी खेलेंरी।
भर भर मारे रँग पिचकारी हँसि हँसि गलभुज मेलेंरी ।।
नाचें गावें भाव बतावें करें परस्पर केलेंरी।
अबिर गुलालन फेंकपोटरी मार प्रेम रस भेलेंरी ।।
केसर रंग कमोरी भर के सबके सिर पर ठेलेंरी।
ले रोरी मुख मलें मौजसों झपटें रपट धकेलेंरी ।।
सरावोर रंग करें सकलतन लाज कान कुल पेलेंरी।
सरसमाधुरी रस में छकिके सुख की रास सकेलेंरी ।।

।। राग बहार धमार ।।

श्री गौरहरि गुण गाइये।
श्रीकृष्णचैतन्यचन्द्र को नित प्रति लाड़लडाइये ।।
महाप्रभु मनहरन कहत ही प्रेम पदारथ पाइये।
नाम निमाई नित कहो भाई भक्ति प्रभाव बढाइये ।।
षटभुजभजो तजो जग खटके मनछवि में अटकाइये।
जगन्नाथ सुत शची प्रानधन रट रट रँग सरसाइये ।।

लेकर ताल झाँझ डफ ढोलक नचि नचि भाव बताइये।
बड़भागन यह अवसर पायो भूल बिसर नहिं जाइये।।

ध्यानमाहिं रह लीन मीन ज्यों सुख के सिन्धु समाइये।
प्रमुदित होय परस्पर प्यारे तन मन में पुलकाइये।।

हरि हरि बोल बजाय खोल को गुरू गोबिंद रिझाइये।
नामी मिलत नाम रटना सों रसना झरी लगाइये।।

हुलसि हरष हियमाहि हेतकर मनमाही मगनाइये।
सरसमाधुरी हरिदासन के दासन दास कहाइये।

।। राग काफी ।।

आज भलो दिन माई, बधाई घर घर छाई।।
जन्म लियो जीवन उद्धारन जिनको नाम निमाई।
शचीमात मन मगन भई है जगन्नाथ हरषाई।।
निरखि छबि नैन सिराई।।

धनि धनि नवद्वीप नगरी को जहाँ प्रगटे सुखदाई।
नारिन हिलमिल मंगल गाये बन्दनवार बँधाई।।
साथिये द्वार रचाई।।

दीपावलि कीनी रङ्गभीनी जग मग जोति जगाई।
कदली थम्भ किये अस्थापन मोतिन चोक पुराई।।
कलश कंचन पधराई।।

नोबत नवल बजत अति प्यारी संग सरस सहनाई।
झाँझन की झनकार झनाझन सुनिये कान लगाई।।
मुदित मन होत महाई।।

रच्यो महोत्सव रसिक मण्डली सुन्दर सदन सजाई।
अष्टगंध मकरंद महक रहि घस चन्दन छिरकाई।।
पताका ध्वजा लगाई।।

भये मगन मन सब पुरवासी ताल मृदङ्ग बजाई।
होरी खेलन लगे परस्पर अबिर गुलाल उड़ाई।।
हरष नहिं हृदय समाई।।

बैठि विमान सकल सुर आये उत्सव देखि छकाई।
जै जै जै कहि बोलत बानी फूले अङ्ग न माई।।
सुमन वरषा वरषाई।।

मागद सूत भाट बन्दीजन सुयश प्रगट कह् यो गाई।
दान विविध सनमान पायके सबही गये अघाई।।
अशीषत भुजा उठाई।।

महा मधुर रस नव निकुंज सुख श्रीदम्पति सिवकाई।
सरसमाधुरी जन्मोत्सव में मिले मोहि द्विजराई।।
विनय कर जोर सुनाई।।

राग होरी-काफी

शची मात सुनिये चितलाई।
गौरहरी सुन्दर सुत जायो जाकी लेन बधाई आई।।

प्रेम पँजीरी देहु दयाकर पंचम रस पंचामृत माई।
उज्वल रस निकन्ज रस गुल्ला दीजे मोकों हेत बढ़ाई।।

सेव मानसी मोदक बकसो अजवाइन आनन्द सुहाई।
सोंठि सनेस महा अतिस्वादित देहु दान मोहि आज अघाई।।

अँगिया उमग लगन को लहँगा सारी सात्विक भाव निकाई।
नवधा की नथ मोर नाक में प्रीतिसहित दीजे पहिराई।।

शुभ लक्षण भूषन सब अँग में निज दासी लखिदेहु सजाई।
सरसमाधुरी करै रैन दिन से तेरे लालन की सिवकाई।।

।। पद ढाढनि ।।

ढाढनि नाचे रङ्ग भरी, नाचे नाचेरे जगन्नाथ दरबार।
शची मात सुन्दर सुत जायो, गौर वरन मन हरन सुहायो।
नदिया घर घर मंगलाचार।।

महाप्रभु पदवी जग पावैं, सुर नर मुनिजन शीश नमावें।
भक्तन के हों प्राण अधार।।

फागुण मास महामन भायो, पून्यो तिथि परमानँद छायो।
संध्या समय लियो अवतार।।

नर तन धरके श्री हरि आये, नारिन हिलमिल मंगल गाये।
लाड़ लड़ाये बहुत प्रकार।।

केसर रंग अंग छिरकावें, लालगुलाल अबीर उडावें।
बोलत होरी राग धमार।।

कुल कुटुम्ब की बनिता आई, कंचनथाल लिये कर धाई।
वस्त्र अमोल रतन मनिहार।।

लखि लालन छबि मन गमनाई, राई नोंन उसार सिहाई।
सरसमाधुरी प्रेम अपार।।

।। पद ढाढी ।।

जगन्नाथ जू सुनो तुम्हारे महाप्रभु प्रगटाये हैं।
श्रीकृष्णचैतन्य दयानिधि अपने दरस दिखाये हैं।।

शचीमात के सुकृत को फल वरनत वेद थकाये हैं।
जगजीवन उद्धारन कारन आप श्री हरि आये हैं।।

फागुन मास सुदी तिथि पूनों संख्या समय सुहाये हैं।
नदियापुर घर घर में मंगल हिलमिल हरष बढ़ायें हैं।।

गावत नारि बधावे बहुविध भूषण बसन बजाये हैं।
लालन के कर दरस सलोनें अपने नैन सिराये हैं।।

भक्तवृन्द मिलि कियो महोत्सव धुजा पताक लगाये हैं।
बाँधी बंदनवार द्वार पर स्वस्तिक सरस रचाये हैं।।

गुनि गंधर्व बोल बिरदावलि बहु विध नाचे गये हैं।
डफ अरू ढोल सितार सारंगी साजबजा पुलकाये हैं।।

देव विमान गगन में छाये फूल फूल बरसाये हैं।
जै जै बोल जोर कर सबने चरनन शीश नवाये हैं।।

गौरहरी छबि धरी हिये में नैना छकनि छकाये हैं।
सरसमाधुरी नौछावर में प्रेम पदारथ पाये हैं।।

।। पद चाल नाटक ।।

गावें होरी नर नारी, नाचें दै दै करतारी।
प्रगटे नदिया बिहारी, चैतन्यचन्द्र नाम।।
नाम नाम नाम, नाम नाम नाम, नाम नाम नाम।।

श्री जगन्नाथ धाम, भारी भई धूम धाम।
कहैं जै जै बलिहारी, नर नारी तमाम।।

अजी जै जै बलिहारी, नर नारी तमाम।
खेलें हिलमिल के फाग, हुआ मन में अनुराग।।

जागे भक्तों के भाग, किया उत्सव अभिराम।
उत्सव अभिराम, उत्सव अभिराम, उत्सव अभिराम।।

चोवा चंदन सँभाल, छिरके हिलमिल के बाल।
फेंके अबीर गुलाल, भरे कंचन के थाल।।
अजी अबीर गुलाल, भरे कंचन के थाल।।

बोलें बोल हरी बोल, बाजें बीना डफ, ढोल,
करे हिलमिल कलोल, भये सरस पूरन काम,
सरस पूरन काम, सरस पूरन काम।।

।। पद राग पीलू बरवा ।।

प्रगट भये हैं सखी आज प्रभु गौरहरी ।।
नदिया नगर धाम आये आली आप श्याम देवी शचीमाता
जूकी कामना पूरनकरी ।।

पिता जगन्नाथ भये लख के सनाथ लाल गावत बधाई बाल
अति ही आनन्द भरी ।।

फागुन पूरनमासी संध्या समय सुखरासी घर घर होरी
रसरंग की लागी है झरी ।।

अबिरगुलाल भर भर के उडावें थाल भये लाल लाल
चौक चौराहे बाजार गरी ।।

नाचै और गावें डफ ढोल बजावें मनमाहीं मगनावें ।
कहैं धन्यहेरी यह घरी ।।

कृष्णचैतन्य सम नहीं कोई और अन्य कहिमुख धन्य
छबि सरस हिये में धरी ।।

।। पद पालना ।।

झूलत पलना गौरहरी ।
माता शची देत हैं झोटा निरख रूप आनन्द भरी ।।
मंद हसन लखहोत मुदितमन छवि में छक रही खरीखरी ।।
छगन मगनकी लेत बलैया तनमनकी सुधिबुधि बिसरी ।।
सरसमाधुरी लाड लडावत बलि बलि जावत घरी घरी ।।

।। छटी महोत्सव के पद ।।

(दोहा)

महाप्रभू चैतन्य की, छठी छबीली आज ।
आई हिलमिल के अली, सजे सुमंगल साज ।।

ध्वजा पताका साज के, बाँधी बन्दनवार।
महामहोत्सव सुनि सखी, जगन्नाथ दरबार।।

गौरहरी गोदी लिये, शची मात हरषाय।
पूजत कुल देवी सरस, मन में मोद बढ़ाय।

।। राग सिंदूरा ।।

गौरहरी की छठी सुहाई।
माता शची पहर पट भूषण पूजत गोदी लिये निमाई।।

जुवती जुरमिल नवद्वीप की जगन्नाथ गृह में चलि आई।
धूप दीप नैवेद्य फूल फल अरपत कुलदेवी पुजवाई।।

व्यंजन विविधि भाँति धर आगे आरोगन की विनय सुनाई।
जै जै करत केलि कौतूहल गावत मंगल मोद बधाई।।

भीर भवन में भई बहुत ही नौबत बजत और सहनाई।
सरसमाधुरी रहसी डोलत बाँटत अलियन पान मिठाई।।

।। धुनि गनगौर ।।

महोत्सव सखी हमारे आज।
भये दिना छै के सुनि सजनी गौरचन्द्र महाराज।।

हुलसी मात शची मनमाहीं बजत साज अरू बाज।
जगन्नाथ मन मुदित महाई रंक मिल्यो ज्यों राज।।

संध्या समय चौक रचि सुन्दर सज्यो सुमंगल साज।
गोद लिये मैया सुत अपनों चौकी रहो बिराज।।

पूजत छठी प्राणप्यारे हित ले सँग सखी समाज।
कंचन थाल आरती वारी कियो सुमंगल काज।।

बढ़ो बेलि निसदिन लालन की जाय अमंगल भाज।
सरसमाधुरी रहो खुशी नित रसिकन के सिरताज।।

।। राग सिंदूरा ।।

आज को दिन है अति सुखदाई।
छठी छबीले छगन मगन की जिनको नाम निमाई।।

श्रीमत कृष्ण चैतन्य कहै कोउ मोद प्रमोद बढाई।
गौरहरि कहि कोउ बोलत मन माहीं मगनाई।।

विश्वम्भर मुख नाम उचारत नाचत भाव बताई।
महाप्रभु ले नाम लड़ावत गावत गुन न अघाई।।

खोल झाँझ अरू बीन बजावत लै अरू ताल मिलाई।।
जै जै जै धुनि छई दसहु दिशि पुष्पन वृष्टि कराई।।

मुदित भये लखि रूप मनोहर हर्ष न हृदय समाई।
गोद लेत कुल के नरनारी छतियन रहै लगाई।।

गौरबदन लखि लाजत है बिधु मंद मधुर मुसकाई।
बालविनोद प्रगट कर प्यारो चित को लेत चुराई।।

किलकन हँसन बसन तन पियरे छवि कछु कही न जाई।
कटि किंकिनि पग नूपुर बाजत छुम-2 शब्द सुहाई।।

धनि धनि माता शची पिता धनि जगन्नाथ जस छाई।
सरसमाधुरी को उत्सव में दीनी प्रेम बधाई।।

।। पद आशीर्वाद-ठेका दादरा ।।

चिरंजीवो शची तेरो लाल अशीसत पुर की बाल।
जगन्नाथ सुत सहज सलोनों नाम निमाई रसाल।
चन्द्रकला ज्यों बढो रैनदिन रसिकन को प्रतिपाल।।

बार न बाँको होय न ताको रहो सदा खुशहाल।
करो चरित सुन्दर शिशुलीला ले संग लाल गुपाल।।

हरि हरि बोल कीरतन करि करि नृत्य करो दै ताल।
झझि मृदङ्ग बजाय रंग सों भक्ति करो सब काल।।

पतित उद्धारन जन निस्तारन ऐसो परम दयाल।
सरसमाधुरी दर्शन करके सब जग होय निहाल॥

॥ राग बसंत ॥

जय जयति गौरहरि गुन निधान,
चैतन्यचन्द्र रसिकन के प्रान।

श्रीवंगदेश नदिया मझार, आचारज नर वपु लियो धार।
पापी नर अनगिन किये पार, दई प्रेमभक्ति सबही को दान॥

हरि बोल नाम धुनिमुख उचार,अधमनको कीनो है उद्धार।
ले भक्तिमंडली अपन लार, कियो प्रगट कीरतन नामगान॥

तीरथ अडसठ अरू चार धाम, अरू सप्तपुरी सुन्दर सुठाम।
लघु दीर्घ क्षेत्रअरू शहर ग्राम, कीने पवित्र प्रभु कृपाखान॥

सुनि सरसमाधुरी विनयखान, निजदासन को लेवो दास मान।
प्रेमामृत मोहि करावो पान, तव चरन शरन बिन गति न आन॥

॥ राग बहार ॥

पाटोत्सव गौरांग हरी को हिलमिल हर्ष बढ़ावो री।
मदनमहोत्सव आज भलो दिन आनन्द मंगल गावो री॥

आममौर सरसों सुमनन ले पल्लव हरित मँगावो री।
कंचन कलश पूर जमुनाजल सरस बसंत बँधावो री।

अबिर गुलाल थाल भर सजनी चोवा सुरचि बनावो री।
विश्वंभर अंगन के ऊपर आनँद सहित लगावो री॥

बीन मृदंग बजाय भलीविध हरिबोलो हरखावो री।
अतर अरगजा केसर चन्दन प्रभु पर सब छिरकावो री॥

नाचो नई नई गति लै लै नवल नेह प्रगटावो री।
निरखि निमाई मूरति मोहनि निज निज नैन छकावो री॥

जय जय जय बलिहारी बोल मुख फूलन को बरसावो री।
राई नोंन उसार दृष्टिडर निज उर नेह जनावो री।।

नानाबिध विंजन भर थारन प्रभुको भोग धरावो री।
प्रेम सहित मनुहार प्यार कर प्रभुको सकल पवावो री।।

पुनि अचवाय पान बीरीदे पुष्पमाल पहरावो री।
आरति करके सरसमाधुरी अति आनंद मनावो री।।

।। राग बसंत बहार ।।

आज महाप्रभु गौरहरि ने खेल बसंत मचायो री।
भक्त मंडली ले सँग अपने अतिशय नाचो गायो री।।

हरि हरि बोल कलोलत प्रमुदित तन मन में पुलकायो री।
झन झन झाँझ और खोल बजत हैं मधुर मृदङ्ग सुहायो री।।

संग सोहत अद्वैत गदाधर परमानन्द प्रगटायो री।
अबिर गुलाल उड़न लगे चहुँदिशि मनु रँग बादर छायो री।।

छिरकत केशर चन्दन अंगन चोवा अत्तर लगायो री।
झर झर भुज भेंटत भक्तनसों हिलमिल हरष बढायो री।।

नदिया नगर नारि नर प्रमुदित प्रेम सिंधु उमगायो री।
सरस माधुरी रसिक मगन मन हिय अतिही हुलसायो री।।

।। पद राग बसंतबहार तथा जंगला ।।

बोल हरि हरि बोल महाप्रभू नाच निमाई गायरहै।
संग उमंग भरे हरिजनबहु झाँझ और खोल बजायरहै।।

कोउ मृदङ्ग कोउ ताल तमूरा बेला संग लगायरहै।
उँचे सुरन अलापत कोउ उँची भुजा उठायरहै।।

प्रेमछके कोउ सुधिबुधि भूले देह दसा बिसरायरहै।
कोउ आलिंगन करत अंक भर उर आनंद बढायरहै।।

उत्सव सरस बसन्त पंचमी प्रेमअंग पुलकायरहै।
अबिर गुलाल उडावत अतिही नभ रँग बादर छायरहै।।
प्रेमावेश परत धरनी पर नैन नीर बरसायरहै।
सरसमाधुरी सिंधु मीन मन सब हरिभक्त डुबायरहै।।

।। रूप व छवि वर्णन ।।

।। राग काफी ।।

षडभुज रूप अनुपम धारो।
नवकिशोर चोर चित चंचल चपल नैंन जोबन मतवारो।।
मंद हँसन कर मनमोहत है मदन मनोहर शची दुलारो।
ललित त्रिभंग अंग शोभानिधि रसिकजनन पर जादू डारो।।
घुंघरारे वर बाल शीश पर मस्तक तिलक अनूप सँवारो।
हरि हरि बोलत हरिभक्तन संत शिरोमणि रूप उजारो।।
दंड कमंडल दौ कर माँही दौ कर लिये बंशिका प्यारो।
धनुषबान दौ कर में राजत नचत नवलगति लै नखरारो।।
क्रसकटि उदर नाभि शोभानिधि वक्षस्थल उन्नत रुचिकारो।
पटका कमर कसे अति सुन्दर प्राणनाथ पीताम्बर वारो।।
चौबीसों अवतार सार यह दरशन कर दिलके भ्रम टारो।
भयो न है आगे नहिं होनों अैसो रूप अलौकिक न्यारो।।
नखशिख सोहन विश्वमोहन जगन्नाथ के घर अवतारो।
कलियुग पावन करन कृपानिधि जीवनधन सर्वस्व हमारो।।
आचारज सिरमौर जक्तगुरू छैलछबीली अति छिंदगारो।
सरसमाधुरी छकी निरख छवि तनमनधन अरु जोबनवारो।।

।। पद, चाल नाटक की में ।।

नैनों में गौरसुन्दर हर दम समा रहा है।
सूरत सलोनी अपनी दिल में दिखा रहा है।।

झाँकी है बाँकी प्यारी मनमोहनी अपारी।
मुसकन मधुर निहारी, जी उसमें जा रहा है।।

नैना हैं नेह माते रँग प्रेम में हैं राते।
चितवन है अति रसीली भृकुटी नचा रहा है।।

घुंघराले बाल काले कटि पर छुटे निराले।
हरि बोले भुज उठा के नच नच के गा रहा है।।

संतों के सँग में नाचे आनंद रँग में राचे।
भक्तों को भर भुजन में हिरदै लगा रहा है।।

हो मस्त कोई घूमे गौरांग पद को चूमे।
ले झाँझ खोल कर में कोई बजा रहा है।।

हरि की लगन मगन नर बेसुध गिरे धरन पर।
कोई किसी का कर गह हितकर उठा रहा है।।

हरि कीरतन का आनन्द नदिया नगर में छाया।
जगाई माधाई सिर निज चरनों झुका रहा है।।

है प्रेमरस का दानी निश्चय सरस ने जानी।
चैतन्यचन्द्र प्यारा मेरे मन में भा रहा है।।

।। गुणानुवाद व शरणागति के पद ।।

।। राग सोरठ ।।

हिलमिल रसिक सब प्रेमसों जै बोलो चैतनचन्द की।
माता सची के प्राणधन जगन्नाथ आनन्दकन्द की।।

है गौररूप सुहावना भक्तों के मन का है भावना।
निसदिन करो उर ध्यावना नररूप गुरू गोविन्द की।।

निज प्रेम के दाता येही त्रिभुवन में तिन सम है नहीं।
झाँकी करो छवि उर धरो है मूर्ति परमानन्द की।।

कहै सरसमाधुरी जोर कर अति नम्र होय निहोर कर।
परिकर में लीजै मोहि वर लई शरन पद अरविंद की।।

।। राग ठुमरी पद जिला खमांच ।।

गौरकिशोर नाम भज भाई।
जिनकी कृपा पतित भये पावन कीरति सकल विश्व में छाई।
अधमशिरोमनि नीच यवन कुल तार दिये है जगाई माधाई।।
सरसमाधुरी शरण लेहु प्रभु सबहि बात बिगरी बन जाई।।

।। राग सारंग ।।

श्री चैतन्य शरण जिन पाई।
सोई सोई भये कृतारथ सहजहिं प्रभु कृपाल लीने अपनाई।।
हरि हरि बोल नाम की महिमा सबही विश्व बीच फैलाई।
सरसमाधुरी पतितन तारन नाचत प्रमुदित भुजा उठाई।।

।। राग खमाच ।।

हमारे प्यारे श्रीमत प्रभु चैतन्य।
आचारज सिरमोर सर्वजग तिन समान नहिं अन्य।।

पतितन तारन कमर कसी जिन अतुलित गुन सौजन्य।
सरसमाधुरी चरन शरण लई सोई भये जन धन्य।।

।। राग श्यामकल्याण ।।

दृगनभर गौररूप लख लीजे।
कोटि इन्दु की कान्ति सखीरी मुख पर वारन कीजे।।

अपनो तन मन और सरबस धन न्योछांवर कर दीजै।
सरसमाधुरी शौभा को नित नैन निरख के जीजे।।

।। राग कान्हरा ।।

परम धन हमरे नाम निमाई।
कृपाकरी गुरूदेव दयानिधि जब यह सम्पति पाई।।
श्रीचैतन्य महाप्रभु प्यारे जाप जपत सुखदाई।
सरसमाधुरी आश्रित जनकी निशि दिन करत सहाई।।

।। राग पीलू बरवा ।।

श्रीगौराङ्ग महाप्रभु साँचे।
अधमन के उद्धारन कारन हरि हरि बोल जगत में नाँचे।।
किये कृतारथ अधम अनेकन कृष्णनाम बोलो यह याचे।
सरसमाधुरी रस के दाता निश दिन मेरे मन में राचे।।

।। राग जङ्गला सारंग ।।

श्री चैतन्य तनक हँसि हेरो।
रसना सों हरि हरि नित बोलों करहु अनुग्रह नाथ सबेरो।
बैस बृथा बीतत सुमरन बिन तुम बिन कौन हरै दुख मेरो।
सरसमाधुरी कहत जोरकर कहिये मोहि चरन को चेरो।।

।। राग झँझोटी वा श्यामकल्याण ।।

बलि जैये चैतन्य चन्दकी।
मदन मनोहर रूप अनुपम मूरति परमानन्द की।
मन्द हसन मन फसन दशनद्युति देखो आनंदकन्द की।।
सरसमाधुरी नख शिख शोभा निरख चरण रजबन्द की।

।। राग विहाग परज ।।

जै जै श्रीगौरकिशोर की।
चन्द्रबदन लखि लजत मदन मन रसिकन के चितचौर की।।
अलबेली अति बाँकी झाँकी चपल दृगन रस कोर की।
सरसमाधुरी ललित त्रिभङ्गी अद्‌भुत अङ्ग मरोर की।।

।। राग माँढ ।।

महाप्रभु प्यारो लागै है। ए माये कृष्णचन्द्र चैतन्य, महाप्रभु०
कंचन सम द्युति सर्व अङ्ग की लख के मन ललचाय।
जाकी ओर कृपा कर देखें चित को लेत चुराय।
निरख दृग दुःख सब भागे है। महाप्रभु प्यारो लागे है।।
मंद हँसन कर मन मोहत हैं नाचत प्रेम बढाय।
हरि हरि बोलत हरिभक्तन सँग ऊँची भुजा उठाय।
रसिक सुन सब अनुरागे है। महाप्रभु प्यारो लागे है।।
चन्द्रबदन सुख सदन सलोनो नखसिख सुन्दर रूप।
प्रेम छके दृग घूमत झूमत सन्त सिरोमणि भूप।
परम आनन्द रस पागे है। महाप्रभु प्यारो लागे है।।
साधुन संग कीरतन करि रहै शौभा बरनी न जाय।
कंठ लगावत अनुरागिन को हृदय हरष उपजाय।
भाग भक्तन के जागे है। महाप्रभु प्यारो लागे है।।
नैनन से नित निरखों छबिकों धरों निरंतर ध्यान।
नाम रटों निसदिन रसना सों सरसमाधुरी प्रान।
यही प्रभुसों बर माँगे है। महाप्रभु प्यारो लागे है।।

।। राग सोरठ ।।

गौरहरी हम ओर निहारो।
दास आपने जान जगतगुरू भवसागर तें स्वामी तारो।।

जन्म मरन के संकट मेटो हँस मेंटो भय सकल निवारो।
प्रेमभक्ति दै दान प्रानपति निज जन जान हमें प्रतपारो ।।

अधमउधारन पतितनतारन बिरद दयानिधि आप बिचारो।
सरसमाधुरी मंगलकर्त्ता है प्रसिद्ध जग नाम तुम्हारो ।।

।। राग बिहाग ।।

शरण चैतन्यचन्द्र की जैये।
जिनको नाम पतित पावन है तिनही के गुन गैये ।।

गौरहरी की छबि हिरदे धर अङ्ग प्रेम पुलकैये।
नाम रटत रसना सों तिनके श्री वृन्दावन पैये ।।

परम उदार दीन दुख भंजन निशिदिन ध्यान लगैये।
सरसमाधुरी रस के दाता तिन के दास कहैये ।।

।। जन्म बधाइयाँ ।।

बधाई गौर सुन्दर जन्म की नदिया में छाई है।
तरस थी जिनकी बरसों से, घड़ी वो आज आई है।।

मिश्र जगन्नाथजी धन हैं, शुची वो धन शची तन है।
अमोलख रत्न प्रगटा जिनसे सुखदाई निमाई है ।।

सुनहरा गौरतन जिसका, निरख सुवरन लगा तपने।
लगा घटने वो पूरन चन्द्र, उर लज्जा समाई है ।।

जो द्वापर अन्त में प्रगटा मनोहर श्याम तन धर के।
वो राधा वर्ण धर कलि में अनुपम छब दिखाई है।।

बधाई बज रही घर घर, मची है धूम हर दर पर।
दृगन में प्रेम जल भर भर, खुशी सबने मनाई है ।।

निहारें छब को नरनारी, लुटावें सम्पदा सारी।
बिसारी सबने सुध ''मथुरा' मनोहर झाँकी पाई है ।।

गौर छबि उपमा कही न जात ।।
शेष सहस मुख बरन सकत नहिं, शारद कहत लजात ।।

अस सुन्दर बालक नहिं देख्यो, सुन्यो न काहू ठोर।
पारवती नहिं रती रूप ये तो, काम को है चितचोर ।।

अति सुकुमार लाल अधरन पै, सोहै मन्द मुसकान।
मानो चन्द्र सरोवर से नव सुधा झरत सुखमान ।।

लोचन याके रक्त कमल सम, सुन्दर अतिहि विशाल।
चितवन है अति कामनगारी, मन मोहत तत्काल ।।

गोल कपोलन बीच नासिका, शोभा देत अपार।
दो सेवन के मध्य में शुक जिमि, बैठयो तन मन वार ।।

कर पल्लव अति सुघर उदर की, शोभा बरणै कौन।
चरण कमल सुन्दरता बरणत, कवि जन धारी मौन ।।

श्री ''मथुरेश' गौर तन धरके प्रगटें रस भंडार।
अंग अनंग-मान-मद-भंजन, प्रेम पुंज रस-सार ।।

******

गौर तन छब के सदन, धन शचीनंदन प्यारे।
चिरंजिवो चन्द्र बदन, ये त्रिभुवन उजियारे ।।
हैं जगन्नाथ मिश्रजी के बड़े भाग जगे।
जिनके घर आये जगतनाथ सुवन तन धारे ।।
इन्द्र की पत्नी शची ऐसी लची सुन महिमा।
आ शची भौन नची, बनके भिखारिन द्वारे ।।
अग्नि में तपके वो सुवरन वना कुदंन तौ भी।
देख गौरांग छटा हार के शरमाया रे ।।
देश बंगाल में इस बाल का उत्सव घर घर।
हो रहा बजती हैं नौबत, कहीं डफ् नक्कारे ।।
झाँकी गौरांग की पा, बंग के वासी है दंग।
प्रेम के रंग रंगा ''मथुरा'' भी तन मन वारे ।।

।। धन्य जनम श्री गौरहरी को ।।

कलि निस्तारण अधम उधारण, धन सौभाग्य मही को,
शशि पूरन शचि तन से प्रगट्यो, तम हर भव रजनी को,
मोद दायक सबही को ।।

आचारज अद्वैत कियो तप , चाह्यो दरस धनी को,
भयो अवतरन जन मन रंजन, तब गौलोक पती को,
स्वाद चाखन भक्ती को ।।

उमड़ प्रवाह बढ्यो नदिया में, प्रेमानन्द–नदी को,
डूबे रस में सुर नर मुनि लखि, सिद्ध मनोरथ जी को,
प्राप्त कर प्रेम–निधी को ।।

धन बड़भागी जगन्नाथ द्विज, धन्य सुभाग्य शची को,
देत बधायो हियो उमगायो, नर नारिन नगरी को,
करत गुणगान हरी को ।।

द्विज गृह धाय मनावत मंगल, नर तिय दल बस्ती को,
सुर दल भेष बदल चल आये, निरखन मुख स्वामी को,
धन्य वह अवसर नीको ।।

दे हरिनाम–सुधा खल तारे हर्‌यो भार धरनी को,
तरे जगाई मधाई से पापी, नसियौ महत्व कली को,
दई शुभ गति काजी को ।।

आराधत ''मथुरेश' निरन्तर, राधा निज शक्ति को,
तन्मय होय वरण श्यामल तज, धार्‌यो गौर छबी को,
दास आश्रित उनही को ।।

******

आज परम मङ्गल भयो माई।
रसिकन के जीवन धन प्रकटे, विपुल निशान बजाई ।।
इनहीं के हित निरवधि बिहरत, फूले अङ्ग न माई।
रसिक मुकुट मणि रूप सनातन, ''दास बिहारी' गाई ।।

बधाई बाजत रंग भरी।
श्री जगन्नाथ देव घर प्रगटे, सुन्दर गौर हरी।

शुभ नक्षत्र फागुण शुभ पून्यो, शुभ दिन सुभग घरी।
परमानंद भयो तिहुँ पुर सुर बरसत फूल झरी।।

पढ़त वेद ध्वनि द्विजवर सब नान्दीमुख श्राद्ध करी।
प्रफुलित श्री शचि मात परम सुख–सागर माँझ तरी।।

देत दान जाचक जन को मनि, भूषन बसन जरी।
'वृन्दावन' पावे प्रभु पद रज, यह जिय आस धरी।।

******

जगन्नाथ द्विजवर के मंदिर, आज बधाई बाजै।
तीन लोक वंदित प्रभु देख्यो, श्री शची गोद विराजै।।

अति आनन्द भयो सबहिन के, पूरे मन के काजै।
प्रगट भये 'वृन्दावन'–नायक, नवद्वीप मधि राजै।।

******

आज बाज अति नदिया नगर में, घर घर आनँद माई।
शची–गर्भ–प्राचीदिशि प्रगटे, गौर–चन्द्र सुखदाई।।

तिमिरा ज्ञान मिट्र्यो त्रिभुवन को, सुजस चाँदनी छाई।
भक्त–कुमुद प्रफुलित भये शीतल, जग–रवि ताप नसाई।।

अद्‌भुत विधु पूनो फागुन को, निसि दिन उदित रहाई।
घटे बढ़े न, कला परिपूरन, प्रेम–अमिय बरसाई।।

इनहिं निहार गगन शशि लज्जित, मन में तुच्छ कहाई।
जियहिं सिहाय कहत पुनि ऐसे, नख छबि किंचित पाई।।

स्वर्ग सोम दरसत तिहिं कालहिं जगत न चेत रहाई।
नयन चकोर भये सन्तन के, निरखत रूप सदाई।।

दसधा रस पीवत निशि वासर, फूले आनन्द माई।
जगन्नाथ द्विजवर भागन की, कहँलौं करौं बडाई।।

शेष सहस मुख अज भव गावत, गुननिधि पार न पाई।
''वृन्दादास'' कहा मति वरणै, प्रभु महिमा सरसाई।।

******

आज अति नदिया नगर बधाई।
जगन्नाथ मिश्र गृह प्रकटे, जगन्नाथ सुखदाई।।

श्रीयुत कृष्ण चैतन्य नामवर, जगमग अंग गुराई।
शचीमात जग ख्यात अनुपम, वात्सल रस छवि छाई।।

बजत दुंदुभी ताल झाँझ बहु, भेरी सँग शहनाई।
गावत गुन दुलरावत नारी, मन्दिर भीर सुहाई।।

दीनो दान मान विप्रन कौं देत असीस जु कविजन गाई।
मिली ''मनोहर'' प्रीति निछावर, रोम रोम प्रति छाई।।

******

बाजत रंग बधाई माई, लागत परम सुहाई।
जनमें श्री चैतन्य चन्द्र जू, रसिकन के सुखदाई।।

गावत मंगल जुरि मिलि नारी, श्री शचि कूख मल्हावै।
द्वारे बन्दनवार साथिये, मोतिन चौक पुरावै।।

ठई ठई सोहत कलश दीपावलि, अमरन को मन मोहै।
शोभा जगन्नाथ के घर की, वरणै सो कवि को है।।

कलि के जीव उधारन कारन, रसनिधि श्री बृजचंद।
''दास किशोरी'' के प्रभु प्रगटे, त्रिभुवन आनन्दकंद।।

******

बाजत बधाई नदियापुर आज।
महाप्रभु चैतन्य कृष्णहरि, जन्म लियो रसिकन के काज।।

फागुन पून्यो होरी उत्सव, जहँ तहँ ताल पखावज बाज।
फिरहिं दुहाई सबन सुहाई, भयो एक प्रेम को राज।।

मात पिता तन मन अति फूले, देत दान पट भूषण साज।
समय 'मनोहर' को वरनै कहि, थकित भयो सुर मुनि सिरताज।।

******

बाजे बाजे मृदङ्ग झाँझ, जगन्नाथ मिश्र घर आज।
जन्म लियो चैतन्य महाप्रभु,गये अमंगल भाज।।

नाचें गावैं हरि हरि बोले, अद्वैत गदाधर भक्त समाज।
नदिया प्रगटे गौरचन्द्र जब, प्रेम को आयो राज।।

******

बधाई बाजत नदिया आज।
जगन्नाथ दरबार प्रेम सौं, साजे सुन्दर साज।
प्रकटे श्रीगौरांग महाप्रभु, सन्तवृन्द-सिरताज।।

नाचत गावत हरषित सरसित, मेट लोक कुल लाज।
श्री प्रभु 'चन्द्रगोपाल' परस्पर, कर मन पूरन काज।।

******

नदिया नगर बधाई छाई।।
इक तो होरी दिवस सहज ही, सबके मन उमगाई,
पुनि प्रकटे आनन्दकन्द प्रभु, उठे सकल हरषाई,
रहै सब अँग पुलकाई।।

पुत्र जन्म सुन श्रीमिश्रन घर, नर नारी उठ धाई,
हूला हूली देत परस्पर, गावत नवल बधाई,
सकल मिल शचि ढिंग आई।।

निरख ललन छवि होत मगन सब, हर्ष हृदय न समाई,
कहत धन्य ऐसो सुत जायो, शोभा कही न जाई,
निरख सत काम लजाई।।

देत असीस जिवो सुत तुम्हरो, जुग-जुग लव सुखदाई,
'सूरज' सिर पै सदा बिराजो, तुम्हरे सुत पद छाई,
कभी नहिं हो बिलगाई।।

******

नदिया में बधायो छायो है।
प्रकटे आनन्दकन्द प्रभु, सबको मन उमगायो है।।

हर्षभरी नदिया की नारी गावत सुभग बधायो है।
हरि हरि बोलत गलियाँ डोलत, प्रेम न हृदय समायो है।।

भक्त गुलाल उड़त भक्ति जन, प्रेम रंग बरसायो है।
सूरज निरख मनोहर लाला, निज आपनपो भुलायो है।।

******

गावो गावो बधाई मंगल मोद भरी।।
आज दिवस मंगलमय माई, प्रगट्यो मंगल साज।
बजत बधायो लगत सुहायो, अनुपम छवि रही छाज।।

देत दान महतारी भारी, पुत्र कुशल के काज।
'सूरज' स्वामी जन सुखधामी, अवतारन शिरताज।।

******

गौर हरि का जन्म रँगीला।।
प्रेम-समुद्र डुबावन कारन, गौर प्रभा में आया रसीला।।

नाम-सुधा निज पिये पिवावै, नाम प्रताप जनाय छबीला।
हरि पद रति गति सहजहि पावै,जाकौं गौर-चरन है वसीला।।

प्रेम विभोर करै जग जन कौ, काटै बन्धन कर्म हठीला।
दरस–परम–आनन्द–उदधि वहैं, दिव्य रूप अद्भुत चमकीला॥

परम दया करूणामय छिन छिन, गौरहरीय स्वभाव सुशीला।
राधा–पद रति–गति–आसक्ति, देय ''माधुरी'' को रस लीला॥

******

गौर चरन की आस हमारे।
दिव्य अनन्त प्रेम–सिन्धु–रस, झरत रहत जिन पदहिं सुखारे॥

ध्यान धारणा जिन पद सेवा, धरत हिये बिच प्रीतम प्यारे।
अवगाहन अरू पान निरन्तर, जिन पद–रस हरि करत सदारे॥

तिन पद प्रभा भाव रूपहि धर, गौर हरी हो हरिहि पधारे।
एक रूप में दोय प्रकट जग, बाह्य गौर हरि अन्तर कारे॥

सिद्ध कियो यह प्रकट जगत हो, षडभुज रूप सबन दिखलारे।
बजत बधाई घर घर माहीं त्रिभुवन माहीं मंगलचारे॥

जय जयकार होत दशहूँ दिशि, करै सुमन की सुर बरसा रे।
हृदय नैन प्राणन हरि माहीं, बसत लाडिली रूप अपारे॥

ताते गौर हरी भये निश्चय, साँवल अन्तर लियो छुपारे।
'माधुरी' प्रेम–घटा बरसावत, करत कृपा शचि मात दुलारे॥

******

कारे पै चढ गयो गौरो रंग।
जाकौ श्याम कहत श्रुति वेदहि, मनमथ कोटि अनंग॥

सो साँवल हरि गौर हरि भयौ, देखौ होरी सुरंग।
जापै रँग चढ़ै न कोई भी, बदल गयो इक संग॥

छिप गयो श्याम गौर के माहीं, गौर भये सब अंग।
रूप भी गौर, भाव भी गौर, गौर ही प्रेम तरंग॥

रस भी गौर, रंग भी गोरहि गोरहि प्रेम उमंग।
ध्यान धारणा रत पद जिन पिय, सोई भयो नवरंग।।

वितरण प्रेम नाम रस अमृत, लियो अवतार सुढंग।
नदिया में अस रूप धार हरि, प्रकटे अधिक उछंग।।

कौतुक अद्‌भुत अस होरी को बजत बधाई चंग।
मंगलाचार बधाई 'माधुरी' गा सुख लहो अभंग।।

******

फागन में सखी सावन आयो।
गगन घटा आनन्द की छाई,उज्ज्वल रस अनुपम बरसायो।
प्रगट भयो हित श्याम गौर हो, याते यह सुख दृग दरसायो।।
बजत बधाई त्रिभुवन माहीं मंगल मोर सुरंग बधायो।
बनवारी हित अंग–अंग 'माधुरी', लख लख नयना हृदय सिरायो।।

******

गाउँ बधाई गौरसुँदर की, साँझ शुभ घडी जन्म लियो।
फागुन मास पूर्न चन्दा लख, राहु बाँह छाँह ग्रहन कियो।।
मंगल नाम उचार्‌यो जग जन, गौर बरन हरि प्रकट भयो।
जहँ तहँ भक्त उनमत हो नाचत, प्रेमासिन्धु तरंग न्हयो।।
सुत मागद बंदी औ द्विजन को, उपराग मिस दान दिवायो।
तात मात शचि मिश्र पुरन्दर, प्रेम रतन भंडार लुटायो।।
नगर लोक सब गावत बजावत, नदिया नगर डगर सब छायो।
दरशन कारन 'वैष्णव' आवत, अद्‌भुत सुन्दर रूप दिखायो।।

******

प्रगटे विश्वंभर अवतारी।
राधाभाव सुललित अङ्ग अँग, श्याम गौर वपु धारी।

सुनियत हरिनाम चहुँ दिशि में, वेद पढ़त ब्रह्मचारी।
'गौरचरन' नाचत मिलि गावत, नदिया के नरनारी।।

******

नदिया में होत कुलाहल भारी।
शची कूख प्रगटे परिपूरन, गौरचन्द्र अवतारी।।
बजत झाँझ मिरदँग शहनाई, मंगल गावत नारी।
'गौरचरन' ये पतित उधारन, भक्तन के हितकारी।।

चैतन्य – मंगल

।। चौपाई ।।

गृह गृह आज कुलाहल भारी। मुदित फिरतं नदिया नरनारी।
प्रगटे श्री गौरांग मुरारी। कलि जीवन पर दया विचारी।।

।। छन्द ।।

विचारि जीवन पर दया बहु आय मानुष तन धर्यो।
दान दे हरिनाम कीर्तन सकल जग पावन कर्यो।।
प्रेम सहित लगाय उर सौं दीन पतिनन उद्धर्यो।
खण्ड करि पाखण्ड मत बहु रसिक जन मन दुख हर्यो।।
भक्त वत्सल दीनबन्धु अनाथ नाथ कहावहीं।
'बाँके पिय' चैतन्य मंगल गाय हरष बढ़ावहीं।।

।। चौपाई ।।

नवद्वीप में नवनिधि आई। द्वारन बन्दनवार बँधाई।
शची मात को देत बधाई। जगन्नाथ पितु द्रव्य लुटाई।।

।। छन्द ।।

लुटाइ द्रव्य अनेक भाँतन याचकन इच्छा गई।
धनु वर बहु द्विजन दीनी भीर द्वारन पर भई।।

देत आशिष चले भूसुर वेद ध्वनि नभ चढ़ रही।
धरी मंगल सँवज जहँ तहँ हरद युत छिरकत दही।।

साजि साजि सिंगार आई नारि मंगल गावहीं।
'बाँके पिय' चैतन्य मंगल गाय हरष बढ़ावहीं।।

।। चौपाई ।।

रसिक वृन्द सुनि सुनि जुरि आये।
झाँझ पखावज डफ लै आये।।
करत कीर्तन सब हरषाये।
केसर रंग गुलाल उड़ाये।।

।। छन्द ।।

उड़ाय लाल गुलाल केसर रंग सौं होरी मची।
प्रेम भरी धमार गावत जुरी में वैष्णव मंडली।।

बाँधि निज निज चरण नूपुर प्रेम सौं नाचत सुखी।
दीर्घ बाहु उठाय बोलत उच्च स्वर गोविंद हरी।।

भक्ति भाव अनुराग बाढ़्यो प्रेम अविचल पावहीं।
'बाँके पिय' चैतन्य मंगल गाय हरष बढ़ावहीं।।

******

बाजत रंग बधाई घर घर।
आनन्द निधि सुखनिधि शोभा निधि, जनमें शची कुँवर वर।।

पढ़त वेद मुनि गावत नारी, मंगल द्वारे साथिया घर घर।
राजत ध्वज वर बन्दनमाला, मोतियन चौक पूरत घर पर।।

देववधू कुसुमावलि बरसत, हरषत दुंदुभी बाजत सुरपुर।
'किशोरीदास' श्री महाप्रभु प्रगटे प्रगट कृष्ण अवतार मनोहर।।

******

रंगीलो फागुन मास सुहायो।
प्रकटे श्री चैतन्य महाप्रभु, भक्ति–सुधा–रसनिधि सरसायो।।

पतित उधारन विरद बढ़ावन, सब जन मुख हरि नाम कहायो।
दासन को जीवन निज तन धरि, घर घर प्रेम रंग बरसायो।।

श्रीवृषभान नंदिनी को अनुराग उफन गौरांग कहायो।
अनगिन जन उद्धारि पार किये, 'जुगल' चरन अनुराग बढ़ायो।।

******

अरी सुन रँगीली नौबत बाजै।
प्रगटे श्री चैतन्य महाप्रभु, भक्तन के सुख काजै।।

शची–कूँखि–निधि तैं प्रगटे मनो, पूरनमा शशि भ्राजै।
'जुगलदास' हिय प्रेम बेलि सींचि, निजू कीर्तन आजै।

******

श्री नदिया नँदगाँव मनो वहाँ, श्याम
सोइ यहाँ गौर भये आई।।
होंस भई ब्रजनारिन के, अनुराग
सोई हीयो ललचाई।।
साँवरे रंग पै लाल चढै कैसे,
गौरइ पर खुल रंग सवायो।।
ताहि तै आज बधाई को लाह,
लूटत प्रभु नेहि रिझायो।।

******

नदिया में प्रगटे गौर हरी।
है बसन्त रितु अतिहि सुहावन, सबके मनहिं उमंग भरी।।
श्री जगन्नाथ मिश्र के गृह में, दरसन को बहु भीर खरी।।
बन्दनवार बंधी गृह भीतर, बाजत नौबत घरी घरी।।

नभ में देव विमानन छाये, पुष्पन वरषा झरी झरी ।।
प्रगटत दूध लियो नहिं मुख में, शचि माता मन सोच परी ।।
आचारज आ मंत्र दियो जब, तब पय पान कियो श्री हरी ।।
प्रमुदित सखिगण मङ्गल गावें, निरख लाल मुख खरी खरी ।।
प्रेम मगन सब होरी खेलें, डारहिं रंग गुलाल भरी ।।
कछु दिन भये विप्र इक आये, भोग बना तिन ध्यान धरी ।।
गौर भोग पावन जब लागे, ब्राह्मण मन में सोच करी ।।
केई बार रसोई बणाइ, ध्यान समय आजायँ हरी ।।
पिता क्रोध कर डाँट दई जब, 'मौ यहि टेरत' कहे हरी ।।
अस कह षड़भुज रूप दिखायो, बिप्र मगन हो चरन परी ।।
संकीर्तन मंडल बनाय कर, चहुँ दिशि जाय प्रचार करी ।।
जगाइ मधाई से पापी तारे, नाम प्रभाव प्रतिज्ञ करी ।।
'नारायण' प्रभु पर बलिजाई, बोलो जय जय गौर हरी ।।

******

प्रगटे आज निमाई, बजत आनन्द बधाई ।।
जन्म लियो फागुन सुदि पून्यो, सन्ध्या बहु सुखदाई ।
व्योम-चन्द्र अति मलिन भयो है, लखकर चन्द्र-निमाई,
शची माता हरषाई ।।

कंचन कलश भरे गंगाजल, बन्दनवार बँधाई ।
कदली-थंभ लगे घर घर में, मोतिन चौक पुराई,
ध्वजा सुन्दर लहराई ।।

बजत नगाडा झाँझ ढोल ढफ, सारंगी शहनाई ।
नदिया प्रेम बहे नदिया में, आनँद-सिन्धु समाई,
परत हरिबोल सुनाई ।।

सुरगन बैठि विमानन आये, दरस करत हुलसाई ।
जय जय जय धुनि होत गगन में निज निज भाग्य सराई,
सुमन की झरी लगाई ।।

जो सुख अमरपती को दुर्लभ, सो पुरवासिन पाई।
'मधुर' छबी मुख शोभा निरखत, माता बलि बलि जाई,
फूले अँग न समाई ।।

******

नदिया में हुआ आनंद, प्रगटे गौर हरी ।।
होरही धुनि चहुँ ओर, बोल हरि बोल हरी ।।
जगन्नाथ घर बजत बधाई,
झाँझ नगाडा डफ शहनाई,
नरनारी बलैया लेत, प्रगटे गौर हरी ।।
'मधुर' दान झोली भर लेवें,
देव विप्र सब आशिष देवें,
जीओ शची तेरो लाल, प्रगटे गौर हरी ।।

******

जय जय जयति प्रभु चैतन्य ।।
सुभग फागुन सुखद पूनम,
नगर नदियाँ सुरसरी तट,
मलिन शशि लख़ गौर प्रतिमा,
उदय ज्योति अनन्य ।।

मिश्र श्री जगन्नाथ हरषे,
पुलकि शचि शिशु उर लगावें,
नारि नर हरि धुनि उचारें,
बिसरी सुधि निज अन्य।

बजत शहनाई नगाड़ा,
प्रेम उनमत भक्त नाचत,
सुर गगन तें सुमन बरसत,
भाग्य शचि को धन्य ।।

पतित जन उद्धार कीनो,
प्रेम संकीर्तन प्रचार्यो,
गौर हरि अवतरित भू पर,
'मधुर' चरन शरण्य ।।

******

गावो गावो गावो बधाई गावो रे
प्रेम प्रदाता भूतल आयो रे ।।

नदिया नगरी परम सुहावन, फागुन पूनो अति मन भावन
चहु दिश आनन्द मङ्गल छायो रे ।।

लिये अंग कान्ति रूप प्रिया को, धारै उर में भाव प्रिया को
अन्तर सांवल रूप छुपायो रे ।।

सज धज नदिया नागरि आवे, हिल मिल नाचे मंगल गावे
शचीरानी नव छौना जायो रे ।।

विश्वरूप लखि रूप लुभाने, दौर दौर मईया ढिग आवें
छोटो भईया अति मन भायो रे ।।

भक्तन उर में आनन्द भारी, बर बस मुख हरि नाम उचारी
जनु साधन फल आज ही पायो रे ।।

जगन्नाथ मिश्र ठाढ़े द्वारे, विप्रन दान देहि हर्षाने
आनन्द उर अन्तर न समायो रे ।।

विप्र गण आशीर्वचन उचारे, स्वस्ति पढ़ै करें मङ्गलचारे
चिरंजीवो यह सुत मन भायो रे ।।

'केलि' मन्जरी अचरा पसारि, पुनि पुनि झुकिझुकि ले बलिहारी
बिन मांगे मन भायो वर पायो रे ।।

******

तुझ से लागी लगन, निशदिन तेरी शरण
गौर प्यारे, शचि माता के नयनन तारे ।।

फागुन शुक्ल पूनम तिथि आई,
जगन्नाथ-शचि घर, बटत बधाई,
सखियाँ मंगल गावें, बधाई जी भर पावें।
तन-मन वारें- ।। शचि ।।

नवद्वीप-नदिया नगर निवासी
धान्य हुए, सारे - बृजवासी,
सब जन दौड़े आवें, तेरे दरशन पावें।
गौर प्यारे - ।। शचि ।।

नित्यानंद जी के अनुज दुलारे,
विष्णु प्रिया धन, प्राण पियारे,
सब से नेहा तोड़ा, हरि से नाता जोड़ा।
हरि उर धारे - ।। शचि ।।

अगणित अधमी पापी तारे,
चोर-लुटेरे, ठग उद्धारे,
हरि का नाम लिया, जैसे इमरत पिया।
तर गये सारे - ।। शचि ।।

भक्तन कारज भू प्रकटाये,
श्यामा-श्याम गौर-छबि आये,
प्रेम का पान किया, कृष्ण का नाम लिया ।।
प्रेम पियारे - ।। शचि ।।

दास 'प्रभाकर' बलि बलि जाई,
शरण में आयो, गौर-निमाई,
तुझ बिनु कौन मेरा, सब कुछ तेरा ही तेरा,
गौर प्यारे - ।। शचि ।।

******

फागुण शुक्ल पूरणमासी शुभ, संध्या बहु सुखदाई,
नदिया नगर भयो उजियारो, गौर-चन्द्र उदयाई।
मात शची सुन्दर सुत जायो, जगन्नाथ आनन्द मनाई,
दर-दर बन्धनवार बंधी है, घर घर बटत बधाई।।
शचि माता को लाल लडैतो, विष्णु प्रिया को प्राण निमाई,
भक्त उद्धारण, पापी तारण, सन्तन को सुखदाई।
जन-जन, जीव-जन्तु को प्यारो, प्रेम-पीयूष पिलाई,
दास 'प्रभाकर' कली नशावन, प्रकटे गौर-निमाई।।

।। होली आई आई रे होली आई आई रे ।।

होली आई आई रे होली आई आई रे
नदिया में चल देखो भाया अद्‌भुतताई रे
कांई अद्‌भुतता रे भाया म्हाने देवो बताई
परव हो रहयो छै रे अद्‌भुत कांई कही न जाई
ऐक तो होली दुजे ग्रहण छै तीजे सायंकाल
शची मात सुत जायो अशो छै साक्षात् गोपाल
शोभा सुशोभित छै नदिया जग मग जग मग करती
मानो आकाश सुं उतरी विभुती आयो छै हरी धरती
पंकज कनक प्रसन्न वदन छै जादू सब पै ढावै
जो आवै सो दरश करत ही बस निहाल हो जावै
आकर्षण नयना कै मोही छै घुंघराला बाल
मोहिनी मूरति सोहिनी सूरत लख लख होवो निहाल
अधरां की लाली मनहर छै वां की भवां कमाल
तेजवन्त छै परै दिखाई माता शची को लाल
नभ भू मन्डल रंग रली छै दशुं दिशा आनन्द
दुन्दुभी नभ दे रहया देव छै प्रगट्‌यौ परमानन्द
नर नारी सब फूल्या फूल्या नाच नाच कै गावै

आपहि आप हरि हरि बोले ढोल मृदंग बजावै
ध्वुजा पताका कदली वन्दनमाल कलश सहायौ
रंग बधाई जम्यौ छै भाया नदियाँ नगर सजायौ
मंगल ही मंगल दीखे छै जैंडीने भी देखो
मनवांछित फल पाया सब ही कुण करै इंको लेखो
आज बधाई रंग रंगीली गावै छै नर नारी
नोबत सहनायां बज रही छै अतिही मंगलकारी
अन्त समय में बास पाऊं परिकर हित राधा प्यारी
सीधो जाऊँ धाम के हरि को देवो बधाई यारी ।।

******

हो रंग होरी में नव रंग बरसै
नव रंग बरसे नव रंग बरसै
नदिया में बही नदी आनन्द की आनन्द सरसै हो रंग बरसै
मंगल भयौ महा मंगलमय मंगल ही मंगल दरसै हो रंग बरसै
शची माता ने है सुत जायौ नरनारी सब हरसै हो हो0
मंगल कलश सुशोभित सथिये शोभा मन आकरसै हो हो0
ध्वुज पताक कदली अरू तोरन लीपे चौक अतर से हो हो0
मोति चौक पुराय बधाये गावें युवति स्वर से हो हो0
नाचैं गावैं मोद बढावैं – सज सज आवैं घर से हो हो0
नोबत सहनाई रंग भीनी सुन उर आनन्द परसै हो हो0
बसन धान धन भूषण बट रहै लेत सबे मन हरसै हो हो0
शची सुत चीरजीवो आशिश दै सब ही हरिअन्तर से हो हो0

******

होलि में कांई आंकेरे – होली में काँई आंकेरे
परमेश्वर को रंग बदल गयौ कांई झांके रे
अबकै होली आई अशी छै कांई बतावां भाया
रीति भांति ईश्वर की बदली और बदल गई काया ।। होली0

अपणों नाम आप ही लेबा कै ताई ललचायौ
नाम सुधा रस पीवा कै हित नदिया में प्रगटायो ।। होली0

स्वामिनि पद रस डूब सुधी खो मान भाग धन धन्य
भाव लहर आतां हो अचेतन भयौ कृष्ण चैतन्य ।। होली0

चाख चाख कै स्वाद नाम निज नाच नाच कै गावै
प्रेमान्मत्त होय हरि रस में मन्डल भक्त नचावै ।। होली0

कीट भृंग के न्याय जुं भाया पलट कीट होय भृंग
त्योंहि पद नख ज्योति ध्यान धर श्याम भयौ गौरंग ।। होली0

स्वामिनि पदनख चन्द्र छटा ने होली रंग बरसायौ
रंग चढ्यौ काला पै गोरो-गौर हरि बण आयौ ।। होली0

ले संकल्प पाप हिन्सा को पाप स्वरूप दिखायौ
निश्चय हि पाप जरै छै नाम सूं हरि हरि कहर बतायौ ।। होली0

प्रेम विभोर करै भक्तां ने नाम कीर्तन करकर
प्रगट प्रताप जनावे नाम कौ हरि हरि हरि हरि कहकर ।। होली0

देख देख कै आय अचम्भौ भयौ किशो अवतार
बजत बधाई जगन्नाथ घर घर घर मंगल चार ।। होली0

नाम सूं पावै प्रेम प्रेम-निधि नाम करै उद्धार
कइयां ही जन हरि हरि बोलै हो जाय बेड़ा पार ।। होली0

तोरण ध्वुजा पताका कदली शोभित वन्दनवार
मंगल कलश द्वार रचि सथिये मोति चौक सुढार ।। होली0

राधा नाम चरण राधा हित रति गति निश्चय पाऊं
हौं प्रसन्न स्वामिनि हित मोपै ये ही बधाई चाऊं ।। होली0

कृपा पात्र दासी होऊं स्वामिनि प्यार सों मोहे अपनावै
तन तजते ही वास दैं परिकर सीधे ही धाम बुलावै ।। होली0

हरि हृदय निधि के पद पंकज निश्चय ही हौं पाऊं
अन्त समय नहिं भटके कर्म में सीधो ही धाम में जाऊं।। होली0

******

शची माता ने सुत जायौरी नदिया में धूम मची है
कोई अवतारी है आयौ री नदिया में धूम मची है ।।
घर घर चर्चा करै नर नारी, निश्चय ही है ये अवतारी
सब ही के मन भायौ री–नदिया०

फागुन शुक्ला ग्रहण की पूनौ, जामै भजन करै सब दूनो
पावन तिथिये बनायौ री –नदिया०

दश हौ दिशि अद्भुत खुशी छाई, नर नारी आनन्द छकाई
सब हीये सुख सरसायौ री–नदिया०

जगन्नाथ घर बजत बधाई, नभ देवन दुन्दभि बजाई
मेह पुष्प बरसायौ री–नदिया०

नाचत गावत मोद बढावत, सज सज नदिया युवती आवत
मंगल मोद बधायौ री–नदिया०

दरशक गण की भीर लगी है हरि भक्ति की सुरत जगी है
दुष्कृत सब छिटकायौ री–नदिया०

अनुपम रूप अनोखो बालक, सारी सृष्टी को संचालक
दिव्य रूप लख पायौ री–नदिया०

राधा हित पद की रसभक्ति, रति गति प्यारी पद आसक्ति
पुजवौ 'हरि' मन भायौ री–नदिया०

******

या मूर्धन्य शचीं माता ने ये कैसौ लाला जायौ री
मुखड़ों तो याकौ है चन्दा सो – कहा कह होई अंग प्रभा कौ
शशि को रूप लजायौ री–ये कैसौ०

नख शिख की लख लेव लुनाई–कैसी अहा है कमनियताई
रूप सुधा सरसायो री–ये कैसौ०

अबही सो याके नेत्र छके हैं–ऐसे अज लौ नाहिं लखे हैं
सब कौ चित्त चुरायौ री–ये कैसौ०

शचीबदन पे कच घुंघराले–को कह कैसे जादूगारे
कैसो मन्द मन्द मुसकायौ री–ये कैसौ०

कंचन की सी देह द्युति है– मोहिनि मुख की आकृती है
भाल तेज दमकायौ री–ये कैसौ०

जगते अनोखो हरि ये बालक–सारे ही भक्त जनन को पालक
अस प्रताप जग छायौ री–ये कैसौ०

******

हो आंगने मेरी बाजै बधैया
बाजे बधैया बाजै बधैया–हो आंगने मेरी बाजै बधैया ।।
जगन्नाथ घरनी शची माँ ने जायौ री छैया हो बाजै०
घर घर धूम बधाई बधाये नाचै ताताथैया हो बाजै०
तोरन वन्दन वार सुशोभित–महलन धुज फेहरैया हो बाजै०
मंगल कलश सुशौभित सथिये मोतिन चौकपुरैया हो बाजै०
बटत बधाई सब मन भाई सब को आश पुजैया हो बाजै०
याचक सकल अयाचक कीने गुणीजन धूम मचैया हो बाजै०
वन्दी विरद उचारत ठाडे सुमन देव बरसैया हो बाजै०
त्रिभुवन में सुख छयौ अनोखो कहा कह कोइ दैया हो बाजै०
आशिश देत विप्र गण ठाडे लै लै दान धन गइया हो बाजै०
पदरति गति आसक्ति स्वामिनि हरि को देवो शशि हैया हो बाजै०

******

चिरजीवौ यह प्रेम पियारो पियारो ।।
जगन्नाथ मिश्र को लाल लाडलो,
शचिमाता नयनन को तारो ।। चिर ।।
फागुण शुक्ल पूनम तिथि आई,
नदिया नगर भयो उजियारो ।। चिर ।।
सुन्दर बदन बाल छवि सोहे,
गौर वरण की छटा निहारो ।। चिर ।।

पापी तारण, प्रेम प्रसारण,
कलि काल में लियो अवतारो ।। चिर ।।
दास ''प्रभाकर'' बलि बलि जावै,
राधा–माधव, चरण प्यारो ।। चिर ।।

******

हिल मिल गावो बधाई, प्रकटे श्री गौर निमाई ।।
फागुण शुक्ल पूनम शुभ दिन, संध्या बहु सुखदाई,
जगन्नाथ मिश्र अरू शचि माता घर, महाप्रभु प्रकटाई,
शोभा वरणी न जाई ।।

नवद्वीप नदिया नगर–डगर में, चहुँ दिशि खुशियां छाई,
नाचत गावत मोद मनावत, सब मिल धूम मचाई,
बाजत ढप शहनाई ।।

प्रेम मगन हो हरि नाचत है, हरि, हरि, हरि, हरि गाई
जो मग आवत हरि गुण गावत, हरि में हरि हो जाई,
प्रेम की झड़ी लगाई ।।

दास ''प्रभाकर'' लेत वलैया, हरि सों लगन लगाई,
जन्म जन्म चरणन चेरो, ना संगी कोई माई,
आयो तव शरणाई ।।

******

जय श्री चैतन्य महाप्रभू, जय श्री गौर निमाई ।।
फागुण शुक्ल पूनम तिथी, शुभ घड़ी जब आई ।।
मात शचि गृह लालो जायो, घर घर बटत बधाई ।।
नवद्वीप, नदिया नगर नगर, चहुदिशि खुशियां छाई ।।
नभ में देव विमानन आये, पुष्पन झड़ी लगाई ।।
अगणित अधम निशाचर तारे, प्रेम का पाठ-पढाई ।।
जनम जनम का भटका 'प्रभाकर' चरणन चित्त लगाई ।।
जय श्री चैतन्य महाप्रभु, जय श्री गौर निमाई ।।

******

प्रकटे श्री गौर हरि, घर घर बटत बधाई ।।
फागुन शुक्ल पूनम तिथि आई,
शुभ दिन, शुभ ये घड़ी ।। घर घर ।।

नदिया नगर नवद्वीप खंड में,
प्रेम की ज्योति जली ।। घर घर ।।

मात शची सुन्दर सुत जायो,
गौर रूप धरी ।। घर घर ।।

नर–नारी सब देत बधैया,
कंचन थाल भरी ।। घर घर ।।

चन्द्र कला सम बाढत दिन दिन,
बोलत हरी हरी ।। घर घर ।।

अधम उद्धारण भूतल प्रकटे,
प्रेम की बूँदे झरी ।। घर घर ।।

दास ''प्रभाकर'' गौर श्याम के,
चरणन चित्त धरी ।। घर घर ।।

******

सब मिल गावो आज बधाई
श्री चैतन्य महाप्रभु प्रकटे, त्रिभुवन जन सुखदाई,
फाल्गुन शुक्ला पूनम तिथि है धन्य शुभ घड़ी आई,
जगन्नाथ जी पिता आपके धन्य भाग शचि माई,
बंगाल प्रान्त नवदीप देश में, घर घर मंगल गाई,
कलि मल नाशक प्रेम प्रकाशक, प्रकटे गौर निमाई,
जय जय कार शब्द नभ छाया, सुमन देव बरषाई,
जुग जुग जीवो पुत्र मिश्रजी, परहित निधि प्रकटाई,
सब वैभव घर त्याग महाप्रभु, लिया जोग अपनाई,

देशाटन कर हरि कीर्तन की, गंगा प्रेम बहाई,
'गौर दास' रख चरण पास, श्री राम गुरू दरसाई,
नहीं सहारा भू-मण्डल में, तज तव चरण निमाई,
सब मिल गावो आज बधाई।

******

गावो गावो रे बधाई फागण आया।
श्री गौराङ्ग महाप्रभु प्रकटे, त्रिभुवन में आनन्द छाया ।। 1 ।।
नदिया ग्राम गंग तट शोभित, धन्य मात शचि सुत जाया ।। 2 ।।
फागण मन भावन तिथि पूनम, प्रगटे प्रेम रस बरषाया ।। 3 ।।
याचक गण सब भये अयाचक, हरि बोल हरि बोल यश छाया ।। 4 ।।
धन्य जय नगर जय शचिनन्दन, रसिकन हो गया मन भाया ।। 5 ।।
अद्भुत लीला गौर हरि की, कारागृह रंग बरषाया ।। 6 ।।
'गौरदास' छवि गौर दरश कर मानव जीवन फल पाया ।। 7 ।।
गावो गावो रे बधाई फागण आया।

******

गावो गावो रे बधाई, सब मिल आज,
नदिया में प्रगटे गौर हरी।
पूरण हो गये सबके मन के चीते काज,
देख प्रभुजी की जनम घरी।
नदिया ग्राम गंगतट सोहे
पिडित जनता सारी
यवन राज सासन से निशि दिन,
दुख पावे नर नारी।
प्रकटे-2 कहाँ पर गौर हरी महाराज,
त्रिभुवन जन की विपद हरी ।। 1 ।।

फागुन मास पूर्णिमा शुभ दिन
ग्रहण पड़ा अति भारी

छिपे चन्द्रमा ग्रस राहु नै घटा छा गई कारी
हो गया हो गया गौर चन्द का
जहाँ प्रकाश स्वयं हरी नै उज्ज्लव देह धरी ।। 2 ।।

जगन्नाथ जी के घर प्रकटे,
शचि माँ गोद खिलाये
प्रकाण्ड पंडित बने भक्ति की
घर घर गंग बहाये।
हारे हारे दिग विजयी पंडित महाराज,
लौट लेकर पुस्तक ज्ञान भरी ।। 3 ।।

घर घर बाजे बजैं सुरीले
भई भीर अति भारी
दर्शन करने शचिनन्दन के
उमड़ आये नर नारी
कर रहे कर रहे जय जय बोल सुमन बौछार
दर्शन करने तन सुधि सब बिसरी ।। 4 ।।

'गौर दास' चर्णन का चाकर इसे प्रभो अपनावो,
मत ठुकरावो दास बनावो जीवन पार लगावो
राखो राखो जी चरण में हर दम साथ,
विनय बधाई गावै प्रेम भरी ।। 5 ।।

******

प्रगटे दिवस घरी भई कीर्ति छाई,
विश्व हित कर की जय बोलो गौर हरी की।
बंगाल प्रान्त नदिया है (नवद्वीप) जहाँ
बहै गंग निकट दरिया है तहाँ
भये प्रगट फाल्गुन पूनम जन्म धरी की ।।1 ।। जय-
पड़ा ग्रहण निशा अंधियारी थी

छिपे चन्द्र घटा भई कारी थी
भई गौर चन्द्र उजियारी शरद रजनी की ।।2 ।। जय-

पितु जगन्नाथ शची मात भये ।
करी कृपा प्रभु प्रख्यात भये
उद्धार विश्व का किया
बहा दई श्री गंगा भक्ति की ।।3 ।। जय-

जय बोल सुमन सुर बरषावै
सज धज नारी मंगल गावै
घर घर मोतियन के चौक पुरे,
है बंदन वाल जरी की ।।4 ।। जय-

षड् भुज छवि रूप दिखाया है
उर भक्तन आनन्द छाया है
श्री राम कृष्ण संन्यास रूप की,
झांकी मनहर नीकी ।।5 ।। जय-

ध्वनि हरि बोल हरि बोल जग छाई,
सब संत मुनिन जन सुखदाई
बल राम कृष्ण भये प्रगट
हरी सब विपदा भू मण्डल की ।।6 ।। जय-

धन दिवस गोर हरी जय बोलो
करो पान गौर रस अघ धोलो
कहें 'गौर दास' भज स्वास स्वास
नहिं खबर है एक घरी की ।।7 ।।

प्रगटय दिवस घरी भई,
कीर्ति छई विश्व हित कर की
जय बोलो गौर हरि की ।। जय-

******

बधाई गावो बधाई गावो बधाई गावो
भये प्रगट गौर हरी आंन,
अवनी पर कली युग आया

सर्वत्र विश्व में छाया
भई क्षीण बुद्धि सब ज्ञान– ।।1 ।।

दुख दीन जनन का हरने
कल्याण विश्व का करने
नदिया में प्रगटे हरि ।।2 ।।

फंस मोह जीव दुख पावै
कलि माया इसे सतावै
दिया ज्ञान सुना हरिनाम ।।3 ।।

फागण सुद पूनम आई
सब रसिकण खुशी मनाई
वारै तन मन धन सब प्राण ।।4 ।।

सुर इन्द्रादिक सब आयें
जय बोल सुमन बरषायें
दर्शन हित बैठ विमान ।।5 ।।

धन पिता मिश्र शचि माईं
घर बैठे सम्पति पाई
भया गौर चन्द्र सा कान ।।6 ।।

यह 'गौर दास' गुण गावै
चरणन में शीश नवावै
तारो भव से कृपा निधान ।।7 ।।

******

चालो ए आज बधाई लेवां री, सखी लग्यो है मेरे चाव।
शची रानी ढोठा जायो, करैंगी मिसर को घेराव।।
ना लेऊं मैं जरी की सारी, न लेऊं मैं हार।
ना मांगू मैं लहंगा कंचुकी, ना मांगू मैं माल।।
ना चाहूँ कंठी नूपुर, ना चाहू मैं लाल।
मन मान्यो मैं नेग लेऊंगी, चोथपने आयो बाल।।
निश दिन नाम रटा करूं मैं तो, 'ललित' कृपा बरसाव।

******

बधाई लेने चलो, वो नदिया के मांई।
मात शची जू लालो जायो, सखियां मिल थाल बजायो,
वो मंगल कलश धरावां ए।

रतन जडित का साथिया टांक्या, मोतियन चौक पुरावां,
वो बंदनवार बंधावां ए।

पीत बसन याको गौर वरण है, जुलफें लंबी लंबी,
या के श्याम ढिठौना देवो ए।

दूध भात का भोग लगाबां, अपने हाथ परोसां,
या में 'प्रेम' की चीनी घोला ए।

******

मैं तो गौर दर्शन कूं आई मेरी सजनी ना माने मेरो मनवा।
वेद पुराणन में सुन-आई, संहिता सुन मैं, आई मेरी सजनी।।
कुडतो टोपी झुंगुला लाईं कडा खुंगाली मैं लाई मेरी सजनी।
कणकती पोंछया साथ्या, बन्दनवार बंधाई मेरी सजनी।।
चोथ पने में लाला आयो, मनमानो नेग लेऊं मेरी सजनी।
ना मांगू मैं नोलखा हार, ना मांगू मैं चुनरिया मेरी सजनी।।
लहंगा कंचुकी कछु न चाहूं, 'ललित' धाम में बसावो मेरी सजनी।।

******

नदिया बिहारी की, मो पै ये छबि बरनी न जाय।
कुडता टोपी अरू झंगुलिया, गल सोहे बैजन्ती माल।।

कडा खुंगली अरू पैजनियां कटि सोहे किंकिणी लाल।
मकर कुण्डल नासा मोती, श्याम ढिठौना भाल।।

नेत्र कमल में कजरा सोहे, पुष्प गुंथे हैं बाल।
'ललित मंजरी' की ये विनती, जन्म बधाई लेवो चाल।।

।। पलना के पद ।।

झूलत श्री गौरचन्द्र, पलना में माई।
निरखत शचि मात-उरहिं, सुख ना समाई।।
कोटि कोटि पूर्णचन्द्र, लाजत लखि सुख अमंद।
निरखत सखि हँसन मन्द, उपमा ना पाई।।
सुवरन के करन कड़े, राजत हैं रतन जड़े।
निरखत हैं नयन अड़े, इक टक टक लाई।।
सौहे अँग झगुलि झीन, छबिसौं छबि छीन छीन।
मनमथ को मात कीन, शोभा अधिकाई।।
पलना लखि हँसत लाल, पावत शोभा विशाल।
अटकत जुलफनहि जाल, 'सूरज' मन भाई।।

।। छठी का पद ।।

आज छठी को दिवस सुहायो।।
मिश्रराज जू सब पुर माहीं,
भेज्यो माई सबन बुलायो
सुन सुन सब बनिता उठ धाईं,
गावत सब मिलि सरस बधायो।।

बैठी लाल गोद ले मैया,
पंडित मँगलाचार करायो।
देत अशीष सबहिं मिलि नागरि,
चिरजीवो री तेरो जायो।।

करत निछावर हित सों जननी,
करत सबन ही को मन भायो।
मोहीं सब लखकर लालन छबि,
निरखत बदन न मनहि अघायो ।।

दई दक्षिणा सब विप्रन कों,
दान देत अति हियो हरषायो।
जाचक सबहि अजाचक कीने,
जिन जिन जो माँग्यो सो पायो ।।

अस अवसर लखि के 'सूरज' को
माँगन के हित मन हुलसायो।
प्रेमभक्ति औ तव सुत पद रज,
देहु मिश्रजू मम मन भायो ।।

।। शिशु लीला ।।

आज सखी री शचिनन्दन की, नई रीति लखि आई री।
तन पुलकित है पुनि पुनि मेरे, हर्ष न हृदय समाई री।।

गई आज मैं सदन मिश्र के, तहिं देखौं शिशु जाई री।
अति ही रूदन करत रहतो हो, जननी अति बहलाई री।।

लखी निमाई रूदन करत हौं, हृदय भई विकलाई री।
दुख बस निकस्यो मेरे मुख सों, हरी हरी सुखदाई री।।

सुनतहि नाम भये शिशु अस्थिर, छाँड दई मचलाई री।
किलकत हँस हँस मोद भरत शिशु, आये मोदिक धाई री।।

अति सनेह से सुने नाम को, नैन नीर भर आई री।
कर अत हिते चिते मो दिसरी, तनु पुनि पुनि पुलकाई री।

जान परत कोउ महापुरूष ये, प्रगटे इन घर आई री।
'सूरज' गति देवे अगतिन को, नात ध्वजा फहराई री।।

।। बाल लीला ।।

नाचत बालन संग निमाई, शोभा या की बरनी न जाई।
शची भवन से गौरचन्द्र की, रही चन्द्रिका चहुँदिशि छाई ।।

हँस हँस फिरकी दे दे नाचत, सो छबि दैखि मात बलि जाई।
नंग मुनंगे औरहु बालक, नचैं संग शोभा अधिकाई ।।

बसनरसें ढक मुख मात से पूछत, मैया कहि कित गयो निमाई।
शची कहति हम देख्यो नाहीं, कित डोलै मम कुँवर कन्हाई ।।

बैठें मात गोद में आके, किलकत फिर उठ करत नचाई।
हरि बौलें औरनहु बुलावें, 'मथुरा' छबि लख सुध बिसराई ।।

******

आज शची गृह विप्र पधारे।
अतित्ति जान कियो अति आदर, चरन धोय बैठारे ।।

कर बहु विनय रसोई के हित, दोने साज सँभारे।
कर रसोई द्विज भोग लगायो, जेवत देखे शची–दुलारे ।।

छी छी कर चितकार करी द्विज, लखी मिश्रजू बहु दुःख भारे।
हाथ पकर सुत कौं ले आये, बहुत भाँति ललकारे ।।

कहत लाल इन मोहि बुलायो, मेरो दोष कहा रे।
बिनती पुनि करि पाक हेत पुनि, भोग लगत देखत वहिं ठारे ।।

निज प्रभु जान पड़े द्विज चरणन, बहुत भाँति अस्तुती उचारे।
'सूरज' या विधि करि हैं लीला, प्यारे शचीकुमार हमारे ।।

******

देखो शची तिहारो लालन, अति उत्पात मचावै है ।।
हम जाती गंगा नहाने को, यह नित प्रति इठलावै है।
गौरीपति पूजन सामग्री, उठा उठा लै जावै है ।।

मोकौं पूजौं मैं हि महेश्वर, यह कह मुस्कावै है।
ना पूजौ तो 'मिलै बूढ़ पति', कहते नाहिं लजावै है।।

ग्राम नात सौं भ्रात लगो हम बहुत भाँति समझावै है।
'सूरज' लाल लाड्लो तेरो, यातै यह इतरावै है।।

माता निरखत सुत की छबि को, बाल विनोद भरी।
खेलत सखन संग पौली में, श्री चैतन्य हरी।।

मार भजत इक पकरन धावत, लीने कनक छरी।
छोरत तब ही जब ही मुख से, बोलत श्री गोविन्द हरी।।

गौर बदन पर छींटा रँग के, उपता रहत परी।
'बाँके पिया' ये छबि मौं उरतें, टारत नाहिं टरी।।

******

ठुमक ठुमक पग नचत निमाई।।
हरि हरि बोल, बोल मधुरी ध्वनि,
दोउ कर तान शचि के अँगनाई।।
फूल गुँथे सोहत चोटी में,
दे दे ताल नचावत माई।
कंचन बदन, बदन अति सुन्दर,
चन्द्र लजत लख रूप निकाई।।
मृदु मुसकान मनोहर चितवन,
यह शोभा बरनी नहिं जाई।
'रतनेश्वर' ऐसा चित चाहत,
चरन चूम लेऊँ गोद उठाई।।

।। गौर-बनड़ा ।।

गौर हरि बनड़ा छब-गुन-धाम।
नवल बना ये खूब बना है, रूप अनूप ललाम।।

गौरे चहरा ऊपर सहरा, जगमगात द्युति ग्राम।
तुर्रा झलक परत अलकन पै, मुकट लटक अभिराम।।

पटका पीत प्रीत उपजावत, छवि लख सकुचत काम।
मृदु मुसकान मनोहर चितवन, चकित निरख सुर बाम।।

लक्ष्मी को ब्याहन विश्वम्भर, चले धन्य धन ठाम।
'मथुरा' बर की शोभा निरखत, पूरण हैं सब काम।।

।। प्रेम–दीवाने श्री गौराङ्ग ।।

।। दोहा ।।

प्रेम दिवाने मग्न सब, सुख दुःख गनत समान।
फीको लागे सब जगत, नीको हरि–गुन–गान।।

मान पाय हरषें नहीं, दुखि न भये अपमान।
अपनी धुन में मस्त हैं, शत्रु मित्र समान।।

विनय और आधीनता, छाई सबके अँग।
क्षमा शान्ति अरू प्रेम को, गाढो लाग्यो रँग।।

मुख पै हरि को नाम है, ता बिन तनक न चैन।
कथा कीरतन रत सदा, नेह–नीर तर नैन।।

तन पै झलके प्रेम रस, मन उमंग से चूर।
डार डार अरू पात में, भासत हरि को नूर।।

धन प्रेमी गौरांग के, रह्यो न दुःख को लेश।
रोम रोम छायो रहै, रस को निधि 'मथुरेश'।।

।। निमाई–निताई–मिलन ।।

आ मिले कृष्ण से बलराम मुबारक होवे।
पाया दो दिल ने है विश्राम मुबारक होवे।।

एक को दूसरे से मिलने की अति ही थी चाह।
पूरे दोनों के हुये काम मुबारक होवे ।।

दोनों ही ओर से अनुराग का दरिया उमड़ा।
तीर्थ संगम नदिया धाम मुबारक होवे ।।

जिसके दर्शन से मिला भक्तों को है नित्यानन्द।
गौर तन धारी सुघर श्याम मुबारक होवे ।।

पार भव-सिंधु से होने के लिये कलजुग में।
की प्रगट नौका हरीनाम मुबारक होवे ।।

धन्य गौरांग हरी धन्य प्रभू नित्यानन्द।
सबको 'मथुरेश' दिल आराम मुबारक होवे ।।

।। निताई को षड़भुज रूप के दर्शन ।।

।। चौपाई ।।

षटभुज मूरति परम सुहावनि। देखी रूचिर सुघर मनभावनि ।।
रवि अनेक सम तेज निहारा। जगमग भयो भवन उजियारा ।।
धनुष बाण दुहुँ हाथन सोहै। सोभा जासु मदन मन मौहे ।।
श्री रघुवीर भाव दरसायो। धनुष बाण तिह चिन्ह सुहायो ।।
युग कर माहिं बन्सरी राजे। नंदनँदन छवि अनुपम छाजे ।।
राम कृष्ण नहीं हमसे न्यारे। राजत उभय गौर तन धारे ।।
ये सिखवन हित अस तन धारा। भेद भाव हिय तें टारा ।।
दंड कमंडल द्वय कर माहीं। होनहार संन्यास लखाहीं ।।

।। दोहा ।।

गुप्त भेद कीनो प्रगट, दियो मुख्य उपदेश।
गौर हरी बपु में लखो, कौशलेश-'मथुरेश' ।।

धन्य धन्य वे जन सकल, जिन देख्यो यह रूप।
राम कृष्ण गौरांग मिल, प्रगट्यो रूप अनूप ।।

।। कृष्ण-भक्ति का उपदेश ।।

गौर किशोर सराहि हैं भक्ति।
जप तप योग यज्ञ व्रत पूजा, व्यर्थ बिना श्री हरि अनुरक्ती।।

ज्ञान विराग विवेक निबल है, बिनु पाये भक्ति की शक्ति।
'मधुर' प्रेम जाकौ हरि चरनन, चाह करत कबहू ना मुक्ति।।

।। राधा-कृष्ण-लीलाभिनय ।।

निज परिकर सँग गौर महाप्रभु, श्यामा श्याम चरित दिखलावैं।
राधा रूप धर्‌यो विश्वंभर, महाभाव को रस बरसावैं।।

आत्म समर्पण हरि चरनन में, रहस दान लीला समझावैं।
प्रेम प्रीति को 'मधुर' समागम, लखकर भक्तवृन्द हरसावैं।।

।। जगाई-मधाई-उद्धार ।।

कौ है गौर समान उदार।
कर किरपा निज अंक लगाए, पापी अधम अपार।।

पतित जगाई और मधाई, दुष्टन के सरदार।
जनम जनम के अघ हर कीनो, 'मधुर' प्रेम संचार।।

******

गौर हरि प्रभु नित्यानन्द।
क्षमा-कृपा-करूणा के सागर, प्रेम मूर्ति जय आनंद कंद।।
जगा मघा दुरजन व्यभिचारी, पाप-पुंज लम्पट मतिमंद।
कृष्ण नाम के 'मधुर' मंत्र सौं, हरलीने सब अघ भव-फंद।।

।। काजी-उद्धार ।।

गौर हरी करुणा के सागर।
संकीर्त्तन-रस-आनंद लूटैं, हरषित हो नदिया के नागर।।

कछु द्रोही पंडित अभिमानी, जाय पुकारे काजी आँगर।
किरपा कीन्हीं हरि काजी पर, कियो 'मधुर' हरिनाम उजागर।।

******

पतित–उधारन गौर उदार।
सत्ता–मद गरविल काजी नै, बरज्यो संकीर्त्तन परचार।।

झाँझ–मृदंग भक्तन के फोड़े, किये त्रसित कर भय संचार।
'मधुर' नाम संकीर्त्तन सौं प्रभु, कीनौ काजी को उद्धार।।

।। संन्यास–ग्रहण ।।

कलि–मल–त्रसित–जीव उद्धारन, हरि गौरांग लियो अवतार।
हर्‌यो गर्व नदिया–खल तारै, अब संन्यास लियो प्रभु धार।।

जनहित वृद्धा जननी त्यागी, विष्णुप्रिया पत्नी सुकुमार।
नगर ग्राम घर–घरन बहाई, 'मधुर' प्रेम–भक्ति–रस–धार।।

।। पादुका–दान ।।

श्री चैतन्य मातु पहिं आए।
लख संन्यासी वेश जननि उर, फटत अकथ दुःख पाए।

कृश तन दीन मलीन विष्णुप्रिय, चरन पड़ी अकुलाए।
चरन–पादुका दीन्ह 'मधुर' हरि, भक्तन अश्रु बहाए।।

।। नित्य सेवा जागरण ।।

विहँग भोर करत रोर, जागिये निमाई।
माता शचि बार बार, लाल कौं जगाई।।

शशी–ज्योति मलिन भई, उड–अवली अस्त भई।
विप्र करत वेद पाठ, लाली नभ छाई।।

श्री अद्वैत श्री वास, ठाड़ै भट हरिदास।
श्रीधर संग में मुरारि, दरस कौ निताई।।

जननी के सुनत बैन, जागे राजीव-नैन।
मुख शोभा 'मधुर' लखत, माता बलि जाई।।

।। मंगल-आरती ।।

आरती मंगल गौर किशौर।
कंचन थाल दीपावली दमकत, चमकत अंग अति दोउ जोर।।

ताल मृदंग सुरंगति बाजत, बोलन हरि हरि धुनि चहुँ ओर।
'वैष्णव' जन तहँ फूलन बरसत, करी निछावर तन तृण तोर।।

******

मंगल आरति गौर किशोर। मंगल नित्यानन्द जोरहिं जोर।।
मंगल श्री अद्वैत भक्तहिं संगे। मंगल गाओत प्रेम तरंगे।।
मंगल बाजत खोल करताल। मंगल हरिदास नाचत भाल।।
मंगल धूप दीप लइया स्वरूप। मंगल आरति करें अपरूप।।
मंगल गदाधर हेरि पहुँ हास। मंगल गाओत दीन 'कृष्णदास'।।

।। दन्त-धावन ।।

रतन चौकी पर जागि, उठि बैठे सुन्दर गौर किशोर।
दन्त धावन करत सुगन्ध जल, निरखि सबन चित चौर।।

चिकुन चीकन करत दास सब, अवटत अँग सुगन्धन योर।
'वैष्णव' जन यह शोभा निरखत, ड़ारत हैं तृण तौर।।

।। प्रातः स्नान ।।

करहु हे गौरचन्द्र अरस्नान।
शीतल जल निर्मल औ सुन्दर, सरबस कृपानिधान।
अतर गुलाब आब सौ सुखकर, परम रम्य सुरमान।।

श्री नित्यानन्द महाप्रभु सँग मिल, मुदित प्रेम धीमान।
श्रीप्रभु 'चन्द्रगोपाल' शची सुत, निज जन जीवन प्रान।।

******

सहचर संग रंग शचीनन्दन, स्नान करत चले सुरधुनि तीर।
निर्मल नीर करत कल्लोलन, छिरकें नीर सब गौर शरीर।।

नहाय उठत जब अंग अँगोछत, केश सम्हारी पहिरत चीर।
दास 'वैष्णव' सँग घर आवत, चरण पखारत वासित नीर।।

******

करत श्री गौरचन्द्र अस्नान।
भक्तवृन्द सँग सुरसरि-तट पर, आये कृपानिधान।।

प्रातः समय की मंगल वेला, प्राची उदियत भान।
स्वस्तीवाचन मंत्र उचारें, द्विज कर वेद बखान।।

शीतल निर्मल जल जान्ह्वी को, अन्हवत हैं सुखखान।
परसत कोमल गात भगीरथी, होत पुनीत महान।।

हरि हरि धुनि भूमंडल छाई, भक्त करत गुण गान।
प्रेमी जन दरशन कौ धाये, 'मधुर' छबी उर आन।।

।। शृंङ्गार ।।

श्री चैतन्य महाप्रभु सुत को, करत सिंगार शची महतारी।
टोपी लाल केसरी बागो, पटुका पहरावत जरतारी।।

मुक्ता माल श्रवण में कुण्डल, नासा बिच लटकन छवि न्यारी।
गोल कपोलन ऊपर दुहु दिसि, अलकें छूट रहीं घुंघरारी।।

केसर तिलक लगाये मस्तक, दै इक टिभुक दीठ निखारी।
पग नूपुर किंकनि कटि दमकत, फैटा कसी परम रुचिकारी।।

नैनन में काजल लै आँजो, मुख चूमत भरि भरि अंकबारी।
किलक हँसन टुक दौर चलन पर, 'बाँके पिया' जाय बलिहारी ।।

******

सुन्दर आसन बैठ शचीनन्दन,
वेश बनावत दास अनन्द।
चन्दन खोर गौर तन सोहत,
मोहन तिलक रचन सुबन्ध ।।
कुंचित केश कुसुम खचित करी,
मोतिन माल उर पदक सुछन्द ।।
मणि दर्पन जोति ललित कपोलन,
लोल मणि जड़ित नग कुण्डल द्वन्द ।।
बलय बाजु जानुलम्बित भुज,
मणि रशना कटि बसन अमन्द ।।
'वैष्णव' प्रभु पद युग नख ऊपर,
वारूँ कोटि शरद पुन चन्द ।।

******

करत सिंगार मात हरसाई ।।
निज कर गौरहरी कौं निर्मल, पट भूषन पहराई ।।
अतर अरगजा चोवा चंदन, श्री अंग में चरचाई ।।
अलकावलि घुँघरालि सँवारी, दीनों तिलक लगाई ।।
रत्न जटित कुँडल श्रवनन में, हिरदय माल धराई ।।
कटि किंकिनि की शोभा न्यारी, नूपुर चरण सजाई ।।
दीठि बचावन रच्यो डिठौना, बार बार बलि जाई ।।
शोभा 'मधुर' लखत, विसमित हो, रति अरू काम लजाई ।।

******

।। शृङ्गार-भोग ।।

भोजन करत शची सुत षटरस ।।

मधुर मधुर रस खीर मुदित अति,
परिकर जन के सोहैं सरबस।

शची मात रस कौर देत मुख,
पावत प्रेम भरे गत आलस ।।

दूध पान कर हँसि हँसि सब जन,
वासौदी रूचि राजै रति खस।

श्री प्रभु 'चन्द्रगोपाल' अलौकिक,
भोग धरो श्री गौर पूर्ण शशि ।।

******

कलेऊ करावत गौर सुन्दर को प्रेमानन्द शची माई।
विविध भाँति पकवान मिठाई, माखन मिसरी रूचि सुँ खवाई ।।
मोदक मेवा सलोनो अदरक, शोंधो शरबत यतन पिवाई।
'वैष्णव' प्रभु के अधरामृत, पाई सबन मन भाई ।।

।। शृङ्गार-आरती ।।

आरती कीजै श्री गौड़ेश्वर की ।।
नित्यानन्द महाप्रभु राजत, प्यारे शची-कुँवर की।
कलि पावन अवतार धरण की, गजगति विश्वंभर की ।।
श्री राधा-पद-पद्म मत्त मन, मोद भरे मधुकर की।
श्री प्रभु 'चन्द्रगोपाल' प्रेम सौं, प्रवर पंच परिकर की ।।

******

मातु करत श्रृंगार आरती ।।
बाती लेय सुगन्धित दृव की, सुत पर बारहिं बार वारती ।।
पुनि पुनि लेत बलैया जननी, कर ले राई नोन उतारती ।
गौर रूप की छबी निरख कर 'मधुर' प्रेम जल नयन झारती ।।

।। राज–भोग ।।

मैं बलि जाऊँ ।।
रूचि रूचि भोजन कर शचि नन्दन, मन्द मन्द मुसकाय ।।
छप्पन भोग छतीसों व्यंजन, मैं निज करन बनाय ।।
दाल भात अरू भाज अनेकन, जे प्रभु अति हो सुहाय ।।
खुरमा खीर अनेक अचारा, षट्रस बरणी न जाय ।।
भाँति भाँति के फलहुँ धरे हैं, जामें स्वाद अधिकाय ।।
गंगाजल की झारि भरी है, पाओ प्रेम अघाय ।।
भोजन करिके अचमन कीने, सन्त जनन सचु पाय ।।
'दीनदास' यह द्वारे ठाड़ो, जूठन आस लगाय ।।

******

हरषि शची अति आदर करी, बहुजी सौं बतराई ।।
विविध सुव्यंजन अन्न सुगन्धन, पाक करौ अब जाई ।।
बेग चलि तब सखिन संग लै, रन्धन करत धरत भरि थारी ।।
विष्णुप्रिया की हस्त अमृतमय, देखत 'वैष्णव' लेत बलिहारी ।।

******

घृतमय मोदक बहु विध व्यंजन, रतन जड़ित भरि थारी ।।
तुलसीदल दई भोग निवेदई, शालग्राम रूचिकारी ।।
बाहिर आय प्रभु ध्यान करत है, भक्त शिखावन कारी ।।
दै आचमन पुनि बीड़ि समर्पत, दीपावली सजि आरती उतारी ।।
घण्टा ताल मधुर मंगल धुनि, हरि नाम उचारन कारी ।
'वैष्णव' जन फूलन बरसत, करत प्राण बलिहारी ।।

******

भोजन करन बैठे पीठ पर,
गौर किशोर मन मोहे ।।
नित्यानन्दाद्वैत हरष अति,
सहचर चहुँदिशि सोहे ।।
प्रेम पुरित मन अन्न सु व्यंजन,
रतन थाल शचि आइ परसोहें ।।
विष्णुप्रिया तहाँ दूरि देखत हैं,
घुँघट ओट करि नैनन कोहें ।।
हँसत हँसावत जिमत जिमावत,
पूर्व प्रेम सुध देत सबको है ।।
'वैष्णव' प्रभु जल पीवत अँचवत,
बीड़ी खात मुसक्यो है ।।

।। सन्ध्या-उत्थापन ।।

कृपानिधि धन्य गौर गुणधाम ।।
करत कीर्त्तन मिल सब भावुक, प्रेम पुंज शुभ नाम ।
सन्ध्या उत्थापन भोगादिक, भये सर्व अभिराम ।।
आरति रति अति गान सुहाये, मंजुल मृदुल ललाम ।
श्री प्रभु 'चन्द्रगोपाल' कृपा वश, भव दुःख भंजन भाम ।।

******

नदिया नगर सुन्दर सब नागरी, निरखी गौर वर देह ।
कहत परस्पर नन्दनन्दन यह, मूरत मम नेह ।।
कुंचित केश लटक पीठ पर, मानो दामिनी बिच मेह ।
चन्दन चरचे अंग अभूषण, निरखत काम लजेह ।।
सुर धुनि तीर भीर गायन लखि, प्रेम बढ़त न थेह ।
'वैष्णव' प्रभु आनन्दित मन, भगवन सँग आवत निज गेह ।।

।। सन्ध्या–आरती कीर्त्तन ।।

भालि गौरा चाँदरे आरति बनि।
बाजे संकीर्त्तन सुमधुर ध्वनि।।

शंख बाजे घण्टा बाजे बाजे करताल।
मधुर मृदँग बाजे सुनिये रसाल।।

विविध कुसुम फूलेर बनि बनमाला।
शत कोटि चन्द्र जिमि बदन उजाला।।

ब्रह्मा आदि देव जाको कर जोड़ करे।
सहस्र बदने फणि शिरे छत्र धरे।।

शिव शुक्र नारद व्यास बखाने।
नाहिं परस्पर भाव विभोरे।।

श्रीवास हरिदास पंचम गावे।
नरहरि गदाधर चमर डुलावे।।

वीर 'बल्लभदास' श्री गौर चरने आश।
जग भरि रहल महिमा प्रकाश।।

******

साँझ समय शची साजि आरती, गौर सुँदर मग जोंहै।
व्याकुल होइ कहत दास प्रति, जावो लै आवो उनको है।।

विष्णुप्रिया तब सखिन संग लै, चढ़त अटा पर देखन को है।
निरखि परस्पर 'वैष्णव' प्रभु तब, आनन्दित मन मोहै।।

******

सहचर संग गौर सुन्दर को, निरखि प्रेम पुलकाई।
कंचन थाल उतारि आरती, सुध भूलत शचि माई।।

मंगल गावत ताल बजावत, फूलन को बरसाई।।
'वैष्णव' जन बलिहारत प्राणन, लै अँगुलिन चटकाई।।

।। ब्यारु भोग ।।

ब्यारू करत प्रेम भरे ।।

सकल सेवक मिलित लाये, भोग निजहि करे ।
अति मधुर रस लेत भावत, सुरभि दूध दुरे ।।

मधुर मेवा मोदकादिक, कथन गति इतरे ।
श्रीप्रभु 'चन्द्रगोपाल' प्रमुदित, प्रीति परस परे ।।

ब्यारू कीजै श्री शचीनन्दन ।।

भाँति भाँति पकवान मिठाई, परम सुवादित सरस सुगन्धन ।।

दूध मलाई माखन जेंवत, गौर निताई सुर नर वन्दन ।
अनुहारत शचिमाता प्रेम सौं, पुनि-पुनि 'मधुर' भक्त मनरंजन ।।

ब्यारू आरोगत शचीनन्दन ।।

विष्णुप्रिया निज हाथ सँवारे, विविध भाँति के षटरस व्यंजन ।।

माखन मिसरी रबड़ी मावा केसर इलायची सुगन्धन ।
रसगुल्ला संदेश कचौरी, पापर आरोगत जग बन्दन ।।

पुनि पुनि अनुहारत शचिमाता, संग निताई करूणा कन्दन ।
करत आचमन बीरी लीनी, देत प्रसादी 'मधुर' भक्त जन ।।

।। शयन-भोग ।।

शयन भोग माता शचि लाई,
आरोगत श्री गौर निताई ।
सुरसरि-जल-झारी ले ठाड़ी,
विष्णुप्रिया पुलकित हरषाई ।।
इलायचि केशर मिश्रित अति,
लौकी - खीर बनी सुखदाई ।
नाना विधि के मेवा ऋतुफल,
जेंवत माखन दूध मलाई ।।

मोद प्रमोद करत भक्तन सौं,
प्रेमानन्द – सिंधु उमगाई।
'मधुर' गौर छबि राखि हृदय में,
परिकर जन निज सदन सिधाई॥

॥ शयन आरती ॥

आरती श्री गौरचन्द्र की राजै॥

ताल मृदङ्ग उपङ्ग चङ्ग गति मनमोहन गाजै।
श्रीनिवास पंडित अद्वैत रामानन्द सुभ्राजै॥

श्री प्रभु नित्यानन्द सनातन रूप वृन्द गाजै।
श्री प्रभु 'चन्द्रगोपाल' रूप छब कोटि चन्द्र लाजै॥

॥ शयन ॥

श्री राधिका भाव मत्त गौराङ्ग।

शयन करत अति मुदित लोल छबि, कर पुनीत जन वङ्ग।
अनुपम रूप निरखि के लाजत, दूर रहत जु अनङ्ग।

उपमा कहत न आवै कबहुंक, प्रीति पराग उमङ्ग।
श्री प्रभु 'चन्द्रगोपाल' सैन मन, चैत रैन श्रीअङ्ग॥

******

मैं बलि जाऊँ॥
आनन्दकन्द श्री गौर हरिजू, अब पौढ़ौ सुख जाय॥ मैं.
सुन्दर मन्दिर अनुपम सेज, शोभा अति अधिकाय॥ मैं.
कीर्त्तन करत जुग जामिनी बीती, नैनन नींद घुराय॥ मैं.
मात शची जू करत आरती, बार बार बलिजाय॥ मैं.
'दीनदास' प्रभु बिनती सुनके, सुखनिधि पौढ़े जाय॥ मैं.

******

अंखियाँ उनीदी री शोभा देत, राजै गौर सुरती भरी रति।
मानो अम्बुज सकुच सखी, विगसत मन हरि लेत ।।

अंजन में खंजन रङ्ग भीने, उड़त नहीं देत।
(श्री) रूप सनातन 'नवल विहारिणी' वारत तन मन जेत ।।

******

लेत गौराङ्ग की अङ्ग सुवास।
तरंग ही तरंग उठति मकरध्वज,या बिन और न प्रकास ।।

निरवधि नित्य याहि सुख बिलसत, अधरामृत की चास।
अधर सौं अधर लगे नहिं तिरपत, भोजन भूख न प्यास ।।

याही रस में मगन रहत नित, और न दूजी आस।
(श्री) रूप सनातन 'बन बिहारी बिहारिनि' निरवधि पास ।।

******

करत बिहार विष्णुप्रिया सह, गौर सुघड़ वर राई।
मोद विनोद रम्भन चुम्बन, निरखत काम लजाई ।।

निज प्रिय सखि गण देखत दुरिकर, प्रेम अंगन समाई।
केलि विराम जानि 'वैष्णव', हरखत विजन ढुराई ।।

******

शयन करन गौराङ्ग सिधाए ।।

करत प्रतीक्षा विष्णुप्रिया लख,
चन्द्रवदन निज नैन सिराए ।।

प्रफुलित मोद करत दोऊ जन,
प्रेम सहित हित चित बतराए।

श्रमित जानि पति नींद घुरानी,
कोमल शैया पर पौढ़ाए ।।

व्यजन दुलावत कबहुँ मृदुल कर,
पद चापत अति हिय हुलसाए।
धनि धनि श्री गौरांग पियारी,
'मधुर' चरन निज अंक लगाए ।।

वर्षोत्सव के पद

।। फूलडौल ।।

सोई डौल झूलत हैं श्री गौर निताई, ये राग रमि रह्यो ।।
श्री अद्वैत हाथ अघौटी श्रीवास बीन हरहरि मृदङ्ग
स्वरूप दामोदर तार श्री गदाधर
अरगजा, छिरकत रङ्ग रह्यो ।।
डाँडी छाडा छाडी खेल खेलत परस्पर
ना जानो चरन कैसे धों रह्यो ।।
''श्रीबन बिहारिणी दास'' के स्वामी
गौर निताई को खेलु खेलत काहू न लह्यो ।।

।। चन्दन यात्रा ।।

श्री गौरा तन चन्दन वन्दन सोहै ।।
रति विपरित सुरति सुख लूटी, गण्डन पीक विमोहैं ।।
तन सौं तन, मन सौं मन मिलिये,
सुरझत नहिं अरूझत दोउ जोहैं।
यहि रस मत्त मगन जु परस्पर,
देख देख दोऊ दोऊ मोहैं ।।
श्री रूप सनातन रसिक मुकुट मणि,
करत खवासी सोहैं।
''श्रीबन बिहारिणी'' दासी के स्वामी,
येहि रस रंग विगोहैं ।।

******

चन्दन वाटी सुरङ्ग, निकट बहत गङ्ग,
प्रभु नित्यानन्द संग, गौरचन्द्र राजै।

गावत सब भक्तवृन्द, सुस्वर मधुर छन्द
उपजै आनन्दकन्द, ललित यंत्र बाजै।।

देखत नदिया के वासी, बढ़े प्रेमाम्बुरासी,
स्वर्ग मुक्ति करत हाँसी, परम व्योम त्याजै।।

श्री गोपाल भट्ट्ट धाय, सनातन रूप आय,
मलया अँग लगाय, देत हैं समाजै।।

******

चन्दन को किये गौर सुन्दर अंग सुगन्ध फैलो,
पोहपन केशर भूषन सोहत दाम

सुरधुनी तीर बाग, पुरीत फुल पराग, भ्रमत मधुप लाग,
कोकिल कुंजित द्रुमन आम।।

शीतल सदन में छुटत फुहारे नीके,
त्रिविध पवन बहै सुख के धाम।।

'वैष्णव' जन फुल विजन ढुरावत हरखी,
गावत प्रेम सुमधुर हरि नाम।।

।। ग्रीष्म ऋतु ।।

नवल वनद्वीप भुमनी पर बहु फुलन बन कुंज,
नव सदन रुहदल सेज बिराजे।

नव कुबलय सौरभ पवन त्रिविध युत,
अगणित जलयंत्र युत जुट छुटत हित काजे।।

गौर द्विजराज राजत सगण सह,
सुरधुनि तीर नीर निरज वृन्द साजे।

अलि निकर गुंजार नाम धुनी संचार,
'वैष्णव' श्रवण सुनत आनन्द गाजे।।

॥ जल-विहार ॥

विहरत गौर निताई दोऊ, श्री नदिया के नीरे-तीरे।
श्री अद्वैत अद्‌भुत छबि सौं, रंग भरी अंजुली ली रे॥

स्वरूप दामोदर राय रामानन्द, गौर गदाधर भीरे।
रसिक भक्त सब सहचरि मिलिके, करत कली रस केली रे॥

अंग बसन भीन के लागे, सोहत नील रूपीले रे।
श्रम कण विन्दु बदन अति सोहैं, वरणै कौन कवी रे॥

अति श्रम जानि सकल सहचर तब, लाये तटनि के तीरे।
श्री रूप सनातन 'बन बिहारीदास' बसन कर दी रे॥

******

सकल गुण प्रवीण गौर सुन्दर सहचर,
संग करत जलहिं विहार।
गौर बदन पर जलकन सोहे, मानों कमल कमरन्द लुब्ध,
घेरत अलक अलीन अपार॥
झीन चीर भीज लागे गौर तन, शोभा भर प्रगट,
मानो शशि प्रतिबिंब मुकुर निहार॥
छिरकत प्रमोदित परस्पर गदाधर ''वैष्णव''
चहुँ दिशि देत बलिहार॥

॥ फूल बँगला ॥

आजु अति अद्‌भुत फूल जु फूले॥
फूलन को रंगमहल जु सोहै, फूलन के मनफूले॥

फूल महल में श्री गौर जु बैठे, फूलन अंग दुकूले।
फूलन को लहँगो अति लहकत, फूलन कंचुकी तबोंले॥

फूलन के अँग अँग आभूषण, फूल फूल मनफूले।
रोम रोम सब फूलमयी रची, फूलन कोऊ सम तूले॥

श्री रूप सनातन निरखि फूलमय, मधुप आय सब झूले।
'श्रीबन बिहारि विहारिनि दासी', सबन लई निरमोले।।

सोहे वर श्री शचीनन्दन चन्द श्री गदाधर संग।
सुरसरी तीर सुखद फुल कानन, तामें विरचित फूल सिंहासन,
फूल अभरन सब अंग।।

यह नवद्वीप नवल वृन्दावन गावत जुगल मधुर रस रंग।
मृदंग सुरंगत बाजत नाचत 'वैष्णव' प्रेम प्रवाह अभंग।।

******

फूल सिंगार विहार करत हैं गौर सुन्दर उदार शिरोमनि।।
फूलन के मुकुट, लटकत हैं फूलन कुण्डल गण्डन सोहे,
कण्ठ फूलन के हारनि की बनी।।

फूलन बाजुबन्ध बलया वर मुदरी,
फूलन कटि तक किंकिनी।।

'वैष्णव' प्रभु चरन कमल पर फूलन नूपुर अपूरब साजे,
इह बानक पर काम कोटि घनि।।

।। रथ-यात्रा ।।

आज रथ अद्भुत एक बन्यो।
मनमथ मनोरथ रथ होय आयो, गौर रँग में सन्यो।।

बनो निकुंज बाग को बागे, आगे धरि मन मानो।
तापर बैठे गौर निताई, छवि छवि निरखि लजानो।।

कोऊ कर चमर कोऊ कर बीरी, कोऊ कर छत्र जु तानो।
श्री रूप सनातन 'बन बिहारि बिहारिनि' यहि रस मानो।।

******

रथ पर राजत गोर किशोर ।।
दाहिन नित्यानन्द अनंदित, बायें गदाधर जौर ।।
फूलन बाग पराग पुरित थल, विहरत कुंजन ओर ।
'वैष्णव' गण नृत्य करत हैं, प्रेम मगन घनघोर ।।

।। वर्षा–ऋतु ।।

ललित नवल नवद्वीप मनोहर, तामें विहरत गौर सुन्दर वर ।।
झीन बसन धरे तामें जल बुन्द गिरे,
झलकत शरीर पर प्रगट शोभा भर ।
'वैष्णव' जन मोर सुनो घन गरजन सुनि,
हुलसत निर्तत अद्भुत तर ।।

******

सोहे वर गौरसुन्दर नवद्वीप मनोहर प्यारे गदाधर संग ।
गरज घटा घन दामिनी दमकत, तैसे बरसत मंद अभंग ।।
दादुर मोर पपीहा बोलत, कुंजित कोइल मधुर उमंग ।
गावत सरस मलार 'वैष्णव' जन, सुनतहिं बाढ़्यो प्रेम तरंग ।।

******

देखो गौर मेघ नित छायो ।
अन्तर श्याम घटा घुमड़त है, बाहर पीत लखायो ।।
सावन मास अद्वैत सुहावन, बारहों मासा आयो ।
पवन निताई चल पुलबैया, तन मन ताप सिरायो ।।
नाम गगन गरजन घनघोर, हरि हरि गरज सुनायो ।
हरिदास जन चातक पीवत, मनसा मोर नचायो ।।
कृष्ण–प्रेम नदिया उमगाई, कलियुग पंक बहायो ।
साधन हीन मलिन जन कारन, नाम 'प्रेम' झर लायो ।।

******

दैखो री एक गौर मेह।
नख शिख तें मानो धर्‍यो है देह॥
नृत्य करत मानो प्रेम पवन वश।
नयन झरत मानौ वर्षा घन रस॥
वरण वरण आभूषण राजत।
मानहुँ विज्जुल माला साजत॥
बिच बिच अट्टहास मनु गर्जनि।
थर हरात हिय रोम रोम सुनि॥
सींजत स्वजन वेलि मानों उलहीं।
भनत ''मनोहर' नाहिन तुलहीं॥

******

लखत शचीनन्दन मेघ बहार॥
गौर निताई ठाडै बन में, सनमुख लेत फुहार॥
हरियारी चहुँदिशि में छाई, शीतल बहत बयार।
दादुर मोर पपीहा बोलत, कोकिल करत गुँजार॥
कारी कारी घटा निहारत, श्यामसुन्दर अनुहार।
प्रेमोन्मत्त हो हरि हरि बोलें, नयन नीर निरझार॥
दामिनि लख प्रफुलित प्रभु नृत्यत, श्रीराधे उच्चार।
जय जय धुनि करत भक्तजन, गावत 'मधुर' मलार॥

॥ हिंडोला ॥

श्री कृष्ण चैतन्य नित्यानन्द झूलैं।
नव प्रेम रतन मय चित्र हिंडौलै॥

परम सुख पुंज नव कुंज मंजुल।
सदन दोऊ मिलि ते झकोरे॥

नवल नागरि गदाधर सखि वृन्द।
निरखें अद्वैत परमानन्द बोरे॥

'दीन' हित जगतपति प्रगट नदिया नगर।
सोइ श्यामसुन्दर नवल चित चोरे ।।

******

झूलत गौर सुजान नवल नव रंग हिंडोरे।
प्रफुलित मन अति सुभग वृन्दावन, सुन्दर सखि चहुँ ओरे ।।

निरखि प्यारी शोभा सुख सागर, प्रेम तरंग झकोरे।
'रसिक दास' सो ही यह जानत जुगल रङ्ग रस बोरे ।।

******

झूलत नवल हिंडोले दोऊ, प्रीतम बसन सुरंग।
महाप्रभु चैतन्य कृष्ण हरि, श्री नित्यानन्द जु संग ।।

चहुँ दिसि भक्त झुलावत गावत, नाना प्रेम तरंग।
रूप निहारत तन मन वारत, नैन पुलकित अंग अंग ।।

बाजे विविध बजावत नाचत, निरखत मति गति पंक।
छबि अपार 'मनहरन' कहा कहै, छिन–2 कोतिक होत अभंग ।।

******

झूलत नवल नवद्वीप नीप कुंज तर,
गौर सुन्दर सुघड मनोहर।

विविध सुगन्ध कुसुम सुसम लतान पर,
मधुकर पुंज कुंजत पीक वर ।।

घन गरजे गगन घोर, मोरन की कुहकन,
पवन सुखद मन्द मन्द झर।

सुरधुनि तीर भीर 'वैष्णव' की,
गावत मधुर सरस प्रेम भर ।।

******

झूलत गौर सुन्दर परम प्रवीण दीन हितकारी।
प्रेम प्रीत के खंभ मनोहरं, चारू चोपन डाँडि सरल,
सरस पटोली हिरदे मनहिं समारी।।

प्रेम भक्ति की घोर घटा चढि, नाम गरज धुनी बरसत,
नैन निरख पुलक हरि आरी।।

इह विहरत अनेक 'वैष्णव' संग, राजतन्त्र रंग महल,
बन उपवन तहाँ बसत अधम निस्तारी।।

******

फूल झुलन में गौर गदाधर झूले।।
फूलन बाग पराग पूरित थल, नवद्वीप रस मूले।।
मधुकर गुंजत कुहकत कोकिल, त्रिविध पवन अनुकूले।।
ब्रजरज मधुर 'वैष्णव' मिलि गावत, शोभा लख सुध भूले।।

******

झूलत गौर निताई हिंडौरे।
सुरँग हिंडौरे लचकत मचकत, छबि कौ सिन्धु झकोरे।।
झोटा देत स्वरूप दामोदर, भक्त करत किलोरें।
रूप सनातन 'श्री बन बिहारिन बिहारी' को चित चोरें।।

।। शरद–रास ।।

रास मंडल बने, नृत्य नीकी बनी।।
गौर गोविन्द के नयन अरविन्द सों।
छटत आनन्द मकरंद चहुँ दिशि घनी।।
ताल वश मृदु चरण धरत धरणी हुलसि।
हस्तक बिलस भेद चलन लोयन अनी।।

पुलकायत घन कम्प भीर थरहरनि।
परसत प्रस्वेद सुरभेद भारी बनी।।

अहितसित आरकत धरत जड़ता जबहिं।
बाही ठाढे रहत गहत बानक फनी।।

निपट अवसन्न जब तबही सिति धुकि।
परत अंग नहीं हलत गत श्वास की निगमनी।।

ता समय जगत में जीव जेतिक बसत।
प्रेम आनन्द के होत सबरे धनी।।

चकित सब पार्षद शब्द मुख में मिलत लगी।
टकटकी यह सुख लख 'मनोहर' भनी।।

******

गौर सुन्दर सुघर रास मण्डल लसत।।

सुघर सुरतान के तान रस विवस होय।
सजल लोचन मगन कबहुँ गावत हँसत।।

बजत मादक मृदंग उधट धा धा धी।
लंग रंग भरी कर चरन चारन हियो गसत।।

मिलत करताल ध्वनि ध्यान गती सबन।
सुनी प्रेम रस माधुरी रसना श्रवत।।

सुनत ही त्रिविध जन सबके एक मन।
आनन्द घन अगम मारत धसत।

असत आलाप में गसत न मन करत।
ऐसोई भाग या सुख मनोहर लसत।

******

नदिया इन्दु करूणासिन्धु, रसिकन के प्राणबन्धु।
कलियुग पावनावतार, कीर्त्तन तनधारी।।

नाम लेत कटत पाप, छूटत तन त्रिविध ताप।
महा माधुरि सार रूप, कवि मति अति हारी॥

चन्दन चर्चित अंग, लाजत अँग कोटि अनंग।
उपजत अति छवि, तरंग महा माधुरी॥

खेलत नित सुरति रंग, दुऊ होय एक अंग।
रूप सनातन अंग अंग, बिहरत प्रिय प्यारी॥

रसिक मुकुट मणि प्रधान, 'बन बिहारिनी' दासि जान।
गौर निताई गुनन खान, निरखत तृण तारी॥

******

श्रीवास आँगन अद्‌भुत, भाँत मच्यो है सुन्दर, रास रंग॥

शरद रैन चौक चाँदनी छाहीं, विविध जन्त्र बाजत सुढंग।
चहुँ दिशि भक्त मत्त हो नाचत, गौर गदाधर संग॥

व्रजरस मधुर ललित तर गावत, प्रेम प्रवाह उमगि अभंग।
यह सुख नैन सिरावत, कहत परस्पर 'वैष्णव' मोद तरंग॥

******

गौर सुन्दर नाचत है संग सोहत प्राण श्रीगदाधर।
बाजत मृदंग सुरंग ताल सुँ तेसोई उरप तिरप गत,
लेतहि नरहरी, निरखि हरषि प्रेमभर॥

प्रभु मन जान मुदित भये गावत गीत,
गोविन्द मधुर सुर।

तता तथ दिगडि दिगडि थै, तादिग दिग दिग,
'वैष्णव' जन सुठार उचारे वर॥

।। व्यंजन द्वादशी–खिचरी भोग ।।

खिचरी जेंवत श्री गौरहरी।।
रतन जटित चौकी पर बैठे, झारी कंचन प्यारी धरी।।
बाम गदाधर दखिन निताई, विविध हास परिहास करी।
देत प्रसाद शेष दासन को, चितवन अति अनुराग भरी।।

।। शिशिर–ऋतु ।।

सुन्दर समय शिशिर सोहावन, गौर सुन्दर विराजे।
रंग रंग के बसन सुसम धरे, अंग अंग प्रति साजे।।
अद्‌भुत रूप अनूप गदाधर, ताम्बुल सेवन निपुनहि काजे।
ऋतु अनुकूल गावत 'वैष्णव' जन, ब्रजलीला सुनि मत्तह्वै गाजे।।

।। बसन्त ।।

जय जय श्रीकृष्ण चैतन्य चन्द्र,
मूरति बसंत प्रीति रस कन्द।
विकसित तनु बन मनु अरविन्द,
भाव कुसुम शोभा हँसी मकरन्द।
नव पल्लव अनुराग अमन्द,
बिलसे कोकिल कुल राहचर वृन्द।।
करूणा मलयानिल सीतल सुगन्ध,
जगत सुवासित प्रेम प्रबन्ध।
त्रिभुवन प्रकाशित पदनख चन्द्र,
देव दरसन 'दामोदर' मन्द।।

******

बसन्त देखोरी नयन भरि, गौरचन्द मूरति बसन्त।
अंकुर पुलक अधर नवपल्लव, वचन कोइल कुहकंत।।
केसर चंदन अङ्ग लेपन, अरूण वसन रूचि अति ही लसंत।
'कृष्ण' प्रेम रस मगन रैन दिन, चरण शरण जाचन्त।।

******

गौरचन्द्र वर देत हरष नव, बन के बसन्त मिलि खेलें।
भगत चकोरा नयना हेरत, रूप पान कर मन झेलें।।
मृगमद साखि जवादि अगरसत, अरस परस सब मेलें।
भरि भरि मूठि गुलाल उडावत, अरूण भये तम चेलें।।
हँसत अधर तब बेनु मधुर मुख,करत विविध रस केलें।
पुष्पन वृष्टि करी नभ देवन, 'मदन' मुदित रँग रेलें।।

******

मधु रितु नवद्वीप बिहरत द्विजराज आज साजे।
गौर सुन्दर बसन्त मुरत धरममय पुलक मुकल सुराजे।।
अरूण अधर कर किसलय शीतल वरन भाव कदम्ब मुकुरे।
अंग सुगन्ध मलय पवन, चहुँ दिश लुब्ध भ्रमर गुंजार करे।।
'वैष्णव' प्रभु को सुकंठ मनोहर सुनि,
सुक चातक कोयल सुख शब्द हरे।

******

विलसे बसन्त लसत गुन गण गौर सुन्दर मनोहर।।
नव नवद्वीप नीप कुल विकसित किसलय मुकुल रसाल,
मधुकर निकर करत गुंजार।।
ललित बलित वेली द्रुम प्रफुल्लित झुकि रहे कुसुम की डार।
मधुर सुर सुक पीक गावत मोर सुढार
निरखि हरषि 'वैष्णव' बलिहार।।

।। होली ।।

जूट लटक चन्द्रक चटकारे सिर घुँघरारे बार।
तापर माल मालती मधुकर मधुकरि करत गुंजार।।
खेलत फाग रङ्ग रहयो है एरी सजनी नागर गौर गोपाल।।
अलकनि झलक तिलक ललकत अति,
चमकत श्रुति कुण्डल युग गंड।
अमल कमल लोहित लोइन घन, बरखत धार अखण्ड।।

भौंह नटन नासिका निकाई, बन्धु अधर सुरंग।
दमकन दसन हँसन आनन छवि, बलि बलि कोटि मयंक।।

कण्ठी कण्ठमाल उर ऊपर पचरंग हार समेत।
बीच उर बसी जटित लाल, कल उदित अरूण छबि देत।।

भुज गजराज सुण्ड पर मण्डित, अगद बलय सु ठोन।
पहुँचिन मुदरिन कर नख मिलि, शोभा वरने कवि कौन।।

कटि पहिर पट झीने, पटका बाँधि अमेठ।
चन्दन चरच औढ उपरैना, दरसत सरस अगेठ।।

अरूण चरण नखरा वलि रंजन, गंजन पल्लव राग।
युगल जलद दल शेखर मानो, भगे शशी दस भाग।।

वलि पैजनी ध्वनि सुनि सज्जित, अति लज्जित चटक मराल।
कबहुँ चपल गति चलत ललित अति, मत्त गयंद की चाल।।

नित्यानन्द राम सुन्दर पुरूषोत्तम आदिक संग।
उडत अबीर गुलाल धूमड़ में उपजत भाव तरंग।।

अद्वैत साज समाज कुसुम जल, छिरकत करत किलकार।
निरखि सघन श्रीवास माधुरी, रहत अपनपो हार।।

दामोदर नरहरि सहचरि मिल, गावत केलि धमार।
मुख मींडत झकझोरत बोरत, अरगजा सहज सँभार।।
निरखि गदाधर आवेशित चित, पुलकित, नखसिख अंग मुरारि।।

******

जग में शोर परोरी, गौर खेलत हैं होरी॥
मास दिवस को नेम न राख्यो, सब दिन फाग रच्योरी,
नित्यानन्द अद्वैत भक्त जन, किये भक्त इक ठौरी,
प्रेम को खेल मच्योरी॥

कोउ मृदंग कोऊ ताल बजावै, कोऊ करतारन जोरी,
यादवाय केशवाय नमः गाइये, ऐसी होरही होरी,
लियो सबको चित चोरी॥

हरे कृष्ण हरे राम हरे हरे ये, जुगल नाम बरस्योरी,
महामन्त्र श्रीमुखतें निज बानी, गौरचन्द्र जु कह्यो री,
नहीं साधन दूजो री॥

सूरज सी अगनित पतितन हित, दया को फगुआ दियोरी,
दीन बहाय नाम की नदिया, फिर फिर पौरी पौरी,
दिये जन नाम में बोरी॥

******

ऐसे रंग होली खेले गौर किशोर मन मोहे॥
लाल गुलाल अनुराग भर्‌यो है सनेह सुगन्ध छक्यो है।
श्वेत अबीर यश फैल रह्यो है रंग पिचकारी सब कर सोहे।
ब्रज रस गुप्त कुमकुमा केशर, 'वैष्णव' जन विलस्यो है॥

******

एहो गौर सुन्दर वर खेलत होरी नित्यानन्द सहाये सहाये।
अद्वैतादिक संग गदाधर अबीर गुलाल उड़ाये उड़ाये॥
श्रीवास संग गेंद कुमकुमा, चित, चोंपन सू चलाये चलाये।
पिचकारी भर चहुँदिश 'वैष्णव' देत हैं भिजाये भिजाये॥

******

खेलन होरी बनि आई तरूणि,

वरषा रितु गौर सुन्दर संग।।

बादरवार अँधियारी गुलाल घुमडि,

दश दामिनी चमके खंजन मंजु नैन अमंद।।

पिचकारी चहुँदिश वरषत रंग अभंग,

नूपुर मधुर मृदंग धुनि गरजन सुनी 'वैष्णव' प्रभु उमंग।।

******

देखो सुन्दर गौर नगर नदिया में खेलत है बन होरी।
चन्दन खौरि किये मुख पावन, कहत कहावत होरी।।

बाजत ताल मृदंग अधौरी, ढोल धमकि धुनि घोरी।
राग रंग गहगह्यो मच्यो है, कानन सुनियत थोरी।।

सुनिबे टोल टोल तहँ आए, भक्त वृन्द सब जोरी।
अबिर उड़ावत भरत परस्पर, भये सबन मन भोरी।।

खेलत खेलत गंग पुलिन में, आय भये इक ठौरी।
करत किलोल लोल सब अन्तर, 'मदन' वारत तृन तोरी।।

******

खेलत गौर प्रेम भरे होरी, प्रगट कियो आपन मन चोरी।
ताल मृदंग झाँझ डफ बाजै, हिये भाव सब रंग बिराजे।।

नैनन असन अनुराग में बोरे, पिचकारी चहुँदिशि तें छोरे।
सोहत चारू चीर अति राते, लग गुलाल रोरी रँग माते।।

केसर केस हरद रस भरे, छाइ रही तन पीत दुति धरे।
पुलक कदम्ब कुसुम तन सोहै, देखत सुध बुधि 'मदन' कि मोहै।।

गुणानुवाद, महिमा, शरणागति आदि के

।। पद ।।

सुनो ध्यान धर गौरहरी प्रभु, हमको निकट बुलाते हैं।
आवो उनके पीछे चलिये, वोही मनको भाते हैं।।

हरीनाम की नौका प्रभु ने, ऐसी सुगम बनाई है।
जिसमें बैठ सहस्त्रों प्रानी, भव-सागर तर जाते हैं।।

याही से मुक्ति जन पावत, फिर जग में नहीं आवत है।
अति कृपाल अस रीत बतावत, जातें सब सुख पाते हैं।।

कैसोहु अधम पतित हो प्रानी, ताहि पुनीत बनाते हैं।
दया मया कर 'मथुर' स्वामी, नैया पार लगाते हैं।।

पारस हैं श्री गौर महाप्रभु, पारस हैं श्री गौर।
लौह समान चित्त में कारे, जे जन कठिन कठोर।।
दरस परस गौरांग को पाके, होत कनक सिरमौर।।

जप-तप-जोग-अगनि ना चहिये, नहिं विद्या का जोर।
कुंदन होत तुरत पातकि जन, गौर लखे जिहि ओर।।

हरि 'मथुरेश' प्रेम की छाई, घटा रहै घनघोर।
धन्य गौरहरि तन बरसावत, अमृत रस हर ठौर।।

******

धन धन कृपा की खान हैं श्री गौर तन हरी।
दीनौ पै दया करके दी झाँकी वो रस भरी।।

मन मोहनी रसीली छटा छबको देखकर।
तन तज दिया मदन ने लजे देव और परी।।

रटना है कृष्ण नाम की हर इक जबान पर।
कहते हैं सब ही प्रेम से बोलो हरी हरी।।

हम जैसे तुच्छ जीवों के उद्धार के लिये।
पूरन प्रकाश ब्रह्म ने नर देह है धरी।।

श्यामा के तन में रम रहा जो प्रेम श्याम का।
मूरत उसी की प्रगटी ये गौर सुन्दरी।।
भवसिंधु से तिराने को दीनों पै तरस खा।
'मथुरेश' गौर प्रेम की नवका है अवतरी।।

******

दीनबन्धु शरणागत वत्सल, भव-भय-हारी तुम्हीं तो हो।
श्यामसुन्दर कभी गौरचन्द्र प्रभु, कृष्णमुरारी तुम्हीं तो हो।।
निराकार निर्गुण निर्मल तुम, सगुण तुम्हीं साकार तुम्हीं।
कौटि-कौटि ब्रह्मांड-पति हरि, नर-तन-धारी तुम्हीं तो हो।।
अगम अगोचर अज अविनाशी, अजर अमर अद्वैत तुम्हीं।
ब्रजपति गोपति गोपिका बल्लभ, कुंजबिहारी तुम्हीं तो हो।।
मच्छ कच्छ बाराह हरी तुम, राम लखन बलराम तुमहीं।
जन दुःखहारी समय समय, नाना तन धारी तुम्हीं तो हो।।
तुम बिन कौन हरे हरि विपदा, तुम्हीं करी प्रहलाद की रक्षा।
श्रीपति ब्रह्मा तव शरणागत, गिरवरधारी तुम्हीं तो हो।।
तुम्हीं प्रेमानन्द बढ़ावो, तुमहीं विरह-अगन भड़कावो।
तज ब्रज कुब्जा-नाथ कहावो, कंसारी भी तुम्हीं तो हो।।
गोपियों का कहिं खाओ माखन, वंशी बजाते फिरो कहिं बन बन।
कबहूँ ब्रज-रज को करो वर्णन, प्रेम-भिखारी तुम्हीं तो हो।।
विदुर-भामिनी मान बढ़ाओ, गूदा त्यागो छिलका खाओ।
श्रीधर के केले रूच पाओ, प्रेम-पुजारी तुम्हीं तो हो।।
ऐ विश्वंभर ! ओ शचीनन्दन ! ! छोड़ न दो मुझे जानके दुर्जन।
आये कृष्ण से गौरहरी बन, नदिया-तारी तुम्हीं तो हो।।
तुम दाता मैं तुम्हारो भिखारी, धर्म कर्म कछु नाहिं बिचारी।
अंत लाज तुझे कृष्ण हमारी, जन-हितकारी तुम्हीं तो हो।।

******

हिलमिल के प्यारी गौरहरी के गुण गाइये ।।
अति अगाध भव–सिन्धु तरन को नैया–गौर,
हरिनाम शुभ तर जाइये ।।
मूरतमान प्रेम दोउ भाई, गौर निमाई,
निताई चरण चित लाइये ।।
करूणामय प्रभु अधम उधारण तारण,
तरण मनाय परम सुख पाइये ।।
धन नदिया जहाँ प्रेम की नदिया, जनहित,
नाथ बहाई मगन हो न्हाइये ।।
श्री 'मथुरेश' गौरहरि सुमरे, पाप ताप,
मिटजात वाही को अपनाइये ।।

******

धन धन महाप्रभु दातार, जनको सब सुख देने वाले ।।
जग में घने पातकी जीव, जिनके पापन की नहिं सीव।
अघ हर तिन्हें मिलावे पीव, हरि जन की सुध लेने वाले ।।
धन्य वो हरी नाम की नाव, सहज भव से प्राणी तरजाव।
रैन दिन वामें ध्यान लगाव, महाप्रभु राजैं खेने वाले ।।
पतित पावन है साँचो नाम, महाप्रभु परम कृपा के धाम।
चरण हैं तारण तिरण ललाम, दास 'मथुरा' हैं सेने वाले ।।

******

गौर–चरण ही इष्ट हमारे ।।
जिनकी प्रभा श्याम धारण कर,
गौर हरी हो आज पधारे ।।
तिन पद रस लालाहित मोहन,
पान करन हित अस तन धारे।
भाव धार उर गौर–चरण कौ,
स्वाद चख्यौ निज नाम सुधारे ।।

जो पद–रज रसिकन जीवन धन,
श्यामहिजाहि शीश पै धारे।

ताको दान सहज ही दीनो,
वृन्दावन का वासि बना रे।।

बिन सर्वस्व निछावर कीने,
जो हरि देवत नहीं कदा रे।

सो बिन श्रम हरि गौर हरी हो,
प्रेम भाव दियो जगत लुटा रे।।

राधा–चरण प्रभा महिमा अरू,
निधी गुप्त जो दई बहा रे।

बनवारी हित ''माधुरी' दासी,
सदा रहे पद कृपा मना रे।।

******

छिन छिन गौर–चरण–रज–वन्दे।।
जिनकी कृपा प्रेम रस बरसत, होत हैं नित्य सकल आनन्दे।
कामधेनु रसदाता रसमणि, दायक नित रस आनँद–कन्दे।।
भजें भाव सह ताको देवैं, पद हित स्वामिनि जू नँदनंदे।
कलमष तन मन हिय के नाशैं, सहज कटैं सब कर्मन फंदे।।
बनवारी हित 'माधुरि' दर से, दिव्य दृष्टि लहँ निश्चय अंधे।
श्री राधा–पद–जीवन–मूरी, गौर हरि देवो प्रेम अमन्दे।।

******

गौर चरण तज अनत न जाऊँ।
तिहूँ काल और लोक तिहूँ में, श्री राधा पद ही हौं पाऊं।।
स्वप्नहूँ में नहीं रति अन्य पद, ये ही छिन छिन कृपा मनाऊँ।
परम उदार गौर हरि प्यारे, दो हित स्वामिनि पद सहराऊँ।।

जन्म बधाई ये बख्शीश हो, हित प्यारी पद रज अवगाऊँ।
बनवारी हित 'माधुरीदासी' प्रिया-चरन हो कुंज सिधाऊँ।

******

मोहन साँचे गौर ढरे ।।
उर अन्तर निधि बाहर छलकौ, कृष्णहु गौर करे ।।

भाव भावना प्रेम परा रस, गौर हृदय बिखरे।
कारो रूप गौर भयौ यातें, कृष्ण गौर निखरे ।।

उमँग उठ्यो वात्सल्य हृदय बिच, ताहि तैं अवतरे।
हरि हरि बोलत रस में घोलत, डोलत मत्त हरे ।।

अधम उधारे हिंसक तारे, पावन पतित करे।
नदिया में अवतार लियो हरि, प्रेम जगत वितरे।

जो निधि देत कृष्ण सकुचावत, कृष्ण रूप बिचरे।
महिमा देखो गौर प्रभा की, हटकि प्रेम वितरे।

बनवारी हित 'माधुरि' ने तो गौर चरन पखरे।
श्री राधा पद धात शीश पै, प्रेमरू प्यार भरे ।।

******

श्री चैतन्य बनै निरवाहे।
दीजै वास विपिन अवलोकौं, तुम छवि हित मेरे दृग दाहे ।।
'ललित किशोरी' को दयाल सुन, जो या पापिन को अवगाहे।
तुव नखचन्द्र दरस दुर्लभ ज्यो, चूमन चन्द्र चकोरी चाहे ।।

******

गौरकिशोर चोर चित मेरे, करूना तनक करौ ।।
सुन्दर वदन दिखाय दयानिधि, नैनन ताप हरौ ।।

नृतत रुनुक झुनुक नूपुर धुनि, हिय मेरे विहरौ।
'ललित किशोरी' मैं बलिहारी, टुक निज जनहि बरौ ।।

******

जयति जयति श्री शचि किशोर।
मृगलोचन मोचन दुःख दारून, मृदु मुसकन थोरे थोर।।
क्षीर मध्य धवलाई द्रव जिमि, मिले जुगल चितचोर।
श्री वन वास वेगि मुहिं दीजैं, 'ललित किशोरी' मान निहोर।।

******

लाज लगावत भाल तिलक कों।
श्री चैतन्य तुम्हारी तदपि, सुमिरत ना नखचंद्र झलक कों।।
'ललित किशोरी' अलक फाँस फँसि,
सालत ना डर नोंक पलक कों।
धिक धिक जो निशि दिन इन नैनन,
झालत नाहिं बुलाक हलक कों।।

******

कुल कलंक चैतन्य उपासिन।
दुसकर्मी बदनामी टीको,
श्री वृन्दावन कुंज निसासिन।।
रैन दिवस परदोष विचारत,
फँसत न दृढ़ अलकन की फाँसिन।।
लाज लगावनहार किशोरी,
राधागोविंद ''लजित'' खवासिन।।

******

श्रीचैतन्य नाम गुन गौरी।
गहिले या भवसिंधु अगम में, कालहु कर्म सकै ना बोरी।।
दिनकर सतगुरु कृपा प्रभा सों, प्रफुलित रहिहैं मान निहोरी।
बाढ़ै जल आकाश कमल वत, उतरै है तू 'ललितकिशोरी'।।

******

छाँड भटक मन त्याग चपलता, गौरचन्द्र चरनन चित दीजे।
ऐसे दयासिंधु करुणाकर, भक्ति–रत्न बिनहीं श्रम लीजे।।
दृढ़ विश्वास कहत हूँ सांची श्रीवनवास ब्रज ही दीजै।
'ललितमाधुरी' जुगललाल की, प्रेम जनित नव–नव नित भीजै।

******

रे भज शचीनंद चैतन्य।
दृढ़ विश्वास प्रेम रस मज्जित, बस श्री वृंदारण्य।।
सेब चरन तल धूलि उभय रस, रसिकन रास अनन्य।
'ललितमाधुरी' रूप छकी नित, डोल मोद सम्पन्य।।

******

श्री चैतन्य उपासन मोरे।।
पाय अभय पद राधागोविंद, काल कर्म जम त्रास न मोरे।।
श्रीवृन्दावन वास त्यागि कै, 'ललितकिशोरी' आश न मोरे।
भाल तिलक तुलसी कंठी तें, उत्तम निधि को उपास न मोरे।।

******

श्री चैतन्य नाम धन मेरे,
कर्म धर्म दूजो नहीं जानो।।
सपनिहुँ आन देव नहिं अरचौं,
गौर श्याम उर में अनुमानो।।
नहिं अभिलाष मुक्ति की मेरे,
आस वास श्रीवन हिय आनो।।
'ललितकिशोरी' कृपा न भय कछु,
साँच कहौं झूँठी न बखानो।।
श्री चैतन्य कृपा यह कीजै,
निपट अयान कछू नहिं जानौं।।

युगल नाम सरवस हो मेरे,
कर्म धर्म दूजौ नहिं मानौं ।।

सपनिहुँ और देव नहिं अरचौं,
गौर शयाम उर में अनुमानौं ।।

'ललितकिशोरी' नवल कमल पग,
दृढ़ विश्वास हिये बिच आनौं ।।

******

जैजै गौरकिशोर मनोहर, मृगलोचन भृकुटी कुटिलारी।
जूरी सुभग फणिक गुंडल दै, बैठो लट लटकन छबि न्यारी ।।

कुंडल जाति जगमगत गंडन, चपला निरत करत मनुहारी।
विहँसन दशन दमक हियरातें, 'ललितकिशोरी' टरत न टारी ।।

******

गौरचन्द्र नख चन्द्रिका, मो उर करो प्रकाश।
तासु चाँदनी में लखै, मन मूरत रस रास ।।

बिगरी भाँति अनेक ही, कहिवे में सकुचात।
राधा गोविंद गुरु कृपा, सुधरि गई सब बात ।।

******

गौर कृष्ण, करुणामय, मानद मदनार्बुद मद दमन,
देववृन्द वन्ध्य, सुन्दर शशि वदना ।।

शरनागत जन तारन, गुन सागर गति जिति वारन,
मंजुल जनरंजन, धृति मंजन, सुख सदना ।।

करुणेक्षण, निज भक्त कुमुद बांधव, भव शोक हरन,
निर्मल निज भक्ति दान निपुन, प्रेम रसधारा।

विभु मीन कुरम, शूकर नरहरि बामन, भृगुपति राघव,
बल बुद्ध कल्की, प्रभु दश अवतारा ।।

प्रियकांति धरण भाव विभूषण राधा नाम जपत गुन गावत,
ध्यात निति पीतम रूप, सुरसरी विहरईया।

प्रभु पूरणब्रह्म गौर सनातन, सनातन जीवन जीव रूप प्राण
वन्दौं ''वैष्णव'' हित प्रेम वितरईया।।

******

गौर किशोर नव, आनन्द वन्दे।।
देखो लोचन ताप हरत मुनि वृन्दे।।
प्रेम मधुर मूरत लसत, वचन पियुष रसन,
तिलक भाल उज्ज्वल भाव पुरत अंगे,
कृष्ण यश गुन गावे सुने रैन दिन हरखी पिवत,
तीतत प्रेम मकरन्दे

******

प्रभुवर प्रभाकर नख मणी अनुदित, मणिकर उदये।
वेद वदत जो बह्म सुनी अप्रकट होत
सो चरन शरन अवलोक ये।।

जगजीवन को अन्तरयामी, सो भयो अंशन वर्धन,
विभु षडैश्चर्य्य भगवान स्वरूप ये।

अधतार कार उदार विश्वम्भर, 'वैष्णव' जन यह विनति करत है,
तुम करो प्रेम परि पुरये।।

******

बदन अम्बुज मन्द मुसकान मकरन्द,
लोचन अलि युग राजे।

अन्तर श्याम गौर बाहिर धर,
अनंग लाज करत शोभा जग साजे।।

मोदन मादन सिन्धु रंगन निशदिन,
गमन रहत निज काजे।

'वैष्णव' के प्रभु गौर सुन्दर,
उदार शिरोमणी पतित पावन धुनि गाजे ।।
सुनि जग जन सब दुःख भाजे ।।

******

गौर किशोर चोर मो मन को,
प्रेम मगन कीनो जग जन को ।।
निरूपम रूप, अनुपम गुण गण,
वाणि वचन न जात रचन को ।।
मधुर बोलन, मुसकन चितवन,
निरख हरख सुध बुध बिसरन को ।।
निशदिन सुपन धन चरन यह,
सरवस धन यह ''वैष्णव'' जन को ।।

******

जय जय श्री गौर निताई चरण रज,
सेवत अति रति हित चित मान।
महाप्रेम–रस माधुरी बरसत,
छकि राखत निज चरनान ।।
प्यारी पिय तन एक मेक ह्वै,
विहरत सब रस गुन की खान।
(श्री) रूप सनातन (श्री) जीव रघू जुग,
श्रीभट्ट गोपालरे प्रान !।
पाप ताप भ्रम श्रम सब नासत,
नाम लेत निर्भय अभय दान।
'श्री बन बिहारी बिहारिनि' प्रगटी,
दासी करती नित नव गुन गान ।।

******

गौर निताई हमारे स्वामी।
नित्य बिहार निरन्तर बितरन,
जुगल प्रेम रस उन्नत नामी।।
रसिकन के जीवन दोऊ प्रगटे,
उपमा को कोऊ कहूँ अनपामी।।
(श्री) रूप सनातन दास 'बन बिहारिनी'
रसिक नरेशन के सुखदामी।।

******

श्रीगौराङ्ग किशोरी को नित्य बिहार,
सर्वोपरि अति ही मन भायो है।।
लाल रङ्ग रंङ्गीलो रंङ्गीली को हाव भाव,
संग लेके सहचरी कलि में केलिकुंज सरसायो है।।
एक तन एक प्रान एक चिन्ह चिन्हार एक,
मेक सरस अंग लावण्य दरसायो है।।
श्रीरूप सनातन 'बन बिहारी बिहारिनि' रस वरषे,
रूप माधुरी अतिशय सरसायो है।।

******

मेरी गति तुम ही श्रीगौराङ्ग किशोरी जू सों।।
भई है प्रसन्न श्री रूप की स्वामिनी,
सनातन विहरे अङ्ग सङ्ग बिहारी जू सों।।
जुगल प्रेम रस रूप छाकि रहे,
जुगल एक तन नैन निहारी जू सों।
''श्रीबनबिहारी बिहारिनि'' प्रगटी,
दासी जाय बलि बलिहारी जू सों।।

******

रोम रोम रसना जो होती गौरा गुन न बखानो जात।
कहा कहों सखि एक ही रसना कहि आवत नहिं बात।।
कोटि-कोटि भानु कोटि-कोटि चन्द्र हार गए और युवती जनजात।
'श्रीबनबिहारिनि' सों लालन हा हा खात।।

******

जै गौरा जै गौरा गौरा जय गौरा जय श्री गौरा।
श्रीराधा को भाव कांति लै प्रगटे नवल किशोरा।।
सहचरि सुहृद संगनी लेके पतितन रस में बोरा।
(श्री) रूप सनातन कलि में जीवन को छाप देंय श्रीगौरा।।
महा भाग बड़ भागी चीन्हों गौरा चित को चोरा।
'श्रीबनबिहारी बिहारिनि' प्रगटी विलसित युगल किशोरा।।

******

हरे हरे प्रचुरन जग के ऊपर प्रभु विश्वम्भर लियो अवतार।
पतित उद्धारन भक्ति प्रतिपालन, दूरकरन सब कलिको भार।।
चारि बीस अवतार ते, यह लीला अगम अपार।
नन्द घर श्रीकृष्ण प्रगट भये, अब भये गौराङ्ग शचीकुमार।।
दूर होत दुःख द्वन्द शरण ,ते, और मिटें यम द्वार।
'श्री किशोरीदास' चैतन्य चन्द्र जू निराधार आधार।।

******

सुमरन करो श्रीशचीनन्दन कौ।।
नाम लेत ही आनन्द उपजै सुखकारी और दुःख कन्दन कौ।।
भजनानन्द को मोद बढ़े तन मिटे क्लेश कलि के फंदन कौ।।
'श्रीकिशोरीदास' श्रीगौर कृपाते शरण लियो बन चंदन कौ।।

******

जियो जियो मेरे मन गौरा चोरा।
आपन नाचत आपन रस भोरा।।
खोल करताल बाजे झिक झिक झिकियाँ।
भक्त आनन्दे नाचै लिकि लिकियाँ।।
पद दुइ चारि चलें नट नट नटिया।
थिर नहिं होवत आनन्दे मतुलिया।।
ए छन पुहँक जाऊँ बलिहारी।
''शाह अकबर'' तेरे प्रेम भिखारी।।

******

जय जय नित्यानन्द चैतन्य परम उदार।
युगल प्रेमरस दे कियो जगत निस्तार।।
लीला नाम रटत निसि वासर गोपीनाथ उच्चारे।
प्राण प्यारी प्रानन प्यारे, नैनन ही अनियारे।।
श्रीराधा गोविन्द सखी निर्भेद होय बिहरे।
एक प्रेम को भाव विविध, करि दु:ख सागर की लहरें।।
मदनगोपाल बाल मनमोहन लाल लाडली राजे।
ललना नवल रङ्गीले नागर भामिनी सङ्ग अति साजे।।
आल्हाद प्यारी चितवन मोहन ललितादिक न्यारी।
'श्रीगोपाल दास' मन भावन कीर्तन तन धारी।।

******

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।
रङ्ग रङ्गीले गोविन्द छैल छबीले।
राधे कृष्ण जो गावे प्रेम भरे।।
जपे महा मन्त्र यंत्र सब बाजत।
गावत सन्तन मन में धरे।।
गौर गोपाल की माधुरी मूरति।
निरखई प्रान नयन झरे।।

******

महाप्रभु तुम हो परम उदार।
अद्भुत रीति तिहारी देखी पतितन के तुम अति रिझवार।
याही आसा लाग रह्यौ हूँ, और न कछु मोर अधार।
जगन्नाथ सुत पद रज वन्दौं दीजै प्रेम दान विस्तार।।

******

रस भूषित गौराङ्ग प्रेम बपु उज्ज्वल नीके।
रस भोजन रस सैन बैन रस बिनरस सब फीके।।
रस में विलसन कुंज केलि रस पगे अमी के।
ठाकुर परम रसाल चसक रस वश जु भलीके।।
रस उमगे निशि याम सहचर गन रसही के।
बिन लखे गौर विलास–रचै का भूषण जीके।।

******

गौर रूप को लखा नहीं तो प्रेम स्वाद विपरीत लखे।
मनसिज विलास को लखा नहीं तो कहा मधुर रस रीति लखे।।
भाव भेद गति लखि नहिं पावक कपूर सम प्रीति लखे।
गुरु मार्ग को लखा नहीं तो ईश कष्ट विपरीत लखे।।

******

प्रेम पान छक छकन मत्त वपु लोक व्यक्त कोई गौर हरी।
चपला गति चन्द्र से अमी झरे लावण्य छवि कोई गौर हरी।।
रस सिन्धु रस सज्यो मीन रमे त्यों केलि रसिक कोई गौर हरि।
आनन्द तरङ्ग बस उमग–उमग नव भाव वृद्धि कोई गौर हरि।।

******

श्री चैतन्य दयानिधि धीर।
कलि कालीन मलीन दीन जन पावन करन परम गम्भीर।
पूर्व चन्द्र नंद नन्दन को उदय सदा उमगन की भीर।।

बोहित नाव चढ़ाये बहुत जन प्रेम मगनकर पठे तीर।
भाव तरंग अभंग विभंग गति महा मधुर रस रूप शरीर।।

निज जन रतन जाल युत राजत ध्वनि हुंकार उसाँस समीर।
त्रिविधि ताप तेज जरे जीव से शीतल किये परसत पद नीर।।
करुणा दृष्टि वृष्टि सों सीचे जै जै जै 'आनन्द' मुदीर।।

******

जय नित्यानन्द चैतन्य परम दयाल।
भव भय भंजन अधम उधारन धन्य धन्य कलिकाल।।

नवद्वीप नगर सुन्दर वर, तहाँ विराजत मिश्र पुरन्दर।
तिनके गृह ब्रज नागर नटवर, भक्तन के हितकारी।।

उज्ज्वल प्रेम दियो पतितन को, आवे तो कारण श्रीनिधुवन को
तिमिर विनाश भये जग जन को किये प्रेम उजियारी।।

भये अवतार कलियुग तरणं, कोटि–कोटि दामिनी जिनि वरणं।
नित्य प्रति अद्‌भुत गति चलनं, बोलत हरि हरि सघनं सघनं।।

******

राधा भाव काँति रति धरि कै,
प्रिय सङ्गिनी सब सहचरी करिकै।
सदन भये कलिकाल नर के, अपने गुन परचारी।।
बाजे करताल मृदङ्ग मधुर ध्वनि,
सकल भक्त हरि हरि हरी रव गर्जनी।
मध्ये विराजत न्यासि चूड़ामणि, निभृत निकुंज बिहारी।।
नाचत नटवर गौर चन्द्र नवद्वीप सुधाकर,
वामें विराजत प्रान गदाधर।
शोभा की बलिहारी।।

******

थातै थातै गंभीर गर्जन, खोल करताल बोले अति अगनन।
शची कुमार पग मंजीर झननन, भक्त देत कर तारी॥

जगमग जगमग ज्योति विराजै हुंकार, नित्यानन्द गाजै।
श्रीअद्वैत चन्द्र प्रभु साजै, कृष्ण मिलन सुखकारी॥

श्री हरि हरि बोल कहैं शचीनन्दन, नैन बरसत ज्यों सावन।
रोवत थर हर देह कंप घन, कृष्ण कृष्ण फुतकारी॥

रूप सनातन भक्त प्रधान, स्वरूप रामानन्द करत ही क्रन्दन।
निरखि गौर विधु करत आलिङ्गन, सुमिरि प्रेम मतवारी॥

जय जयकार करैं सब सहचर, धन्य धन्य नवद्वीप नर वर।
धन्य धन्य कलि काल नारी नर, निरखत गिरिवर धारी॥

'दास वृन्दावन' दीन हीन जन, जो वंचित जन्म अकारण।
श्रीअवधूत चन्द्र पद जीवन, करि राखो मोहि चेरी॥

******

कृष्ण चैतन्य ब्रह्मण्य आनन्दघन,
अधम उधारन नवद्वीप वासी।

मधुर हरिनाम संकीर्तन प्रगट तन,
प्रेम परिपूर्ण महाभाव राशि॥

राधिका भाव वश श्याम तनु गौर लस,
संन्यास कीन्हो यह बन विलासी।

निगम अगम अगोचर गौर,
मधुर वर भक्त प्रेम सुप्रकासी॥

प्रबल पाखण्ड सब मतन को खण्ड,
परताप प्रचण्ड मारतंडउ जैसे॥

भ्रमत तैलङ्ग कनार्ट गौड आदि,
सब विमत गज दमन को सिंह ऐसे॥

हेम हर ताल गोरोचन ललितद्युति,
दामिनी दमकन मृदु मन्द हाँसि।
'कृष्ण जीवन' प्रभु प्रगट चिन्तामणि,
श्री शचीनन्दन अदोष दर्शी।।

******

जय शची नन्दन त्रिभुवन वन्दन,
खण्डन पाप ताप त्रिभुवन के।
करुणासिंधु अगति गति दायक,
सङ्ग रसिक भक्त अगनन के।।
मुनि जन ध्यान धरत नहिं पावत,
डोलत घर घर कानन जिनके।
'नव चैतन्य हित प्रगट पूरब मही,
आनन्दकन्द नित्यानन्द प्रिय के।।

******

वन्दे श्रीचैतन्य नित्यानन्द।
घोर कलि तिमिर अति,
देख सब जीव प्रति प्रगट भये दोऊ चन्द।।
नाम लम्पट दोऊ प्रेम दिये सब कोऊ,
आनन्द धाम हरत दुःख द्वन्द।
'सदा नन्द' प्रभु प्रेम रस सरबस,
शरण याचत मति मन्द।।

******

श्री महाप्रभु चैतन्य। कलि अवतार रसिक मनमोहन,
किये सकल जीव जग धन्य।

दुर्लभ प्रेम दान विस्तारो,
सुन्यो न देख्यो अन्य ।।

विविध भक्त सरस रस पौवत,
जिय ज्यों चकोर शशि रूप अनन्य ।
अद्भुत रहन कहन शोभायुत,
रूप सनातन प्रेम मगन्य ।।

प्रगट कियो ब्रज श्री वृन्दावन,
जो पहिले हो तो अति छन्य ।।

******

नाचत नव गौर चन्द्र गावत कतो भक्त सङ्ग ।
कोकिल कंठ मन्द हास प्रेम पुलकि अङ्ग ।।
उच्च स्वर करत गान, तान मान गति सुठान ।
धिकट धिकट खननन भेद वरन बाजे मृदङ्ग ।।
हरि हरि बोलि भुज तुलि अवनी लुंठत धूसल ।
धूलि पतित करत अङ्ग ।।
दीन हीन अधम खीन कर धरि नाम लीन ।
अद्भुत रस में वंचित आनन्द सुख तरङ्ग ।।

******

हम तो श्री गौराङ्ग उपासी ।
आनन्द निधि करुणा-रस-निधि प्रगटे विपुल विलासी ।
श्री रसिक विहारिणी अपु वपु धारो लिये महाभाव रासी ।।
रसिक शिरोमणि रूप सनातन तहाँ नित करत खबासी ।
महा माधुरी प्रगटन छिन छिन भक्तन के सुखरासी ।।
'श्रीबन बिहारिनी दासी' के हित विहरत निकुंज निवासी ।।

******

हरि हरि बोलत फिरि फिरि डोलत रहत त्रिभङ्ग।
बजत मृदङ्ग रङ्ग उपजत करताल तान बहु भाँति।।

नृत्य करत रस मत्त परस्पर आनन्द उर न समात।
नदिया नर नारी अवलोकत चित्रित चहुँ दिशि घेरे।
यह अवसर 'मनहर' कब पइहें जियत करुणा पथ हेरे।।

******

तुम मत देखो गौर हरि। जो चाहो घर वस्ती करी।।
अरुण नयन जल झरत निरन्तर।
देखत ही सों पेठत अन्तर।।

पुत्र करित्र पिता नहिं भावें।
अश्रु कम्प पुलकादि करावें।

वल्लभ होय कृष्ण गुण गावें।
और वृन्दावन तरु चले भावें।।

।। छप्पय ।।

श्रीनित्यानन्द कृष्ण चैतन्य की भक्ति दशों दिशि विस्तरी।
गौड देश पाखण्ड मेटि कियौ भजन परायन।
करुणासिंधु कृतज्ञ भये अगतिन गति दायन।।
दशधा आक्रान्त महत जन चरण उपासे।
नाम लेत निःह पाप दुरित तिंह नर के नासे।।
अवतार बिदित पूरब महि, उभय महत देही धरी।।

।। कवित्त ।।

गोपिन के अनुराग आगे आप हारे श्याम,
जान्यो यह लाल रंग कैसे आवे तन में।

ये तो सब गौर तनी नख शिख बनी ठनी,
खुले यों सुरंग अंग रंगे बन में।।
श्यामताई माँझ सो ललाइ हूँ समाय जात,
ताते मेरे जानि फिरि आई यह मन में।
जसुमति सुत सोइ शची सुत गौर भये,
नये नये नेह चोंज नाचै निज गन में।।

******

आवे कबहूँ प्रेम हेम पिंडवत तन होत,
कबहुँ संधि संधि छूटि अंग बढ़ जात है।
और एक न्यारी रीति आँसु पिचकारी मानों,
उभय लाल प्यारी भाव सागर समात है।।
ईशता बखानी कहा कहो सो प्रमाण याको,
जगन्नाथ क्षेत्र नेत्र निरखि साक्षात् है।
चतुर्भुज षट्भुज रूप लै दिखाय दियो,
कियो जो अनूप हित बात पात पात है।।

******

कृष्ण चैतन्य नाम जगत प्रगट भयो,
अति अभिराम लै महन्त देह धरी है।
जीतो गौड़ देश भक्ती लेश हू न जान्यो कोऊ,
सोऊ प्रेम सागर में बोरो कही हरि है।।
भये शिरमौर एक एक जग जारिवे को,
धारिवे को कौन साखी पोथिन में धरि है।
कोटि कोटि अजामिल बारि डालें दुष्टता पे,
ऐसेहुँ मगन किये भक्ति भूमि भरि है।।

******

प्रभो गौरांग गुणाकर ईश।
कलिमल नाशन भक्तन सरवस शची सुत जगदीश।
प्रेमामृत को पान करावत लोकबन्धु वृजधीश।।
अमल अलौकिक प्रीति सरोवर अति उत्सव वागीश।
'श्रीप्रभुचन्द्र गोपाल' अकथ वह जो विभु नाहीं हरीश।।

******

जब से शची सुबन निहारो।।
करत कीर्तन भक्त जनन संग नृत्यत होय मतवारो।
तब से मोय पलहु कल नाहीं जात न धीरज धारो।।
वा चित चोर किशोर गौर न मोय बौरी कर डारो।
लोक लाज कुल कानि छूट गई निज अपनापो वारो।
'सूरज' अब येही मन भावे सेऊँ वाको द्वारो।।

******

अरि मति गौर निहारो री।
मैं साँच कहुँ तुमरे हित की तुम मत गौर निहारो री।।
वह तो मगन भयो डोलें हैं हरि हरि निशदिन बोले हैं।
नैनन अश्रुधार प्रेम को वह मतवारो री।।
एक बार जो कहुँ लखि पइयो तो घर लौट बीर नहिं अइयो।
अपने कुल की कान नेक मन माँहि विचारो री।।
जो सुत पति में प्रेम तिहारो, निन घर बार लगत है प्यारो।
तो 'सूरज' शचीनन्दन से करि रहो किनारो री।।

।। राग दादरा ।।

तुम बिन कौन हमारो, महाप्रभु।।
मेरे नाथ तिहारो आश्रय नाहिन और सहारो।।

अधम उधारन बिरद आपको छायो है जस भारो।
तारे पतित अनेक आपने काहे मोय बिसारो।।
दीन पुकार की नेक सराहना मृदुल स्वाभाव तिहारो।
पात्र अपात्र विचार करो ना छिन में सबको तारो।।
भाग्य हीन 'सूरज' की बिरियाँ मन में काह विचारो।।

******

हे प्रभु गौर कृपा अब करिये,
कृपा अब करिये, कृपा अब करिये।
विनय चित धरिये, हे प्रभु गौर कृपा अब करिये।।
अति ही तपित जगत तापन ते कृपा सुधा जल सो प्रभु हरिये।।
तारे पतित अनेकन तुमने मम अघ देख हृदय जन डरिये।
अधम उधारन बानि तिहारी 'सूरज' वार न प्रण से टरिये।।

******

वन्दौं श्री गौरचन्द्र प्रेम भक्ति दानी।
मान देत जन के काज आप तो अमानी।।
विधि दुर्लभ वस्तु जाये, राखी शुक आदि गोय,
दीनी सो ढोय ढोय, निज जन हित जानी।।
प्यारी को भाव धार, प्रगटे यसुदा कुमार,
उज्ज्वल रस कियो प्रचार, सुन्दर सुख खानी।
तारे पापी अपार, कौन गिनके पावै पार,
अबके 'सूरज' की बार, करो न आनाकानी।।

******

गौर चन्द्र उदार जै जै चन्द्र उदार
कृपा सागर सब गुणागर उपमा में नहिं आर।।
भये बहु अवतार प्रभु के टारने भू-भार।
अब के जैसी नाथ कबहुँ करी न करुणा अपार।।

विधिहू दुर्लभ शुद्ध प्रेम जो सकल रस को सार।
नीच ऊँच के देत में प्रभु कियो न कछुहि विचार॥

रीति सिखाई कीर्तन की कियो नाम को प्रचार।
परम दुष्ट मधाई आदिक दिये छिन में तार॥

कीर्तन निन्दक जो पापी करत जन सो रार।
दई अविचल भक्ति ताकूँ नाम को आधार॥

दीनवत्सल विरद तुमरों कहत संत पुकार।
अबके प्रभु 'सूरज' की बारी कीनी कहा अबार॥

******

रे मन गौर गौर नित गइये।
जिनके गौर प्राण धन सरबस, तिनके पद सिर नइये।
जो जन गौर चन्द्र यश गावत, तिनकी बलि बलि जइये॥
जो गौराङ्ग को ध्यान धरत हैं, तिनहीं के सङ्ग रहिये।
'सूरज' श्रीगौराङ्ग भक्त तज, अन्ते कबहुँ न जइये॥

******

सुनिये मेरी पुकार गौर चन्द्र सुखकारी॥
मैं शरण तुम्हारी आई हूँ जग दुःख से घबराई।
करिये बेगि सँभार गौर चन्द्र सुखकारी॥
तुम अगतिन के गति दाई हो दीन पतित हित दाई।
करिये मेरा उद्धार॥

मैं तुमरी दासी कहाय अब कहूँ कौन से जाय।
करिये आप विचार॥

जो नृप के दास कहावे और पिरजा के ढिंग जावें।
तो हँसि है संसार॥

नहिं मन तव चरन लगायो झूठे जग में भरमायो।
पायो दुःख अपार॥

तुम प्रेम निधि के दाता और दु:खी जनन के त्राता।
अब क्यों करत अबार।।

'सूरज' को अपना लीजै निज चरन कमल रति दीजै।
ये ही है चाह हमार।।

******

जो पै नहिं गौर चन्द्र जग आते।।
तो ये दीन अधम जन हमसे, सिर धुनि धुनि पछताते।।

होती कहा दशा पतिनन की, शरन कौन की जाते।
साधन हीन मलीन जनन को, मारग कौन बताते।।

रस रहस्य राधामाधव को, आय कौन प्रगटाते।
सुर दुर्लभ हरि नाम प्रेम रङ्ग, को जग में बरसाते।।

पाखंडी कुतर्की जनन को, कौन भक्ति पथ लाते।
'सूरज' ऐसे अधमा जन को, और कौन अपनाते।।

******

दीनन के हित अवतार हरी, गौराङ्ग तुम्हारी जय होवे।
पतितन को किये उद्धार हरी, गौराङ्ग तुम्हारी जय होवे।।
राधामाधव जो जुगल रहें, दोनों मिलि सोई गौरांग हुये।
भये राधा भाव सुख सार, हरी 0।।

बलरामजी नित्यानन्द भये वहाँ शंभु सो अद्वैतचन्द भये।
आये सह ब्रज परिवार, हरी 0।।

जगन्नाथ पिता और शची माता विश्व रूप से जहाँ भये भ्राता।
श्रीवासादि भक्त अपार, हरी 0।।

जगाई मधाई तार दिये संकल्प करा पाप आप लिये।
कीनो भक्तन जै कार, हरी 0।।

काजी ने कीर्तन बन्द करी दै स्वप्न कुमति मति ताकी हरी।
दिये यवन दुष्ट हू तार, हरी 0।।

यौवनकाल ही सन्यास लियौ संन्यासीगण को कृतार्थ कियो।
वादी सब मानी हार, हरी 0 ॥

पुनि नीलाचल को गमन किया सार्वभौम को आप परास्त किया
करि हृदय भक्ति संचार, हरी 0 ॥

फिर रामानन्द से मिलन किया ब्रजरस का तिनसे श्रवन किया
दियो दर्शन षट् भुज धार, हरी 0 ॥

प्रभु रंगपुरी को पधारे जब गोपाल भट्ट निस्तारे तब।
करि प्रेम भक्ति प्रचार, हरी 0 ॥

जब वृन्दावन भट्टजी आये तब राधारमणजी प्रगटाये।
भये गौर से श्याम कुमार, हरी 0 ॥

हा हा गौरांग दयाल प्रभु हे दीनन के प्रतिपाल प्रभु।
'सूरज' हैं शरण तिहार, हरी 0 ॥

******

नदिया वासी गौर किशोर, हरि हरि नाम लुटाने वाले।
राधामाधव आनन्द रासी, सत् चित् गोलोक निवासी।
तुमरी एकहि ज्योति प्रकाशी, लीला अजब दिखाने वाले॥

तुमने जग में लै अवतार, बरसाई प्रेमारस की धार।
अनगिन पापी किये उद्धार, महा महा नरक में जाने वाले॥

तुमने कृष्ण महात्म्य बताया, श्रीराधा तत्व जगत दृढ़ाया।
जो रस नेति नेति कह गया, सोइ तुम जग प्रगटाने वाले॥

राधागोविन्द चरित उजियाला, अनुपम अगम अगोचर लीला।
जाने प्रेमी कोई रंगीला, सोई तुम प्रगट दिखाने वाले॥

बड़े-बड़े तान्त्रिक तार्किक न्यायी, मूरख धोबी दर्जी नाई।
नहिं नहिं डाकू चोर कसाई, सबके पार लगाने वाले॥

जो कहीं पापी कहिं तुम पाये, तुरत ही नैन नीर भर लाये।
कण्ठ लगाय धूरि लुटाये, हरदम हरि गुण गाने वाले॥

******

कृष्ण विरह प्रभु वन वन डोले खग मृग कृष्ण सब बोले।
एकहिं मुख कहें कौन विधि तोले प्रभु के अद्‌भुत चरित्र निराले।।

सतयुग त्रेता द्वापर बीती कोई न जाने यह रस रीति।
कलिजन दीन जानकर प्रीति खोले गुप्त प्रेम धन तोले।।

हा हा गुप्त वृन्दावन चन्द्र, प्रगट परब्रह्म सच्चिदानन्द।
दीजै चरण कमल मकरन्द, हे श्रीकृष्ण कृष्ण मतवाले।।

दर्शन प्यास बढ़ी दिन दूनी, तुम बिन ये जग रैन विहीनी।
आय बसावो नगरी सूनी, करुणा सिन्धु कंहाने वाले।।

आशा लाग रही दिन रैन, महाप्रभु गौरचन्द्र सुखदैन।
'रतन' हिये गगन कबहुँ सुख देन, प्रगट होंय तिहीं लोग उजाले।।

******

हमारे मन भाय शचीजू को छैया।।

केशर तिलक भाल पर सोहै, घुँघराली अलकइया।
नासा मणि अति सुन्दर राजे, मन्द मन्द मुसकइया।।

श्रीवास आँगन में नाचै, लै लैके फिरिकइयाँ।
डगर डगर में करत कीर्तन, हरि हरिनाम लुटइयाँ।।

पात्र अपात्र विचार करे ना, सबै ही प्रेम बरसइया।
मनुष्य जनन की कहा प्रेम में, बाघन नाँच नचैया।।

'सूरज' शरण तिहारी आई, कीजै बेगि सहइया।
तुम तो हो करुणा निधि स्वामी, काहे देर लगैया।।

******

जय गौर कृष्ण चैतन्य जय षड्‌ भुजधारी।
जै शची दुलारे प्यारे नदिया बिहारी।।

जै जगन्नाथ सुत भक्तन के रखवारे।
जय नीलाचल वासीन के प्रान अधारे।।

जय रूप सनातन श्रीगोपाल भट्ट प्यारे।

जय दीन जनन के कष्ट निवारण हारे॥

जय जय गौराङ्ग दयाल विश्व सुखकारी।

जय शची दुलारे प्यारे नदिया बिहारी॥

पाखण्डी जैनी शैव्य बौद्ध मतधारी।

सार्वभौम भट्ट जैसे कुतर्क कूँ बिचारी॥

सबको मत खंडन कर निज भक्ति प्रचारी।

इक छिन में कीने प्रेम भक्ति अधिकारी॥

हरिनाम सुधा प्यास कीने परम सुखारी।

जय शची दुलारे प्यारे नदिया बिहारी॥

यद्यपि बहु जुग में आप रूप धरि आयो।

दे दर्शन अपने जनों के दुख नसाये॥

पर ऐसी कृपा नाथ कबहुँ नहिं लाये।

जस गौर रूप में गुप्त रहस्य प्रगटाये॥

दिये खोल खजानों बहायो प्रेमनद भारी।

जै शची दुलारे प्यारे नदिया बिहारी॥

जो पै प्यारे गौरांग न जग में आते।

तो हमसे पतित जन शरण कौन की जाते॥

साधन विहीन सिर धुन के पछताते।

हा हा को तुम बिन दीनन को अपनाते॥

पड़कर नरकन में पाते दुःख अपारी।

जय शची दुलारे प्यारे नदिया बिहारी॥

कैसोहि दुष्ट सिरमोर सामने आयो।

दरस मात्र से ही ताको चित्त फिरायो॥

को तुम समान पापिन को नाप नसायो।
कौ हरिनाम को प्रेम रंग बरसायो।।
क्यों मन्द भाग ''सूरज'' की सुरत बिसारी।
जय शची दुलारे प्यारे नदिया बिहारी।।

******

परम शुभ नायक प्रभु परकाश भये।
परकाश भु आकाश दिन रैन चैन बिलसाये।।
द्विजराज गौर आनन्द रस कन्द,
जै नवद्वीप उदयागिरिज नव शोभये।।
कलि कलुष तम ध्वंस अंशु यश पर संशये।
हरिनाम अमृत प्रचार सब संसार जनन उधारये।
सारिग गमप निधप धरी गावत वैष्णव सब मनहि उलासये।।

******

नव गौर किशोर हरे। नवद्वीप नित विहरे।
बसत लसत घर मिश्र पुरन्दर, अद्भुत गौर गोविन्द वर चन्दे।
अमर निकर पद वन्दे आनन्दे।
मन्द मुसकन अमृत रसकन्दे।
हसन दसन दुति विकसन तम, विधर्सन 'वैष्णव' मन चकोरे।
पीवत प्रेम भरे तउ पिउ पिउ सदा करे

******

चरन कंज मंजु पर नवनागरी मन भोरी।
मधु लुब्ध धरम धरी आई दौरी।
अरुण तल अँगुरिन दल, नख शोभा देख शशधर दिनकर,
चौकि परत अवनी पर, आय आनन्द ठोरी।
चतुरानन पंचानन, सहस्त्र नैन आदि,
दैवगण ध्यान धरत बहु यत्न करी।

गुन अपार को कहे ओर, गौर सुन्दर
परम मधुर अद्भुत पद शोभा देखी 'वैष्णव' जन,
प्रेम पुलक करै न्यौछावर तन तोरी ।।

******

श्रीचैतन्याद्वैत नित्यानन्द प्रभु पतित पावन अवतार।
अतिहि उदार यश विस्तारि, दश दिश हरिनाम जगत प्रचार।
जिनके कृपा बिन नाहिं पावत कोउ वृन्दावन राधाकृष्ण विहार ।।
अगति अधम अब परम 'वैष्णव' होत वंचितहु में अपराधिन के आगार।

******

जाति पाति धरम करम कुल के आचार
मेरो गौर सुन्दर बिन और न जानु।
सरग अपवरग नरक देखों जप तप आन
जोग जाग न मानो।
विमल कमल चरन रति मति चाउँ,
नाम धाम रूप गुण उनहिं बखानो।
रसिक 'वैष्णव' संग रंग निरन्तर इह बिन
सब लोक शोक ते वितानो ।।

******

श्री गौरचन्द्र आनन्द कन्द, अतुल गुण प्रचारी।
देखाय रूप अति अनूप, प्रेम फन्द डारी ।।
ब्रज समाज रसिक राज, गोपिन मन हारी।
अवधूत वेश करि विदेश, अब घर–घर भिखारी ।।
रास रंग राधा संग, कुंज केलि भारी।
सो सुहाग मन में जाग, अवन देखे नारी ।।
न देत युक्ति मुक्ति देन, याहि मन विचारी।
अब जीव मात्र प्रेम पात्र, 'वैष्णव' सब कारी ।।

******

कंचन कंज मंजु नैन युगल खंजन सोहे।
ऐसो अद्भुत आनन्द हैरे मकरन्द सो धंध अलक अलिन
वृन्द आवत पीवन को सुन्दर बदन घेरे।
अरुन दलन मानो दशन बशन,
देखी केशर रशन शोभा शेरे।
लावण्य जल अनील मदन मगन,
'वैष्णव' जनन फन्दन फेरे।।

******

आज सुन्दर सुघड़ गौर नागर लसत,
मुख देख नेक युवति सकल मन हरन।
बदन पंकज तरुण अरुण लोचन चारु,
भृकुटी कुटिल अलक झलक शोभा धरन।
दसन दामिनी अधर बिंब फल अति लज्जित,
गण्ड मण्डल मुकुर ललित कुण्डल करन।
धरत शोभा शीम ग्रीम, परिसर वक्ष उरक,
हार हीर जटिल मणि अभरन।
भुजन की टुटन लखिन मदन मन थर हनन,
बसन पहिरन त्रिकच ललित डोलिन पवन।
हेम कदलि युगल जंघ जानु सुभग,
चरन कोमल सुखद एक 'वैष्णव' शरन।।

******

रत्न सिंहासन बैठे गौर द्विजराज राजे।
नित्यानन्द सँग सब निज जन, और भक्त गण
तामे सोहे मुसक, जाते ताप त्रिविध भाजे।
श्रील गदाधर बाँहे मनोहर तांबुल सेवन निपुनहिं काजे।
जै जै करत श्री अद्वैत प्रभुवर निरख हरषत 'वैष्णव' समाजे।।

******

गौर किशोर चोर चितवन को, नदिया नगर बिहारी।
देखि नेक जगजन मन मोहे, डारि प्रेम फन्द वारी।।

चंचल नैनन बैनन सोहत, मोहन मृदु मुसकारी।
काम कमान मोहन की भङ्गिम, अलकन घुंघुर वारी।।

नाश चंचुकीर सुन्दर मनोहर, अधर बिंब रुचि कारी।
गंड युगल पर झलकित कुंडल, कंबु कण्ठ वर सारी।।

उर पर हार विराजत कृश मो, कृश कटि त्रिवली धारी।
पीपल दल उदर अति सुन्दर, नाभि नितंबन भारी।।

भुज जुग गोल आभूषण, पैहेरन पटन सम्हारी।
करतल अरुण शशधर नखमणि, दूर करत अँधियारी।।

हेम कदलि जंघ जानु युग, पदपर नुपुर झनकारी।
चरन कमल पर कर नोछावर, 'वैष्णव' जन बलिहारी।।

******

प्रगटे श्री गौरचन्द्र करुणैक सिंधु जीव उधारन कारण।
नित दासहुँ तेरो विमुख कर्‌यो मायाबल मेरो,
करम पास खुदि डारो संसार पारावरन।
पतित पावन जानि निवेदन अन्त समे करो आश पूरन।
हिरदे धाऊँ कमल चरन निरखूँ मुखारविंद नैनन।
'वैष्णव' बन्धु नाम कीर्त्तन प्रेमानन्द सुनूँ मैं श्रवनन।
कृष्ण चैतन्य उचारूँ बैनन यह विधि मैं छाँडू प्राणन।

******

द्विज कुल मण्डल श्रीशची नन्दन
आनन्द कन्द परमानन्द परम उदार।
शारद सुधाकर पीयुष मद हर
हरि नाम देत सब ताप निवार।
ऐसे दयाल और न भये न होने
घर-घर जाचत युगल प्रेम सार।

कीर्त्तन प्रगटत जगत 'वैष्णव'

होत केवल रहत में पापआगार।

******

गौर सुन्दर कमल नैन मधुर अधर मृदु हँसि–हँसि बोलत।

प्रसर उर पर बनमाल विराजित

भुज किरन देखी अनङ्ग डोलत।

कटितट छीन पीन जंघन पर

विमन बसन रसन मणि धरत।

'वैष्णव' जन यह नागर पर

तन मन धन वारत।

******

गौर किशोर मुसकी मोर जगतीत चोर आनन्द कन्द।

बदन शरद चन्द प्रफुल्ल कुमुदिनी वृन्द हँसि मृदु मोह सुछन्द।

मनमथ फन्द जुवतीन के धीरज निकन्द।

प्रेम सिंधु उमग बहु विध भाव तरंग मगन होत अनन्द।

रहत अभङ्ग नटत उतङ्ग।

सो धन वैष्णव सँग रंगहिं बाजत ताल मृदङ्ग।

उरप तिनप गत लेत सुढ़ङ्ग।

थै थै ता गिन गिन नगना किटि किटि तथा धिनता।

दिंग दिंग था दिग दिग दिग थुंग॥

******

गौर सुन्दर शोभा के सदन मदन कदन देत हसन।

नैन मंजु कंज खंजन गंजन जगत जनन मन कसन।

दसन वयन लखन बिंबफल ललनामन सुकचाहत अशन।

रूप रसामृत पीवे 'वैष्णव' जन अन्तर ताप सब नशन।

******

कहारी करूँ मेरो मन हर लीनो, सुन्दर नदिया बिहारी ।।
एक कुल कंटक मारग रोक्यो, दूजे लाज ब्रज मारी।
धरम करम डर गढते घेरी, कहाँ लौं करूँ विचारी ।।
नेह लताले बाँधि तन मन, किन सों कहहुँ पुकारी।
'वैष्णव' जन के यहहि अवसर, बेगि मिलो बनवारी ।।

******

सुन्दर गौर किशोर दयाल।
जन जन के कंठ पहरावत नाम चिन्तामणि माल ।।
उपमा को और ठौर न पावत देखी अंत होवे कै नन्द को लाल।
'वैष्णव' सँग गुन गाउँ निरन्तर नित नये मधुर रसाल ।।

******

जै जै विश्वंभर श्री मद् द्विज कुल मण्डन शचीनन्दन वर
समन वीडंबन घन करुनामय भवभय भंजन नाम।
शरनागत धर्म भक्ति उद्धारन कमलनैन जग जीवन धाम।
कंचन वरन हँसन दुति सोहन नैनन बरसत प्रेम नीर अभिराम।
जन मन रंजन मंजन पाप घन, दुख खंडन संकीर्तन
प्रकाशन 'वैष्णव' मन सुख दाय काम ।।

******

देखो सखी अद्‌भुत गौर किशोर।
नैना अचल चंचल नचावत सुन्दर भोंह मरोर।
घुँघर वारी अलकावली लखी, मदन मन कीयो चोर।
मंजुल सेज सुखद पर राजे सङ्ग गदाधर जोर।
चहुँदिशि गावत नाम मधुर धुनि रस प्रेम विभोर।
सहगण सहित 'वैष्णव' जन सेवत डारत है तृन तोर ।।

******

कृपामय गौर सुंदर अभिराम शरनागत सुखधाम।
अतुल प्रेममय गंभीर धीर श्रीगदाधर शशधर बदन चकोर।
ताप तम भंजन जन मन रंजन खण्ड पाखण्ड कठोर।
बदन जोति हर वर चामीकर मुख अरविंद नैन अलिजोर।
भोंउ विभंग अनंग तरंग, कुल कामिनी चितचोर।
करुणासागर आगर गुण गण बचन रचन में मति अतिथोर।
अधर सुधाकर हास मनोहर 'वैष्णव' प्रभु शिर मोर।।

******

हे प्रभु गौर सुन्दर नागर गुण आगर करुणाकर यह बार।
हम दीन हीन अति अभागी अपराधिन के आगार।
आधि व्याधि करि पूरित तन मन दुरितन के नाहि पार।
मेरी आश वास वैष्णव ढिंग, पाउँ सेवा तब पद सार।।

******

हरि शचीनन्दन वैष्णव जीवन
हिरदय कन्दर सदा करो विहरन।
सुवर्णा पुंज मंजु वरन तन शोभा सदन मदन मन हरन।
बहु दिन प्रेम न दीनो काहु, ब्रजरस ऊँचो मधुर रसावन।
कलि हत जन पर कृपा अवलोकन स्वभक्ती श्री रसायन।।

******

देखो बर गौर सुंदर मनमथन मन मोहे।
सहज अरुण अलस नैन तामे लसत
हसन बैन कुँद कलि दशन जोति दामिनी धुनि सोहे
घुँघर वारी श्याम अलक, करन कुण्डल लोल ललक,
झलक तिलक भाल देखी मानिनी मान खोये।
अधर अरुण मानी बदन प्रफुल्ल पङ्कज जानी,
मकरन्द लोभ फिरत अलि 'वैष्णव' मन मोहे।

******

सुंदर गौर हरि मौ मन लीनो चोर करी।
बिन देखे आलि जी मैं युग शत मानो घरी,
बदन चंद मौको जब सुध आवे लोचन आवे भरी।
मलफत चाल चलन पर वारूं कुंजर हंस खरी।
भुजन ठोरन मोरन वैनन की मुसकन ना बिसरी।
'वैष्णव' संग रंग विहरत है निश दिन ध्यान धरी।

******

श्री नवद्वीप कलप तरु तल रमनीय
मन्दिर रतन आसन पर राजै।
देखो गौर किशोर अनूप।
नख शिख सुन्दर अंग–अंग
माधुरी चातुरी बचन रस कूप।
चारु चिकुर चय सिर पर सोहत,
अलक कुटिल कपोलन सोहे।
भाल अर्द्ध, इन्दु विन्दु तिलकावली
नासा पर लखी युवती मन मोहे।।
भुज जुग काम शरासन उन्नत,
उत्पल अरुण श्रवण वर द्वन्द।
लोचन कमल पर तारक भ्रमरी,
प्रेम प्रवाह पिये मकरन्द।।
बिंब अधर हँस मनोहर
कुन्द कुसुम रदन प्रकाश।
गण्ड मुकुर जुग कुण्डल झलकत,
ललकत नासा मोति उशाश।।
करिवर कर जित अजानु लम्बित,
भुज केयुर वलय कङ्गण साजे।
अरुण करतल अंगुली चम्प दल,
नख मणि निरखि काम कुल लाजे।।

नाभि गंभीर त्रिवली मंजुर कृश,
कटि निरखि सिंह भय भाजे।
उदर सुन्दर नितंब पीवर
अम्बर पर मणी रसना सुसाजे।।
औरहुँ बाजत किंकिणी कुल
नागरी मन मोहन काजे।
हेम रतन जोति, जानु जंघ वर
पद नख जोती प्रकाश।
चरन कमल पर मंजीर मणिमय
कब हेरव 'वैष्णव' दास।।

******

उदित सहगण गौर द्विजराज राजे।।
नाम लेतहि त्रिविधन के ताप जात,
सरस पुरीत प्रेम पुलक भर गाजे।।
अमृत आलाप निज गुनगीत विमल यश,
अन्य अभिलाष आभाते भाजे।
कलि कलुष संघ ध्वंस करत प्रगटत नित
'वैष्णव' धरम विदित जल हित काजे।।

******

जय गौर गोविन्द चन्द वृन्द इव प्रकाश,
रसकन्द नित नव विहारी।।
जगत मति मन्द तम कलि न लखी अंशु,
यश जोत विस्तार कारी।।
नाम पियुष मय पिवत चातक भक्त,
मंत्र नर्तन कीर्तन प्रचारी।।
ब्रज नवद्वीप दीपत करत रैन दिन,
रसिक 'वैष्णव' संग रंग कारी।।

******

चरन अरविन्द आनन्द वन्दे,

गौर सुन्दर नवद्वीप चंदे।।

देव वंदित शचीनंदन, करुणामय अति उदार।

तव कृपा पियूष प्रवाह जग जन पिवत जै जै प्रेम अधार।।

ऐसो पतित पावन और न देख्यो,

घर–घर जाचत प्रेम अमृत रससार।

हरिनाम सार सर्वोपरि, उपदेश दे,

'वैष्णव' करत यह वार।।

******

जै जै जै श्री शचीकिशोर।।

वंदौ बारंबार ध्यान धर, परम कृपा पद साधन मोर।।

तुव चरनन–नखचंद्र छटा बिन, त्रिभुवन माँझ तिमिर तमघोर।

'ललित लड़ेती' बेग बोलिये, श्री वृंदावन मान निहोर।।

******

जै जै प्रभु चैतन्य चंद जै, जै जै नित्यानन्द।।

कल्प तरु दया–वारि निधि, भक्ति दानि सुखकंद।।

प्रेम पंथ जिन अवनि प्रचार्यो, हरे सकल दुख द्वंद।

नाम प्रताप प्रबल प्रगटाई, काटे साधन फंद।।

जब तें प्रगट भये करुनाकर, किये द्वार जम बंद।

जिहिं प्रभाव 'बलवंत' बदत भे, जड़ चेतन नँदनंद।।

******

जिन कृष्ण भये गौरांग प्रभु, भाव राधिका लोनौरी।।

दर्शन में अवलोकी निज छवि, कुँवर मनोरथ कीनौरी।।

यों आस्वाद करैं अपनो सुख, परहित में चित दीनौरी।

'श्रीगोपालदास' प्रभु प्रगटे, प्रेम–सुधा–रस भीनौरी।।

******

कैसे कलि के जीव ये तरते ॥
जो श्री शचिनंदन या भू पर, निज अवतार न धरते ॥
राधाकृष्णन नाम संकीर्तन, बिनु यमगण क्यों डरते ।
'किशोरीदास' ब्रजचंद प्यारी की रूप माधुरी कौ हिय धरते ।

******

जय जय श्री चैतन्य परम कृपाल ॥
प्रगटे जीव उधारन भक्तन के प्रतिपाल ॥
दुखित जानि जन जनम लेत तिहिं काल ।
भक्ति मंडन खल खंडन ऐसे दीनदयाल ॥
(चाल) ऐसे दीनदयाल प्रभु हैं जगन्नाथ के लाल ।
कृष्ण भक्ति प्रकासि दसौं दिसि कीनौ विश्व निहाल ॥
प्रेम ते नेम कियो न्यारो जैसे छीर नीर मराल ।
'किशोरीदास' की जीवनी जै जै श्री चैतन्य कृपाल ॥

******

जै जै श्री चैतन्य मनोहर नाम ।
नैंक उचारत होत है पूरन काम ॥
ये ही अनन्य गति रसिकन कौं विश्राम ।
सकल मंत्र को सार परम सुखधाम ॥
(चाल) सुखधाम शीतल कलप तरुवर मेटत माया धाम ।
अभिराम अति रसना रटत हैं जे नर आठों याम ॥
बसत ताकें उर निरन्तर रीझि श्यामा श्याम ।
'किशोरीदास' सुदृष्ट जै जै श्री चैतन्य मनोहर नाम ॥

******

जय श्री चैतन्य वेद वचन प्रति पाल्यौ ॥
सतजुग है नरसिंह हिरन्यकशिपु उर फार्यो ॥
त्रेता राम स्वरूप हैं रावण कुल ही संहार्यो ।
द्वापर ब्रज में लीला करि गोवर्धन धार्यो ॥

(चाल) धार्यो वाम भुजा गिरिनायक सुरपति पाइन पर्यो।
कलियुग में श्री शचि सुवन हैं मायावाद निवार्यो।।
सुरनर मुनि सब खोजत जाकौं गावत निगम पुकार्यो।
'किशोरीदासनि' हित जय श्री चैतन्य वेद वचन प्रतिपाल्यो।।

******

जै जै श्री कृष्ण चैतन्य है अवतरे।।
प्रिया अंग लखि गौर वरन निज वपु धरे।।
भक्ति रसासव पान करत सब मुद भरे।
भक्त रूप है प्रेम पयोनिधि विस्तरे।।
(चाल) विस्तरे प्रेम पयोधि अँग अँग पुलक गदगद रस ढरे।
नैन नीर प्रवाह अद्भुत चलन मानौ पिचकरे।।
रूप सनातन जीव आदिक शरन दै निजु सम करे।
'किशोरीदास' अनन्य गति श्रीकृष्ण चैतन्य है अवतरे।।

******

जै श्री चैतन्य परम सुख रास।
ब्रज वृन्दावन रूप कीना प्रकट प्रकास।।
भक्त जनन के वृन्द में पावें अधिक हुलास।
रोम रोम प्रति राधाकृष्ण भजन अनयास।।
(चाल) कृष्ण भजन अनयास जिनके वृथा न खोवें स्वास।
ह्वै कैं उनमत्त कुं जनि विचरत निरखत रास विलास।।
वन्य जन जे शरन आवें रहैं निरन्तर पास।
'किशोरीदास' यहै लीला गावैं पावैं वृन्दावन वास।।

******

जय शचिनंदन, जय जगवंदन,
त्रिभुवन पाप ताप दुख हरनं।
जय आनंद निधि, जय मंगल निधि,
जय सुखसागर सब सुख करनं।।

जय श्री चैतन्य गौर मनोहर,
प्रेमाभक्ति मधुर उर धरनं ।।
जय जय श्री ब्रजचंद्र उपासी,
जय जय 'किशोरीदास' निज शरनं ।।

******

जै जै श्री चैतन्य कृपाल ।।
प्रगटै परम दयाल जनन हित, जानि घोर कलिकाल ।।
कैई पतित उधारि दसों दिश, कृष्णभक्ति को कियो प्रकास।
राधा ध्यान निरंतर जिनके, युगल भजन अनयास ।।
महा अगम सौ सुगम दिखायो, ब्रज वृंदावन रूप।
परम रहसि लीला सुखदाई, कीनी उदित अनूप ।।
नंद जसोदा के है लाला श्री ब्रजचंद कहाए ।।
'किशोरीदास' पुनि शची सुमन है, भक्ति निशान बजाए ।।

******

श्री चैतन्य पद पंकज भजो रे ।।
योग यज्ञ जप तप जितो तीरथ,
करम कठिन सबहि परिहरो रे ।।
कठिन कलिकाल में शरण गैहि कै,
अबै भव दुखसागर सबहि तरो रे।
'किशोरीदास' महाप्रभु भजि ब्रज,
वृंदावन सबहि सुख लहो रे ।।

******

श्री चैतन्य महाप्रभु गाइये।
जो तू चाहे वृन्दावन को, गौचारन चित लाइये ।।
सुमिरत ही श्रीशचिनंदन को, करम फंद छुटि जाइये।
'किशोरीदास' इक शरण तिहारी, निश्चय शरन रखाइये ।।

******

भजि भजि रे श्रीराधागोविंद, मदनमोहन गोपीनाथ प्यारे।
नित्यानन्द श्री चैतन्य अद्वैत; रूप सनातन उजियारे।।
जीव रघुनाथ गोपाल वृन्दावन, गौरभक्त रस सिन्धु सदा रे।
श्री ब्रजानंद 'किशोरि' प्यारी जुत, सदा रहो नित हृदय हमारे।।

******

हम तो श्री चैतन्य उपासी।।
आनन्द मंगल निधि शचिनन्दन, सदा सेऊँ सुखरासी।।
इनके चरन शरन जे आवै, पावैं ब्रज वृन्दावन वासी।
'किशोरीदास' इन तजि और भजै, ते नर नरक निवासी।।

******

मंगल जय श्री गौर किशोर।।
मंगल श्री वृन्दावन भूषन, राधा भाव रसिक रस बोर।।
मंगल नवद्वीप पण्डित वर, जगन्नाथ आनन्द विभोर।
मंगल प्रगटे मात शची सुत, पूरनचन्द्र प्रेमनिधि घोर।।
नित्यानन्द अद्वैत गदाधर, श्रीवासदि चतुर चितचोर।
मंगल महाभाव भावित तन, रूप, सनातन हिये हिलोर।।
मंगल कृष्ण नाम बितरत हैं, पात्र अपात्र विचारन छोर।
'रामाराय' जग धन्धे त्यागे, मंगल भयो लग्यो इन ओर।।

******

गौर–हरि गौर–हरि भजत भज भागवत,
तत्व विस्तार निस्तार गति लेखे।
वेद वेदान्त सिद्धान्त सन्ति सन्तन के,
पुष्टि परमान धर ध्यान मति पेखे।।
नवद्वीप चंद्र सच्चिदानंद प्रेम कंद,
वृंदारक वृन्द बन्ध हृदय प्रति पेखे।
नित्य आनंद महाप्रभु जगत ईश,
अग्र 'रामराय' ने जु विनोद भर निमेखे।।

******

विधिना गौरचन्द्र सौं नातो ।।
जब तें कियो हियों नहिं भावत, दियो जगत करि हाँ तो ।।
अब काहू की बात सुहात ना, कहौ कहा धौं कींजै ।
नैन चकोर चंद्रिका जीवन, बिन प्यासे क्यों जीजै ।।

******

भई ढीठ सब ईठ पीठ दई, लई जगत उपहास ।
बन बन फिरत परत कल नाहीं कैसे सुहावे वास ।।
करि इलाज शरन आवन की, और नहीं कछु आस ।
करुणासिन्धु अनाथ बन्धु सुनि, जियत 'मनोहरदास' ।।

******

निशिदिन इहै सोच मेरे उर ।।
कौन काज ब्रजराज कुँवर वर, धार्‌यो गौर कलेवर ।।
सुख को परम सदन वृन्दायन, परिजन निपट सनेह ।
सो सुख छाँडि बसत नदियापुर, समझ परत नहिं एह ।।
संकीर्त्तन रस सन्तत विलसत, कौन माधुरी तामें ।
भोगी रस सिंगार सार तजि, लोभी होइ रहे यामें ।।
जाकौ भाव करी ऐसी गति, सो सबतें अधिकाई ।
इह अनुमान 'मनोहर' तन मन, चरण कमल बलि जाई ।।

******

आजु मैं गौरचन्द्र मुख देख्यों ।।
सुन्दरता को सार रंग गहि, विधिना चित्र विशेख्यो ।।
नैन कमल गुण असित सितारुण, तारुणा ता मध झलकें ।।
भुज भरी बैठें रस मधु पीयत, उडत भँवर वर अलकें ।।
अरुणित अधर नासिका उन्नत, चिबुक चारु सुख देन ।
वधुक चम्पक मुकुल जलज दल, उपहासति मनु मैन ।।
ज्यों देखत ज्यों आवत तबहीं, नहिं आवत बिनु देखें ।
ऐसी लगन मगन के आगे, कौन 'मनोहर' लेखें ।।

******

अद्भुत एक देखे मैं आज।
कनक धराधर कीर्त्तन माँझ।।
थावर कबहूँ कबहूँ जंगम गति।
कबहूँक फिरत चक्र की आकृति।।
ऊपर तें झरणा बहि आवति।
गहवर मधि केहरि गुजरावति।।
चहुँदिशि तैं मुकुलित बनराई।
बिच बिच कोइल कुहुक निमाई।।
धरणि कंपावति कंप निकाई।
मुदित 'मनोहर' बलि–बलि जाई।।

******

हरि हरि कौन कृपा रस एह।
धन्य गौड़ धरणी जहँ लोकन, अवलोकन हरि गौर देह।।
बिनहिं जतन नव प्रेम रतन सों, सबहिनके टहाँ भर्‌यो नेह।
सबही रसिक सबहि 'हरिबल्लभ', राजत यहाँ परस्पर नेह।।

******

जय जय शची कुँवर विश्वंभर नागर वर।
त्रिजगत पतित विलोकि कलागुरु,
करुणारस सर्वस विग्रह धर।।
निज वृन्दावन लीला विलसत,
संकीर्त्तन गुन ग्राम वितत कर।।
तान वधान मान अभिनव युत,
नृत्यत भूषण भाव रतन धर।।
चंचल चरन वरन गोरोचन,
लोचन वारिज वारि प्रणय ढर।
धीरज विरहित रहित परापर,
उमगत उर अकुलात धरत गर।।

मिलि सहचर गण रस आस्वादन,
प्रेम मगन कीने है थिर चर।
या मधि हेतु न कहत अपराधी,
वंचित होत सुदीन 'मनोहर' ।।

******

जब तें देख्यों मैं गौर किशोर।।
तब तें भूलि अपन औरहिं, जानत नहिं किहिं ठौर।।
जासो अधिक हुतो मेरो मन, तासों भयो उदास।
लोइन स्त्रवत गात अति पुलकित, ले लै जियो उदास।।
बूझि न परत कहा होनो है, निशि वासर नहिं चैन।
पूछौं तोहि 'मनोहर' हूँ भई कहा गहेली ऐन।।

******

जै जै नदिया नगर बिहारी।।
सुन्दर श्याम बाम सुख अनुभव, हेतु ज्यौं गौर वपु धारी।।
कृष्ण नाम वर रहत मंद स्वर, गद्‌गद् रोकत बानी।
लोचन अरुण प्रवाह रोकि, मानो छाँड़्यो है पानी।।
पुलकित कंपित तामधि हुकृंत, तुंगित भाव अनन्त।
विरह जलधि जल मनु अपने बल, कूदि परे गुणवंत।।
कबहुँ न सुन्यौ नैन नहिं देख्यो, ऐसो भाव विलास।
समझ न सकत तोउ फिरि वरनत, निलज 'मनोहरदास' ।।

******

जयति जय गौरदेव, नमो नमो बार बार।।
उदित नदिया उदयाचल, कलि पावन अवतार।।
अद्वैत आना गोलोक धन, नरहरि प्रेष्ट प्राणधन।
स्वरूप प्रिय निताई सखा, सनातन जीवाधार।
रूप-हृदय-नित-बिहारी, लक्ष्मी-प्राणपति सुखारी।
गदाधर-उर-रसोल्लासी, विष्णुप्रिया-उर-हार।।

जगन्नाथ सुत निमाई, श्रीवास सदा सहाय।
साङ्गोपांग पार्षद संग, करो 'प्रेम' प्रचार।।

******

श्री चैतन्य चन्द्र कृपालु भज मन, कठिन कलि कल्मष हरं।
श्रीनाम रस निज प्रेम दाता, ब्रह्म पर परमेश्वरं।।
परम पावन भाव भूषण, तडित अरुणाम्बर धरं।
उर माल सुन्दर चरण नुपुर, प्रेयसी कान्ति कलेवरं।।
आजानुलम्बित बाहु युगल, विशाल वक्ष परिसरं।
सिर केश मुकुट सुतिलक चारू, यज्ञ सूत्र मनोहरं।।
मधुर मधुर भुवन मंगल, नृत्यत नृत्य सु नटवरं।
नयन नीरज नित्य नवल, नेह करुणारस भरं।।
बोल हरि हरि बोल बोलत, नाम हरि विश्वम्भरं।
दीनबन्धु दयालु देव, दीन जन करुणाकरं।।
दीन वेष महान दाता, दैन्य भाव निरन्तरं।
पतित पावन अध नसावन, पवन मलेच्छ मलहरं।।
करुण कोमल चरित परम, उदार भाव सु उरधरं।
वृन्दा विपिन रस रास रसिक, रसाल रूप सुनागरं।।
सब तजत जो भजि गौर सुन्दर, नवद्वीप सुधाकरं।
सो पायें राधाकृष्ण युगल, सुप्रेम 'बिरही' दुख हरं।।

******

श्रवण सकल सुखदायक, श्री द्विजनायक हे,
उज्ज्वल तिलक सुभाल।। जय जय गौर हरे।।
स्फुट अरविन्द सुलोचन, भव मोचन हे
गल दोलित बनमाल।। जय जय0।।
अखिल ब्रह्माण्ड उजागर, रस सागर हे,
सकल निगम श्रुतिसार।। जय जय0।।
दिगविजयी मद भंजन, जन रंजन हे,
सुन्दर शची कुमार।। जय जय0।।

चन्द्र विनिन्दित बदनम्, गुण सदनम् हे,
मृदु मृदु श्रीमुख हास ।। जय जय0 ।।
कमल नयन जल धारं भाव विकारं हे,
मनहर नृत्य विलास ।। जय जय0 ।।
दुर्जन कल्मष नाशं, प्रेम प्रकाशं हे,
वितरित ब्रजरस सार ।। जय जय0 ।।
श्रीमुख हरि हरि नादं, 'विरह' विशादं हे,
परम प्रेम अवतार ।। जय जय0 ।।

******

अधमन के हित आये गौरा, पापिन के हित आये ।
दीनन के हित आये गौरा, पतितन के हित आये ।।
छल छल दोऊ नयना बरसे, प्रगट विरह हरि गाये ।
दोऊ भुजा उठाय करसें, दीन जनहिं उर लाये ।।
जिन दर्शन को देवा तरसें, बार-बार शिर नाये ।
ऐसे हरि प्रगटे भूतल पे, मूरख जान न पाये ।।
जगाई मधाई पतित उधारे, यवन अधम अपनाये ।
बन के पशुन कराये कीर्त्तन, बाघन को नचवाये ।।
राधा नाम धाम प्रगटाये, अपनो रस लुटवाये ।
धन्य कली धन्य है 'बिरही', अद्‌भुत लीला गाये ।।

******

वन्दौं गौर प्रभु पद पावन ।।
राधाकृष्ण स्वरूप तत्व पर, करुणाकार जग सुख उपजावन ।।
प्रेम प्रचार अहार प्रेम नित, प्रेम दानि कलि-कलुष नशावान ।
'श्यामदास' जन-जानि-जानि-पन, दान देहु रति हरि गुण गावन ।।

******

आयो कलि पावन हरि गौर, सुनायो नाम हरि हरि बोल ।।
नदिया में अवतार लियो है, हरि कीर्त्तन प्रचार कियो है ।

कलियुग में आधार दियो है, गौर हरि हरि बोल ।।
आप नचे हरि और नचाई, नाम संकीर्त्तन रास रचाई।
कलि जीवन को मंत्र सुनाई, गौर हरि हरि बोल ।।
भक्तन को गिन गिन नचवायो, पापिन को चुन चुन अपनायो।
नीचन कौं नव नव के उठायो, गौर हरि हरि बोल ।।
घर भीतर के लोग नचाये, वन बीथन के बाघ नचाये।
पटवी तर के पक्षि नचाये, गौर हरि हरि बोल ।।
दिगविजयी को दीन बनायो, न्यायाचारज गाय नचायो।
सन्यासी पति दास बनायो, गौर हरि हरि बोल ।।
यवन–पति की आज्ञा मिटाई, हरि संकीर्त्तन ध्वजा फहराई।
गावत भक्ति जहाँ अवगाई, गौर हरि हरि बोल ।।
श्री राधा महिमा प्रगटाई, ब्रज रस सीमा प्रेम लखाई।
प्रेम की युक्ति गाय सुनाई, गौर हरि हरि बोल ।।

******

सौर नव गौर चन्द्र, नागर बनवारी ।।
नवद्वीप–इन्दु करुणासिन्धु, भक्तवत्सल कारी ।।
बदन चंद अधर रंग, नयन झलके प्रेम रंग।
चन्द्र कोटि भानु कोटि, मुख शोभा न्योछावरी ।।
कुसुम शोभित चाचर चिकुर, ललाट तिलक नासिका उजोर।
दसन मोतिन अमी हास्य, दामिनी घन आरी ।।
मकर कुंडल झलके गंड, मणी कौस्तुभ दीप्त कंठ।
अरुण बसन करुण वचन, शोभा अति भारी ।।
माल्य चंदन चरचित अंग, लाजे लखित कोटि अनंग।
चन्दन मल्या रतन नूपुर, यज्ञ सूत्र धारी ।।
छत्र धरत धरणीधरेन्द्र, गावत यश भक्त वृन्द।
पद्म शोभित पदारविंद, जाऊँ बलिहारी ।।
कहत दीन 'कृष्णदास', गौर चरण करत आस।
पतित पावन निमाई चाँद, प्रेम दानकारी ।।

******

भजो रे मन गौरचन्द, पतित वृन्द तारन ।।
दीनबन्धु दीनानाथ, दीन दु:ख वारन ।।
कनक कुंड इन्दु अंग, तड़ित बसन पीत रंग।
भ्रू विशाल तिलक भाल, माल कंठ धारन ।।
शयन सपन दिवस रैन, छिन पल नहीं परत चैन।
प्रेम नीर झरत नैन, हरि हरि उचारन ।।
बजत चाँद खोल ताल, चरण नूपुर रव रसाल।
भुज उठाय शची लाल, नाचत कंस मारन ।।
गृह गृह नव ग्राम ग्राम, हरे कृष्ण हरे राम।
धन्य दिये मधुर नाम, अधम 'कृष्ण' तारन ।।

******

अब तो हरी नाम लौ लागी।
सब जग का यह माखन चोरा, नाम धर्‌यो बैरागी ।।
कहँ छोड़ी वह मोहन मुरली, कहँ छोड़ी सब गोपी।
मूँड़ मुँड़ाइ डोरी कटि बाँधी, माथे मोहन टोपी ।।
मातु जसोमति माखन कारन, बाँध्यो जाको पाँव।
श्याम किशोर भये नव गौरा, चैतन्य जाको नाँव ।।
पीताम्बर को भाव बतावे, कटि कोपीन कसे।
गौर कृष्ण की दासी 'मीरा', रसना कृष्ण बसे ।।

******

माई म्हारे महाप्रभुजी को संग ।।
अड़सठ तीरथ महाप्रभुजी के चरणा कोटि काशि कोटि गंग।
उनकी संगति में सुमति उपजत है, चढ़ै चोगुनो रंग ।।
उनकी संगति से कुमति हरत है, तन मन पुलकित अंग।
दुष्ट जनन को संग न करनो, पड़े भजन में भंग ।।
जो वे तोपै कृपा करेंगे, प्रेम पिलावत भंग ।।
उनके चरण की पदरज परसन, आस करत माई 'गंग' ।।

******

जय जय श्री चैतन्य महाप्रभु, नित्यानंद चंद रस रूप।
प्रेम शक्ति प्रकट करी प्रभु, धार्यो गौर स्वरूप ।।
गौड देश पावन कर्यो, धरि आचारज रूप।
वादी सब स्वादी किये, भये भक्त सब भूप ।।
जिनकी सरणो पाइयो, श्री रूप सनातन दास।
'जुगलदास' सुख निरखि के, जगसौं भये उदास ।।

******

जय जय जय श्री गौरचन्द, नदिया बिहारी ।।
जय जय जय श्री शचिकुमार, विष्णुप्रिया-प्राणाधार।
जय नित्यानन्द आनन्द कंद, अद्वैत आचारी ।।
संताप पाप क्लेश हरन, पतित पावन अशरन शरन।
करुणासिंधु दीनबन्धु, पावन अवतारी ।।
जय श्रीवास भक्त जन, जय हरिदास परम धन।
जगाई मधाई जीवन दान, कीरतन प्रचारी ।।
श्रीकृष्ण नाम मत गाय, नाचत दोउ भुजा उठाय।
रुदन करत भूमि गिरत, नैना झर भारी ।।
जय राय रामानन्द स्वरूप, जय सनातन रसिक रूप।
जय श्री रघुनाथ, रन विस्तारी।
जाकी महिमा अति अपार, श्रीराधा भाव कान्ति धार।
'विपिन श्याम' गोर चाँद, दीनन हितकारी।

।। निताई द्वारा घर घर में हरिनाम प्रचार ।।

श्री हरिनाम प्रचार करो ।।
गौराज्ञा सिर धारि निताई, डगर-डगर विचरौ ।।
हरीदास सँग घर-घर डौलें, हरी नाम उचरौ।
पात्र-श्रवण हरिनामहिं भिक्षा, सबसौं लेत खरौ ।।
कर जोरैं पद गहि समुझावैं, जो जन करि झगरौ।
विनय करत हरि नाम बुलावैं, सकल जनम सुधरौ ।।

।। पुरवासियों की पुकार ।।

गृह–त्याग करने वाले, नदिया न तुम भुलाना।
सन्यास लेने वाले, हमको भी पथ दिखाना ।।
अति दीन हीन वृद्धा, रो रो के माँ पुकारे।
बिछड़े हुए सुअन से, कोई मुझे मिलाना ।।
सुकुमार कोमलांगी, विष्णुप्रिया कलपती।
हा प्राणनाथ! तुम बिन, मेरा कहाँ ठिकाना ।।
ऐ पुरजनों के प्यारे, दिग्विजयि तुमसे हारे।
करके अनाथ नदिया, तुमने कहा ये ठाना ।।
हे नवद्वीप–इन्दु, हे भक्ति–प्रेम–सिन्धु।
हरिनाम–नद बहाकर, क्या चाहते सुखाना ।।
नदिया नगर के वासी, तेरे दरस के प्यासी।
अब तो पुकार सुनले, छबि पै 'मधुर' दिवाना ।।

******

रे मन गौर–चरण चित दीजै ।।
गौर रूप में राधा–माधव, युगल छबी के दरसन कीजै ।।
परम कृपा कर पतित उब्रारे, दीनदयालु–शरण गहि लीजै।
रसना लौं हरि रटत निरन्तर, 'मधुर' प्रेम–रस–प्याला पीजै ।।

******

कृपा कब करिहौं गौर किशोर ।।
जप तप साधन कछु ना जानौ, चितवौ करुणा कौर ।।
यवन स्वपच खल अधम उधारे, अंक लगाए दौर।
'मधुर' बिरद सुनी शरणै आयो, देवो चरणन ठौर ।।

******

जे जन गौर–शरण में आवै ।।
जनम जनम के अघ अवगुण सब तिरविधि ताप नसावै ।।

माया–मोह जंजाल छूटि हैं, भव–बाधा मिटि जावै ।।
प्रेमोन्नत हो केशव माधव, 'मधुर' कृष्ण हरि गावै ।।

******

श्री चैतन्य अनुग्रह कीजै।
दीनानाथ दयालु! पतित को तुम बिन कौन पतीजै ।।
भवसागर में डूबत मौ कों बचा हस्त गहि लिजै ।
चरण–कमल–सेवा अनपायिनी, 'मधुर' भक्ति मोहि दीजै ।।

******

शरणै आयो गौर निताई ।।
माया मोह आदि नै मौ कौं, अपने जाल फँसाई ।।
जो मैं पतित, पतित–पावन तुम, बिरद तुम्हारो गाई ।
'मधुर' चरण की सेवा देकर अब तो लौ अपनाई ।।

******

श्री चैतन्य–चरण चित दीजै ।।
गौर रूप कौं निरखि–निरखि कर, लौचन लाहू लीजै ।।
हरि–हरि रटत अहर्निशि मुखसौं, प्रेमामृत–रस पीजै ।।
कलि–मल–नाशक 'मधुर' शरण गहि, जनम सफल निज कीजै ।।

******

थे गौरहरी–गुण गावो जी ।।
राधा माधव एक छबी में, प्रकट्‍या, यानौ ध्यावौ जी ।।
पतित जगाई मधाई सा तार्‍या,
अगणित पापी जन उद्धार्‍या,
काजी नै निज भक्त बणायो, चरणा में चित ल्यावो जी ।।
पामर म्लेच्छ अधम अपनाया,
जनम–जनम का पाप मिटाया,
संकीर्त्तन–पीयूष पिलायो, देव अस्यो नहिं पावो जी ।।

दिग्विजयी को गर्व भगायो,
मित्र काज निज ग्रन्थ दुरायो,
घर–घर जा हरि नाम प्रचार्यो, मन वांछित फल पावो जी ।।
भट्टाचारज–दंभ नसायो,
अपणो षडभुज रूप दिखायो,
रामानंद सौं नेह बढ़ायो, प्रभु को ध्यान लगावो जी ।।
जन हित वृद्धा माता त्यागी,
विष्णुप्रिया तज हो बैरागी,
खग मृग से हरि नाम बुलायो, हरि–हरि बोल सुणायो जी ।।
दीनानाथ दयालु स्वामी,
करुणामय उर अन्तर्यामी,
प्रेम 'मधुर' का दाता ये ही, गौर शरण में आवौ जी ।।

******

साँचौ गौरहरी सौं नातो ।
झूठे या जगती के नाते, विरथा जनम गँवातो ।।
धन जन जोबन चार दिनन के, अपनो जाहि बतातो ।
माया–मोह–जाल में फँसि तू, सिर धुनि–धुनि पछतातो ।।
गौरचन्द्र सौं नेह लगाए, प्रेमांबुधि उमगातो ।
हरीनाम–रस–अमिय पान कर, 'मधुर' होत मदमातो ।।

******

।। श्री श्री नित्यानन्द प्रभु ।।

जय जय नित्यानन्द दयाल ।।
शंकर्षण के अंश, हड़ाई–पद्मावति के लाल ।।
राम कृष्ण लीला बहु भाँतिन, दिखलाते सँग बाल ।।
स्वयं बैन बलराम लक्ष्मन, अभिनय करत ललाम ।।
संत संग तीर्थाटन कीनो, ब्रज पहुँचे तिहिं काल ।
गौरहरी–प्रागट सुनि धाये, नवद्वीप ततकाल ।।

गौर-निताई मिलन अपूरब, प्रेमानन्द विसाल।
'मधुर' सरित हरि नाम धार मे, दुरिये भव जंजाल।।

।। श्री अद्वैताचार्य ।।

जय अद्वैताचारज प्यारे।।
भक्तन काजै हरि हर मिली कै, भूतल पै अवतारे।।
कलि-मलि-ग्रसित संतापित, लखत जीव दुखियारे।
सुरसरि-तट आह्वाहन करि प्रभु, गरज भरी हुंकारे।।
भक्त वसल गौलोक धाम में, सुनि अद्वैत पुकारे।
पतित उधारन प्रगटे नदिया, 'मधुर' गौर छबि धारे।।

।। श्री रूप गोस्वामी ।।

जय जय जय श्री रूप गुंसाई।।
भक्ति भाव सौं सेवत निशदिन, श्री राधा गोविन्द प्रकटाई।।
राधाकृष्ण-केलि-लीलास्थल, प्रकटाए वृन्दावन आई।।
श्री चैतन्य-केलि-लीलास्थल, प्रकटाए वृन्दावन आई।।
श्री चैतन्य कृपा सौं अतुलित, युगल-प्रेम-भक्ति सरसाई।।
श्री राधामाधव-रति-लीला-रहस, अलौकिक ग्रन्थ रचाई।
अति गंभीर धीर वैरागी, महिमा 'मधुर' चहुँदिशि छाई।।

।। श्री सनातन गोस्वामी ।।

जय गोस्वामी सनातन प्यारे।।
छाँडी उच्च उपाधि मंत्रि पद, विषय भोग तज सारे।।
गौर हरी ने शिक्षा दीनी, भक्ति तत्व उचारे।
दीन विरागी अति अनुरागी, वृन्दाविपिन सिधारे।।
हरि विग्रह, लीलास्थल, तीरथ, ब्रज में आइ उबारे।
रचे भक्ति सिद्धान्त अनेकन, ग्रन्थ अनुपम भारे।।

भाव भक्ति सौं सेवत ठाकुर, मोहन मदन दुलारे।
'मधुर' प्रेम रस अमृत सुरसरि, त्रसित जीव उद्धारे।।

******

जयति सनातन जयति गुंसाई।।
अति विद्वान धुरंधर पंडित, गौड़ देश मंत्री पद पाई।।
श्री चैतन्य कृपा सौं छाँडी, पदवी सम्पद सब बरियाई।
होई अकिंचन दीन विरागी, श्री वृन्दावन पहुँचे आई।।
लीलास्थल तीरथ प्रगटाई, अद्भुत भक्ति ग्रन्थ रचाई।
लाल मदन मोहन को सेवत रहत निरन्तर 'मधुर' कन्हाई।।

******

देखो जी ए नन्द दुलारा, कैसो रूप बनाया है।
अन्दर कृष्ण बाहरी गौरांग पिया रूप दरसाया है।।

पीत बदन पाँकी अंग की शोभा, घुंघराली अलकावली है।
नैन नुकीले प्यारे लागे, देखत ही मन भावत है।।

अधर कमल पर लाली सोहे ग्रीवा मन को भाई है।
लम्बी भुजा उठाय के हरी-हरी बोल सुनाया है।।

पीताम्बर पहन कटि में पैंजनिया झमकाई है।
भक्त मण्डली संग में लेकर प्रेम का दान लुटाया है।।

।। श्रीगोपाल भट्ट गोस्वामी ।।

जय जय जय श्री गोपाल गुसाई।।
शालिग्राम शिलातै राधारमणलाल प्रगटाई।।
बैंकर-तनय बेलमंढी में, जनमें जन सुखदाई।
परम भक्त चैतन्य देव के, बसिये श्रीबन आई।।
अति विरक्त विद्वान अलौकिक, अनुपम ग्रन्थ रचाई।
प्रेम-सुधा-रस छके निरन्तर, 'मधुर' कृष्ण गुण गाई।।

******

जय जय जयति भट्ट गोपाल ।।
भक्त श्री चैतन्य प्रभु के, जपत नाम रसाल ।।
दियो निज आसन कृपाकर, गौर हरी दयाल ।।
हरी भक्त विलास अद्भुत, रच्यो ग्रन्थ विलास ।।
बसत वृन्दाविपिन सेवत, राधारमण लाल।
'मधुर' छबि राधारमण की निरख होत निहाल ।।

।। श्री लोकनाथ दास गोस्वामी ।।

जय जय चैतन्य-भक्त, लोकनाथ प्यारे ।।
ठाकुर राधाविनोद, सेवत सुखकारे ।।
कृष्ण-प्रेम उर अपार, उदासीन भव असार।
सीता अरु पद्मनाभ, नैनन के तारे ।।
पिता मातु भवन त्याग, अल्प वयस ले विराग।
गौराज्ञा शिरोधार, विपिन-श्री सिधारे ।।
'मधुर' मधुर हरी नाम, हरे कृष्ण हरे राम।
रटत रहत अष्ट याम, हरे हरे मुरारे ।।

******

जय जय लोकनाथ गोस्वामी ।।
निपट अकिंचन सदा अमानी, परम विरक्त अमानी ।।
सेवत राधा-विनोद ठाकुर, श्रीवृन्दावन धामी।
जपत 'मधुर' हरि नाम निरन्तर, गौरहरि-अनुगामी।

******

सखी जगन्नाथ के द्वार, आज बधाई है।
हम जिसकी बाट निहार, घड़ी वह आई है ।।
रंग रंगीलो फागुन आयो,
शची मात सुन्दर सुत जायो।
पूरनमासी रात, अति सुखदाई है ।।

गौर छबी बरनी नहिं जावे,
निरखि निरखि माता हरसावै,
शोभा लख रति काम, कोटि लजाई है ।।
नाना विधि के बाजा बाजै,
नौबत दुन्दुभि घन ज्यौं गाजै,
बाजत बीन सितार, डफ शहनाई है ।।
झुण्ड झुण्ड नर नारी आवैं,
कोकिल बैनी मंगल गावें,
नृत्य करें बहु भाँति, धूम मचाई है ।।
नभ में देव विमानन छाये,
पुष्प कल्पतरू के बरसाये,
सूर तिय धरि सखि रूप, दरस हित आई है ।।

।। वैष्णव-सेवी निमाई ।।

वैष्णव – सेवक दीन निमाई ।।
भक्त वैष्णव लखत गौर हरी, कर प्रणाम पद शीष नवाई ।।
गंगा तट काहू अन्हवावत, काहू के तन तैल मलाई ।
काहू के वस्त्रन कौं धोवत, काहू जल भरि घर पहुँचाई ।।
क्षमा याचना करत सबन सौं, पद रज ले निज शीस चढ़ाई ।
वैष्णव सम प्रभु करत आचरन, 'मधुर' गौर भव जीव सिखाई ।।

।। श्री कृष्ण विरह में ।।

कृष्ण–प्रेम–उन्मत्त निमाई ।।
कृष्ण–विरह–अनुरक्त पुकारत, कृष्ण कृष्ण हा ! कृष्ण कन्हाई ।।
कबहू रोवत कबहू नाचत, कबहू हँसत कृष्ण गुण गाई ।
करत विलाप परत भूमि पर, कबहू तन सुध बुध विसराई ।।
सोवत जागत चालत बैठत, निशदिन हरि चिन्तन चित लाई ।
'मधुर' भाव हरि–प्रेम भक्ति लख, पुरजन आनंद अश्रु बहाई ।।

।। सामूहिक संकीर्त्तन का प्रारम्भ ।।

संकीर्त्तन श्रीगौर करावैं ।।
श्रीवास-प्रांगण सन्ध्या कौं, नित प्रति अन्तर भक्त जुरावैं ।।
करके बन्द कपाट सदन के, झाँझ और मिरदंग बजावैं।
हरि-हरि बोलैं स्वर सौं, प्रेमानन्द सिन्धु उमगावैं ।।
भक्ति-मर्म ना जाने जो जन, संकीर्त्तन को ढोंग बतावैं।
भीतर जान पावैं या सौं, विविध भाँति के दोष लगावैं ।।
संकीर्त्तन-आनंद मगन हो, गौरहरी निज सदन सिधावैं।
बाहर ठाड़े भक्त दरस हित, 'मधुर' छबी लख नैन सिरावैं ।।

।। राय रामानन्द ।।

रामानन्द राय रस-खान ।।
विद्यानगर प्रशासन ज्ञानी, कृष्ण भक्त विद्वान ।।
कविता-प्रेमी शास्त्राभ्यासी, पंडित धीर महान।
सुर-द्विज-चरण-कमल अनुरागी, करत हरी गुणगान ।।
सार्वभौम के परम सनैही, सच्चरित्र गुणवान।
भवानन्द-सुत काइथ कुल के दीपक 'मधुर' सुजान ।।

******

गौर सुन्दर तुम्हारा रूप, हम किससे मिला लेवें।
सुधा का सिन्धु उमड़ा है, कहाँ इसको ढला लेवें ।।
अतुल हो तोल को ताकत, माप में माधुरी मन हो।
तराजू तीव्र तत्परता, तभी तुझको तुला लेवें ।।
अप्सरा और गन्धर्वों में, गायन गीत गुण वाला।
न कीर्त्तन कृष्ण का करते, किसे कैसे बुला लेवें ।।
नहीं वाणी में विद्या बल, न मन में मोहिंनी शक्ति।
धन्य विष्णुप्रिया-'बल्लभ' अन्त तुमसे सला लेवें ।।

देखो गौर रूप अवतार।
प्रिया भाव प्रभु प्रगटे जग में, कियो प्रेम विस्तार।।
बैंकट भट्ट के संशय मेटे, रंगनाथ में जार।
'भक्तमंजरी' महिमा सुनियत, वेद पुराण मँझार।।

******

श्रवण सुनो गौर रूप उदार।
राधा रूप हो कृष्ण भाव ले, दोनों रूप एक धार।।
सुमरन कर प्राणप्यारी को, जस मुरली में गार।
राधे राधे नाम रटत है, नाचत भुजा उठार।।
प्रेम प्रचार कियो धरणी पर, बजै खोल करतार।
'भक्तमंजरी' नाम संकीर्त्तन, पड़ी कान झनकार।।

******

निरख मन नचत गौरांग, हरी हरी बोले।।
भक्त मंडलि संग धाये, गिरत भूमि लटपटाये।
प्रेम मगन नीर बहाये, बजत झाँझ खोलें।।
भक्तवृन्द सबही गाये, खग मृग गउ तरु लतायें।
हरीनाम धुन लगायो, सब करत कलोलें।।
प्रेमदान करत आप, अधमन अपनाए आप।
राधा मोहन नाम जाप, किये ग्रन्थ निचोलैं।।
अधम पतित हुए पार, जगाई मधाई दिये तार।
'भक्तमंजरि' कहे पुकार, चरण शरण जोहि ले।।

******

श्री गौरांग प्राण पियारा, मत होय दृगन से न्यारा।
हरि-हरि बोले पतित उधारा, भय से कर दिया पारा।।

गौर वरण भौं ललित त्रिभंगी, धनुष बाण कर धारा।
भाल तिलक मुख मधुर मुरलिया, बरसत प्रेम की धारा।।
दण्ड कमण्डल रहत संग में, नृत्य को पावै न पारा।
'भक्तमंजरी' शरण चरण की, तन मन सरबस वारा।।

******

नमो नमो जय श्री चैतन्य।
दीनदयाल पतित-पावन प्रभु, इन सम नाहीं कोऊ अन्य।।
कलि-मल-ग्रसित जीव उद्धारन, नाम प्रचारन हरि सुखजन्य।
समद्रशी करुणामय स्वामी, तारे चुन चुन पामर गन्य।।
गौर रूप का ध्यान धरें, हरिनाम जपैं वे नर हैं धन्य।
'मधुर'-रसामृत महाभाव युत, प्रगटे गौर कृष्ण चैतन्य।।

******

रे मन गौर चरन चित दीजै।
गौर रूप में राधा माधव, युगल छबी के दरशन कीजै।।
परम कृपा कर पतित उबारे, दीन दयालु शरन गहि लीजे।
रसना सौं हरि रटत निरन्तर, 'मधुर' प्रेम-रस प्याला पीजै।।

******

शरण गहि लीजै गौर निताई।।
पतित अधम कौं भक्त बनाये, ना दयाल इन सम कोउ भाई।।
कलि-विष भव-बाधा निस्तारन, कृष्ण-नाम-जप सहज उपाई।
'मधुर' गौर किरपा दृष्टि सौं, प्रेमानंद-अंबुधि उमगाई।।

******

कृपा कब करिहौ गौर किशोर।
जप तप साधन कछु ना जानौ, चितवौ करुणा-कौर।।
यवन स्वपच खल अधम उधारे, अंक लगाये दौर।
'मधुर' विरद सुनि शरनै आयो, देवौ चरनन ठौर।।

******

ऐसौ कौन अनुग्रह कीनो।
जैसो कलि-संतप्त जनन कौं, गौर निताइ अभय वर दीनो।।
बिनहिं दण्ड दुष्टन उद्धारे, करुणा करि अध-मल हर लीनो।।
हरकि 'मधुर' प्रेमामृत प्यायो, पतितन कृष्ण-नाम-रस भीनो।।

******

तुम तजि कौन शरण मैं जाऊँ।।
माया भ्रमित बहुत हौं भटक्यो,
अब गहि लीनहु मैं इक ठाऊँ।।
नाम पतित-पावन सुनि धायो,
अनुचर गौर किशोर कहाऊँ।
याहि कामना चरण-कमल-रस,
'मधुर' मधुप इव नित-नित पाऊँ।।

******

जय जय जय श्री गौर निताई।।
अगनित दनुज पतित उद्धारे, भक्त बनाये जगाई मधाई।।
एक करुण-रस की धारा है, एकै कृष्ण नाम सरिताई।
जब दोउन को होत समागम, 'मधुर' प्रेम-अमृत छलकाई।।

******

शरणै आयो गौर निताई।
माया मोह आदि नै मौकों, अपने जाल फँसाई।।
जो मैं पतित, पतित-पावन तुम, बिरद तुम्हारो गाई।
'मधुर' चरन की सेवा दीजै, अब तो लौ अपनाई।।

******

जे जन गौर शरन मैं आवे।
जनम जनम के अघ औगुन सब, तिरविध ताप नसावै।।
माया-मोह-जंजाल छूटि हैं, भव-बाधा मिटि जावै।
प्रेमोन्नत हो केशव माधव, 'मधुर' कृष्ण हरि गावै।।

******

श्री चैतन्य अनुग्रह कीजे।
दीनानाथ दयालु पतित को, तुम बिन कौन पतीजै।।
भवसागर में डूबत मौकों, बचा हस्त गहि लीजै।
चरन-कमल सेवा अनपायिनि, 'मधुर' भक्ति मोहि दीजै।।

धनि धनि नदिया नगर निवासी।
प्रगट भये जहँ गौर रूप में, त्रिभुवन पति अविनासी।।
दीन पारित पामर पापी जन, उर लाये सुखरासी।
धन्य वायु-कण कृष्ण नाम की, 'मधुर' ध्वनि परकासी।।

******

महिमा नदिया नगर अपार।।
राधा मोहन प्रगट भये जहँ, गौर रूप छबि धार।।
संकीर्त्तन सौं जन सुख दीनो, पतितन को उद्धार।
जहाँ 'मधुर' हरिबोल प्रतिध्वनि, गूँजत बारम्बार।।

******

जय जय जय श्री नदिया-चंद।
कृष्णनाम की शुभ्र ज्योत्सना, फैलाई प्रभु आनंदकंद।।
कलि-मल-ग्रसित-जीव दुखियारे, छूटे माया के सब फंद।
हर्षोल्लासोन्मत्त हो नाचत, पाकर 'मधुर' प्रेम मकरंद।।

******

मन रे गौर शरनै आउ।
प्रेम-करुणा-रस-निधि, अन्य ना किहिं ठाउ।।
कृष्ण नाम प्रचार कीन्हो, नगर घर-घर गाउ।
अगम भवसागर तरन कौं, नाम-श्रीहरि नाउ।।
वनुज खल चैतन्य तारे, दीन निज उर लाउ।
'मधुर' प्रेमामृत लुटावत, पान करिहौं धाउ।।

******

श्री चैतन्य–चरण चित दीजै।
गौर रूप कौं निरख निरख कर, लोचन लाहू लीजै ।।
हरि–हरि रटत अहर्निशि मुख सौं, प्रेमामृत रस पीजै।
कलि–मल नाशक 'मधुर' शरण गहि, जनम सफल निज कीजै ।।

।। श्री चैतन्य देव की अष्ट शिक्षा का सारांश ।।

गौर प्रभु निज भक्तन कौं हरि प्रेम–भक्ति, मारग बतलावै।
चित्त–मुकुर–मर्जन, भव–दावा–शमनन कृष्ण–कीर्त्तन गावै ।।
श्रेय–ज्योति, विधा–वधु–जीवन, आनंद–उदधि नित्य उमगावै।
सर्व आत्मा निर्मल कर्त्ता–हरि संकीर्त्तन महात्म्य बतावै ।।
विविध रूप प्रगटित, हरि किरपा पोषित, अगणित नाम कहावै।
सब बन्धन सौं मुक्त कीरतन, धिक जीवन अनुराग न लावै ।।
तृण तै तुच्छ सहिष्णु बिटप सम, मान अहं निज दूर भगावै।
सदा करै सनमान अमानी, हरि संकीर्त्तन करै करावै ।।
धन, जन, काव्य, कामिनी सुन्दर, आदि जगत की चाहन लावै।
जनम जनम निष्काम भक्ति की, करे याचना मन हरषावै ।।
विषम–भवाम्बुध–पतित जीव, हरि–चरन–कमल–रज सीस चढ़ावै।
नाम लेत अवरुद्ध वाणि, तन पुलकित अश्रु धार बहावै ।।
जग सूना गोविन्द विरह में, युग समान इक निमिष बितावै।
नयनन सौं वर्षा की भाँति, निरत अश्रुवन झड़ी लगावै ।।
मर्माहित चहँ करैं दरस बिन चाहे प्रभु निज अंक लगावै।
प्राणनाथ श्रीकृष्ण बसैं उर, अन्य कोउ नहिं चित्त समावै ।।
श्री चैतन्य देव निज मुख सौं, कृष्ण–भक्ति को तत्त्व सिखावै।
भाव भक्ति सौं ग्रहण करैं जे, 'मधुर' प्रेम–रस वे जन पावै ।।

।। श्री विष्णुप्रिया ।

जय जग जननी भव भय हरनी, मनुज रूप धारिणी।
विश्व मोहिनी विश्व वन्दनी, विश्व लीला विहारिणी ।।

जय सुकेशा चारू वेशा, नील वस्त्रा सुहासिनी।
कम्बु कंठी कुन्द दन्ती, शरद चंद्र निभाननी।।
जय गौरांगिनि गौरार्द्धाङ्गिनी, गौर लीला धारिणी।
विष्णुप्रिया लक्ष्मीप्रिया देवी, भूतल अवतारिणी।।
जय महामाया सुता महामाया शक्ति रूपिणी।
श्री सनातन नन्दिनी, ब्रह्म सनातन नन्दिनी।।
जय दयामयी जय क्षमामयी, त्यागमयी आह्लादिनी।
चिद् आनंद मयी गौरानंदमयी 'प्रेम' भक्ति प्रदायिनी।।

।। श्री श्री नित्यानन्द महाप्रभु ।।

जय श्री नित्यानंद आनंद कन्द, भक्त भूषण चरणारविन्द।।
नित्य नाम गुन कर्म रंग, नित्य बिलास चैतन्य संग।
नित्य रूप मोहन अनंग, नित्य प्रेम वितरन अभंग।।
संकीर्त्तन रस नित्य पान, नित्य निगम ताको करत गान।
भव नारद नित्य धरत ध्यान, नित्य सगन मुनि भनि पुरान।।
पतित पावन ताको नित्य दास, नित्य कटत जन जगत पास।
नित्य कलेवर विमल जास, नित्य 'मनोहर' पुरहों आस।।

।। कवित्त ।।

आप बलदेव सदा वारुणी सौं मत्त रहैं,
चाहें मनमानो प्रेम मत्त ताही चाखिये।
सोई नित्यानन्द प्रभु महत की देही धरि,
भरी सब आनी तोउ पुनि अभिलाखिये।।
भयो बोझ भारी कहूँ जात न सँभारी बात,
ठौर ठौर परिषद् माँझ धरि राखिये।
कहत कहत अरु सुनत बाँके भये,
मतवारे बहु ग्रन्थ ताकि साखिये।।

******

नित्यानंद भक्ति–रस दानी, करिये वेगि निवेरो।
श्री वृन्दावन कुंज दरस बिन, अकुलित चित्त घनेरो।।
टोटो परो वारकह मोरी, 'ललित किशोरी' हेरो।
अधम उधारन सदावर्त ते, पापी विमुख न फेरो।।

******

जय नित्यानंद चन्द, सकल सुखन संपद पद,
ब्रह्मादिक वन्दित, यश गावैं त्रिपुरारी।
कलुष कलिन, मलिन जनन, प्रेमधन दै करत पूरन,
महिमा मौहे सुरासुर गण, दंड धरम धारी।।
अंग अरुन किरन हरन, नील छीन बसन धरन,
कंज मंजू नैन लसत, गलत अश्रुवारी।।
लंफ दम्भ कम्प भाव, हाव लाभ उनहिं घाव,
चलत खलत धरनि हलत, तरज गरज भारी।।
नटग नटन विविध ताल, हरि हरि धुनि अति रसाल,
उनमत करि प्रेम विवश, हरष पुरुष नारी।।
ससरी गमप निधप धपम द्रिमि द्रिमि बाजत मृदङ्ग,
द्रग्थै थैया उचरत, 'वैष्णव' बलिहारी।।

******

श्री नित्यानंद चन्द, आनन्द कन्द,
अपार करुण–सिन्धु, प्रगट भयो।।
माघ उजियारी, त्रयोदशी शुभ दिन,
धन, अरु धरनि ग्राम, सुफल कियो।।
तात उदार, हराई पण्डित वर,
पद्मावति जननी की कूँख सिरायो।।
सुत मागद बन्दी और द्विजन को,
जाकौ उचित जैसो, दान दिवायो।।
नरनारी मिलि गावत बधाई,
सरस मृदङ्ग सुयन्त्र मिलायो।।

दूध दही हलदी और माखन,
काहू के मुख, कोउ लपटायो ।।
विविध भाँति पकवान मिठाई,
रतन थाल भरि, मेवा लुटायो ।।
प्रेम रतन धन देत सबन को,
'वैष्णव' जन सुनी, आनंद पायो ।।

******

जै नित्यानंद सुरनर वन्दित,
परम दयाल दीनजन बन्धु ।।
ब्रज लीला नित रस-प्रेमामृत,
सबन पिवावत करुणा सिन्धु ।।
कलि जन मलिन अधम-तम-भंजन,
प्रगट करत पद-नख-मणि-चंद ।।
'वैष्णव' जन उदार यश गावत,
वंचित हूँ मैं अति मतिमंद ।।

******

मोहि श्री नित्यानन्द मिले।
हृदय सरोवर तरल तरंगित, समुदित रवि सौं जलज खिले ।।
गौर गोपाल तात तत्व नीको, कह्यो सुनत भ्रम भय विले।
'रामराय' प्रभु द्वादश शिष्य हूँ, गुरु सम चलत सँग प्रेम किले ।।

******

बजत आज आनन्द बधाई ।।
पद्मावती पुत्र जायो है, नगर बधाई छाई ।।
हर्ष भरी सब नारि नगर की, देन बधावा आई ।।
निरखि निरखि छवि नित्यानंद की, आनउ उर उमगाई ।।
प्रेम मगन पण्डित हाडाई, फूले अंग न समाई।
विप्र बोलि मंगल विधि कीन्हीं, चौके चारू पुराई ।।

लग्न विचारी गुणी जब बोले, मन ही मन मुसकाई।
यह तो करै पतित को पावन, देई गति सुखदाई॥
महापुरुष बलराम प्रतापी, सुनहू सबै मन लाई।
'सूरज' दीन हीन जन के हित, दया ध्वजा फहराई॥

॥ श्री अद्वैत-आचार्य ॥

राजत अद्वैत प्रभुवर, आचार्य भक्तिधर,
हरि सह अभेद करुणाकर॥
आदि सन्त, शान्तिपुर निवासी,
मंगल मूरत रागधर।
मंजु मंजरी तुलसीदल आराधन,
प्रगट करत गौर मूरत मनोहर।
कीर्त्तन नर्त्तन रस पूरन, जगत जनन,
'वैष्णव' करन अवतार॥

******

बजत बधाई शान्तिपुर में प्रगट भये अद्वैत प्रभु वर,
जीव उधारन काजे॥
माघ शुक्ल सप्तमी को शुभ दिन, नरनारी मिल करत कुतूहल,
मंगल धुनि सुनी गाजै॥
तात उदार कुबेर विप्रवर, जननी नाभा शोभा विराजे।
बन्दरवारहि द्वार बँधावत, सुत बन्दी द्विज दान देत हैं,
मगन सिन्धु-सुख माँझै॥
अपने जन सब देखन आवत, कनक थाल भर बायन साजे।
मूरत मधुर लखी 'वैष्णव जन' नाचत गावत प्रेम पुलक तन,
भयो, विरह दु:ख भाजै॥

।। श्री गदाधर पण्डित ।।

जै श्री गदाधर पण्डित गुसाँई, जग मण्डल तब यश छाई।
जिनके हैं अधीन सदाई, महाप्रभु सब गुनहि अधिकाई।।
परम प्रेममय सुन्दर मूरत, कोटिक काम लजाई।
'वैष्णव' जन के प्राण जीवनधन, निरखि लेत बलिजाई।।

******

पण्डित वर श्री गुसाँई गदाधर, आदर करि करि वन्दे।
के अधीन सदाहि महाप्रभु, मूरत प्रेम अनन्दे।।
भक्ति शक्ति अवतार कहत हैं, करुणारस कन्दे।
'वैष्णव' जन सुख सिंधु बढ़त ज्यों, शारद पूनम चन्दे।।

।। श्री श्रीवास पंडित ।।

वंदे श्रीवास निवास नदियापुर, कीर्त्तनालय सुख धाम।
गौर भगत विदित महि मण्डल, पूरे सब मन काम।।
पुत्र कलत्रादिक घर सम्पद अरप्यो प्रभु पद ठाम।
'वैष्णव' मूरत लख अति सुन्दर, मन नैनन अभिराम।।

।। षट गोस्वामी पाद ।।

'सनातन' 'रूप' सा त्यागी, जगत होना कठिन भारी।
श्वान के वान्त सम छोड़े, जिन्होंने भोग संसारी।।
चार लख पद्य रचना कर, सरसता कृष्ण राधा की।
'जीव' गोस्वामी दिखलाई हुए हैं व्यास अवतारी।।
'भट्ट रघुनाथजी' अद्‌भुत' 'भट्ट गोपाल' गोस्वामी।
प्रकट राधारमण तन से, कृष्ण इन प्रीति विस्तारी।।
'दास रघुनाथ' गोस्वामी, श्री राधाकुण्ड पर बस के।
पूर्ण वैराग्य से 'वल्लभ' सदा सेवें हैं गिरधारी।।

।। श्री गोपालभट्ट गोस्वामी ।।

(निकुंज नाम श्री गुणमंजरी)

जय गुणमंजरी गुनन सुखानी, अति प्यारी प्रीतम सुखदानी।
जय दंपति मुख चन्द्र चकोरी, जय अलिनी पग कंज किशोरी।।
जय जय प्यारी प्रान पियारी, तत रुचि छिन पल पालन हारी।
जय 'श्रीललितकिशोरी' भामिनी, काम केलि रस मत्त सुनामिनि।।

।। श्री लोकनाथ गोस्वामी ।।

जो कलि लोक शरीर न धारत।।
लाल विनोदी ठाकुर कौं तब,कौन कहो प्रगटावत।।
छाता निकट ग्राम उमराहो, कुण्ड किशोरी पावत।
वन फल शाक समर्पण करके, नित उठ भोग धरावत।।
षट गोस्वामिन के आग्रह तें, वृन्दावन पधरावत।
जय नरेश ने विनती कीनी, जय नगरी में आवत।।
सत्प स्वरूपों में यह ठाकुर, दर्शन पाप नसावत।
'ललित मंजरी' दीन शरन हो, प्रेम सहित यश गावत।।

।। श्री रूप गोस्वामी–श्री सनातन गोस्वामी ।।

श्री रूप सनातन सुन्दर मूरत, कब देखों यह नैनन।
लीला–युगल मगन रहत दोउ सदा नाम ले उनहीं बैनन।।
चैतन्य अनन भक्ति निज ग्रंथन, रच्यो जो तज देतहिं हेलन।
'वैष्णव' उज्ज्वल मार्ग दिखावत, अन्ध चले पहुँचे सुख चैनन।।

******

जै जै मेरे प्राण सनातन रूप।
अगतिन की गति दोउ भैया, जोग जग्य के जूप।।
वृन्दावन की सहज माधुरी, प्रेम–सुधा के कूप।
करुणासिन्धु अनाथ बन्धु जै, भक्ति सभा के भूप।।

भक्ति भागवत मति आचारज, चतुर कुल चतुर चमूप।
भुवन चतुर्दश विदित विमल यश, रसना के रस तूप॥
चरण कमल कोमल रज छाया, मेटत कलि रवि धूप।
'व्यास' उपासी सदा उपासी श्री राधाचरण अनूप॥

******

साधु–सिरोमनि रूप सनातन।
जिनकी भक्ति एक रस निबही, प्रीति कृष्ण राधा तन॥

जाकौ काज सँवारयों चित्त दै, हित कीनो छिन तातन।
जाके विषय वासना देखी, मनसा करी न बातन॥

वृन्दावन की सहज माधुरी, रोम रोम सुख गातन।
सब तजि कुंज केलि भज अहनिसि, अति अनुराग सदा तन॥

तृनहु तें नीचे तरहुँ ते सहकर, आमानि मान सुहातन।
असिधारा व्रत और निबाह्यो, तिन मन कृष्ण कथा तन॥

करुणासिन्धु कृष्ण चैतन्य की, कृपा फली दुहुँ भ्रातन।
तिन बिनु 'व्यास' अनाथ भये सब सेवत सूखे पातन॥

जय जय रूप महारस सागर।
दरशन परसन बचन रसायन, आनन्दहू के गागर॥
अति गंभीर धीर करुणामय, प्रेम भक्ति के आगर।
उज्ज्वल प्रेम महामणि प्रकटित, देश गौड वैरागर॥
सद्गुण मण्डित पण्डित रज्जन, वृन्दावन निज नागर।
कीरति विमल यश सुनतहि 'माधव' सतत रहल हिय जागर॥

******

जो कलि रूप शरीर न धारत।
तो ब्रजप्रेम–महानिधि–कोठरी, कौन कपाट उधारत॥
नीर क्षीर हंस पान विधायन, कौन पृथक् करि पावत।
को सब तजि भजि श्रीवृन्दावन, को रस ग्रन्थ रचावत॥

जब रितु फूल फलन नाना विधि, मन राजी अरविन्द।
सो मधुकर बिन पान कौ चानत, विद्यमान करिबन्ध ।।
को जानत मथुरा वृन्दावन, को जानत ब्रज-नीति।
को जानत राधा माधव रति, को जानत सोई प्रीति ।।
जाकर चरण प्रसाद सकल जन, गाय गवाय सुख पावत।
चरण कमल शरणागत 'माधव' तब महिमा उर भावत ।।

******

भक्ति रस रूप, राधाकृष्ण-रस रूप पद रचना के रूप,
या ते रूप नाम भाखियै ।।

त्याग रूप, भाग रूप, सेवा सुख साज रूप,
रूप ही की भावना और रूप मुख चाखियै ।।

कृपा रूप, भाव रूप, रसिक प्रभाव रूप,
गीत गान रूप, यातै मन अभिलाखियै ।।

महाप्रभु 'नवचैतन्य' जू के हृदय रूप,
श्री गोसाई रूप, सदा नैनन में राखियै ।।

।। श्री जीव गोस्वामी ।।

जय जय जय श्री जीव गुसाँई।
राधा दामोदर अनुरागी, करत चरन सिवकाई ।।
अनुपम-तनय बाल ब्रह्मचारी, अनुपम ग्रन्थ रचाई।
भ्रम-सन्देह-अज्ञता-भंजन, ज्ञान-ज्योति फैलाई ।।
रूप-सनातन-भक्ती-धारा, जीव सरोवर आई।
श्री चैतन्य देव-प्रतिपादित,. 'मधुर' प्रेम सरसाई ।।

******

राधा दामोदर-पद-मधुकर, जीव गुसाँई करुणा आगर ।।
रसिक शिरोमनि रूप-सनातन, भक्ति-प्रेमामृत के गागर ।।

माया–मोह–अज्ञता–तम घन, हरन ज्ञान–रवि गुण के सागर।
भक्त जनन हित राधा–माधव, 'मधुर'–गुह्य–रस–तत्व उजागर।।

******

फागुण शुक्ल पूर्णमासी शुभ, संध्या बहु सुखदाई,
नदिया नगर भयो उजियारो, गौर–चन्द्र उदयाई।।
मात शची सुन्दर सुत जायो, जगन्नाथ आनन्द ममाई,
दर–दर बन्धनवार बंधी हैं, घर घर बटत है बधाई।।
शचि माता को लाल लडैतो, विष्णुप्रिया को प्राण निमाई,
भक्त उद्धारण, पापी तारण, संतन को सुखदाई।।
जन–जन, जीव जन्तु को प्यारे, प्रेम–पीयूष पिलाई,
दास ''प्रभाकर'' कली नशावन, प्रकटे गौर–निमाई।।

******

मंगल गावो ए, मंगल गावो ए, आली.....।
नदिया नगर भयो उजियारो.....।। मंगल।।
फागुण पूनम, नवद्वीप खण्ड में चन्द्र उदियायो ए 2।
धन्य शचि माँ लाल अनोखे, जिण घर जायो ए 2।।
प्रेम पुजारी भक्तन काजै, भू प्रकटायो ए 2।
अधम उद्धारण, पापी तारण, नर–हरि आयो ए 2।।
हरि हरि हरि हरि, हरि इमरत सब जन प्यायो ए 2।
दास ''प्रभाकर'' गौर चरण चित्त, मंगल गायो ए 2।।
मंगल गावो ए..........।
नदिया नगर.........।।

।। पद ।।

माई मैं तो लाल निरखबे आई,
शचि मैया तोरे पलने में, झूलत गौर कन्हाई।।
कर कंगन पावन पैंजनिया झगला–टोपी लाई,

लै अपने लालहि पहिना दै, हिय होवहिं शितलाई ।।
एक पलक तैरो लाल दिखा दै, लेऊँ प्यास बुझाई,
मैं गोपी श्री गौर दिवानी, दर्शन काजे आई ।।
पलना के ढिंग ले चल मोकूं, विनय सुनो शचि माई,
झोटा दै-दै निरखूँ लालन, गाऊँ आज बधाई ।।
त्रिभुवन मोह लियो शचीनन्दन, अनुपम है मधुराई,
लखि 'ब्रजदास' छबि शचि सुत की, बार बार बलि जाई ।।

******

बदरिया गौड देश तै आई।
उमड-घुमड बरसी प्रेमिन पर, गौर-प्रेम भर लाई ।।
बिनु सावन ही परत फुहारें, उर आनन्द समाई,
रिमझिम झड़ी लगी दासन पर, पावस की ऋतु आई ।।
शचि-आंगन ते उठी बादरी, श्री वृन्दावन आई,
गगन-अटारी कोयल बोले, गौर-घटा है छाई ।।
गौर-प्रेम-जल ऐसो बरस्यो, भुवन भई शितलाई ,
सन्त करत अवगाहन आली, भर गये ताल-तलाई ।।
नित 'ब्रजदास' भीगती डोलूँ, तन मन सुधि बिसराई,
मैं दासी हरि-गौर दिवानी, बसत अमोलक पाई ।।

।। श्री चैतन्य महाप्रभु ।।

क्या सोच रचा यह चरित चपल चित चोर मुरली वाले ।
तजि श्याम वरण मन हरण, भये तनु गौर मुरली वाले ।।
वृन्दावन-गौलोक छोड़ अब गौड़ देश को अपनाया ।
प्रभुता त्यागि दीनता धारी, भाव भक्त का मन भाया ।।
शङ्ग चक्र मुरली सारङ्ग तजि, दण्ड-कमण्डलु कर आया ।
मोर मुकुट पीताम्बर तजि, काषाया रङ्ग पट रङ्गवाया ।।

तजि किंकिणि कटि कौपीन, धरी कसि डोर मुरली वाले।
तजि श्याम वरण मन हरण, भये तनु गौर मुरली वाले ।।

निरखि-निरखि अनुराग अलौकिक, प्रीति रीति गोपजन की।
मन में आई, राधा-हिय रस महाभाव आस्वादन की ।।

आई सुधि पुनि श्रुति पुराण गत कलि सेवन संकीर्त्तन की।
एक पंथ दो काज, निज मन की अरु हित कलिजन की ।।

भावना उठी यह अन्तर को झकझोर मुरली वाले।
तजि श्याम वरन मन हरण भये तनु गौर मुरली वाले ।।

इधर धरा के धैर्यवान धार्मिक जन धीरज खोय रहे।
पाखण्ड प्रचुर दुर्जन मलेच्छ कृत भार सुजन सिर ढोय रहे ।।

करि करि करुण पुकार कृपा की विकल बाट थे जोय रहे।
हारि हारि हिय, कहैं, कहाँ हरि! सुधि बिसारि के सोय रहे ।।

करि कान विनय, दो ध्यान जरा इस ओर मुरली वाले।
तजि श्याम वरण मन हरण, भये तनु गौर मुरली वाले ।।

उत्कण्ठित थे उभय अत: अविलम्ब विनय स्वीकार हुआ।
शची-गर्भ, नभ-नवद्वीप में गौर चन्द्र अवतार हुआ ।।

जगन्नाथ द्विज भवन कौन, यह अखिल भुवन उजियार हुआ।
विगत ताप, आतप तापित, कण कण में रस संचार हुआ ।।

भये अतिशय हर्षित, सज्जन कुमुद-चकोर मुरली वाले।
तजि श्याम वरण मन हरण भये तनु गौर मुरली वाले ।।

बचपन चञ्चलता में बीता पहले तो सब घबड़ाये।
यत्र तत्र शास्त्रार्थ-भीत विद्वान कहें ''हम भर पाये'' ।।

साक वणिक श्रीधर जी के तो नित प्रति नाकों दम आये।
तऊ प्राण प्रिय अमिय निमाई सदा सभी के मन भाये ।।

''दो सुमति इन्हें प्रभु''! सज्जन कहैं निहोर मुरली वाले।
तजि श्याम वरण मन हरण भये तनु गौर मुरली वाले ।।

विश्वरूप से अग्रज ने, नव यौवन में संन्यास लिया।
मातु पिता ने निरखि आप दिशि धीरज धारि उसास लिया।।

लक्ष्मी, विष्णुप्रिया ने क्रम से चरण कमल में बास लिया।
आय अचानक काल बली ने, बना पिता को ग्रास लिया।।

अति दुर्निवार यह काल कराल कठोर मुरली वाले।
तजि श्याम वरण मन हरण, भये तनु गौर मुरली वाले।।

कछुक दिवस विद्यालय के अध्यापन कार्य में भाग लिया।
लखि उदास रघुनाथ मित्र को, न्याय ग्रन्थ निज त्याग किया।।

दिग्विजयी का गर्व खर्च करि, शील युक्त अनुराग दिया।
करि मन मधुप, योगिजन दुर्लभ, प्रभु-पदपद्म-पराग पिया।।

जीवन धारा को दिया, नया एक मोड मुरली वाले।
तजि श्याम वरण मन हरण भये तनु गौर मुरली वाले।।

गया आय प्रभु-दरश पाय, जीवन में परिवर्तन आया।
हिय-प्रिय-विरह, शरीर शिथिल, वाणी में हरि कीर्त्तन आया।।

पुलक अङ्ग, स्वर भङ्ग, नयन जल, पद-गति में नर्त्तन आया।
जनु प्रभु-प्रेम, क्षेम हित जग के, मूर्तिमान घर तन आया।।

दिन-रैन दिव्य रस छाके रहत विभोर मुरली वाले।
तजि श्याम वरण मन हरण भये तनु गौर मुरली वाले।।

संकीर्त्तन-सरिता उमडी, सारा जनपद तल्लीन हुआ।
कहि 'खबरदार''! बर्बर काजी, उठ खड़ा हुआ धार सङ्गीन हुआ।।

लखि अपार प्रभुता प्रभु की, पुनि आय चरण-आधीन हुआ।
हरि-नाम-सिंधु में, पाप-प्रचुर पाखण्ड-प्रभाव विलीन हुआ।।

जन-जन में भक्ति-भावना उठी हिलोर मुरली वाले।
तजि श्याम वरण मन हरण भये तनु गौर मुरली वाले।।

नित्यानन्द अवधूत, यवन हरिदास आदि जन सङ्ग लिये।
अद्वैत, गदाधर, श्रीधर अरु श्रीवास हृदय श्रीरङ्ग लिये।।

झाँझ-खोल, करतला, शंख, घण्टा, घडियाल मृदङ्ग लिये।
घर-घर करते हरि-नाम-दान, उर में उत्साह अभङ्ग लिये॥

मच गया विश्व की गली गली में शोर मुरली वाले।
तजि श्याम वरण मन हरण भये तनु गौर मुरली वाले॥

करि उद्धार जगाई-मधाई, दूर नगर आतंक किया।
प्रेम-वारि अन्हवाय पतित, प्रक्षालन पातक-पङ्क किया॥

एक दिन, निज कर विष्णुप्रिया का चित्रित वदन-मयङ्क किया।
कुसुमादपि कोमल हिय, कुलिशादिप कठोर निश्शङ्क किया॥

जननी-जाया को त्यागि चले तृन तोर मुरली वाले।
तजि श्याम वरण मन हरण भये तनु गौर मुरली वाले॥

विधिवत लै संन्यास महाप्रभु गौड देश को छोड़ चले।
भुवनेश्वर-साक्षी गोपाल है, नीलाचल की ओर चले॥

दीर्घकाल करि वास पुरी में, प्रेम-भक्ति-रस घोल चले।
सार्वभौम आदिक भक्तन को बाँधि प्रेम की डोर चले॥

करि आये दक्षिण-तीर्थ, पुनः तेहि ठोर मुरली वाले।
तजि श्याम वरण मन हरण भये तनु गौर मुरली वाले॥

रामानन्दराय से साधन-साध्य विचार-विमर्श हुआ।
वासुदेव का छुटा कुष्ठ, जब प्रभु का दिव्य स्पर्श हुआ॥

मरणासन्न अमोघ हुआ, जब प्रभु-पति उसे अमर्ष हुआ।
अस पापिहु को करि प्राण-दान करुणामय को अति हर्ष हुआ।

अब कर्षत मन को, ब्रज मण्डल बरजोर मुरली वाले।
तजि श्याम वरण मन हरण भये तनु गौर मुरली वाले॥

वृन्दावन की दो यात्रा करि अगणित जन-कल्याण किया।
नदिया विरहिनि विष्णु प्रिया को चरण पादुका दान किया॥

मारग में रूप सनातन को अपनाकर भक्त महान् किया।
यती प्रकाशानन्द स्वामी का चूर ज्ञान अभिमान किया॥

ब्रह्मत्व दूर करि, दिया प्रेम-रस बोर मुरली वाले।
तजि श्याम वरण मन हरण भये तनु गौर मुरली वाले।।

मिलि प्रयाग में युगल महाप्रभु, वल्लभ और गौराङ्ग हरी।
होवै किमि कल्याण जीव को, वार्त्ता संगोपांग करी।।

कहैं गौर, भव तरै जीव, 'यदि हरि सुमिरै छिन पलक घरी'।
कह वल्लभ भव पैर जीव, 'यदि निमिष मात्र प्रभु-सुधि विसरी'।।

ये उभय वचन सत् श्रुति सिद्धान्त निचोर मुरली वाले।
तजि श्याम वरण मन हरण भये तनु गौर मुरली वाले।।

पिछले वर्ष अठारह, श्री नीलांचल मांहि व्यतीत हुए।
शरण आए रघुनाथ दास, आदर्श त्रिलोकातीत हुए।।

भट्ट गोपाल, रघुनाथ भट्ट से, पार्षद परम पुनीत हुए।
लोकनाथ, कवि कर्णपूर परमार्थ जगत् के मीत हुए।।

भक्ति जगत् के सकल सुभट सिरमौर मुरली वाले।
तजि श्याम वरण मन हरण, भये तनु गौर मुरली वाले।।

गम्भीरा-मन्दिर की लीला, अहर्निशि दिव्योन्माद भरी।
मादन महाभाव रस माते, नित्य विकल श्रीगौर हरी।।

गद्‌गद गिरा पुकारकरुण, ''हा प्रियतम''! की रट घरी घरी।
पुलक-कम्प-वैवर्ण्य-स्वेद-नैनन में अविरल मेघ-झरी।।

यों रहत सदा पट आर्द्र, नयन के लोर मुरली वाले।
तजि श्याम वरण मन हरण, भये तनु गौर मुरली वाले।।

कबहुँ अङ्ग लम्बायमान, जनु सकल सन्धि छूटीं तन की।
स्वर्ण-पिण्डवत् होत कभी, गति अलखित या परिवर्तन की।।

क्वासि! क्वासि!! कहि गिरत धरणि पर सुधि बिसारिके तनमन की।
कबहुँक भुज पसारी प्रभु चेष्टा करत भीत्ति-आलिंगन की।।

जनु प्रियतम को भुज भरि देत अङ्कोर मुरली वाले।
तजि श्याम वरण मन हरण, भये तनु गौर मुरली वाले।।

यमुना जानि सिन्धु में कूदे, कई दिनों तक लीन रहे।
इधर भक्त खोजत, नहिं पावत, प्रभु वियोग सब खिन्न रहे।।

औचक पड़े जाल धीमर के, मानों प्राण विहीन रहे।
प्रभु-तन परसि अङ्ग धीमर के प्रगटि प्रेम के चिह्न रहे।।

सुनि नाम स्वजन-मुख, संज्ञा धरी बहोर मुरली वाले।
तजि श्याम वरण मन हरण, भये तनु गौर मुरली वाले।।

कितने पतित, पुनीत हुए, कितने साधक कृतकार्य हुए।
कितने जघन्य नर धन्य हुए, कितने अनार्य गण आर्य हुए।।

कितने दुर्गुण दूर हुए अरु कितने सद्गुण धार्य हुए।
कितने व्याघ्र-सिंह-पशु-पक्षी कीटादिक भव तार्य्य हुए।

वर्णन असाध्य है जिसका ओर न छोर मुरली वाले।
तजि श्याम वरण मन हरण, भये तनु गौर मुरली वाले।।

विविध रूप अरु विविध भाव, दरशाय सुजन-मन हरण किया।
श्रीजगन्नाथ-तनु प्रविशि सदेह, प्रगट-लीला सम्वरण किया।।

श्रीकृष्णदास कविराज ब्याज, चरितामृत निज अवतरण किया।
श्रीरूप-जीव गोस्वामी मिस बहु भक्ति ग्रन्थ संस्करण किया।।

अब नारायण पर करहू कृपा की कोर मुरली वाले।
तजि श्याम वरण मन हरण, भये तनु गौर मुरली वाले।।

******

हरि बोलि हरि बोलि प्यारी रसना।
हरि बोले बिनु नरकहिं बसना।।

हरि बोलि नांचि न मेरे मना।
हरि बोलि होइ निरमल तना।।

हरि बोलि पर निन्दा नहीं करना।
हरि बोलि राधा चरन सरना।।

हरि बोलि वृन्दा विपिन गहना।
हरि बोलि हरि बोलि सबै सहना।।

हरि नाम हरि नाम सदा जपना।
हरि बिन 'व्यास' न कोउ अपना।।

******

रंग ले प्यारे रंग ले चोला गौर हरि रंग लाये हैं।
जो रंग नहीं है राज महल में,
जो रंग नहीं है गिरि जंगल में।
जो रंग नहीं है पंडित दल में,
सो रंग देन रंग रंगीले।
रंग ले – – –
गौर हरि मेरे आये हैं,
जो रंग नहीं है देव लोक में,
जो रंग नहीं है सिद्ध लोक में।
जो रंग नहीं है, ब्रह्म लोक में,
जो रंग देन रंगीलो ब्रज को।
श्याम गौर बनि आये हैं,
रंग ले – – –
पापी कहा हो पाप ले आओ,
हृदय में संताप ले आओ।
जिव्हा में हरि नाम ले आओ,
बोलो 'प्रेम' से हरि रंगीले।
गौर श्याम अब आये हैं,
रंग ले – – –

******

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

हरी कीर्त्तन गंगा यमुना सो, बढ़ कर सावन धारा।
चित दर्पण निर्मल कर देवे, जो कहे बारम्बारा।।
हरे कृष्ण –

हरीहरी कीर्त्तन सावन भादो की, रिमझिम रिमझिम धारा।
भवदावानल सबहीं बुझावै, जो कहे बारम्बारा।।
हरे कृष्ण –

हरी कीर्त्तन है शरद पूनौ की, अमृत चांदनी धारा।
मंगल कुमुद कली खिल जाये, जो कहे बारम्बारा।।
हरे कृष्ण –

हरि कीर्त्तन यह प्राणपति है, बरसावे रति धारा।
विद्यावधू तब ही सुहागिनी, जो कहे बारम्बारा।।
हरे कृष्ण –

हरी कीर्त्तन हिरदै उमगावे, आनन्द सागर धारा।
पद पद पूर्ण, पीयूष पिवावै, जो कहे बारम्बारा।।
हरे कृष्ण –

हरी कीर्त्तन है काया कल्प कू दिव्य रसायन धारा।
मायादास हरिदास बनजावे, जो कहे बारम्बारा।।
हरे कृष्ण –

हरी कीर्त्तन की धूम मची जग, चहूँ दिशि नाम धुनि धारा।।
सब साधन सिर मौर प्रेम यह, जो कहे बारम्बारा।।
हरे कृष्ण –

******

जग को प्रेम लुटाने वाले एक नजर इस ओर करो।
घर जाये इस चाकर पर भी प्रेम दृगन की कोर करो।।

नाम प्रेम की भिक्षा पाऊँ झूठन का अधिकार मिले।
संतन पद रज शीश चढाऊँ युगल चरण का प्यार मिले।।

जनम जनम के प्राण पियासे भटक रहे जलधर अभिलाषे।
प्रेम सुधा बरसाने वाले एक बूँद रस दान करो ।।

तारे अधम जगाई मधाई सुनि यश ही आया शरणाई।
अधम उधारन बिरद पद पंकज रज दान करो ।।

देह प्राण हिय कठिन वज्र सम लिये चरणन में आन परो।
नयन नीर बहाने वाले इन नयनन में नीर भरो ।।

केलि के जीवन नदिया बिहारी गोर हरि जय गोर हरि।
सब मिल जाय जयकार करो जय गोर हरि जय गोर हरि।।

******

हे गौर गुणाकर प्रेम निधे, एक प्रेम की बूंद दया कर दो।
और मेरे तृषातुर मानस पर, निज प्रेम सुधा बरषा कर दो ।।

भव ताप तप्त हूँ भारी, टुक हेरो दया कर गौर हरि।
मेरे मस्तक पर इन चरणों की, थोड़ी शीतल छाया कर दो ।।

बडी आस लिए इस द्वारे पर ये प्रेम भिखारी आया है।
हे प्रेम के दानी दया करो, इस भिक्षुक की झोली भर दो ।।

हरी नाम सुनाया गा गाकर, और रोना सिखाया रो रोकर।
जिन अंसुवन में तुम छवि झलके, मेरी अंखियन में वे आंसू भर दो ।।

हे कलि के जीवन धन प्यारे, अपना लो दया करो कर गौर हरि।
यह नाम तुम्हारा प्यारा लगे, हे नाम धनी ये दया कर दो ।।

******

करुणा के आगार गौर हरी।
जिनके चरण कमल शुची पावन
भक्तन के आधार गौर हरी।।

जे पद विष्णुप्रिया के हिय धन,
अरुण मृदुल सुकुमार गौर हरी।।

तिन चरणन की शीतल छाया,
दीजे मोहि इक बार गौर हरी ।।

वे ही चरण बसें मोरे मानस,
मांगू बारम्बार गौर हरी ।।

तुम बिन मोकों ठौर कहाँ है,
पतितन पावन हार गौर हरी ।।

प्रेम भक्ति के दानी तुम सम,
नाहीं या संसार गौर हरी ।।

मैं भी एक बूँद रस पाउं,
मेरे प्राण आधार गौर हरी ।।

केलि मन्जरी चरणन चेरी,
कर लो अंगिकार गौर हरी ।।

******

मेरे गोर गोपाल जय जय गौर हरी ।
भक्तन के प्रतिपाल जय जय गौर हरी ।।
गौर वरण अरुणाम्बर धारी विधु आनन की शोभा न्यारी
सुन्दर रूप रसाल, जय जय गौर हरी ।।
बिखरी अलकें मुख पर सोहे, नयन रसीले जन मन मोहे
उर सोहे बनमाल जय जय गौर हरी ।।
भव तारण कारण प्रभु आये, माया बन्धन काटि नशाये
किया नाम रस दान जय जय गौर हरी ।।
पापी तापी कण्ठ लगाये दीन दु:खी कर गहि अपनाये
दीनन के प्रतिपाल जय जय गौर हरी ।।
केलि के जीवन प्राण निमाई आन पर्‌यो तुम्हारी शरणाई
अब सुध लो दीन दयाल जय जय गौर हरी ।।

******

तेरे अरुण मृदुल युग चरणों पर बलिहार गोरा प्यारे
उज्ज्वल वरण गोर मुख चन्द, सुस्मित आनन आनन्दकंद।
इन मधुर रसीले अधरों पर बलिहार गोरा प्यारे – ॥ 1 ॥

हरि तिलक भाल उर सुमन माल, निरतन में सुन्दर मधुर चाल।
तेरी घुंघराली इन अलकों पर बलिहार गोरा प्यारे – ॥ 2 ॥

हरि नाम मधुर ध्वनि गावे, संकीर्त्तन रास रचावे।
चरणन में बजे नूपुर की झनकार गोरा प्यारे ॥ 3 ॥

छन छन में होवत पुलक अङ्ग गद्गद वाणी स्वर होत भङ्ग।
नयनों से झर झर झरती है जलधार गोरा प्यारे – ॥ 4 ॥

हरि नाम मधुर ध्वनि छाई, अरु प्रेम सुधा बरसाई।
पद परस हुवा पावन यह संसार गोरा प्यारे – ॥ 5 ॥

ओ दीनन के रखवारे पतितन के तारन हारे।
निज करुणा की अब कर दीजे बौछार गोरा प्यारे – ॥ 6 ॥

मैं हूँ पतित में नामी, मिथ्याचारी अरु कामी।
इस केलि की अब सुध लीजे इक बार गौरा प्यारे – ॥ 7 ॥

॥ पद ॥

चतुर अति शचिनन्दन चित् चोर।
का जाने कब मन हर ले गये, सुधि न रही कछु मोर॥
एक झलक नवद्वीप चन्द्र की, कर गयी भाव–विभोर।
उरझ गये मोरे भोरे नैना, चल न सक्यो कछु जोर॥
तप्त स्वर्ण सो रूप प्रभु को, चमक रह्यो सब ठौर।
कोटि काम लाजे शचिसुत सौं, खींच लीयो मन मोर॥
मैं समझी जाने नहीं दूँगी, तकत रही मुख ओर।
का जाने कब छूट गयो री, पीताम्बर को छोर॥
को सहाय अब मो बिरहन को, सांच कहूँ कर जोर।
नीला–चल जावे की सुन के, कल न परत है मोर॥

हा! 'ब्रजदास' गौर चरनन बिन मोहि कित हूँ नहीं ठौर।
नदिया बिहारी करुणा करके, नैंक लखो मम ओर।।

******

भजो रे मन शचि नन्दन सुकुमार।
प्रेमायुध ते सब जग जीत्यो, कर नहीं लियो कुठार।।
कमल नयन की कृपा-कोर ते, उद्धरे जीव अपार।
जग में दरश अमोघ गौर को, जो पायो सोही पार।।
रूप माधुरी लखि शचिसुत की, खा कर गिरे पछार।
हिंसक जीव अहिंसक हो गये, प्रेम तत्व बलिहार।।
रामानन्द-स्वरूप दामोदर, नित्यानन्द निहार।
हरिदास-अद्वैत-श्रीधर, पर प्राणन कूँ वार।।
अलख-अजन्मा-अजर-अगोचन, अखिल विश्व आधार।
प्रगट भये या जग में करने, पतितन को उद्धार।।
नित 'ब्रजदास' पुकारत प्रभुजी, सुनियो नाथ हमार।
अपनी चरण-शरण में ले लो, सुन्दर शचि कुमार।।

।। पद ।।

ग्रहण करो नवदीप-बिहारी।
सकल पंथ या जग के तजि के, मैं आयो हूँ शरण तिहारी।।
कौन द्वार पै जाय पुकारूँ, कौन सुने मेरो दुःख भारी।
तुम सम कोऊ दीखत नाहीं, दीनबन्धु दीनन दुःख हारी।।
कौन यूथ में जाय मिलूँ मैं, का संग करूँ सेव सुखकारी।
का के अनुगत रह के पाऊँ, रागानुगा भगति भयहारी।।
का सों कहूँ कौन है ऐसो, जो लेवेगो मोहि उबारी।
मो सम कौन पतित है जग में, तुम सम कौन पतित-उद्धारी।।
पल-पल छिन-छिन टेरत है मन, हे शचि नन्दन! आरत हारी।
रूप सनातन के जीवन धन, कबहूँ सुनोगे अरज हमारी।।

'बिरजदास' कब लौं भटकैगो, कब पावेगौ शरण तिहारी।
हे शचितनय विनय सुन लीज्यो, अब आ गई है मोरी बारी।।

******

मैं तो दासी हूँ शचि सुत की।
अब मोहे अवकाश कहाँ जो, बात करूँ इत उत की।।
मगन होय हरि के मग डोलूँ, लगन लगी हरिमत की।
श्री मन्महाप्रभु हर लीन्हीं, कुटिलाई मोरे चित् की।।
जा दिन बाँह गहि शचिनन्दन, गति सुधरी आगत की।
क्षीण भयो जग को आकर्षण, अब न रही मैं इत की।।
कौन बार त्यौंहार कौन सो, मैं नहीं जानु जित की।
बारहों मास बसन्त रहत है, बात करूँ किस रुत की।।
अब ब्रजदास' और कित जाऊँ, विनय करत हूँ नित की।
द्वार पड़ी हूँ हे शचि नन्दन, लाज रखो अनुगत की।।

******

नृत्य करत नवद्वीप में गोरा।
नित्यानन्द-गदाधर आदिक, परिकर संग चित चोरा।।
चरण धरत अवनि भई पावन, रस बरसत सब ओरा।
नगर-कीर्त्तन को हरि निकसे, यवन-राज्य झखझोरा।।
सुर नर नाग यक्ष-किन्नर गण, सकल देव चहूँ ओरा।
नव-द्वीप चन्द्र के दर्शन काजे, सब ही भये चकोरा।।
बरसत सुमन गगन सों आली प्रेमानन्द में बोरा।
नगर वधु सब चढ़ी अटारी, निरखत नवल किशोरा।।
चौदह भुवन मोह लिये आली, शचिनन्दन इहिं ठौरा।
सकल कलाएँ मूर्त्त रूप में, आ ठाड़ी हरि ओरा।
लखि 'ब्रजदास' छवि शचिसुत की, मगन भयो मन मोरा।
आज रूप नवद्वीप चन्द्र को, जो निरखत सोही थोरा।।

******

जब ते गौर–दास कहलायो।
तब ते मंगल ही मंगल है, अशुभ निकट नहीं आयो ।।
जब ते भयो अनुग्रह मोपे, उर आनन्द समायो।
विधि–विधान सब धर्यो रह गयो, कठिन कुअंक मिटायो ।।
सकल ग्रह शीतल भये सजनी, हरि चिन्तन चित् छायो।
गौर–कृपा ने भजन पन्थ को, सारो विघन नसायो ।।
नाना भाँति दुलार्यो मोहे, बहु विधि लाड़ लड़ायो।
कर बढ़ाय गह लीन्हीं बैंया, अपनी गोद बिठायो ।।
'बिरजदास' शचिसुत–पद–पंकज, पाप अभय पद आयो।
कहा करै कलिकाल बापरो, यम ही रहत डरायो ।।

******

दर्शन देते जाना गौरा।
सुन्दर–सुभग शचि को ढोटा, ओ चंचल चित चोरा ।।
रूप–सुधा–रस–पान करा के, जाय छिप्यो कित ओरा।
मैं भोरी नवद्वीप नागरी, का समझूँ छल तोरा ।।
अपनी गैल जात ही मैं तो, घेर लई श्री गौरा।
भुवन–मोहनो नृत्य दिखा के, जिति लियो मन मौरा ।।
बिन ही मोल बिक्यो प्रेमिन हित, छिन–छिन करत निहोरा।
प्रेम–प्रसाद बांटता डोलै, जगन्नाथ को छोरा ।।
राधा–माधव मिलित तनु है, प्रगट भयो इहिं ठोरा।
नदिया को नागर कहलायो, गौर कृष्ण मन–चोरा ।।
'बिरजदास' मैं भई बावरी, गात प्रेम–रस बोरा।
गौर चरन बिन ठौर नहीं अब, गति न चहूँ कछु ओरा ।।

******

हमारे गौर कृष्ण गुणधाम।
कलि के जीव धन्य करि डारे, दान कियो हरिनाम ।।
कलिपावन अवतार अनूठे, अखिल लोक विश्राम।
सर्वतन्त्र स्वतन्त्र सकल गुण, सब विधि पूरण काम ।।

कोटिन कोटि जीव उद्धारे, बिके प्रेम के नाम।
को उदार शचि के सुत जैसो, कौन सरस गुणधाम।।
नाम कीर्तन नर्तन सुन्दर, दर्शन अति अभिराम।
जो देख्यो सोही भयो बावरो, बिक्यो गौर के नाम।।
कहूँ आनो-जानो नहीं चाहैं, रुदन करें अविराम।
नित 'ब्रजदास' गौर-गुन गावैं, यही हमारे काम।।

।। गौर का संन्यास वेष ।।

महाप्रभु! यह कैसो रूप तिहारो।
मूंड मुंडाये भये संन्यासी, दण्ड-कमण्डलु धारो।।
कहं छोड़ी वह मुरली माधुरी, कहाँ मुकुट रतनारो।
कहाँ है तेरे कानन-कुण्डल, मृदु मुस्कावन वारो।।
कहाँ है तेरे पट-पीताम्बर, गल वैजन्ती वारो।।
करके कंगन, कहाँ पग-पायल, छम छम नाचन वारो।।
कहँ जमुना-तट, कहां बंशी-वट, रास रचावन वारो।
दास 'प्रभाकर' गौर श्याम पर, कोटिक काम हो वारो।

।। माताज्ञा ।।

मैया! दे मोहे आज विदाई।
जगत उद्धारण करूँ पलायन, करुण भाव सौं कहत निमाई।।
बात गमन की सुनकर मैया, होश गवां, धरणी गिर जाई।
ढिंग जाकर श्री गौर श्याम ने, नाना विधि माता समझाई।।
बस में मन नहीं माता मेरो, ना जाऊँ तो जाऊँ सदाई।
या सों भलो जगत को जननी, दे आशीष मोहे हरषाई।।
हृदय-विदारक वचन लाल के, नयनन नीर शचि भरलाई।
सांप-छछून्दर सी गति मोरी, जावो सुत जग करो भलाई।।
आलोकित तुम करो विश्व को, वज्र हृदय जननी समुझाई।
दास 'प्रभाकर' धन्य शचि माँ, गौर हरि सो जिन सुत पाई।।

******

शचिनन्दन नदिया बिहारी महाप्रभु,
गौर तुम्हारी जय हो रे ।।

फागुण शुक्ल पूनम तिथि आई, शचि माता घर बटी बधाई,
नभ से देव पुष्प बरसाई ।।

नदिया नगर लिया अवतार, कृष्ण प्रेम का किया प्रचार,
भक्तन को कर दिया भव से पार ।।

धर्मी–अधर्मी तव दर आया, बड़े प्यार से गले लगाया,
दास 'प्रभाकर' शरण में आया ।।

******

प्रेम की ज्योति जलाने वाले, गौर हरि जय गौर हरि।
प्रेम–सुधा बरसाने वाले, गौर हरि जय गौर हरि ।।

फागुण शुक्ल पूनम नदिया में, धन्य घड़ी वह आई थी,
जगन्नाथ–शचि के घर प्रकटे, घर घर बटी बधाई थी,
प्रेम की गंगा बहाने वाले, गौर हरि जय गौर हरि ।।

जगाई–मधाई से पापी तारे, हरिदास दुःख दूर किया,
कुष्ठी, कोढी के दर जाकर, उठा गले से लगा लिया,
दुखियों का दुःख हरने वाले, गौर हरि जय गौर हरि ।।

हरि नाम का सम्बल लेकर, जन–जन का मन मोह लिया,
कृष्ण प्रेम का इमरत देकर, जीव–जन्तु को अमर किया,
प्रेम–पीयूष पिलाने वाले, गौर हरि जय गौर हरि ।।

जनम जनम का भूला भटका, कब तक और भुलावोगे,
दास 'प्रभाकर' शरण तिहारी, कब तक और रुलावोगे,
डूबती नैया खेने वाले, गौर हरि जय गौर हरि ।।

******

हे शचीनन्दन! हे गौर हरी!
दान दया–करो, दर पै भिखारी ।।

ना कुछ अन्न है ना, पास में धन है,
तेरे दरस की, लागी लगन है।
भेंट करूँ क्या ? झोली खाली ।। दया ।।

दर पर तेरे, जो कोई आया,
हाथ पकड़ उठा, गले से लगाया,
प्रेम की भिक्षा दी प्यारी–प्यारी ।। दया ।।

निपट, निराधाम, नीच, नारकी,
जगाई–मधाई से पापी पातकी,
तेरी कृपा सों उतरे पारी ।। दया ।।

दास ''प्रभाकर'' चरणन चेरो,
तन भी तेरो, मन भी तेरो,
विलम्ब करी क्यों ? प्रेम–पुजारी ।। दया ।।

******

गौर चरन की आश हमारे
पतितन हित अवतरे जगत में पामर पतित उधारे ।।
ज्ञान ध्यान और कठिन तपस्या कलि में कर नहिं पावै
दया विचार सरल मारग अति गौर हरि प्रगटावै ।।
शौच अशौच अरु शुद्ध अशुद्ध को जामै न विचारा ।।
कैसे हुँ हरि नाम को लेवो उतर जाओ भव पारा ।।
हरि हरि बोलो हरि हरि बोलो सर्वोपर यह भाई
तीरथ नेम दान तपस्या सहज पुण्य फल पाई ।।
सद अरु असद कर्म कट जावैं हरि पद सहजहि पावैं
हरि हरि हरि हरि कहते कहते सहज धाम को जावैं ।।

******

गौर हरि अवतार है नीको
सब भक्तन के भांवतो जी कौ
गौर वरन गौरांग हरि मोहिनी डार हरत है ही कौ

नख शिख सुन्दर मन हर छबिधर प्राणन पोषक है सबही कौ
लखत ही आनन्द होत मन निरखत नयन लगा टक टकी कौ
निरख निहाल होत सुख उपजत देखत ही यह लाल शची को
रूप अनोखौ स्वरूप अनोखौ को दरशत है, वपू धारी पी कौ
भक्ति भाव भरे नयना वैना करैं संकीर्त्तन नाम हरि को
नाम सुधारस में मदमाते करत प्रदान है नाम रति को
अद्‌भुत अनुपम ? की अवस्था मानो महाभाव को टीको
हरि हरि हरि हरि बोलत डोलत संग वृन्द ले सनतन ही कौ
नामहिं सर्वस नाम प्राण निधि नाम जीवन धन शचि सुत ही को
जय जय गौर हरि हरि बोलो का कर रूपै सुमन झरी को

******

बन्दों गौर हरि पद पंकज
जिन की कृपा भक्ति हरि पावै वन्दों तिन कै चरनन की रज
जिन की कृपा नाम में रति हो नाम भजन करैं सारे सुख तज
रमे जाय के नाम रूप हरी हरि भक्ति सों रह नित सज धज
संचित क्रियेमाण प्रारबधहि नाम जरदि खाते प्रेमरज
पावै हरि पद नाहीं सन्देह हरि होवें सिद्ध सकल ही कारज

******

कलि मल नासक प्रेम प्रकाशन गौर हरि के चरण
प्रगट्यो रूप अनोखो राधा कृष्ण मिल मन को हरण ।।
भक्त जन पा दु:ख करी पुकार लिया गौराङ्ग प्रभु अवतार
मिटाया सब भूमि का भार कृपा कर षड़ भुज रूप धरन ।। 1 ।।

गौर हरि प्रगटै नदिया आन करन हित सर्व विश्व कल्याण
किया दुषन्-खण्डन अभिमान लगे सब कीर्त्तन करन ।। 2 ।।

ध्वनि छाई घर घर हरि नाम कीर्त्तन हरि का करै तनाम
बताया हिंसक तक को ज्ञान, प्रगटे कलि में दु:ख हरण ।। 3 ।।

कृपालु ऐसे दीन दयाल, करते दीन अधम प्रति पाल
पल में कर दे सर्व निहाल, रख ले अपनी शरण ।। 4 ।।

पाया मानव तन अनमोल, अन्तर घटके कपाट खोल
प्राणी गौर हरी बोल, भज ले राधिका रमण ।। 5 ।।

तेरी आयु रही थोड़ी गहो हरी प्रेम की डोरी
कृपा करेगी किशोरी, मेटै जीवन मरण ।। 6 ।।

कहता 'गौर दास' हर बार, राधागोविन्द नाम सार
कलि में केवल यह आधार, रहै नित हरि का स्मरण ।। 7 ।।

******

दर्शन गौर हरि मन मोहन, त्रिभुवन जन सुखदाई है
जिनकी माधुरी मुरति झांकी उर माहि समाई है।
कलि काल माहि धर रूप कृष्ण राधा जग आई है
त्रय रूप राम संन्यास कृष्ण षडभुज दरसाई है ।। 1 ।।

त्रेतां में भये (श्री राम जिन्हें) (सुख धाम राम) रामायण गाई है
किस तरह होय कल्याण विश्व का सब बतलाई है ।। 2 ।।

द्वापर में सोलह कला रूप भये कृष्ण कन्हाई है
चौदह भुवन में नया हर्ष श्रुति बदन गाई है ।। 3 ।।

कलि युग में अधम उधारण प्रगटे गौर निमाई है
किया अमन चैन दुःख हरा विश्व हरी ध्वनी जगाई है ।। 4 ।।

सब हरि बोल हरि बोल कई ध्वनी जय त्रिभुवन छाई है
दर्शन कर नभ से सुर सुमनन् की झडी लगाई है ।। 5 ।।

देखो लीला धारी नै लीला क्या दिखलाई है
घर घर संकीर्त्तन करा नाव भव पार लगाई है ।। 6 ।।

भये नेक सकल जग माहि गौर हरि झाँकी पाई है
कह 'गौर दास' रख चरण पास यह विनय सुनाई है ।। 7 ।।

******

भारत में भक्ति प्रेमानन्द रस बरषा दिया शचि सुत प्यारे ने
हरि बोल चहुँ और ध्वनि संकीर्त्तन फैला दिया शचि सुत प्यारे ने

दुखी दीन जनन सुन करुण विनय भूतल पर हरि अवतार।
अतक्ष दरश श्री राधा कृष्ण दरसा दिया शचि सुत प्यारे ने।।

कलि काल माहि पामर प्राणी बढ़ गये विश्व में अधिकाई।
उनका उद्धार किया पल में अपना लिया शचि सुत प्यारे ने।।

बंगाल प्रान्त तट गंग निकट नदिया में गौर हरि प्रगट भये।
तम ग्रहण मध्य श्री गौर चन्द्र चमका दिया शचि सुत प्यारे ने।।

त्रेता में भये सुख धाम राम द्वापर में कृष्ण भये दुःख हारी।
कलियुग में झण्डा भक्ति का फहरा दिया शचि सुत प्यारे ने।।

जय ध्वनि कीर्त्तन जग छाया घर–घर में हरि भक्त रस वरषाया।
वन पक्षी पशु हिंसक तक को समझा दिया शचि सुत प्यारे ने।।

जय गौर हरि अधमोद्धारण अवतरे विश्व हित सुख कारण।
हरि भक्ति प्राप्त हो सुगम राह बतला दिया शचि सुत प्यारे ने।।

कहै 'गौर दास' रख चरण पास है, यही आस करुणा करिये।
निर्बल के बल दीनों ने नाथ अपना लिया शचि सुत प्यारे ने।।

******

श्री गौर हरि शचि नन्दन, तुमको लाखों प्रणाम–2
प्रभो अधम दीन दुःख भंजन तुमको लाखों प्रणाम–2
पामर प्राणी जग में भारी दुःख पावै निशि दिन नर नारी
आवो लाज बचावो भगवन, लाखों प्रणाम,
तुमको लाखों प्रणाम।। 1।।

माया मोह काम का फंदा, फंसा देख लालच हो अन्धा,
करुणा करिये जन मन रंजन लाखों प्रणाम
तुमको लाखों प्रणाम।। 2।।

सिवा आपके नहीं सहारा, बिना कृपा नहिं होय गुजारा
नहिं सुख तनिक फंस रहा बदन, लाखों प्रणाम
तुमको लाखों प्रणाम ।। 3 ।।

अधम पातकी कई उबारे, जगाई मधाई भव से तारे
जय जय तेरि अधम उधारन, लाखों प्रणाम
तुमको लाखों प्रणाम ।। 4 ।।

भक्ति प्रेमानन्द बरषाया, हरि बोल कलि में पार लगाया
कर रही जनता बंदन तुमको लाखों प्रणाम
तुमको लाखों प्रणाम ।। 5 ।।

आस लग रही सबको भारी, सुनो टेर श्री नदिया बिहारी
काटो जग, अघ फंदन, तुमको लाखों प्रणाम
तुमको लाखों प्रणाम ।। 6 ।।

'गौरदास' चर्णन शिर नावै भीख कृपा की हरदम पावे
प्रभो रहूँ पास तव चर्णन, तुमको लाखों प्रणाम
तुमको लाखों प्रणाम ।। 7 ।।

******

श्री गौर हरि है विनय यही भव सागर पार लगावै
यह दीन दुःखी मझधार माहि डूबत मोय नाथ बचावें।

तुम अधम उधारन स्वामी हो, घट घट के अन्तर्यामी हो
नहि और सहारा प्रभो मुझे, जरा नाम की लाज बचालो।

सब सृष्टि के पालन कर्त्ता, जग दीन दुखी जन दुख हर्त्ता
ऐसे दयालु श्री शचिनन्दन, भक्ति रस प्रेम बहा देना।

सब पापी जन उद्धार किया, संकीर्त्तन नाम प्रचार किया
जन मन रंजन भव भय भंजन सत पथ मोय नाथ दिया

यह दीन भिखारी दर पर है पापों का बोझ सर पर है
अघ हटा तिमिर अज्ञान हरो, उर भक्ति प्रेम जगावों।

कहै 'गौर दास' दर्शन पावै हर स्वांस स्वांस से गुण गावे
श्री गौर हरि उर माहि बसे, चरणन में चित लगा देना

******

शची के दुलारे की, विष्णुप्रिया प्यारे की,
नदिया बिहारी की, जय जय जय कहो।

गदाधरेर प्राणधन की, अद्वैत के प्रभु की,
कृष्णा की प्यारी की, जय जय जय कहो ।।

श्रीवास के धनी की, हरीदास के नाथ की,
नदिया के नागरी की, जय जय जय कहो ।।

निताई के सर्वस की, जान्हवीं के लाड़ले की,
भट्ट के आचारी की जय जय जय कहो।

रूप के स्वामी की, जीव के गुँशाई की,
कीर्त्तन प्रचारी की, जय जय जय कहो ।।

मिश्रजी के ढोटे की, अनंग के छैले की,
'ललित' बिहारी की, जय जय जय कहो ।।

******

गौर जिनका नाम है, नदिया जिनका धाम है,
ऐसे श्री भगवान को बारम्बार प्रणाम है।

शचि जिनकी माता है, जगन्नाथ जाके पिता है
ऐसे निमाई चांद को बारम्बार–

विष्णुप्रिया जिनकी भार्या है, अद्भुत जिनकी माया है
ऐसे नदिया बिहारी को बारम्बार–

लुटा लुटा हरि नाम बहायो, भक्तन संग प्रचार करायो
ऐसे कीर्त्तन बिहारी को बारम्बार–

बाघ सिंह सू नाम लिवायो, यवन पापी सब उद्धारयो,
ऐसे दया सिन्धु को बारम्बार–

जगाई मधाई से पापी तारे, दिग्विजयी के गर्व संहारे,
ऐसे दीनानाथ को बारम्बार–

संन्यासी पति दास बनायो, न्यायाचारज गाय नचायो,
ऐसे 'ललित' प्रभु को बारम्बार प्रणाम है।।

******

महाप्रभु संकीर्त्तन राजे श्रीवास के अंगना।
श्रीवास आंगन में नाचे शची माँ का छगना।।

झांझ बाजे खोल बाजे, और बाजे मृदंगना।
हरी हरी बोले भुजा उठावे, आंगन खाए फिरकना।

श्रीवास अद्वैत नाचे, गोविन्द नित्यानन्दा।
गदाधर ताल अलापे मुरारी मुकुन्दा।।

कीर्त्तन सुन सब भक्त आए, आंगन जुड़ी खिड़कियाँ।
आनन्द मगन महाप्रभु होक, 'प्रेम' भी सुध बिसरना।।

******

महाप्रभु! कौन शरण अब जाऊँ।।
तू ही मेरा एक सहारा, किसकी आस लगाऊँ।।
का के आगे हाथ पसारूँ, का को शीश नवाऊँ।।

हरि नाम के कंगन पहनूँ, गल हरि हार जड़ाऊँ।
प्रेम–प्रीति के बांध घुँघुरू, हरि को नाच रिझाऊँ।

अगणित पापी पामर तारे, मैं ही क्यों विसराऊँ।
दास 'प्रभाकर' दर दर भटकत, पायो नहीं कोई ठाऊँ।।

।। प्रमाणिका छन्द ।।

नमामिगौर सुन्दरम्, मुखारविन्द मोहनम्।
अपूर्व रूप धारणम्, निमाई दु:ख दारणम्।।

निधान ज्ञान सागरम्, पिता गुरु उजागरम्।
कुमार-नन्द ध्यायकम्, पदारविन्द सेवकम्॥

अपार प्रेम धारणम्, प्रचार भक्ति कारणम्।
असंख्य जीव तारणम्, क्लेश दुःख बारणम्॥

प्रभू चरित्र गायकम्, उदार भक्ति दायकम्।
शची-सपूत लायकम्, नामामि गोपी नायकम्॥

॥ आरती ॥

आरती नदिया बिहारी की, संकीर्त्तन रास बिहारी की॥
कनक सम गौर अंग सोहे, वदन हरिनाम मधुर मोहे।
भुवन मंगल पावन जो हैं, विश्वम्भर गौर बिहारी की,
संकीर्त्तन रास बिहारी की॥

सदा उर भाव महा धारें, चलत नैनन सों रस धारें।
सुबाहु विशाल, गरे वनमाल, मधुर छबि जाल,
श्री विष्णु प्रिया बिहारी की॥

दाहिने राम निताई दयाल, गदाधर बायें भाव रसाल।
अद्वैत श्रीवास, भक्त और पास, सेवत सुख रास,
आश शचिसुत सुखकारी की॥

हरि हरि धुन मंगल छाई, खोल कर ताल औ शहनाई।
कटे भव फन्द, मिटै कलि द्वन्द, भजो गौर चन्द,
जय जय ''प्रेम'' अवतारी की॥

******

जय जय गौर हरी।
नित्यानन्द दयालू, भक्त भेष हरी॥
ब्रजलीला पूरन हित, गौरा रूप धरी।
आये राधा माधव, एकै देह धरी॥

साधन हीन मलीन, लखि कलि जीव हरी।
आपहुँ तजि संसारहिं, भये संन्यासी हरी।।

ईश्वरताई छिपाई, कहुँ प्रगटाई हरी।
लीला नर ईश्वर की, मधुर रचाई हरी।।

पहिले पापिन तारे, दोष न देखें हरी।
मारन हूँ जो आवें, उनसों बुलावें हरी।।

दया क्षमा गुण धाम ''प्रेम'' रसधाम हरी।
तुम सम तुम ही निताई, गौर श्याम हरी।।

******

गौरचन्द की आरती बनी।
बाजै मृदंग मधुर हरि ध्वनी।।

चंदन चर्चित गल बनमाला।
कोटिक चन्द्र श्रीवदन उजाला।।

श्रीवास हरिदास आरती गायें।
नरहरि गदाधर चमर डुलायें।।

कलियुग पावन नाम प्रकाश।
''बिरही'' करत जन पद रज आश।।

******

आरती गौर किशोर की कीजै।
शचिसुत जन चितचोर की कीजै।।

कोटिक चन्द्र वदन की शोभा।
निरखत कोटि मदन मन लोभा।।

तन, मन, धन न्योछावर कीजे।
रतन सिंहासन आप बिराजे।।

गावत भगत चहुँ दिशि राजे।
दर्शन नयन सुधारस पीजे।।

घन्टा शंख बाजे करताल।
बाजत मधुर मृदंग रसाल।
''बिरही'' जन्म सफल कर लीजे।।

******

जय जय गौरहरी, प्रभु जय जय गौरहरी।
प्रेमोन्मत्त हो नाचत, गावत बोल हरी।।

शचिनन्दन जगवन्दन, शोभा अति प्यारी, प्रभु शोभा ....
दुख-हर्त्ता सुख कर्त्ता, मुद मंगलकारी।।

जगन्नाथ माधव से पापी उद्धारे, प्रभु पापी उद्धारे ....
प्रेम दान दे करुणा कर उनको तारे।।

हरीकीर्त्तन सौं मेटी, सब जग की त्रासा। प्रभू सब ....
विनती यही शरण दो, ''मधुर'' चरण पासा।।

******

पिय प्यारी के प्यारे हमारे गुरु।

जपत निरन्तर हरि नामावलि, गद गद कंठ पुलक रोमावलि।
नयनन झरत पनारे।। हमारे गुरु।।

ब्रज बसि मधुकरि सों तन पोषत, लंघन कबहुं चबेना चर्बत।
पीवत जल करवारि।। हमारे गुरु।।

गुरु मंजरी के नित रह अनुगत, रुचि लैं नित पिय प्यारी सेवत।
अन्तर रूप सम्हारे।। हमारे गुरु।।

ब्रज की रस लीला सुखकारी, नयनन झलके सहज सदारी।
तन की सुधिहि बिसारे।। हमारे गुरु।।

गौर प्रेम नयनन में झलके, और युगल रस अंगन छलके।
भाव की मूरति प्यारे।। हमारे गुरु।।

करुणामय नहि दोष निहारें, निज जन को सब भाँति संवारें।
मोसे पतित उबारे ।। हमारे गुरु ।।

शीतल छाँह गुरु चरणन की, दारुण दु:ख भव ताप हरण की।
जीऊं इनके सहारे ।। हमारे गुरु ।।

गुरु चरणन पर बलि बलि जाऊँ, पद रज शिर हिये नयन लगाउं।
केलि के प्राण अधारे ।। हमारे गुरु ।।

******

हमारे गुरु सब विधि पूरण काम।
चार पदारथ देत दयानिधि दानी दम्पत्ति नाम ।।

रसिकन को दे प्रेम सुधारस, निज वृन्दावन धाभ।
सरसमाधुरी कृपा गुरुन की दरसे श्यामा-श्याम ।।

******

चाहो जो करो सोई, मैं तो हो गई सतगुरु तेरी ।। टेक ।।
दु:खी सुखी राखो जो चाहो, हूँ चरणों की चेरी।
भावे जल्दी पार करो प्रभु, काहे करिए देरी ।। 1 ।।

काटो चाहे न काटो स्वामी, माया ममता बेरी।
राखो चाहे नरक स्वर्ग में, चाहे राखो नेरी ।। 2 ।।

चाहें माया मोह छुड़ावो, चाहे रखियो घेरी।
चाहे आवागमन छुटा दो, चाहे भेजो फेरी ।। 3 ।।

दरशन नित ही देते रहियो, दूर रहूँ या नेरी ।।
प्रेम प्रीत सतगुरु चरनन में, दिन दिन अधिक बढ़े री ।। 4 ।।

यही एक अभिलाष हृदय में, बारम्बार जगे री।
''सरस माधुरी'' श्रीमुख कहिए, ''जुगल'' सखी तू मेरी ।। 5 ।।

******

अति कठिन कर्म के बन्धन से छुड़वा दिया सतगुरु प्यारे ने।
अति करुणा कर हरि प्रेमामृत पिलवा दिया सतगुरु ने।। 1।।

बूड़त मंझधार उबारा हमें, दिया कृपा के बल का सहारा हमें।
सहज ही दुस्तर भवसागर को, लंघवा दिया सतगुरु प्यारे ने।। 2।।

दी डगर बता, दिया हमको चिता, निज रूप अनूप दिया दरसा।
पर रूप परात्पर पुरुषोत्तम लखवा दिया सतगुरु प्यारे ने।। 3।।

मन मूढ़ विषय रस में था पगा, दिया नींद अविद्या से इसको जगा।
क्षणभंगुर सुख मिथ्या जग का, बतला दिया सतगुरु प्यारे ने।। 4।।

मुझे दीन जान और दुःखी महा, अतुलित कृपा का पात्र किया।
सत्चित् आनंद विलास महा, दरसा दिया सतगुरु प्यारे ने।। 5।।

जीव और ईश है सहज सखा, यह जीवन मोहवश भूल गया।
नित सहज सखा से हित करके, मिलवा दिया सतगुरु प्यारे ने।। 6।।

है जुगल माधुरी बलिहारी, गुण गावत यह रसना हारी।
निज धाम सरस वृंदावन में, बसवा दिया सतगुरु प्यारे ने।। 7।।

******

हरि मिलने का मारग प्यारे, गुरु बिन हाथ न आवेगा।
चाहे जितनी कर चतुराई, रीता ही रह जावेगा।। 1।।

पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्खिन, फिर-फिर उमर बितावेगा।
गुरु की कृपा होय तो गोविन्द घर बैठे ही पावेगा।। 2।।

पोथी थोथी बिन गुरु गम के, पढ़ पढ़ मग़ज़ झकावेगा।
बीजक बाँचे मिले न माया, भेदी भेद बतावेगा।। 3।।

बिन गुरु-ज्ञान भानु के प्रगटे, कभी न तिमिर नसावेगा।
'सरस माधुरी' मौज सहल की, सतगुरु सहज दिखावेगा।। 4।।

******

जो जन सतगुरु चरण कमल में, निज अनुराग बढ़ावेंगे।
पाप ताप भय बाधा नश के, मुक्त रूप हो जावेंगे।। 1।।

कर्म कटे निज रूप लक्ष हो, जीवन मुक्त कहावेंगे।
मगन मानसी मौज, रैन दिन आनन्द सिंधु समावेंगे॥ 2॥

प्रेम प्रीत में तन मन भीजे, सूरत अखंड जगावेंगे।
श्री शुकदेव सहाय करेंगे, चरणदास अपनावेंगे॥ 3॥

नव निकुँज की लीला दरसे, नित रंग रली मनावेंगे।
प्यारी प्रीतम प्यार करेंगे, हित कर कंठ लगावेंगे॥ 4॥

''सरस माधुरी'' सतगुरु मेरे, सब विधि साध पुरावेंगे।
आशा ''जुगल'' राख हिय में दृढ़ दासी सरस बनावेंगे॥ 5॥

॥ रसिया ॥

कैसे आगे बतादो अब तो कुँज बिहारी लाल॥ स्थाई॥
मारग रोका है पापों ने, तपा रखा तीनों तापों ने।
बिछा लिया है अब तो तूने, यह माया का जाल॥ 1॥

गुरु ने जो तरकीब बताई, मन में ही परतीत न आई।
दिल में तेरे और समाई, चले अनूठी चाल॥ 2॥

गुरु का ध्यान न दिल में धारा, राम नाम नहिं मुख उच्चारा।
कैसे हो तेरा निस्तारा, टूट गई जब पाल॥ 3॥

जो कुछ होनी थी सो होली, सिर पर मौत आन कर बोली।
जीवन से मत कहो ठठोली, पक गये सिर के सारे बाल॥ 4॥

''जुगल माधुरी'' आ रही बेला, सतगुरु सरस दे रहे हेला।
छोड़ यहीं सब जाय अकेला, भज ले मदन गोपाल॥ 5॥

******

कोई क्या करेगा रे मैं तो सद्गुरु का दीवाना॥ टेक॥
शरण पाइ पूरे सतगुरु की, छूट गया आना जाना।
सरवस भेंट किया चरणों में, तन मन कर कुरबाना॥ 1॥

मेरा कुछ नहिं रहा जगत में, अपना और बिराना।
जो कुछ है सो गुरु प्यारे का, कैसा कदम उठाना ।। 2 ।।
वार अपनपा फारिग हुए, कुछ करना न कराना।
चिन्ता अब काहे की करिए, निशि दिन मोज मनाना ।। 3 ।।
नाचें, गावें, उमंग, बढ़ावें, हृदय प्रेम प्रगटाना।
हो गए अब तो प्रेम बावले, क्या कहना कहलाना ।। 4 ।।
''जुगल माधुरी'' मादक पीया, सब ही होश भुलाना।
सरस नशा आँखों में छाया, फिरूँ बना मस्ताना ।। 5 ।।

।। जन्मोत्सव ।।

जन्मदिन उन्हीं का मनाने चले हैं, कि जिनकी शरण में ही रह कर पले हैं ।। 1 ।।
बनाया है करके कृपा हमको जिसने, उसी के रहेंगे, उसी के भले हैं ।। 2 ।।
उन्हीं का ही यश गान करते रहेंगे, कि जिनकी कृपा से ही फूले फले हैं ।। 3 ।।
उन्हें कैसे भूलें बता दे कोई तो, कि जिनकी दया से सभी दुःख टले हैं ।। 4 ।।
''जुगल'' से अधम को दिया मरतबा वो, कि हैरत में कफ यम–गनों में मिले हैं ।। 5 ।।

******

बधाई है बधाई है, बधाई है बधाई है।
जन्मदिन प्यारे सदगुरु का, बधाई है बधाई है ।।

मधुर मंगल घड़ी आई, चतुर्दिश सुषमा हर्षाई।
करो सब मिलके मंगल गान, बधाई है बधाई है ।।

वही करुणा भरी दृष्टि, वही मुस्कान रस झरती।
मेरे उर में बसा देना, बधाई है बधाई है ।।

गुरु चरणों की निज सेवा, युगल की नाम गुण निष्ठा।
मुझे अब दान कर देना, बधाई है बधाई है ।।

श्री चरणों की यह छाया, तले पलती रहे काया।
मुझे चरणों में रख लेना, बधाई है बधाई है ।।

सदा मंगल हो घर बाहर, बसे गुरु चरण उर अन्तर।
अरु बरसे युगल रस झर झर, बधाई है बधाई है ।।

करो गुण गान हिल मिल कर, करो जय कार उमंग भरकर।
यह केलि फूल बरसाये, बधाई है बधाई है ।।

******

श्री सतगुरु हुए प्रगट, बधाई है बधाई है।
मिलेंगे अब तो नागर नट, बधाई है बधाई है ।। 1 ।।

बड़ा गंभीर भव सागर, नहीं कुछ भय है पर इसका।
मिले हमको सरस केवट, बधाई है बधाई है ।। 2 ।।

करें करुणा व अपनावें, सुमारग हमको बतालवे।
पतित पावन है इनकी हठ, बधाई है बधाई है ।। 3 ।।

तिमिर अज्ञान को खोवें, व बोवें बीज भक्ति का।
हिये की सब मिटे खटपट, बधाई है बधाई है ।। 4 ।।

मिलेगा बास वृन्दावन, परिकर में बरें हमको।
मिलावेंगे ''जुगल'' झटपट बधाई है बधाई है ।। 5 ।।

******

सब मिल आवोजी आवो, हिल मिल जन्म बधाई गावो ।। 1 ।।

श्री सतगुरु महाराज प्रगट हुए दर्शन कर सुख पावो,
चरण रेणु चिंतामणि अंजन निज नैनन अंजवावो ।। 2 ।।

श्रद्धा कंचन थार करन ले प्रेम पदार्थ सजावो,
सजल नयन पुलकित तन प्यारा आपा भेंट चढ़ावो ।। 3 ।।

सुध बुध बिसर सुमिर श्री गुरु को नाचो भाव बतावो।
ऐसा अवसर फेर नहीं है ''सरस'' चरण मन लावो ।। 4 ।।

महल मानसी गुरु प्यारे को सिंहासन पधरावो,
भोग विधान इत्यादि विविध विधि, हिलमिल लाड़ लड़ावो ।। 5 ।।

सरस ध्यान गलतान, रैन दिन, जगकी सुध बिसरावो,
''जुगल माधुरी'' संशय नाहीं, दम्पति के मन भावो ।। 6 ।।

******

वन्दौ रूप चरण सुखदायी ।।

इन चरणन की रज के परसत, अध अवगुण कलिमल धुल जाई ।
भाव भक्ति को अंकुर उपजत, युगल छवि अन्तर झलकाई ।।

गौर प्रेम हरि नाम सुधारस, अन्तर प्रेम लता लहराई ।
पद रज अन्जन अंजित नयनन, युगल विलास लीला दरसाई ।।

राधा-गोविन्द चरणकमल रति, दीजे मोको हरषाई ।
केलि मंजरी पद अनुवरतिनि, युगल चरण पर बलिजाई ।।

******

खेलत नाम की होरी गौर हरी ।
नित्यानन्द अद्वैत गदाधर हरिदास की जोरी ।
रंग रंगीली हरी रसमाती, हरी भक्तन की टोली ।।
ठुमकि ठुमकि नाचत मण्डली में, कनक पुतरिया गोरी ।
अरुणाम्बर मधि कनक अंग द्युति, मानो अरुण उग्योरी ।
मधुर मधुर हरिनाम उचारत, नयनन नीर झरयो री ।
गद्‌गद् कण्ड वचन नहिं आवे, पुलकित अंग भयो री ।।
राधे राधे श्याम उचारत, जय जय धूम मच्योरी ।।
केलि के उर अन्तर में बसो, नित गौर निताई जोरी ।

******

जय जय रूप गौर गुण गायक, गौर सुधा वर्षणकारी ।
भक्ति रसामृत सिन्धु प्रकाशक, प्रेम भक्ति रस विस्तारी ।।

जय जय राधा-गोविन्द अनुचर, अन्तर सेवा अधिकारी ।
जय राधा पद कमल मधुप प्रिय, रूप मंजरी वपुधारी ।।

जय जय सनातन अग्रज सेवक, जयति जीव के सुखकारी ।
जय ब्रज जन के सहज सनेही, जय भक्तन के हितकारी ।।

जय ब्रज लीला भूमि प्रचारक, ब्रज मण्डल आविष्कारी।
जय जय हे हरिनाम प्रचारक, जय जय हे कलिमल हारी॥

कर करवा कौपीन कंठ में माला मधुकरी आहारी।
तरु तर वास सदा अनिकेतन, कठिन विराग के व्रतधारी॥

उज्ज्वल नील मणिन सों सुन्दर, माला के ग्रन्थन कारी।
पहरे राजें राधा–गोविन्द, शेभा अनुपम मन हारी॥

गौर निताई युगल माधुरी, नाम सुधा रस कण पाऊँ।
केलि मंजरी पद रज याचत, चरण कमल पर बलिहारी॥

******

गावो मंगल मोद बधाई, भूतल प्रकटे आज निताई॥

एक चक्रा है ग्राम सुहावन, सुरसरि नीर सरिस अति पावन।
जहाँ प्रगटे रोहिणीनंदन, धारे सुन्दर रूप निताई॥

माघ त्रयोदशी शुक्ला आई, चहुँदिशि सुन्दर सुषमा छाई।
वीर भूम में धूम मचाई, भूतल प्रगटे आज निताई॥

पदमावति माता हर्षाई, प्रमुदित अति पण्डित हाड़ाई।
भक्तन मिलि जय जय धुनि लगाई, भूतल प्रगटे आज निताई॥

जय जय जाह्नवी के जीवन धन, जय वसुधा के नयनन अंजन।
वीर चन्द्र प्रभु के सुखदाई, भूतल प्रगटे आज निताई॥

गौर प्रेम की ज्योति जगाई, चहुँ दिशि नाम सुधा बरषाई।
जय जय जय हरि प्रेम प्रदाई, भूतल प्रगटे आज निताई॥

जय हे दीनन के दुःखहारी, जय पतितन के पावनकारी।
तारे अमित जगाई मधाई, भूतल प्रगटे आज निताई॥

केलि मंजरी मंगल गावे, इन चरणन पर बलिबलि जावे।
गौर प्रेम की भिक्षा पावे, दीजै चरणन लगन लगाई।
भूतल प्रगटे आज निताई॥

******

निताई नाम जपा करो, गौर प्रेम रस पिया करो।
निताई देंगे तुमको शक्ति, मिलेगी तुमको गौर की भक्ति।
उनके चरणों में प्रीति किया करो, गौर प्रेम रस पिया करो ॥

निताई गौर को एक ही जानो, भैद कभी न उनमें मानो।
ऐसी युगल छवि पे बलि जाया क़रो, गौर प्रेम रस पिया करो ॥

नित्यानन्द को जो न भजते, गौर हरि उन्हें न मिलते।
पहले उनका ध्यान लगाया करो, गौर प्रेम रस पिया करो ॥

जो भी उनकी शरण में आये, गौर प्रेम वो सहज ही पाये।
ये जीवन सफल बनाया करो, गौर प्रेम रस पिया करो ॥

'गुनावली' प्रभु कृपा करेंगे, भक्ति से परिपूर्ण करेंगे।
उनकी करुणा पे बलि जाया करो, गौर प्रेम रस पिया करो ॥

******

आओ आओ नाम हरि के मेरी रसना पर आओ।
मेरी रसना पर आओ प्रभु मेरी जिव्हा पर आओ ॥

रसना मेरी अति दुर्भाषिणी, कटु भाषिणी अरु पाप मई।
अघ अवगुण विसराओ इसके, आ जाओ प्रभु आ जाओ ॥

कण्ठ मेरा अति कर्कश वाणी, नाम मधुरिमा नहिं जानी।
अपनी मधुरता आप बखेरो, नाम सुधा रस बरसाओ ॥

चित्त मेरा अघमूलमलीना, अन्ध कूप सम सब गुण हीना।
अपनी ज्योति आप बखेरो, अन्तर ज्योति जगा जाओ ॥

तन मन में अरु श्वाँस श्वाँस में, रोम रोम में रम जाओ।
रग रग में झंकार उठे, पिय अन्तर वीणा बजा जाओ ॥

तृण सों नीच दीन व्है जाऊं, तरु सों सहनशील बन जाऊं।
सबहि मानप्रद मान न चाहूँ, यह करुणा निज वर्षाओ ॥

केलि के जीवन नईया खिवैय्या, भव डूबत की बांह गहइया।
जीवन नईय्या पार लगाने, आ जाओ अब आ जाओ ॥

******

निज देश में, जिस भेष में, परदेस में रहो।
राधारमण राधारमण राधारमण कहो।
(भजो निताई गौर राधेश्याम, जपो हरे कृष्ण हरे राम ।।)

जिस योग में जिस भोग में, जिस रोग में रहो।
राधारमण राधारमण राधारमण कहो।
(भजो निताई गौर राधेश्याम, जपो हरे कृष्ण हरे नाम ।।

जिस ग्राम में, जिस नाम में, जिस धाम में रहो।
राधारमण राधारमण राधारमण कहो।
(भजो निताई गौर राधेश्याम, जपो हरे कृष्ण हरे राम ।।

जिस रंग में, जिस ढंग में, जिस संग में रहो।
राधारमण राधारमण राधारमण कहो।
(भजो निताई गौर राधेश्याम, जपो हरे कृष्ण हरे राम ।।)

परिवार में, व्यवहार में, संसार में रहो।
राधारमण राधारमण राधारमण कहो।
(भजो निताई गौर राधेश्याम, जपो हरे कृष्ण हरे राम ।।)

जिस धर्म में, जिस मर्म में, जिस कर्म में रहो।
राधारमण राधारमण राधारमण कहो।

******

महोत्सव श्री हरिदास गमन को , कर कीर्तन पाये गौर चरन को।
जाति धर्म तज्यो, हरि गुण गायो, वन्दन कोटि ऐसे भक्त यवन को ।।

पापी पतित अनेक उद्धारे, कलि को धर्म उपाय तरण को।
सभी रसायन फीके परेरी, रंचक नाम सवारयो जन्म को

मुल्क यवन पति त्रास दियो बहु कसर न छोड़ी प्राण हरन को।
'नाम' ना छोडूं चाहे करडारो, खण्ड खण्ड या मेरे बदन को ।।

जगन्नाथ दर्शन को न जाये, दीन हीन माने अति अपन को।
सचल महाप्रभु स्वयं चले आये, देखन अपने प्राण सदन को।।

महाप्रभु चहे हृदय लगानो, मैं हूँ मलिन ना छुओ बदन को।
मृत देह उठाय प्रभु नृत्य करन लगे, विस्मित भये सब देख नचन को।

बने विश्वम्भर स्वयम् भिखारी, महोत्सव श्री हरिदास करन को।
'गन्धर्विका' सुमरे जो ये दिन, कृष्ण प्रेम देंगे गौर सबन को।

******

सियाजु के अरुनारे दोऊ तरुवा। मानहु अनुरागिन के घरवा।।

का गुलाब का कमल कंटीलो का बड़ लाल अनरवा।
का कुसुम जल बूंद परतहि विगरत रंग निचुरवा।।

का मखमल का सिरस कलंगी का मालती पतरवा।
इनकी कोमलता के आगे का कपोत बट परवा।।

उरध पदुम कल्पतरू अंकुस रेखन की उजियरवा।
एक–एक रेखन पर वारौं त्रिभुवन को सिंगरवा।।

जिनके धोवत डरत देवता जिमि चुइ परत अतरवा।
इनसे लगन नहीं तो विरथा दंड कमंडल करवा।।

******

हरि–हरि बोल हरि–हरि बोल, रसना निशिदिन हरि–हरि बोल।।

हरि का नाम बड़ा मन रंजन, पाप ताप भव दोष विभंजन।
हरि का नाम बड़ा अनमोल, रसना निशि दिन हरि–हरि बोल।।

हरि की कृपा यह जीवन पाया, क्यों तूने यह वृथा गंवाया।
मानुष तन है अति अनमोल, रसना निशि दिन हरि–हरि बोल।।

जीवन की दुविधा मिट जावे, प्रेम सिन्धु में चित अवगाहे।
बिनु श्रम प्राणी हरि पद पावे, ऐसी है यह मूरि अमोल।।

रसना निशि दिन हरि-हरि बोल, हरि हरि बोल।
नाम सुधा वर्षाने वाले, ठाढे हैं दो भुजा पसारे।।
बांट रहे हैं रतन अमोल, रसना निशि दिन हरि हरि बोल।
तृण सम नीच, है श्री मुख वाणी, सहे दुःख सुख लाभ अरु हानि।।
सबहिं मानप्रद आप अमानी, पल पल छिन छिन हरि हरि बोल।।
रसना निशि दिन हरि-हरि बोल, हरि हरि बोल।।
मधुर नाम की झरी लगाओ, वैर द्वेष सब दूर भगाओ।
हिल मिल सब हरि गुण गाओ, बखशेंगे वे प्रेम अमोल।।
रसना निशि दिन हरि-हरि बोल, हरि हरि बोल।।
केलि मंजरी शीश नवावे, भक्तन पद रज शीश चढ़ावे।
नाम प्रेम की भिक्षा पावे, माँगत हरि पद प्रेम अमोल।।
रसना निशि दिन हरि-हरि बोल, हरि हरि बोल।।

।। चौसठ महन्त भोग ।।

सब परिकर संग गौर चन्द्र प्रभु, राज भोग आरोगत हैं।
श्री नित्यानन्द अद्वैत गदाधर, अरु श्रीवास विराजत हैं।।

गुरुजन बैठे ऊँचे आसन, नेह दृष्टि बरसावत हैं।
मातृ पितृ सब कृपा दृष्टि सों, सब को मोद बढ़ावत हैं।।

अष्ट महंत गोपाल द्वादश, निज परिकर संग राजत हैं।
अष्ट गोस्वामी प्रभु पथगामी, विनय भाव दरसावत हैं।।

षद चक्रवर्ति प्रभु अनुवरती, सब मिलि हरिगुण गावत हैं।
अष्ट कविराज भाव भरि बैठे, नाम सुधा बरसावत हैं।।

भक्त भृत्य मिलि करि परिवेशन, युगल नाम गुण गावत हैं।
मृदु मृदु हरि गौर चन्द्रप्रभु, पुनि पुनि स्वाद सराहत हैं।।

यह लीला लखि भक्त सब ही, मिलि जय जयकार उच्चारत हैं।
केलि मंजरी नेह निर्झरी, पुष्पांजलि बरसावत हैं।।

******

श्री राधारमण कृपाल, भज मन श्री राधे
श्री जयदेव के राधा-माधव, प्राणन के प्रतिपाल भज...............
गोस्वामी श्रीरूप के लाड़िले, गोविन्दम् गोपाल-भज...............
मदन मोहन ठाकुर हैं सनातन, झाँकी रूप कमाल-भज...............
भट्ट गोपाल के लाल लाड़िले, राधारमण दयाल-भज मन...............
गोपीनाथ श्री मधु गोस्वामी, जिन मोही ब्रज लाल-भज...............
जीव के श्री राधा दामोदर, दीनानाथ दयाल-भज...............
श्री लोकनाथ गोस्वामी प्राणधन, श्री राधा विनोदी लाल-भज...............
सुन्दर बदन दर्शन मन हरणी, बंशी अधर रसाल-भज...............
शीश मुकुट श्रवणन में कुण्डल, उर बैजन्ती भाल-भज...............
गोल कपोल अधर अरुणारे, घुँघर वारे बाल-भज...............
वारिजात अनंगमंजरी, निरखत होत निहाल-भज...............

******

नदिया में अमृत बरसेरी-नदिया में
हाँ हाँ नदिया में होरे-नदिया में
बृज के कृष्ण और दाऊ भैय्या
गौर-निताई बन प्रकटे री-नदिया में
आनन्द उमड़्यो दशों-दिशन में
सुर धुनि नीर बहु उछरे री-नदिया में
बरसत कुसुम देव अम्बर से
सुरतिय देख सब हर्षें री-नदिया में
द्वार-द्वार पै मंगल कलश अरु

बन्दनवार बंधावे री–नदिया में
हरद–इध–दधि रोचन कुमकुम
मंगल वस्तु सब साजे री–नदिया में
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे
हरि कीर्तन ध्वनि छाई री–नदिया में
नदिया के सब नर और नारि
नाचे गाये थिरकेंरी–नदिया में
ताल मृदंग झांझ ढप बाँसुरी
मंगल बाजे बाजे री–नदिया में
करें न्यौछावर तन–मन सरबस
गौर निताई लखकेरी–नदिया में
कलियुग दोष–दोषन को आगर
हरि–कीर्त्तन सुन भाजेरी–नदिया में
जो कोई गौर–गौर हरि गावे
प्रेम भक्ति धन पावे री–नदिया में।।

******

रुनझुन नूपुर बाजे रे
आभार गौरांग सुन्दर नाचे रे
ताथा थैय्या मृदंग बाजे रे–आभार गौरांग सुन्दर नाचे रे
गले बन माला हाले रे–आभार गौरांग सुन्दर नाचे रे
पाट–पाटाम्बर (पिताम्बर) हाले रे–आभार गौरांग सुन्दर नाचे रे
कटिते किंकनि बाजे रे–आभार गौरांग सुन्दर नाचे रे
संगे निताई चाँद नाचै रे–आभार गौरांग सुन्दर नाचे रे
संगे अद्वैत प्रभु नाचै रे–आभार गौरांग सुन्दर नाचे रे
संगे गदाधर नाचै रे–आभार गौरांग सुन्दर नाचे रे

संगे श्रीवास प्रभु नाचै रे–आभार गौरांग नाचे रे
संगे आचार्य प्रभु नाचै रे–आभार गौरांग सुन्दर नाचे रे
नाचै गौरा नाचै रे–आभार गौरांग सुन्दर नाचे रे
संकीर्त्तन माझे माझे नाचै रे नाचै रे गोरा
हेम–दण्ड बाहू तुले नाचै रे नाचै रे गोरा
विष्णुप्रिया प्राण–धन नाचै रे गोरा
शचि मातार दुलाल नाचै रे गोरा
आचार्य संगे नाचै रो नाचै रे गोरा
भक्तादि संगे नाचै रे नाचै रे गोरा
हरि–हरि बोले नाचै रे नाचै रे गोरा

।। रसिया ।।

अनोखो ही लाला जायो री, तेरी कूंख को धन्य री माई।
तेरी कूंख को धन्य री माई, तेरे भाग को धन्य री माई।।

नौ–दस मास में बालक होवे, यह जग रीति संदाई।
चौदह मास में तुमने जायो, रीति अनोखी चलाई।।

हमरे जब कोई बालक हौवे, गावे गीत लुगाई।
तेरे लाल को जन्म भयौ जब, दुनिया हरि हरि गाई।।

माता दूध कूँ प्याके बालक, रोवत चुप है जाय।
तिहारो लाल तब ही चुप होवे, जब हरि धुन सुन पाई।।

जैसे दंङ्ग अनोखे सब ते, रङ्ग हू अनोखो माई।
सोने की इक पूतरी मानौ, बिजुरी में लिपटाई।।

और इक अचरज सब ही को यह, लेत है चित्त चुराई।
आनन्द प्रेम हियो उमगावे, नैनन रहे समाई।।

।। होरी रसिया ।।

आज गौर हरि की होरी रे रसिया।
होरी रे रसिया होरी रे रसिया – गौर हरि...

मासन में फागुन है रंगीलो।
(और) तिथिन में पूज्यों गौर के रसिया।।

नाम गुलाल उड़ाओ भरी भरी
बचे न कोई भोरी रे रसिया।।

मद की चूनर चीर उतारो।
चोली लाज देओ बोरी रे रसिया।।

भेद–भाव सब भूलो भुलाओ।
नाचो भुज–भुज जोरी रे रसिया।।

'प्रेमानन्द' कठोर हियो अति।
भीज्यो तऊ न पसिज्यो रे रसिया।।





जयपुर पब्लिशिंग हाउस

चौड़ा रास्ता, जयपुर-3

e-mail: jaipur.jph@gmail.com
alokagarwal.jph@gmail.com
ajay.agarwal151269@gmail.com